॥ अथ हरिबलमछीको रास लिख्यते ॥



॥ दुहा ॥ प्रथम प्रगाधव जगधणी, प्रथम श्रमण पण एह ॥
प्रथम तीर्थंकर जग जयो, प्रथम गुरु पमणेह ॥ १ ॥ विश्वस्थिति
कारक प्रथम, कारक विश्व उद्योत ॥ धारक अतिशय आदि जि
न, तारक भवनिधि पोत ॥ २ ॥ ऋषभरूप इछा इक्षुनी, पारण
दिन पण तेह ॥ इम इष्ट जेहने सदा, नाभिनंदन प्रणमेह ॥ ३ ॥
सिद्धवधूना संगमें, अछक छकयो दिन रात ॥ हुं तस पदपंक
ज नमुं, नित्य उठी परभात ॥ ४ ॥ हंसासन जे सरसती, वरत
ति वचन विलास ॥ कविजन केरा हृदयमें, करती बुद्धि प्रकाश
॥ ५ ॥ ते हुं प्रणमुं भारती, धारति जड अंधार ॥ मुझ मन मंदिरमें
वसी, करवा मुझ उपगार ॥ ६ ॥ माता मुझ महोटो करी, देजे व
चन रसाल ॥ रंगरंगीली जनसभा, सांभले थइ उजमाल ॥
॥ ७ ॥ जे हुं चाहुं चित्तमें, ते तूं करजे मात ॥ वचनतणी रचना
रस दियो, वाधे तुझ आख्यात ॥ ८ ॥ गुरु ज्ञाना माता पिता, गु
रुथी अधिक न कोय ॥ देवधर्म गुरु ओलख्या, बलिहारी गुरु सो
य ॥ ९ ॥ ते गुरु चरण नमी करी, भवियणने हितकार ॥ रास
रचुं हरिबल तणो, पुण्य उपर अधिकार ॥ १० ॥ पुण्यें वंछित
पामीयें, पुण्यें लहि नव नीध ॥ पुण्यें महिला मेलवे, पुण्यें शुद्ध
समृद्ध ॥ ११ ॥ जीवदया पाली जिणें, तिण उपराज्युं पुण्य ॥
सुर नर तस सानिध करे, माने ते दिन धन्य ॥ १२ ॥ जीव
दयापक्षी पामियो, हरिबल मच्छी राय ॥ तास प्रबंध सुणतां
थकां, भवभवनां पातक जाय ॥ १३ ॥ रास सरस सुणमां थकां

जे को करशे बात ॥ तेहने नस वल्लभ तणा, सम देउं छउं सात ॥ १४ ॥ जिम मृग नाद लिणो रहे, निसुणे थइ एकरंग ॥ तिम सुणजो भवियण तुमें, आणी चित्त अभंग ॥ १५ ॥

॥ ढाल १ ली ॥ रसीयानी देशी ॥ लख जोजननो रे जंबुद्वीप ए कह्यो, शाश्वत वर्तुलाकार ॥ सोभागी ॥ तेहमें क्षेत्र ए नंद सोहामणुं, कुलगिरि सात कह्या सार ॥ सो० ॥ १ ॥ भाव धरीने रे भवि तुमें सांभलो ॥ रसिया देई रे कान ॥ सो० ॥ सुणतां रंग रस ऊपजे, मुखमें राख्यां जिम पान ॥ सो० ॥ भा० ॥ २ ॥ क्षेत्र तिनमें करमी वसे तिहां, असि मसि कृषी रोजगार ॥ सो० ॥ आजीविकायें जीव जीवाडवा, आख्या ए तीन व्यापार ॥ सो० ॥ भा० ॥ ३ ॥ बीजां क्षेत्र जे जुगलां धर्मनां, भाख्यां अ करमि उदार ॥ सो० ॥ तिहां को व्यापार तीनमें नवि लहे, छे कल्पवृक्षना आहार ॥ सो० ॥ भा० ॥ ४ ॥ तेहमें षट्युगलादिक क्षेत्र जे, भरत ने ऐरवत विदेह ॥ सो० ॥ ए नव क्षेत्र जंबुद्वीपमां, शोभित शोभे छे एह ॥ सो० ॥ भा० ॥ ५ ॥ ए नव क्षेत्र सात छे कुलगिरि, तेहनो अतिहां विस्तार ॥ सो० ॥ क्षेत्र समास में गुरुमुख सांभली, धारयो तास विचार ॥ सो० ॥ भा० ॥ ६ ॥ पण इहां हरिबल मच्छी रायनुं, चरित्र सुणो चित्त लाय ॥ सो० ॥ लोक उखाणो जगमां इम कहे, जे परणे ते गवाय ॥ सो० ॥ ॥ भा० ॥ ७ ॥ हिवे इहां जंबुद्वीपें अति भलुं, भरत क्षेत्र कहाय ॥ सो० ॥ पांचसें छव्वीश जोजन षटकला, धनुषाकारें सोहाय ॥ सो० ॥ भा० ॥ ८ ॥ सहस बत्रीश तें जन पद तेहमां, तेहना खट खंड होय ॥ सो० ॥ तिण विचगे परव्या वैताड्यो रजतनो, जोजण पचासनो जोय ॥ सो० ॥ भा० ॥ ९ ॥ षट्खंडमें खंड १न तिन तेणें करयो, दक्षिण उत्तर श्रेण ॥ सो० ॥ सोल सो ६ सहस ए जनपदमें रहे, वसती अनार्यनी तेण ॥ सो० ॥

॥ भा० ॥ १० ॥ साढा पचवीश आर्य अति भला, केवल अर्थ
समेत ॥ सो० ॥ श्रीजिनधर्मनो वास तिहां छे, महस वखाण
लक्ष्य पत ॥ सो० ॥ ११ ॥ भा० ॥ ते माटे इहां आरय देशमां,
कनकपुरी अभिधान ॥ सो० ॥ सात सोनामय सुंदर शोभती,
अमरपुरी उपमान ॥ सो० ॥ १२ ॥ भा० ॥ नलिनीगुल्म विमा
न तणी परे, एकवीश भूमि आवास ॥ सो० ॥ रतन जडितमें गो
ख विराजता, करता तेज प्रकाश ॥ सो० ॥ १३ ॥ भा० ॥ कुंती आव
ण परें हटश्रेणि राजती, छाजती विजपना पंक्ति॥सो०॥देश देशांतर
विणज करे बहु, वरसे वसु धारा शक्ति ॥ सो० ॥ १४ ॥ भा० ॥
धनवंत धनद भंडारी सारिखा, वसे तिहां नगरीमां लोक ॥
सो० ॥ पंच विषयना रसमें झीणा रहे, भोगी चातुर लोक ॥
॥ सो० ॥ १५ ॥ भा० ॥ षट दरशनना पोषक जन बहु, पाले
निज निज धर्म ॥ सो० ॥ घर घर सत्कार करे घणा, लेहवा
शिव सुख शर्म ॥ सो० ॥ १६ ॥ भा० ॥ जिनशासनना देउल
दीपतां, बत्रीश सदा प्रासाद ॥ सो० ॥ चोराशी मंडप अति चो
पशुं, करता स्वरगशुं वाद ॥सो० ॥ १७ ॥ भा० ॥ दंडधजा अ
तिसरसें फरहरे, नाचे माचे मनरंग ॥ सो० ॥ धन्य दिवस मुज
जिन शिर हूं चढी, पावन करवा मुज अंग ॥ सो० ॥ १८ ॥ भा०॥
श्रीजिन केरी भगति करे सदा, भविक जीव अपार ॥ सो० ॥
तीर्थंकर पद ने उपराजता, रावणनी परें सार ॥ सो० ॥ १९ ॥
॥ भा० ॥ वरण अढार वसे तिण नगरीयें, जाणियें सुर अव
तार ॥ सो० ॥ गढ मढ मंदिर पोलि शोभा घणी, पुरणनी उप
हार ॥ पाठांतर ॥ नगर कनकपुरनामें शोभतुं, हरगपुरी अनु
हार ॥ सो० ॥ २० ॥ भा० ॥ नंदनवन सम परिमल वाडिका,
चिहुंदिशि नगरीनी पास ॥ सो०॥ वापी कूप मनोहर जल भर्यां,
सरवर फले सुवास ॥ सो० ॥ २१ ॥ भा० ॥ काल दुकाल ने

कोनवि बोलिस्ये, अहोनिश सुखनी छे वात ॥ सो० ॥ ईति उपद्रव सुपनें नवि जाणे, पुहवीयें प्रगटीए ख्यात ॥ सो० ॥ २२ ॥ भा० ॥ कनकपुरीना ए गुण सांभली, लाजी लंका तिवार ॥ सो० ॥ जलनिधिमां जइ बूडी बापडी, जाणे सकल संसार ॥ सो० ॥ २३ ॥ भा० ॥ स्वर्गपुरी पण नभमां जइ रही, निसुणी तेहना अवाज ॥ सो० ॥ एह नगरी कनकपुरी तणी, दिन दिन चडती छे लाज ॥ सो० ॥ २४ ॥ भा० ॥ कनकपुरीनां रे वयण वखाणतां, पभणी पहेली ए ढाल ॥ सो० ॥ ऋद्धिविजय कहे भविपण सांभलो, आगल वात रसाल ॥ ॥ सो० ॥ २५ ॥ भा० ॥

॥ दुहा ॥ तिण नगरीयें राजवी, वसंतसेन भूपाल ॥ न्यायनिपुण वसुदेव ज्युं, करुणावंत कृपाल ॥ १ ॥ वात्सल्य वछल हरिचंद जिस्यो, भुजबलि भीमसमान ॥ अरियण सघला वश कर्या, उतार्यां तस मान ॥ २ ॥ परजाने पाले सदा, करी हथेली छांह ॥ दाण जगात दिसे नहीं, करदंड बंधन क्यांह ॥ ३ ॥ करदंड मुनि देउल शिरें, बंधन कोशिरकेश ॥ वसंतसेन नृप इणि परें, पाले राज्य विशेष ॥ ४ ॥ तस पटराणी पदमिनी, रूपें रंभ समान ॥ शील सुरंगी गुणवती, वसंतसेना अभिधान ॥ ५ ॥ मालती मधुकरनी परें, मीनडी जिम जल मीन ॥ तिम नृपराणी एकमना, रंगें रहे लय लीन ॥ ६ ॥ दोगुंदक सुरनी परें, पंचविषय सुख भोग ॥ नृपराणी विलसे सदा, पूर्व पुण्य संयोग ॥ ७ ॥

॥ ढाल २ जी ॥ रहो रहो रहो रहो वाल्हा ॥ ए देशी ॥ विलसे भोग ते राजवी, वसंतसेना साथ म्हाल रे ॥ जन्म सफल लेखे गणे, मानें पाम्यो भाग लाल रे ॥ १ ॥ सुगुण सनेहा सांभलो

आगल वात रसाल ॥ ला० ॥ जीवदया पाली जिणे, ते लहो मं गळ माल ॥ ला० ॥ २ ॥ सु० ॥ राज ऋद्धि रमणी घणी, पूर्व पुण्यपसाय ॥ ला० ॥ सुरपतिनी परें राजवी, पुहवींयें ते गवरा य ॥ ला० ॥ ३ ॥ सु० ॥ पण तस पुत्र ते को नहीं, तेणें चिंतातुर होय ॥ ला० ॥ याय उपाय करे घणा, देवी न लागे कोय ॥ ला० ॥ ४ ॥ सु० ॥ देव दाणव लख जो मिले, तो पण तिण थी न थाय ॥ ला० ॥ कर्म आगल चाले नहीं, जो करे लख उ पाय ॥ ला० ॥ ५ ॥ सु० ॥ माहादेव महोटो महीतलें, लोक मांहे परसिद्ध ॥ ला० ॥ पार्वती सरखी नारीने, करमें पुत्र न दीध ॥ ला० ॥ ६ ॥ सु० ॥ तो बीजानुं शुं गजुं, ए सवि कर्म नां काम ॥ ला० ॥ कर्म सखाई जो हुवे, मनवंछित फले ताम ॥ ला० ॥ ७ ॥ सु० ॥ एकनें शुभ कर्म करी, पुत्र तणे घरे पुत्र ॥ ला० ॥ नाम करे चिहुं खंडमां, राखे घरनां सूत्र ॥ ला० ॥ ८ ॥ सु० ॥ एकने पुत्र विना सही, सूनां तस आगार ॥ ला० ॥ मेन मंदिर सम जाणीयें, पुत्र विना घरबार ॥ ला० ॥ ९ ॥ सु० ॥ पुत्र विना गति को नहीं, पुत्र विना नहीं स्वर्ग ॥ ला० ॥ लौकिक मतना शास्त्रनें, भाखे ऋषिजन वर्ग ॥ ला० ॥ १०॥सु०

उक्तंच ॥ गाथा ॥ गेहं तंपि मसाणं, जच्छ न दीसंति धूलि धूसरछाया ॥ उढंत पडंत रडंत, दो तिनि डिंभान दीसंति ॥ १ ॥ ॥ श्लोक ॥ अपुत्रस्य गतिर्नास्ति, स्वर्गोनैवच नैवच ॥ तस्मात्पु त्रमुखं दृष्ट्वा, पश्चात् धर्म समाचरेत् ॥

॥ ढाल उपरली ॥ अहोनिश इम चिंता करे, वसंतसेन भूपाल॥ ला० ॥ तिणे अवसर एक ज्योतिषी, आवी निरख्यो ततकाल ॥ला० ॥ ११ ॥ सु० ॥ आगम नीगमनी कहे, शास्त्र तणे अनुसार ॥ ला० ॥ एहवो पंडित देखीने, नरपति हरख्यो अपार ॥ ला० ॥ १२ ॥ सु० ॥ उठीने प्रणीपात करे, मान घणी मनमांहि ॥ ला०

मुद्रा सहित फल फूलड़ां, पुस्तक पूजे उछांहि ॥ ला० ॥ १३ ॥
सु० ॥ वेकर जोड़ी वीनवे, कीजे करुणा कृपाल ॥ ला० ॥ अब
कूबो मम माहरे, होशे वाल गोपाल ॥ ला० ॥ १४ ॥ सु० ॥
तब पंडित नक्र जोइने, बेला साधो सार ॥ ला० ॥ १५ ॥ सु०
लगनबले कहे रायने, सांभलजो सुविचार ॥ ला० ॥ पुत्र तो
तुम करमें नहीं, पून्व भावी भोग ॥ ला० ॥ पण एक पुत्री है
सही, पूरव पुन्य संजोग ॥ ला० ॥ १६ ॥ सु० ॥ रूपें रंभास
रिखी, नंदिनी तोहांशे तुम ॥ ला० ॥ जाणीयें बीजी शारदा,
गट होइ ते गुम ॥ ला० ॥ १७ ॥ सु० ॥ एम कहीने विप्र ते गयो
लेइ वंछित दान ॥ ला० ॥ नृप मनमें हरख्यो घणुं, जिमरवि
कज इकतान ॥ ला० ॥ १८ ॥ सु० ॥ विप्र वचन ते योगथी
राणी गर्भ धरेय ॥ ला० ॥ वसंत ऋतु फल फूलड़ां, शोभित
पना लहेय ॥ ला० ॥ १९ ॥ सु० ॥ जागी तव नृपने कहे,
पना तणो अधिकार ॥ ला० ॥ सांभली नृप हरख्यो घणुं, सुत
श्रीविस्तार ॥ ला० ॥ २० ॥ सु० ॥ हरखित थइ राणी हिवे,
ते गर्भजतन ॥ ला० ॥ अनुक्रमें मास पूरा थई, जन्मी पुत्री र
॥ ला० ॥ २१ ॥ सु० ॥ हुवां हरख वधामणां, घर घर मं
गलमाल ॥ ला० ॥ लब्धिविजय रंगें करी, पभणी बीजी ढाल ॥
॥ ल ॥ २२ ॥ सु० ॥

॥ दुहा ॥ जन्मोछव अति हे करे, वसंतसेन भूपाल ॥ भाखे
माणक मोती घणा, वरसे ज्यु वरसाल ॥ १ ॥ कुंकुम केसर छा
टणां, टीले करे विशाल ॥ सोहव सवि टोलें मिलीं, गावे
गीत रसाल ॥ २ ॥ घर घर गुडी उछले, घर घर तोरण माल
॥ घर घर तोरण बांधीयां, दमि शाक झमाल ॥ ३ ॥ नृत्य करे
नटुवा भला, खेले नवनव खेल ॥ बंदीजन मुकया घरा, जय
भावे रंगरेल ॥ ४ ॥ इम उछव करतां थकां, बोल्या दिन मे

हार ॥ नगरीजन सहु पोषीया, देई मिष्ट आहार ॥ ५ ॥ निज कुटुंब मेली करि, पुत्री मना ठवीज ॥ सुपन तणा अनुसारथी, वसंतसिरि ते कहीज ॥ ६ ॥ कुमरी ते दिन दिन वधे, ज्युं वधे इक्षुदंड ॥ चंद्रकला जिम बीजथी, वाधे तेज अखंड ॥ ७ ॥ इम करतां वरसनी थइ, पंचवरसनी वाल ॥ शुभलग्न लेई करी, मुइ थापी नीशाल ॥ ८ ॥ खटदरशनना शास्त्र जे, तेहमां थई प्रवीण ॥ रंग राग नाटक कला, यंत्रवाजित्र मिलीन ॥ ९ ॥ षट भाषा लहती मुखें, चोसठ कलानिधान ॥ अभिनव जाणे शारदा, प्रगट थइ सावधान ॥ १० ॥ इम करतां ते अनुक्रमें, वरस थयां जब सोल ॥ नवयौवन नारी तणा, उलट्या काम कलोल ॥ ११ ॥ मात पिता हरखे घणुं, पुत्री देखी रतन ॥ वरनी चिंता चित धरे, करतां कोटिपतन ॥ १२ ॥

॥ ढाल २ जी ॥ सुमति सदा दिलमां धरो ॥ ए देशी ॥ तिण नगरीमें एक रहे, धीवर हरिबल नाम ॥ सनेही ॥ जलचर जीव हणे सदा, मेले दुष्कृत दाम ॥ सनेही ॥ १ ॥ हवे सुणजो तेहनी कथा, मूकी सघलो प्रमाद ॥ स० ॥ साकर द्राख तणी परें, विण पइसे ल्यो स्वाद ॥ स० ॥ २ ॥ ह० ॥ धीवर ने जाणे नहि, जीवदयानो धर्म ॥ स० ॥ उदर उदरने कारणे, करे नित्य करणीकुकर्म ॥ स० ॥ ३ ॥ ह० ॥ धिगधिग दुभर पेटने, पेट करावे वेठ ॥ स० ॥ उत्तम मध्यम मागीने, पेट ते हरावे नेट ॥ स० ॥ ४ ॥ ह० ॥ पेटने कारणे जीवडा, जावे देश मदेश ॥ स० ॥ जावे जलनिधिमारगें, पेटने हेतविशेष ॥ स० ॥ ५ ॥ ह० ॥ अगम्यांनी करणी करे, चोरि हेरी मत्सर ॥ स० ॥ पेटना अर्थी जे अछे, न गणे भक्ष अभक्ष ॥ स० ॥ ६ ॥ ह० ॥ पात कला खेले घणुं, नटुआ नटवी जोर ॥ स० ॥ ब्राह्मण वेद उचरने, पटने अर्थे घोर ॥ स० ॥ ७ ॥ ह० ॥ जिनवरभाखि धर्मवर,

[illegible] सिर [illegible] तो मारी
[illegible] कारण
[illegible] ॥ स० ॥ हरिचंद [illegible] बधा नीर ।
॥ [illegible] ॥ ह० ॥ तिम [illegible] हरिचंद [illegible]
॥ स० ॥ [illegible] ॥ १०॥
॥ ह० [illegible] ॥
[illegible]
[illegible] एक दिन हरिचंद [illegible] ॥ स० ॥
[illegible]
[illegible] ॥
[illegible] ह० ॥
[illegible] पहोता सं
[illegible] पाणी
[illegible]
[illegible]
[illegible] दरसी नहीं
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ स० [illegible] आगा मन [illegible]
[illegible] ॥ जीवदया ने पाले नहीं, पामे ते दुःख अपार
॥ स० ॥ [illegible] नरको मे, पडीया नरक मझार
॥ स० ॥ १८ ॥ ह० ॥ माता पितादिक बंधवा, पामे [illegible]
[illegible] ॥ स० ॥ दालिद्र दोहग नवि हुवे, [illegible] न [illegible]
॥ स० ॥ १९ ॥ ह० ॥ देय दिये को दिन पते, देवे को दान
सदाय ॥ स० ॥ तेहथी दश गुणो लाभ छे, जीवजतन करे जाय
॥ स० ॥ २० ॥ ह० ॥ इम उपदेश ते सांभली, बोले मच्छी [illegible]

॥ स० ॥ ह० ॥ २१ ॥ धीवर कुलें आवी पड्या, क्यां रहे गुरु नुं ज्ञान ॥ स० ॥ आजीविका ए पेटनी, दीधी करमें निदान, ॥ स० ॥ ह० ॥ २२ ॥ पण गुरुजी तुम वचनथी, आजथी में पण लीध ॥ स० ॥ पहेली जालमां जीव जे, तेहने में जीवित दीध ॥ स० ॥ ह० ॥ २३ ॥ इणि परें अभिग्रह आदरी, हरिवल मच्छी नाम ॥ स० ॥ मुनि पण ईर्ष्या शोधता, पहोता बीजे ठाम ॥ स० ॥ ह० ॥ २४ ॥ हलुआ करमी जीव जे, तरत लहे उपदेश ॥ स० ॥ भारे करमी जीवडा, माने नहीं लवलेश ॥ स० ॥ ह० ॥ २५ ॥ पापीने प्रतिबोधतां, पण पोतानुं जाय ॥ स० ॥ टपलो मरावे चडावीयें, आरीसो नवि भाय ॥ स० ॥ ह० ॥ २६ ॥ हरिवलनी परें प्राणीया, गुरुमुखें होवे जेह ॥ स० ॥ गुरुनां वचन हृदय धरे, मनवंछित लहे तेह ॥ स० ॥ ह० ॥ २७ ॥ लब्धिविजय रंगे करी, भाखी ए बीजी ढाल ॥ स० ॥ हरिवल जीवदयापकी, लेहशे मंगल माल ॥ स० ॥ ह० ॥ २८ ॥

॥ दुहा ॥ हरिवल अभिग्रह लेईने, पाछो वलियो जाम ॥ तिण अवसरें सुर मलपियो, सुस्थित जलनिधि स्वामि ॥ १ ॥ अवधी ज्ञानी देवतां, रूप करे ततकाल ॥ धीवरनुं मन जोवा, मच्छ हुवो सुगाल ॥ २ ॥ धीवर ते जलमें जइ, त्यांही नाखी जाल ॥ आव मरालो जालमां, त्यांही मच्छ सुगाल ॥ ॥ ३ ॥ तव धीवर ते मच्छने, मूके करुणावंत ॥ गुरुनुं वचन हृदये धरी, पाले ते इकसंत ॥ ४ ॥ वली बीजे ठामक जइ, डंडा द्रहनां माह ॥ नाखी तब फिरि मच्छ ने, आव्यो जाल मझगाल ॥ ५ ॥ ते पण चोळ मउ मूकीयो, चोथन निज संसार ॥ नाखी धीवर जलधिमां, जाल ते बीजी वार ॥ ६ ॥ वांट हिरीने

इम करतां संध्या थई रे, आव्यो नगर नजीक ॥ पण निज मंदिर नारीनी रे, मनमें आणी बीक ॥ सू० ॥ १२ ॥ पेट भरा इ जदी नहीं रे, मांदमें रांड कुहाडा ॥ जाइस जो खाली घरे रे, वेसशे लेई राड ॥ सू० ॥ १३ ॥ काली नागणनी परें रे, रोषे भरी छे चंड ॥ छोकरडांने मारे घणुं रे, बोले ज्युं खोखर भंड ॥ सू० ॥ १४ ॥ मुखमांथी मोठा पडे रे, कोइ बोलावे बोल ॥ वलगे वाघणनी परे रे, राखे नहीं तस तोल ॥ सू० ॥ १५ ॥ दीवालीनो परोढीयो रे, दीसंती जाणे अलछ ॥ आंगण आवे को मानवी रे, देखी जाये गछ ॥ सू० ॥ १६ ॥ कूडा बोली कर्कशा रे, दे वली अछतां आल ॥ गुण अवगुण जाणे नहीं रे, परिणामें विकराल ॥ सू० ॥ १७ ॥ उतरे जे वर्ष सातनी रे, जे ट पनोती कहाय ॥ पण थाणि पनोती जन्मनी रे, ते कि म उतरी जाय ॥ सू० ॥ १८ ॥ जाणी बंधुज कोयला रे, एहवुं रूप नीहाल ॥ खावानी संख्या नहीं रे, जाणीयें पेटमें काल ॥ सू० ॥ १९ ॥ धीवर कहे मुझ नारीनां रे, केतां करुं हुं वखाण ॥ पूर्ण पापना जोगथी रे, मिली ए कर्म प्रमाण ॥ सू० ॥ २० ॥ इरिवल चितवुं चितवे रे, नमळ्यो जळचर जीव ॥ घरे जावुं, तो बोकडी रे, रुडी करश रीव ॥ सू० ॥ २१ ॥ ते माटे वनमें रही रे, रजनी लेउं विशराम ॥ दिन उगे घर जाइश रे, जइ ने जीविक ताम ॥ सू० ॥ २२ ॥ इम जाणी ते वनमें रे, हरिबल रहियो ताम ॥ कालीकाने देवले रे, लीयो तिहां विश्राम ॥ ॥ सू० ॥ २३ ॥ धीवर सूतो चिंतवे रे, धन धन जीवदया धर्म ॥ एक में जीव उगारीयो रे, तो वाधी मुझ शर्म ॥ सू० ॥ २४ ॥ सोंभ निर्थे आजथी रे, हणवो नहीं कोइ जीव ॥ जल निधि नो धणी देवता रे, फलशे मुझ सदीव ॥ सू० ॥ २५ ॥ पातर देशी पारणुं रे, धीवर हरखे पइठ ॥ जीवदया धर्म उपरें रे,

रि मुंप आवजो, वरवाने हो पणुं आणी हेत के ॥ कु० ॥ [illegible]
व्यवहारी हरख्यो पणुं, कुमरीनु हो देखीने चित्त के ॥ [illegible]
घे आवशे, निज घरनु हो लेईने वित्त के ॥ कु० ॥ ३ ॥ [illegible]
कुमनी नंदिनी, कुमरी केम हो निरवाहे प्यार के ॥ [illegible]
कुमरी किहां सिहणी, किहां हरिणी हो किहां रत्न [illegible]
॥ कु० ॥ ४ ॥ किहां अलसी किहां नागणी, किहां [illegible]
किहां अन पन्नग के ॥ किहां कुमरीने हु, कीहां किहां [illegible]
किहां देव मानव के ॥ कु० ॥ ५ ॥ जाति [illegible]
दर वाले हो सघले संसार के ॥ मो किम [illegible]
जावे हो जेह ए व्यवहार के ॥ कु० ॥ ६ ॥ [illegible]
री, पीट एकने हो नावे सम पेर के ॥ [illegible]
मे, कुमरी एके हो मेटचे नही पेर के ॥ कु० ॥ ७ ॥ [illegible]
त प ह कर, कुल ल्याजे हो निज लाजनु [illegible]
परमणी, किम देह हो मेटने ह [illegible] के ॥ कु० ॥ [illegible]
स ए एहनी, परनारि हो साथे धरे राग [illegible]
सेह घणो. नहि पावे हो किहां केहनो [illegible]
किलाहनां फळ मानियां. देवलां हो [illegible]
पन मे पाम पारस्सारखी. जीव पावे [illegible]
॥ कु० ॥ १० ॥ अनदे वाने [illegible]
रोक के ॥ जिन रचने पण [illegible]
रोक के ॥ कु० ॥ ११ ॥ गावन [illegible]
कुनिरे जेह के ॥ परनागिला [illegible] जी,
दार के ॥ कु० ॥ १२ ॥ इम [illegible] रक, क
निज कुल मंडल के ॥ [illegible] मावा,
हो नवित्त जिरान के ॥ कु० [illegible] कुमरी
पाने व्याह न हो नारावे [illegible] रां कुमरी

हजूर ॥ १ ॥ अभ रत्न दो लेइने, आवी छुं तुम कज्ञ ॥ उंघ तजी उतावला, आवी चडो थइ सज्ञ ॥ ३ ॥ हरिबल वणीक ते जाणीने, विनवे कुमरी ताम ॥ धीवर सूतो जागीयो, केहेने क हे अभिराम ॥ ४ ॥ हरिलंकी अप्सर समी, देखी कुमरी रूप ॥ धीवर मन विन्हल थयुं, ए शुं दीसे सरूप ॥ ५ ॥ चमत्कार चित्तमें लही, धीवर चिंते ताम ॥ कोइक वात विचार छे, मौन करयानुं काम ॥ ६ ॥ अणबोल्यो ऊठ्यो तुरत, करी असवारी सार ॥ कुमरी मन हरखित थई, चाल्यां पथ विचार ॥ ७ ॥ पाणीपंथा घोडला, तेहनुं करडा जोर ॥ पंथे चाल्या चढवढी, पहोतां जे वन घोर ॥ ८ ॥ वसंतसिरी कुमरी हिवे, टाली सघ ली बीक ॥ हरिबलने बोलाववा, आवी पास नजीक ॥ ९ ॥

॥ ढाल ६ ठी ॥ पारकर देशथी आयो ॥ ए देशी ॥ हिवे हरिबल प्रभुजी बोलो, मनवल्लभ मनहुं खोलो रे ॥ माहरा जी वनजी तुमें बोलो ॥ हिवे काइ डर मन आणो, प्रभु मेल्यो तुम अम टाणो र ॥ मा० ॥ १ ॥ मुझ मरखी तुम नारी, धिण पैसे सिद्धि सुख कारी रे ॥ मा० ॥ कनक रयण छे साथे, तुमें वावरो सुखें निज हाथें रे ॥ मा० ॥ २ ॥ पेहरो नव नवा वाघा, जर तारी वांधो पाघा रे ॥ मा० ॥ खटरस रसवती सारी, करी पीरसुं मोहनगारी रे ॥ मा० ॥३ ॥ तुम संगें रहुं कर जोडें, करुं टे हल ते आलस छोडी रे ॥ मा० ॥ हुं छुं तुम प्रेम विलुद्धी, आ वी छुं हुं तुम सूधी रे ॥ मा० ॥ ४ ॥ हिवे तुम वयण न लोपुं, जीवित लगें वरमाला रोपुं रे ॥ मा० ॥ करडा जे साते ओप्या, लेई तुम मुंजे सोंप्या रे ॥ मा० ॥ ५ ॥ तन मन धन तुम केरुं, क रि स्नेहवजो ए भलेरुं रे ॥ मा० ॥ एक तुम मेहेरनी आशा, अमें गाडुं प्रेमना पाशा रे ॥ मा० ॥ ६ ॥ इणि परें कुमरी बोले, पण हरिबल वाचा न खोले रे ॥ मा० ॥ तव निहां कुमरी

रिसाणे, शुं छे ए वणिक न भासे रे ॥ मा० ॥ ७ ॥ इम करतां [illegible] ने [illegible] । दीठुं मुख श्याम ज्युं भाणुं रे ॥ मा० ॥ दिन [illegible] ने दीठो, दीन वस्त्र विहूणो धीठो रे ॥ मा० ॥ ८ ॥ [illegible] [illegible]नो पिंड, जाणे पाड्यो देवें दंड रे ॥ मा० ॥ देखी [illegible] वान, [illegible] जागे कोकिल मान रे ॥ मा० ॥ ९ ॥ [illegible] जाणी, तव कुमरी मन उलजाणी रे ॥ मा० ॥ हुं [illegible] न [illegible], [illegible] हाणी ने हाणी रे ॥ मा० ॥ १० ॥ [illegible] फल चाख्यां आंक आछो रे ॥ मा० ॥ [illegible] पाधी, पण निपज्यो कनक निकामी रे ॥ मा० ॥ [illegible] चढावी, पण देवें भूयें भपटावी रे ॥ मा० ॥ [illegible] पण पानीयें मणि मुकी रे ॥ मा० ॥ १२ ॥ [illegible], [illegible] पण खोई रे ॥ मा० ॥ निय [illegible], निज मंदिर फुल अवहेल्यो रे ॥ मा० ॥ [illegible] ॥ [illegible], [illegible] विशेषें रे ॥ मा० ॥ [illegible] तव वणिकें मूकी न काही रे ॥ मा० ॥ [illegible] रिसामी, दीठी [illegible] कामी रे [illegible] ॥ मा० ॥ [illegible] जे करे संग, तस [illegible] ते [illegible] रंग [illegible] जे वणिकने [illegible], निज [illegible] [illegible] ॥ मा० ॥ पानीयें वाचा न पाडी, [illegible] ॥ मा० ॥ १६ ॥ जननी [illegible] [illegible], [illegible] ॥ मा० ॥ [illegible] ॥ मा० ॥ १७ ॥ [illegible] देव तु [illegible], [illegible] ॥ मा० ॥ [illegible] [illegible] रे ॥ मा० ॥ १८ ॥ [illegible] [illegible] रे ॥ मा० ॥ [illegible] [illegible] रे ॥ मा० ॥ १९ ॥ [illegible]

रिसें गुरु मन देसे, माहारुं जोवन एले वहेसे रे ॥ मा० ॥ इम सुंदरी विलपंती, लही मूर्च्छा पडी ते धरती रे ॥ मा० ॥ २० ॥ तव तिहां धीवर सूरे ॥ मनसुं ते पुन्य अपूरे रे ॥ मा० ॥ ए ते ए सुं कीधुं, निज मंदिर मूकी दीधुं रे ॥ मा० ॥ २१ ॥ लवलेश पाप न राखो, निजकर्मे हाथे दाखो रे ॥ मा० ॥ जे घड्डे लोक उखाणो, ते मे तो नजरें पिछाण्यो रे ॥ मा० ॥ २२ ॥ कोमल सुंदरी माय, आवी रोई घरनी आय रे ॥ मा० ॥ ए दुःख केहने दाखुं, एहवो नहीं कोइ माखुं रे ॥ मा० ॥ २३ ॥ सुख दुःख जे लिख्यां पाले, ते भोगवे जीव एक ताले रे ॥ मा० ॥ धीवर मनमें विमासे, गेह राज न पामे उल्लास रे ॥ मा० ॥ २४ ॥ एतो सुंदरी मोटेरी, किम रांक घरे रहे जोरी रे ॥ मा० ॥ रूपें रं भसमान, किम सुंदरी दे सुख मान रे ॥ मा० ॥ २५ ॥ धिग मुझ जीवित एह, धीवर पणुं लाग्यो मेंह रे ॥ मा० ॥ माहरुं कुरूप देखी, कुमरीयें नाख्यो उवेखी रे ॥ मा० ॥ २६ ॥ धिग धिग जाति अकामी, मुझ देखी मूर्च्छा पामी रे ॥ मा० ॥ धीवर दुःखी थो अपार, वहे नयणें आंसु धार रे ॥ मा० ॥ २७ ॥ तिहां गयो सागर देव, मुझ काम पडे इहां हेव रे ॥ मा० ॥ सुंदरी जे मूर्च्छाणी, करे जीवित ते सुख खाणी रे ॥ मा० ॥ २८ ॥ जलनिधि सुर तव आवे, धीवरने हर्ष उपावे रे ॥ मा० ॥ लब्धि कहे ढाल छठी, कुमरीने करे हिवे वेठी रे ॥ मा० ॥ २९ ॥

॥ दुहा ॥ धीवर तनमें संक्रमे, ततखिण सागर देव ॥ अनू त जल छेई करी, कुमरी छांटी हेव ॥ १ ॥ रंभा फल पर्खे करी, करयो पवन उपचार ॥ तव कुमरी साजी थई, पामी चेतन सार ॥ २ ॥ आंख उघाडी निरखियुं, हरिवल केरुं रूप ॥ यात्रा चमकी चित्तमें, एतो देव सरूप ॥ ३ ॥ कालो वरण मिटी गयो, नगयो जोवन वान ॥ अद्भुत कांति शरीरनी, दीपे देव स

इधा ते साच ॥ ४ ॥ एम पती उठ्यां तुरत, लेई निज परि वार ॥ नगरीमां जातां थकां, शकुन थयां श्रीकार ॥ ५ ॥ दुर्गा काक ने श्वान शुभ, दाबी भैरव संत ॥ सांढ मारस खर तुर्ग, जिमणां न्याली हुंत ॥ ६ ॥ अंगज दशरथ सुततणा, बांने तोरण सार ॥ शकुन थयां जमणी दिशें, करतां पुर पेसार ॥ ७ ॥

॥ ढाल ८ मी ॥ धन्यो रे सगुरुजीनो कलपशे ॥ ए देशी ॥ जीरे शुभ लगनें शुभ मुहूर्तें, पतो नगरीमें कीध प्रवेश रे ॥ सुजाण ॥ तिण समे सनमुख वलो थया, शुभ कारी शकुन विशे षरे ॥ सु० ॥ शु० ॥ १ ॥ कन्या पांच सडामी मिली, पतो लेइ दीप उद्योत रे ॥ सु० ॥ गजरथ शिणगरया भला, मिलि सनमु ख रयणनी ज्योत रे ॥ शु० ॥ सु० ॥ २ ॥ जीरे एहवे शकुने नगरीमें, पतो हरिबलें पगलुं दीध रे ॥ सु० ॥ तिण समे एक व्यवहारियो, मिल्यो सनमुख प्रणिपत कीध रे ॥ सु० ॥ शु० ॥ ॥ ३ ॥ तव हरिबल पूछे वणिकने, अम कोइ बतावो गेह रे ॥ ॥ सु० ॥ वास करुं अमे जइ तिहां, पतो लहीये सुख ससनेह रे ॥ सु० ॥ शु० ॥ ४ ॥ जीरे तव कर जोडी वणिक ते, हरि बलने कहे मनुहार रे ॥ सु० ॥ अम घरे आवो प्राहुणा, अमे देशुं मोहोटु आगार रे ॥ शु० ॥ शु० ॥ ५ ॥ जीरे आग्रह क रीने वणिक ते, तेडी आव्यो निज आगार रे ॥ सु० ॥ भगति जुग ति भलि साचवी, पतो देइ भोजन आहार रे ॥ सु० ॥ श० ॥ ६ ॥ जीरे वणिक हरिबल कारणें, रहेवाने दीधा आवास रे ॥ सु० ॥ कनकरयणमय मालीयां, पतो सोह रवि ज्युं प्रकाश रे ॥ सु० ॥ शु० ॥ ७ ॥ पतो दारा करयो जइ गेहमें, पतो हरिबलें आ णि उल्लास रे ॥ सु० ॥ शकुनतणा परभावथी, पतो पुण्यें ल हियो सुवास रे ॥ सु० ॥ शु० ॥ ८ ॥ हिवे हरिबल पूछे वणिक

ने, तुम नाम कहो गुणवंत रे [illegible] दम.
मुझ नाम छे श्रीपति मंत रे ॥ सु [illegible] ना।
सुणी नर हरिबले श्रीपति [illegible] ।
सनमानीयो, पछी [illegible] सु० ॥
॥ १० ॥ [illegible] मध्य रे
॥ सु ॥ मानवभव [illegible] आय रे
॥ सु० ॥ गु० ॥ ११ ॥ पछी [illegible] देव
दान उछाह रे । सु० [illegible] हरिब
लना वोरु अथाह रे ॥ सु [illegible]
मृदंगना. पछी [illegible]
आभरण. पछी हीर [illegible] सु [illegible]
पुरमें वारही, पछी [illegible] सु [illegible]
नृप भागले. पछी हरिब [illegible] ॥
॥ १४ ॥ पछी श्रीपति [illegible] पछी [illegible]
॥ सु० ॥ भुजबली भीम समो वडो पछी दाने विक्रम सोग रे
॥ सु० ॥ गु० ॥ १५ ॥ आव्यो आपणा नगरमां पछी पर्दे
शी प्राहुणो मोर रे ॥ सु० ॥ वसन्तश्री नम आगजा पछी रूप
रंभ नकार रे ॥ सु० ॥ गु० ॥ १६ ॥ पछी [illegible] दरबारमां,
पछी हरिबल केरी वात रे ॥ सु० ॥ श्रवणे [illegible] पछी
वीरबल केरो जात रे ॥ सु० ॥ गु० ॥ १७ ॥ मदनवेग नृप मा
[illegible], पछी मनमें हुओ वैराग रे ॥ सु० ॥ ते [illegible],
पछी जोडु ते आह [illegible] रे ॥ सु० ॥ गु० ॥ १८ ॥ [illegible]
नृप तदा. पछी सचिवने दीध आदेश रे ॥ सु० ॥ [illegible]
तेडीने, तमें आवजो अत विशेष रे ॥ सु० ॥ गु० ॥
[illegible] सचिव तिहां जई, हरिबलने कीध प्रणाम रे ॥ सु०
[illegible] तेडे तुम प्रभो, तुमें आवो आतमराम रे ॥ सु० ॥ गु०

॥ २० ॥ उठो हरिबल ततखिणे, घरयो अश्व रत्न गुण गेह रे ॥ सु० ॥ भेट मली नृप आगले, जइ मूकी नृप मनमेह रे ॥ ॥ सु० ॥ गु० ॥ २१ ॥ नृप पण हरिबलने तदा, एतो उठीने दीधी बांह रे ॥ सु० ॥ बेठा एकण गादीयें, एतो हरिबल नृप उछाह रे ॥ सु० ॥ गु० ॥ २२ ॥ आगम नीगमनी करी, एतो वे वरी वातनी गोठि रे ॥ सु० ॥ अन्यो अन्य राजी थया, जिम कर चडे साकर पोठि रे ॥ सु० ॥ गु० ॥ २३ ॥ सागर देव प्रसादथी, एतो हरिबल केरूं तेज रे ॥ सु० ॥ राज्यसभा दिक नृप मनुं, एतो देखी वाध्युं हेज रे ॥ सु० ॥ गु० ॥ ॥ २४ ॥ बंदीजन बिरदावली, एतो बोले सबी बंध रे ॥ सु० ॥ माता धीगर्भे जनमीयो, एतो वीरबल कुल अवतंस रे ॥ सु० ॥ गु० ॥ २५ ॥ हरिबल गुण नृप सांभली, एतो मंत्रीसर पद दीध रे ॥ सु० ॥ आभूषन अंगे ठवी, एतो नृपें निजबंधव कीध रे ॥ सु० ॥ गु० ॥ २६ ॥ अश्व अमूलक पालखी, एतो हरिबल चडवा काज रे ॥ सु० ॥ एतो आपे नृप हर्षे करी, एतो मस्तक वधारी लाज रे ॥ सु० ॥ गु० ॥ २७ ॥ एतो मठे आव्या तुमे नयरमें, तुम आवे वाध्युं हम हेत रे ॥ सु० ॥ नगरी भन पावन थई, एतो दिन दिन चडते तेज रे ॥ सु० ॥ ॥ गु० ॥ २८ ॥ इम मनमानी बोलावियो, एतो वसंतसिरिने गेह रे ॥ सु० ॥ मन्दिर करे हाथ आदमी, एतो पुन्ये लक्ष्मे पह रे ॥ सु० ॥ गु० ॥ २९ ॥

॥ दुहा ॥ हरिबल ते निज मंदिरे, आव्यो करी आनंद ॥ वसंत सिरि हरखित थई, देखी प्रियुनो रंग ॥ ॥ १ ॥ मदन पेम तूटो नहीं, भोगे निशदिन मेव ॥ बोध घोर दरसालनी, रोमंच करे वासवेब ॥ २ ॥ हाम हुकुम हरिबल तणो, मसो निवारानव ॥ मीरण सचिव केरी रहा, अलगा थई

॥ ख० ॥ ४ ॥ तुमथी थावो अमे महोटा, तुमें छो वंछित पोटा रे ॥ तुमें छो गिरुवा गायर पेटा, तुम नजरें थाउं येटा रे ॥ ख० ॥ ५ ॥ तुम सिर महोटो छे परमेसर, जगशिर प्रभु तुमें सहुना रे ॥ तुमें छो जगमें कर्त्ता हर्त्ता, शुं कहीयें किहुना रे ॥ ख० ॥ ६ ॥ इणिपरें मीठे वचनें नृपने, रीझवो हरिबल बोले रे॥ अरज सुणो एक प्रभुजी हमारी, नीतरु वचन ते खोले रे ॥ ॥ ख० ॥ ७ ॥ नगर सहित तुमें राज पधारो, इम घरे भोजन करवा रे ॥ हुं आव्यो छुं तेडवा सारु, तुमने जिमण आवरवा रे ॥ ख० ॥ ८ ॥ नव हरखित थइ नृप परिवारें, हरिबल मंदिर आवे रे ॥ सोवन थाल कचोलां मांडी, निजसी पासें पिरसावे रे ॥ ख० ॥ ९ ॥ कुमरी नवनवा सिणगार पेहरी, नृपने भोजन पीरसे रे ॥ हरिबल पिण नृप जिमता नाखे, पंखे पवन जगीसे रे ॥ ख० ॥ १० ॥ एकविश जातनी सुखडी पिरसी, फलने मीठा मेवा रे ॥ सिंहकेसरीया मोदक महोटा, देवे आरोगे एहवा रे ॥ ख० ॥ ११ ॥ अमृत पाक न आंबां पोली, श्रीखंड सीरा सुंहाली रे ॥ शालि दाल ने घृत परनालि, पिरसे ज्यु गंगा वाली रे ॥ ख० ॥ १२ ॥ खारां खाटां तिखां व्यंजन, बत्रीश जातिनां पामे रे ॥ नृप आदें नगरीमहाजन ते, जिमतां तृप्ति न पामे रे ॥ ख० ॥ १३ ॥ जिमतां जिमतां अन्योअन्यें, रसवती जीभे वखाणे रे ॥ के शुं देव आकर्षी रसोइ, हरिबलें करि इण टाणे रे ॥ ख० ॥ १४ ॥ रसोयावाडे मिल्या जन लाख, सुरे मन आल्हादें रे ॥ अमली भंगी जंगी जन ते, कीधां भोजन स्वादें रे ॥ ख० ॥ १५ ॥ पान सोपारी तबोल रंगे, दे सुखासनी चुकी रे ॥ इण परि नगरी सारी जिमाडी, भागोलें चोगा मुकी रे ॥ ख० ॥ १६ ॥ पुरमें जस पडहो वजडावी, हरिबलें ते जस लीधे रे ॥ धीवर कुल लहि हरिबल पोते, सुकृत

भकश ॥ ३ ॥ हरिबल नृपनुं एक मन, दीसंता दन में
बाझी पूरण मीलही, ज्युं नख मांसने होय ॥ ४ ॥
सिरि अपछर समी, पामी पुण्य संयोग ॥ दोगुंदक सुरनी
हरिबल भोगवे भोग ॥ ५ ॥ एक दिन बेठा रंगमें,
करे विचार ॥ नृप नगरीने नोतरी, दीजे भोजन सार
॥ ६ ॥ तव प्यारी पियुने कहे, सांभलो प्राणाधार ॥
वातें कुण ना कहे, करतां पुण्य उपचार ॥ ७ ॥ एक
बात विचार छे, धारो चित्त मझार ॥ दीपक लेइ दे
तेडो नृप आगार ॥ ८ ॥ नृप मंत्री ने चारीयो, कागा
सोनार ॥ एना नेहे आपणां, कीजें कोडि प्रकार ॥ ९ ॥
माटे तुमने कहुं, करजो समजी काम ॥ नृप नगरीने
थो भोजन अभिराम ॥ १० ॥ सांभल गोरी माहरी,
कही तें वात ॥ जो छे दाझ्या पाथरा, शुं करशे नृप घा
॥ ११ ॥ वर्ष्ये वैरि भाइडा, पुण्ये पाप विलाय ॥ पुण्य
क जो कीजिये, तो मयर्का दुःख जाय ॥ १२ ॥ ते माटे
मस्त पिया, जो प्रभु दीधी आय ॥ तिनणे हाथें दीजियें,
तें आवे साय ॥ १३ ॥

॥ ढाल ९ मी ॥ गणधर दश पूर्वधर सुंदर ॥ अथवा ॥
कहीं आव्यो अब गर्ने ॥ ए देशी ॥ हिवे हरिबल
घरीने, भानमर्गे मेली रे ॥ गोधूम तंदुल मिसिरी संडा,
सामग्री मेली रे ॥ १ ॥ षटरस भोजन सार निपाई,
देव प्रभावें रे ॥ नोतरु देवा नृप दरबारें, हरिबल पोतें जावे
॥ म० ॥ २ ॥ आग्रह करि निज भागन आवे, हरिबलने नृप
हेते र ॥ मदनवेग कहे हरिबलने, तुमें छो जीवन जेते रे
॥ म० ॥ ३ ॥ तव नृपने हरिबल कर जोडी, मांगे स्वा
स्वामी रे ॥ हुं सेवक छु तुम पद केरो, तुम मुझ अन्तर्यामी रे

॥ ख० ॥ ४ ॥ तुमथी थावो अमे महोटा, तुमें छो वंछित पोटा रे ॥ तुमें छो गिरुवा गायर पेटा, तुम नजरें थाउं येटा रे ॥ ख० ॥ ५ ॥ तुम सिर महोटो छे परमेसर, जगसिर प्रभु तुमें सहूना रे ॥ तुमें छो जगमें कर्ता हर्ता, शुं कहीयें ‍ि‍वहूना रे ॥ ख० ॥ ६ ॥ इणिपरें मीठे वचनें नृपनें, रीझवी हरिबल बोले रे॥ अरज सुणो एक प्रभुजी हमारी, नीतरु वचन ते खोले रे ॥ ॥ ख० ॥ ७ ॥ नगर सहित तुमें राज पधारो, हम घरे भोज न करवा रे ॥ हुं आव्यो छुं तेडवा सारु, तुमने जिमण आचर वा रे ॥ ख० ॥ ८ ॥ तव हरखित थइ नृप परिवारें, हरिबल मंदिर आवे रे ॥ सोवन थाल कचोलां मांडी, निजसी पासें पिरसावे रे ॥ ख० ॥ ९ ॥ कुमरी नवनवा सिणगार पेहरी, नृपने भोजन पीरसे रे ॥ हरिबल विण नृप जिमता नाखि, पंखे पवन जगीसे रे ॥ ख० ॥ १० ॥ एकविश जातनी सुखडी पिर सी, फलने मीठा मेवा रे ॥ सिंहकेसरीया मोदक महोटा, देवे आरोगे एहवा रे ॥ ख० ॥ ११ ॥ अमृत पाक न आंबा पोली, श्रीखंड सीरा सुंहाली रे ॥ शालु दाल ने घृत परनालि, पिर से ज्युं गंगा वाली रे ॥ ख० ॥ १२ ॥ खारां साटां तिखां व्यं जन, बत्रीश जातिनां थामे रे ॥ नृप आदें नगरीमहाजन ते, जिम नां तृप्ति न पामे रे ॥ ख० ॥ १३ ॥ जिमतां जिमतां अन्योअन्यें, रसवती जीमें वखाणे रे ॥ के शुं देव आकर्षी ग्गोइ. हरिबलें करि इण टाणे रे ॥ ख० ॥ १४ ॥ रसीयावाळे मिलया जन व्यार, हुंसे मन आल्हादें रे ॥ अमली भंगी जंगी जन ते, कीधां भोजन स्वादें रे ॥ ख० ॥ १५ ॥ पान सोपारी तंबोल रंगें, टै मुखवासनी मूकी रे ॥ इण परि नगरी सारी जिमाडी, भागोले चोग्गा मूकी रे ॥ ख० ॥ १६ ॥ पुरमें जस पडहो वजडावी, ह रिबलें ते जस लीधुं रे ॥ धीवर कुल लहि हरिवक पोतें, सुकृत

मकरा ॥ ३ ॥ हरिबल नृपनें एक मन, दीसंता धन
साजी पूरण प्रीतडी, ज्यूं नख मांसने होय ॥ ४ ॥
सिरि अपछर समी, पामी पुण्य संयोग ॥ दोगंदुक सुर
हरिबल भोगवे भोग ॥ ५ ॥ एक दिन वेग रंगभ,
करे विचार ॥ नृप नगरीने नोतरी, दीजें भोजन स
॥ ६ ॥ तव प्यारी पियुने कहे, सांभलो माणाधार
यातें कुण ना कहे, करतां पुण्य उपचार ॥ ७ ॥ प
वात विचार छे, धारो चित्त मझार ॥ दीपक लेइ दे
तेडी नृप आगार ॥ ८ ॥ नृप मंत्री ने चारीयो, का
मोनार ॥ एना नेहे आपणां, कीजें कोडि मकार ॥
माटे तुमने कहे, करजो समजी काम ॥ नृप नगरीने
धो भोजन अभिराम ॥ १० ॥ सांभल गोरी माहरी,
कही तें वात ॥ जो छे दाडाडा पाधरा, शुं करशे नृप
॥ ११ ॥ पण्यें वैरी ओसला, पुण्यें पाप विलाय ॥ पुण्य
ह जो कीजियें, तो सघलां दुख जाय ॥ १२ ॥ ते माटे
मन्त्र मिया, तो प्रभु दीर्घ आय ॥ जिनने हाथें दीजियें,
ते भावे साथ ॥ १३ ॥

॥ ढाल ९ मी ॥ गणधर दश पूरवधर सुंदर ॥ अथवा ॥
कही आव्यो जब गेनें ॥ ए देशी ॥ लिये हरिबल
धर्मोने, भातमर्गो भेली रे ॥ गोधूम तंदुल मिसिरी संहा,
सामग्री मेली रे ॥ १ ॥ षटरस भोगन सार निपाई, स
हेर मभार रे ॥ नोतरुं देवा नृप दरबारें, हरिबल पोतें जाव
॥ स० ॥ २ ॥ आग्रह करि निज आसन आपे, हरिबलने
इने र ॥ मदनवेग कहे हरिबलने, तुमें छो जीवन मेरे रे
॥ स० ॥ ३ ॥ तव नृपने हरिबल कर जोडी, भांखे
स्यानी रे ॥ हुं सेवक छुं तुम पद केरो, तुम मुझ अंतरजामी रे

। ख० ॥ ४ ॥ तुमथी पाम्यो अमे महोटा, तुमे छो वंछित देवा रे ॥ तुमे छो गिरुवा सायर पेटा, तुम नजरें थाउं घेटा रे ॥ ख० ॥ ५ ॥ तुम शिर महोटो छे परमेसर, जगदीशर प्रभु तुमे सहुना रे ॥ तुमे छो जगमें कर्ता हर्ता, शुं कहीयें बहुना रे ॥ ख० ॥ ६ ॥ इणिपरें मीठे वचनें नृपने, रीझवी हरिबल बोले रे ॥ अरज सुणो एक प्रभुजी हमारी, नोतरु वचन ते खोले रे ॥ ॥ ख० ॥ ७ ॥ नगर सहित तुमे राज पधारो, हम घरे भोजन करवा रे ॥ हुं आव्यो छुं तेडवा सारु, तुमने जिमण आदरवा रे ॥ ख० ॥ ८ ॥ तव हरखित थइ नृप परिवारें, हरिबल मंदिर आवे रे ॥ सोवन थाल कचोलां मांडी, निजस्री पासें पिरसावे रे ॥ ख० ॥ ९ ॥ कुमरी नवनवा शिणगार पेहरी, नृपने भोजन पीरसे रे ॥ हरिबल पिण नृप जिमना नासे, पंखे पवन जगीसें रे ॥ ख० ॥ १० ॥ एकविश जातनी सुखडी पिरसी, फलने मीठा मेवा रे ॥ सिंहकेसरीया मोदक महोटा, देवें आगेसे पहवा रे ॥ ख० ॥ ११ ॥ अमृत पाक न आंबा पोली, श्रीखंड सोरा सुंहाली रे ॥ शाल दाल ने घृत परनालि, घिरसे जु गगा वाली रे ॥ ख० ॥ १२ ॥ खारां खाटां तिखां व्यंजन, बत्रीश जातिनां थाये रे ॥ नृप आदें नगरीमहाजन ते, जिमतां तृप्ति न पामे रे ॥ ख० ॥ १३ ॥ जिमतां जिमतां अन्योअन्यें, रसवती जीभें वखाणे रे ॥ के शुं देव आकर्षी रसोइ, हरिबलें करि इण टाणे रे ॥ ख० ॥ १४ ॥ रत्नीयावाडे मित्या जन ज्यारें, हुआ मन आल्हादें रे ॥ अमली भंगी जंगी जन ते, कीधां भोजन स्वादें रे ॥ ख० ॥ १५ ॥ पान सोपारी तंबोल रंगें, दे मुखवासनी छूकी रे ॥ इण परें नगरी सारी जिमाडी, भाणोले पोसा मूकी रे ॥ ख० ॥ १६ ॥ प्रसरे जस पडहो वजडावी, हरिबलें ते जस लीधुं रे ॥ धीवर कुल लहि हरिबल पाने, सुकृत

मकाश ॥ ३ ॥ हरिबल नृपनूं एक मन, दीसंता धन
पाञी पूण्य मीलडी, ज्युं नख मांसने होय ॥ ४ ॥
सिरि अपछर समी, पामी पुण्य संयोग ॥ दोगंदुक सुरनी
हरिबल भोगवे भोग ॥ ५ ॥ एक दिन बेठा रंगमें,
करे विचार ॥ नृप नगरीने नोतरी, दीजे भोजन सार
॥ ६ ॥ तव प्यारी पियुने कहे, सांभलो प्राणाधार ॥
वातें कुण ना कहे, करतां पुण्य उपचार ॥ ७ ॥ पण
वात विचार छे, धारो चित्त मझार ॥ दीपक लेइ दे
सेहां नृप आगार ॥ ८ ॥ नृप मंत्री ने चार्डायो, काग
मेलनार ॥ एना नेहे आपणां, कीजें कोडि प्रकार ॥ ९ ॥
माटे तुमने कहुं, करजो समजी काम ॥ नृप नगरीने
यो भोजन अभिराम ॥ १० ॥ सांभल गोरी मारडी,
कही तें वात ॥ जो छे दाःहाडा पाधरा, शुं करशे नृप
॥ ११ ॥ पुण्यें वेरी ओथला, पुण्यें पाप ढिलाय ॥ पुण्य
ल जो कीजियें, तो सघलां दुख जाय ॥ १२ ॥ ते माटे
मल्द विया, जो प्रभु दीधी आय ॥ जिनणे हाथें दीजियें,
ते भावे साथ ॥ १३ ॥

॥ ढाल ९ मी ॥ सगवर दम पुरंवर सुंदर ॥ अथवा ॥
कहीं आव्यो तव गर्मे ॥ ए देशी ॥ हिवे हरिबल
पणेंने, भावमराने भेळी रे ॥ गोधूम तंदुल मिशिरी खंड,
सामग्री मेळी रे ॥ १ ॥ सडरस भोजन सार निपाई
देव प्रभावे रे ॥ नोतरु देवा नृप दरबारें, हरिबल पोते जो
॥ स्व० ॥ २ ॥ आग्रह करि निज आसन आपे, हरिबलने
हर्ने र ॥ मदनवेग कहे हरिबलने, तुमें हो जीवन जेव
॥ स्व० ॥ ३ ॥ नव नृपने हरिबल कर जोडी, मांगे नां
स्वामी रे ॥ हुं सेवक छु तुम पद केरो, तुम मुज अंतरजामी

॥ ख० ॥ ४ ॥ तुमथी थाशो अमे महोटा, तुमें छो वंछित पोटा रे ॥ तुमें छो गिरुवा सायर पेटा, तुम नजरें थाउं पेटा रे ॥ ख० ॥ ५ ॥ तुम सिर महोटो छे परमेसर, जगदीश्वर प्रभु तुमें सहुना रे ॥ तुमें छो जगमें कर्ता हर्ता, शुं कहीयें ॥ वहुना रे ॥ ख० ॥ ६ ॥ इणिपरें मीठे वचनें नृपने, रीझवी हरिबल बोले रे॥ अरज सुणो एक प्रभुजी हमारी, मोतरुं वचन ते खोले रे ॥ ॥ ख० ॥ ७ ॥ नगर सहित तुमें राज पधारो, हम घरे भोज न करवा रे ॥ हुं आव्यो छुं तेडवा सारु, तुमने जिमण आव वा रे ॥ ख० ॥ ८ ॥ तव हरखित थइ नृप परिवारें, हरिबल मंदिर आवे रे ॥ सोवन थाल कचोलां मांडी, निजस्त्री पासें पिरसावे रे ॥ ख० ॥ ९ ॥ कुमरी नवनवा शिणगार पेहरी, न पने भोजन पीरसे रे ॥ हरिबल पिण नृप जिमवा नाखे, परें पवन जगीसें रे ॥ ख० ॥ १० ॥ एकविदा जातनी सुखडी वि सी, फलने मीठा मेवा रे ॥ सिंहकेसरीया मोदक महोटा, दे आगेंगे एहवा रे ॥ ख० ॥ ११ ॥ अमृत पाक न आंबा पोली श्रीखंड सीरा सुंहाली रे ॥ शाल दाल ने घृत परनालि, पि से ज्युं गंगा वाली रे ॥ ख० ॥ १२ ॥ खारां खाटां तिखां व जन, बत्रीश जातिनां धामे रे ॥ नृप आदें नगरीमहाजन ते, जि तां तृप्ति न पामे रे ॥ ख० ॥ १३ ॥ जिमतां जिमतां अन्योअन्ये रसवती जोंधे वखाणे रे ॥ के शुं देव आकर्षी रसोइ, हरिबं करि इण टाणे रे ॥ ख० ॥ १४ ॥ रमीपावाने मिरपा ज ठार, सुरे मन आल्हादें रे ॥ अमली भंगी जंगी जन ते, कीर भोजन स्वादें रे ॥ ख० ॥ १५ ॥ पान सोपारी तंबोल रंगे, मुखवासनी बकी रे ॥ इण परि नगरी सारी जिमाडी, मागो चोखा मूकी रे ॥ ख० ॥ १६ ॥ पुरमें जस पडहो वजडावी, हरिबलें ते जस लीधुं रे ॥ धीवर कुल लहि हरिबल पोत, सुह

मकश ॥ ३ ॥ हरिबल नृपनुं एक मन, दीसंता दन पाळी पूरण मीतडी, ज्यं नख मांसने होय ॥ ४ ॥ सिरि अपछर समी, पामी पुण्य संयोग ॥ दोगुंदक सुर्नी हरिबल भोगवे भोग ॥ ५ ॥ एक दिन बेठा रंगमें, करे विचार ॥ नृप नगरीने नोतरी, दीजें भोजन सार ॥ ६ ॥ तव प्यारी प्रियुने कहे, सांभलो प्राणाधार ॥ वातें कुण आ कंइ, करतां पुण्य उपचार ॥ ७ ॥ पण वात विचार छे, धारो चित्त मझार ॥ दीपक लेइ दे तेडी नृप आगार ॥ ८ ॥ नृप मंत्री ने पाठीयो, काग सोनार ॥ एना नेहे आपणां, कीजें कोडि प्रकार ॥ ९ ॥ माटे तुमने कहुं, करजो समजी काम ॥ नृप नगरीने घो भोजन अभिराम ॥ १० ॥ सांभल गोरी माहरी, कही तें वात ॥ जो छे दाडाडा पाधरा, शुं करशे इप ॥ ११ ॥ पुण्यें वैरि आंवला, पुण्यें पाप डिलाय ॥ पुण्य रु जो कीजियें, तो सघलां दुःख जाय ॥ १२ ॥ ते माटे मन्द नियो, जो प्रभु दीधी आय ॥ तिनणे हाथें दीजियें, ते आवे साथ ॥ १३ ॥

॥ ढाळ ९ मी ॥ गणधर दस पूर्वधर सुंदर ॥ अथवा ॥ कही आव्यो जब नगें ॥ ए देशी ॥ हिवे हरिबल घरिने, मानमनें भेली रे ॥ गोधूम तंदुल मिसिरी खांड, सामग्री मेली रे ॥ १ ॥ सरस भोजन सार निपाई, देव समारे रे ॥ नौतरुं देवा नृप दरबारें, हरिबल पोतें जाव ॥ स० ॥ २ ॥ आग्रह करि निज आसन आपे, हरिबलने हेतें र ॥ मदनवेग कहे हरिबलने, तुंपें छो जीवन जेतें रे ॥ स० ॥ ३ ॥ तव नृपने हरिबल कर जोडी, मांगे सा स्वामी रे ॥ हुं सेवक छु तुम पद केरो, तुम मुझ अंतरजामी रे

॥ ख० ॥ ४ ॥ तुमथी थावो अमे महोटा, तुमे छो वंछित
पोटा रे ॥ तुमे छो गिरुवा गायर पेटा, तुम नजरें थाउं पेटा रे
॥ ख० ॥ ५ ॥ तुम चिर महोटा छे परमेसर, जगीशर प्रभु तुमे
सहुना रे ॥ तुमे छो जगमें कर्ता हर्ता, शुं कहीयें ॰वहुना रे
॥ ख० ॥ ६ ॥ इणिपरें मीठे वचनें नृपने, रीझवी हरिवल बोले रे॥
अरज सुणो एक प्रभुजी हमारी, नौतरुं वचन ते खोले रे ॥
॥ ख० ॥ ७ ॥ नगर सहित तुमें राज पधारो, हम घरे भोज
न कग्वा रे ॥ हुं आव्यो छुं तेडवा सारु, तुमने जिमण आचर
वा रे ॥ ख० ॥ ८ ॥ तव हरखित थइ नृप परिवारें, हरिवल
मंदिर आवे रे ॥ सोवन थाल कचोलां मांडी, निजसी पासें
पिरसावे रे ॥ ख० ॥ ९ ॥ कुमरी नवनवा सिणगार पेहरी, नृ
पने भोजन पीरसे रे ॥ हरिवल पिण नृप जिमता नाखे, पंखे
पवन जगीसे रे ॥ ख० ॥ १० ॥ एकविध जातनां सखडी विर
सी, फलने मीठा मेवा रे ॥ सिंहकेसरीया मोदक महोटा, देवे
आरोगे एहवा रे ॥ ख० ॥ ११ ॥ अमृत पाक न आंबा पोली,
श्रीखंड सीरा सुंहाली रे ॥ शाल दाल ने घृत परनालि, पिर
से ज्यु गंगा चाली रे ॥ ख० ॥ १२ ॥ खारां खाटां विविध व्यं
जन, बत्रीस जातिनां धामे रे ॥ नृप आदें नगरीमहाजन ते, जिम
तां तृप्ति न पामे रे ॥ ख० ॥ १३ ॥ जिमतां जिमतां अन्योअन्यें,
रसवती जीभे वखाणे रे ॥ के शुं देव आकर्षी रसोइ, हरिवलें
करि इण टाणे रे ॥ ख० ॥ १४ ॥ रसीयावाले मिल्या जन
उत्तर, सुंदर मन आल्हादें रे ॥ अमली भंगी जंगी जन ते, कीधां
भोजन स्वादें रे ॥ ख० ॥ १५ ॥ पान सोपारी तंबोल रंगे, दे
मुखवासनी बुकी रे ॥ इण परि नगरी सारी जिमाडी, भागोले
चोगा मूकी रे ॥ ख० ॥ १६ ॥ पुरमें जस पडहो वजडावी, ह
रिवलें ते जस लीधुं रे ॥ धीवर कुल लहि हरिवल पोते, सुकृत

ईश्वर अमर दो भ्राता, रवि शशिपरें दीपंता रे ॥ स० ॥
॥ ३० ॥ ते गुरुचरण पसायें लब्धि, पुण्य उपर परबंध रे ॥
पहेलो उल्लास कह्यो नव ढालें, हरिबल केरो संबंध रे ॥स० ॥३१॥
॥ इति श्रीहरिबलचरित्रे हरिबल राजर्षि पुरवर्णन नृपवर्णना
दि प्रथमउल्लासः संपूर्णः ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीयउल्लासः प्रारंभ्यते ॥

॥ दुहा ॥ परम ज्योति प्रकाश कर, त्रिभुवन तिलक समान
॥ गरिब निवाज गोडी धणी, भयभंजन भगवान ॥ १ ॥
अविनाशी अव्यय अरुप, अशरीरी अरिहंत ॥ ज्योतिरूप जग
दीश जे, ते प्रणमुं शुभ संत ॥ २ ॥ कविजन हृदय महीतलें,
शारद मान विशाल ॥ वचनामृत वरसे सदा, प्रगट थई उजमाल
॥ ३ ॥ मूरख मूंगां बोबडा, अकुलविहूणा जेह ॥ तस घट
भीतरमें वसी, सुरगुरु सम करे तेह ॥ ४ ॥ परउपगारी मातजी,
बाला त्रिपुरा सोय ॥ ते हुं प्रणमुं भारती, जिण मुज वंछित
होय ॥ ५ ॥ कोविद केशर अमरना, चरण कमल नमि ताम
॥ हरिबल मच्छीगायनो, पभणुं बिजो उल्लास ॥ ६ ॥ रंगीली
जनसभा, सांभल वेधक जाण ॥ मधकारनी परें रसलीण, गुण
वंत भाव प्रमाण ॥ ७ ॥ सरस नीरस रमिया लहे, चातुर
वेधक जेह ॥ पण मूरख पशु सारखा, शुं जाणे रस तेह ॥ ८ ॥
रागनिरस मधुकर लहे, जे सेवे वनराय ॥ पण शुं जाणे जो
वडो, सूकां लकड खाय ॥ ९ ॥ खटपद सरिखा चतुर नर,
वेधक वचन रसाल ॥ राचे सरस कथा सुणी, विकथा तजी वि
चाल ॥ १० ॥ वखाणे श्रोता सुणी, साहामो साहामी दृष्ट ॥
एक सरीखा जो हुवे, सुणतां उपजे मिष्ट ॥ ११ ॥ तेवांटे भा

कारज कीधुं रे ॥ ख० ॥ १७ ॥ मदने वेगें रसवती जिमतां, संतोसिरी ते दीठी रे ॥ मृगनयणीनुं रूप सुकोमल, देखत मीठी रे ॥ ख० ॥ १८ ॥ नृपनुं मन विव्हल थयुं जिमतां, कामें थो जोरो रे ॥ नृप चिंते मुझ स्त्री छे भलेरी, पण नहि तोरी रे ॥ ख० ॥ १९ ॥ खटरस भोजननी सुखडाई, मनमें पेठी रे ॥ कामज्वरथी भोजन भूल्यो, सीनी रे ॥ ख० ॥ २० ॥ खाधुं नरवाधुं करीने नृपते,मन विमनो थ्यो रे ॥ असेनियो थइ नृप घरे वलीयो, जाणे थ्यो रे ॥ ख० ॥ २१ ॥ चमकी चितमें चतुरा ततखिण, नृप मन विगड्युं रे ॥ तव प्रीतमने कहे निज प्यारी, चेतो हेत उघड्युं रे ॥ ख० ॥ २२ ॥ तव हरिबल कहे सांभल भावी हशे ते थाशे रे ॥ खणशे ते पडशे खाईमां, आपणुं न जाशे रे ॥ ख० ॥ २३ ॥ चिहुं जगमें हरिबलनी कीर्ति, ले गुणिजन जोडा रे ॥ सुखें सबाधे दंपति दोये, सुखमें हे दीठा रे ॥ ख० ॥ २४ ॥ जोजो भविया धीवर जाति, जो जीव उगार्यो रे ॥ सुख्यातिथ मनवंछित फलियुं, जग विस्तार्यो रे ॥ ख० ॥ २५ ॥ वृद्ध परंपर सो... हीरविजय सूरिराया रे ॥ साह अकब्बर जे प्रतिबोधी, दीपाया रे ॥ख०॥२६॥ तस शिष्य धर्मविजय धर्मधोरी, सयल धर्म जाने रे ॥ कीर्तिविजय मुकुमणि सोहे, तस शिष्य ... गाजे रे ॥ ख० ॥ २७ ॥ तस शिष्य कुशलविजय ... दिनमणि तेज सवाया रे ॥ तस बंधव गणि कमल विजय तस अनशन सुहाया रे ॥ ख० ॥ २८ ॥ तस शिष्य पंडित ...र्यो विजय गुरु, मोहे साधु नगीना रे ॥ ज्ञान क्रिया ... गुं आगरो, आतम साधन कीना रे ॥ ख० ॥ २९ ॥ तस ...ष्य दो हुआ साधु शिरोमणि, कुमती मद भंजता रे ॥

॥ आ० ॥ आत्मा वेदी सनातने ॥ ८ ॥ भरदा भुवा नेह,
कारण काढे तेह ॥ आ० ॥ आया ते शीघ्र घुणावता ॥ जडी
बुट्टीना जाण, गारुडी करता वखाण ॥ आ० ॥ आया ते आप
वखाणता ॥ ९ ॥ वींगडला जे कडाय, हनुमत हाक धजाय ॥
आ० ॥ आया ते शक्ति उपासनी ॥ भगत वेरागी थाय, सांबा
डीनां बनाय ॥ आ० ॥ आपाने दंत उच्चामनी ॥ १० ॥ इणि
परे निन्दिया लोक, उदरने कारण फोक ॥ आ० ॥ चिकित्सा
करवा गुरु तणी ॥ निज निज ते कला सवे, करवा मांडी अ
गर्व ॥ आ० ॥ निज निज जश लेवा भणी ॥ ११ ॥ कहे
एक नाडी देख, दूसने तो रोग अशेष ॥ आ० ॥ दाह ज्वर
मूर्छा नडी ॥ तांबे कोने वेध, ए मुझ गोळी सध ॥ आ० ॥
छत्रीस रोग टले सही ॥ १२ ॥ जे हता वैद्य ते सवे, मनशुं रा
खता गर्व ॥ आ० ॥ पानी मठ पोथी ग्रहा ॥ बहु मे कीध उ
पाय, पण तुरगेग न जाय ॥ आ० ॥ वैद्य सहुना पोथी थका
॥ १३ ॥ बोल्या सोनी जाण, मांचे एगल प्रमाण ॥ आ० ॥
मद पीरा छे गदने ॥ ते माटे करो होम, जाप जपुं रोगनो ओ
म ॥ आ० ॥ गोठान पो तुजे आपने ॥ १४ ॥ जाप जपो
गरा सत, जिम ग्रह होवे नपाश ॥ आ० ॥ ते ग्रह तूसनी
हता करे ॥ बोल्या मनमगन एम, मानो ते जिन्दु जेम ॥
॥ आ० ॥ टमनो दूर दुख हथे ॥ १५ ॥ एक वदे पेटने नार,
छे भरेलि मारतर ॥ आ० ॥ रेचनो गोली कीजिये ॥ वदे
एक गोळनो रोग, दीठो एवो योग ॥ आ० ॥ चूरन छूटी दी
जिये ॥ १६ ॥ एक बोले नमोर, दुजे कोढिन व्यथाम ॥
आ० ॥ वैतरणी रिसान पड ॥ मुखे मुखावी नौक, पाडे
योग ॥ आ० ॥ दान डारे विसा जड ॥ १७ ॥
वैद्य, वाल्यो टळेणो वेद ॥ आ० ॥ पन जे

गुरु तुमें, सांभलजो चित लाय ॥ पग ने मृगणा मन करो, महिषी किन्नर न्याय ॥ १२ ॥ नृपने तेडी हरिबलें, की धी भक्ति विख्यात ॥ ते सुणजो भविपन तुमें, शी शी निपजे वात ॥ १३ ॥

॥ ढाल १ ली ॥ आछे लालनी देशी ॥ तेडी नृपने आगार, भोयण देइ सार ॥ आछे लाल ॥ हरिबलें कीव पहेरामणी ॥ माणी माणक लख लेय, अग आभूषण देय ॥ आ० ॥ वोलाव्यो नृप गृह भणी ॥ १ ॥ मदनवेग नृप ताम, मंदिर व लियां जाम ॥ आ० ॥ वसनसिरी मनमें वसी ॥ अंगनारूप निहाल, मनमां थइ चकचाल ॥ आ० ॥ नृप मननी हरखी गमी ॥ २ ॥ जीव रह्यो ललचाय, ज्युं मधु खग लपटाय ॥ ॥ आ० ॥ काम वशें करी लूंटियो ॥ कामातुर थयो राय, आकुल व्याकुल थाय ॥ आ० ॥ कामज्वरें नृप पुरियो ॥ ३ ॥ परवश थइ नृप देह, अनभजन वांछे तेह ॥ आ० ॥ विकल्प पूर्ण पर भयो ॥ खिण बाहिर खिण मांहि, जरून पडे खिण क्यांहि ॥ आ० ॥ कामिनीवाहण वाहियो ॥ ४ ॥ न गमे कुसुमनी सेज, न गमे अंतउरी हेज ॥ आ० ॥ राज काज पण न वि गमे ॥ न गमे पान तंबोळ, न गमे वात टंटोळ ॥ आ० ॥ भ्रत उदक मन नवि रमे ॥ ५ ॥ शशी परजाळ, मदनवेग म छगाल ॥ आ० ॥ वीराधि वीर हतो खरो ॥ मोह थाप लागी अंतर, पड्यो गिडम पेच ॥ आ० ॥ कामिनीयें करचो मात रो ॥ ६ ॥ नृप थयो मूर्च्छा अंतर, जाणीयें लाग्यो केन ॥ आ० ॥ मरण सचिवने तेडीया ॥ पहेली नव नवा वेश, थ थप याद भवेश ॥ आ० ॥ भाया मर्म न जोडिया ॥ ७ ॥ जाण्या जाणी विचार, पछा ने ग्याना दवेश ॥ आ० ॥ तेडा में बैठ राजने ॥ दशो दिशें दोव्यां मर्द, जाय नरीण ने गरे

॥ आ० ॥ आव्या तेडी लवाजने ॥ ८ ॥ भरडा भूवा जेह,
कारण काढे तेह ॥ आ० ॥ आया ते शीश धुणावता ॥ जडी
बुटीना जाण, गारुडी करता वखाण ॥ आ० ॥ आया ते आप
वखाणता ॥ ९ ॥ वीगडल्या जे कहाय, हनुमंत हाक वजाय ॥
आ० ॥ आया ते शक्ति उपासनी ॥ भगत वेरागी थाय, लांवा
चीत्रां वनाय ॥ आ० ॥ आयाने दंन उपासनी ॥ १० ॥ इणि
परें निन्दिया लोक, उदरने कारण फोक ॥ आ० ॥ चिकित्सा
करवा शुभ तणी ॥ निज निज ते कला सर्व, करवा मांडी अ
गर्व ॥ आ० ॥ निज निज जश लेवा भणी ॥ ११ ॥ कहे
एक नाडी देख, नृपने तो रोग अलेप ॥ आ० ॥ दाह ज्वर
मूर्छा लही ॥ हांकी बोले वैद्य, छे मुझ गोली सद्य ॥ आ० ॥
सर्वांग रोग हणे सही ॥ १२ ॥ जे हता वैद्य ते सर्व, मनशुं रा
खता गर्व ॥ आ० ॥ पाली मत पोथी रह्या ॥ वदु ते कोच उ
पाय. पन नृपरोग न जाय ॥ आ० ॥ वैद्य प्रमुख पोथी वड्या
॥ १३ ॥ जोस्या जोशी ताम, भांखे लगन प्रमाण ॥ आ० ॥
ग्रह पीडा छे रायने ॥ ते माटे करो होम, जाय ज्युं रोगनो जो
म ॥ आ० ॥ गोदान द्यो तुमें रायने ॥ १४ ॥ जाप जपो
सवा लक्ष, जिम ग्रह होवे प्रत्यक्ष ॥ आ० ॥ ते ग्रह नृपनी
रक्षा करे ॥ बोल्या भगतमल एम, मानो ने विष्णु जेम ॥
॥ आ० ॥ हसतां नृप मुख उच्चरे ॥ १५ ॥ एक कहे पेटमें मार,
छे अजीर्ण आहार ॥ आ० ॥ रेचनी गोली कीजियें ॥ कहे
एक गांठनो रोग, शीशो छड़ी योग ॥ आ० ॥ चूरण चूर्णी दी
जियें ॥ १६ ॥ भुवा बोले जगीश, नृपने छोटिक ख्वीस ॥
॥ आ० ॥ वेताकी दिलगन पड ॥ धूणे धूणावी शीश, पाडे
वहुलो चीस ॥ आ० ॥ वाण उतारे चिन्ता जड ॥ १७ ॥
मांड्यां मांडलां वेग, वाग्यां टोकरां तेम ॥ आ० ॥ पण ते

युक तुमें, सांभलजो चित लाय ॥ पग ते सुणजो मन करी, माहिपी किंचर न्याय ॥ १२ ॥ नृपने तेडी हरिवले, की धी भक्ति विख्यात ॥ ते सुणजो भविजन तुमें, शी शी निपजे वात ॥ १३ ॥

॥ ढाल १ ली ॥ आछे लालनी देशी ॥ तेडी नृपने आगार, भोयण देइ सार ॥ आछे लाल ॥ हरिवले कीध पहेरामणी ॥ माणी माणक लख लेय, अंग आभूषण देय ॥ आ० ॥ बोलाव्यो नृप गृह भणी ॥ १ ॥ मदनवेग नृप ताम, मंदिर बलियो जाम ॥ आ० ॥ वसंतसिरी मनमें वसी ॥ अंगनारूप निहाळ, मनमां थइ चकचाल ॥ आ० ॥ नृप मननी ढगली खसी ॥ २ ॥ जीव रह्यो ललचाय, ज्युं मधु संग लपटाय ॥ ॥ आ० ॥ काम वशे करी जूरियो ॥ कामातुर थयो राय, आकुल व्याकुल थाय ॥ आ० ॥ कामज्वरें नृप पूरियो ॥ ३ ॥ परवश थइ नृप देह, असमंजस बोले तेह ॥ आ० ॥ विरुदृष्टि पर भयो ॥ खिण बाहिर खिण मांहि, जरुन पडे किम क्यांहि ॥ आ० ॥ कामिनीवाहण वहिगयो ॥ ४ ॥ न गमे कुसुमनी सेज, न गमे अंतउरी हेज ॥ आ० ॥ राज काज पण नवि गमे ॥ न गमे पान तबोळ, न गमे वात टहोल ॥ आ० ॥ अन्न उदक मन नवि रमे ॥ ५ ॥ छबी परजाळाल, मदनवेग महाराल ॥ आ० ॥ वीराधि वीर हतो खरो ॥ मोह बाण लाग्यो अशेष, पड्यो गिरिंदा पेच ॥ आ० ॥ कामिनीयें करयो जामरो ॥ ६ ॥ नृप थयो मूरछा अचेत, जाणीयें लाग्यो प्रेत ॥ आ० ॥ मंत्री तांत्रिकने तेडीया ॥ पहेरी नव नवा वेश, सब धन धाइ अशेष ॥ आ० ॥ आया मंत्री न जेडिया ॥ ७ ॥ नाम्या जोगी विशेष, पट्टा जे स्याना हमेश ॥ आ० ॥ तेड्याने वैद्द राजने ॥ दशो दिशें दोड्या सर्व, जाण महीण ते सर्व

॥ आ० ॥ आव्या तेही लवाजने ॥ ८ ॥ भरडा भुवा जेह, कारण काढे तेह ॥ आ० ॥ आया ते शीश धुणावता ॥ जडी बुट्टीना जाण, गारुडी करता वखाण ॥ आ० ॥ आया ते आप वखानता ॥ ९ ॥ वीराउला जे कहाय, हनुमंत हाक बजाय ॥ आ० ॥ आया ते शक्ति उपासनी ॥ भगत वेरागी थाय, लांबा शींगां वनाय ॥ आ० ॥ आयाते दंन उपासनी ॥ १० ॥ इणि परें मिलिया लोक, उदरने कारण फोक ॥ आ० ॥ चिकित्सा करवा नृप तणी ॥ निज निज ते कला सर्व, करवा मांडी अ गर्व ॥ आ० ॥ निज निज जश लेवा भणी ॥ ११ ॥ कहे एक नाडी देख, नृपने तो रोग अशेष ॥ आ० ॥ दाह ज्वर मूर्च्छा लही ॥ टांकी बोले वैद्य, छे मुझ गोली सद्य ॥ आ० ॥ छत्रीश रोग हणे सही ॥ १२ ॥ जे हता वैद्य ते सर्व, मनशुं रा खता गर्व ॥ आ० ॥ पाली मठ पोपी रह्या ॥ बहु ले कीध उ पाय, पण नृपरोग न जाय ॥ आ० ॥ वैद्य समुख पोथी वह्या ॥ १३ ॥ बोल्या जोशी जाण, भांखे लगन प्रमाण ॥ आ० ॥ ग्रह पीडा छे रायने ॥ ते माटे करो होम, जाय ज्युं रोगनो जो म ॥ आ० ॥ गोदान द्यो तुमें रायने ॥ १४ ॥ जाप जपो सवा लक्ष, जिम ग्रह होवे प्रत्यक्ष ॥ आ० ॥ ते ग्रह नृपनी रक्षा करे ॥ बोल्या भगतजन एम, मानो ते विष्णु जेम ॥ ॥ आ० ॥ इमतो नृप सुख उच्चरे ॥ १५ ॥ एक कहे पेटमें भार, छे अजीर्ण आहार ॥ आ० ॥ रेचनी गोली कीजियें ॥ कहे एक गांठनो रोग, पीडे छड्डी योग ॥ आ० ॥ चूरण चूर्ण दी जियें ॥ १६ ॥ भुवा बोले गगीश, नृपने डाकिन खवीस ॥ ॥ आ० ॥ वेलावली विलगण पड़ ॥ धूपे धूणावी शीश, पाडे वहुली चीस ॥ आ० ॥ त्राण उतारे विना जड़ ॥ १७ ॥ मांड्यां मांडलां केम, वाड्यां टांकणां जेम ॥ आ० ॥ पण ले

से को नावियां ॥ जेणें कह्यो जे जेम, तेणें कर्युं ते तेम ॥ आ० ॥ पण नृप चित्त न भावियां ॥ १८ ॥ एम अनेक उपाय, भलभला जाण कराय ॥ आ० ॥ जाणपणुं एहथी गया ॥ विराउला हता जेह, परवंथी पण तेह ॥ आ० ॥ सिद्ध साधक सघला गल्या ॥ १९ ॥ भगत संन्यासी कुण, गलिया ज्युं पाणी लुण ॥ आ० ॥ फोगट गाल फुलावता ॥ नदी वृद्धीना जाण, वादीगर गया ठाण ॥ आ० ॥ जाणपणुं जे हुंलावता ॥ २० ॥ तिणसमे मंत्री एक, जाणे शास्त्र विवेक ॥ आ० ॥ मेहर नामें मंत्रीसरु ॥ जिहां पोढ्या छे राय तिहांकिण आव्यो धाय ॥ आ० ॥ नाडी जोइ तिहां गुणकरु ॥ २१ ॥ लाधो नाडी भेद, मंत्री लह्यो ते उमेद ॥ आ० ॥ कामज्वरें ते नृप नड्यो ॥ मूरछा लह्यो तिण योग, पूरव कर्मने भोग ॥ आ० ॥ काम अनल कुंडे पड्यो ॥ २२ ॥ जेह नृपने रोग, तेह शुं जाणे लोग ॥ आ० ॥ अंतरगतनी कुण कहे ॥ कामनुं भेहेर अथाह, नृपने ते लाग्यो दाह ॥ आ० कह्यो ते रोगने कुण ग्रहे ॥ २३ ॥ जिहांथी प्रगट्यो दुःख, तिहांथी होये सुख ॥ आ० ॥ अगनि बल्यो अगनी ठरे ॥ व्हानलनी बाफ, जेहने रहि तन व्याप ॥ आ० ॥ ते शीत रमणी करे ॥ २४ ॥ इम चिंती मनमांहे, राजा रामत उच्छाहे आ० ॥ मेहर मंत्री इम भणे ॥ नृपने रोग न कांय ॥ फोगट कीया उपाय ॥ आ० ॥ जाण मंत्रीगनें अवगुणे ॥ २५ ॥ यन्त्र औषध कान, कीधां तेम निदान ॥ आ० ॥ सिद्ध साधक गिल्या ॥ अंतरगतनी पीड, कामज्वरनी रीड ॥ आ० ते कुण नारि अटकला ॥ २६ ॥ ते कहे शास्त्र विचार, जे गुरु मुख सार ॥ आ० ॥ ते जाणे सरली कथा ॥ शुं करे क्रिया कर्म, न जाणे शास्त्रनो मर्म ॥ आ० ॥ ते करे ढोंग

थाकल्या ॥ २७ ॥ सभा विसर्जी ताम, मद पोरोता निज घा
र ॥ आ० ॥ मंत्री हिवे वेद्य करे ॥ चोजा उल्लासनी ढाल,
कहेलो करी उजमाल ॥ आ० ॥ लब्धिविजय इम उच्चरे ॥२८॥
॥ दुहा ॥ दिव मेहर मंत्रीसरू, लोकोने दे सीख ॥ नृपनी
मीटा टालवा, बेठो आइ नजीक ॥ १ ॥ कामातुर नृपने लही,
सचिव करे उपचार ॥ राणी सघली तेडीयो, सोल सजी शिण
गार ॥ २ ॥ रम झम करती आवीई, रूर्ये अपछर सार ॥
मदन तणी जे वाटिका, कामीने सुखकार ॥ ३ ॥ आवी नृपना
पग तलां, ओलासें उल्लास ॥ पवन करे रंभादलें, आंजे नेत्र व
रास ॥ ४ ॥ पटराणी जे पदमनी, नृपनुं मीडी अंग ॥ दा
यन करचो यदि दो लगें, उतरचो ताम अनंग ॥ ५ ॥ कोक
शास्त्र नजे वलें, कीधो ए उपचार ॥ आंख उघाडी नजरेणें. म
हिपतियें निज दार ॥ ६ ॥ कामज्वर हलको थयो, पाम्यो चे
तन सार ॥ मेहर मंत्री जस लह्यो, वरत्यो जयजय कार ॥ ७ ॥
मदनरेग हरल्यो घणुं, देखी बुद्धि निधान ॥ सन्मान्यो
मंत्रीसरू, देई बहुलं मान ॥ ८ ॥ बीजा सचिव दूरें कर्या,
थाप्यो एह प्रधान ॥ मुझने मोहोटो गुण करयो, दीधुं जीवित
दान ॥ ९ ॥ नृप कहे मंत्री तुं थयो, माहरा दुखनो जाण ॥
में राख्यो तुझने सही, तन मन करिने प्राण ॥ १० ॥ तव कहे
मंत्री नृप सुणो, हु छुं तुमारो दास ॥ केहशो ते करशुं अमे, तन
मन करि एकतार ॥ ११ ॥ पण मुझने साची कहो, ए कारण
थयुं केम ॥ अंतरगतनी वातडी, जाणी जाए जेम ॥ १२ ॥
विगर कहे किम जाणियें, पारका मननी वात ॥ तव नृप मंत्रीने
कहे, मांडी सघली घात ॥ १३ ॥

॥ ढाल २ जी ॥ नदी जमुनाके तीर, उडे दोय पंखीयां ॥
ए देशी ॥ नृप कहे सांभल मंत्री, कहु तुझ नीपनी ॥ हरिवंश

से को नाविया ॥ जेणें कह्यो जे जेम, तेणें च रयुं ते तेम
आ० ॥ पण नृप चित्त न मानियां ॥ १८ ॥ एम अनेक
पाय, भलभला जाण कहाय ॥ आ० ॥ जाणपणुं
ल्या ॥ विराउला हता जेह, परवंची पण तेह ॥ आ०
सिद्ध साधक सघला गल्या ॥ १९ ॥ भगत संन्यासी
गलिया ज्युं पाणी लुण ॥ आ० ॥ फोगट गाल फुलावता
बडी बुद्धीना जाण, वादीगर गया ठाण ॥ आ० ॥
रणं जे डुलावता ॥ २० ॥ तिणसमे मंत्री एक, जाणे
वेक ॥ आ० ॥ मेहर नामें मंत्रीसरु ॥ जिहां पोढ्या
तिहांकिण आव्यो धाय ॥ आ० ॥ नाडी जोइ तिहां
॥ २१ ॥ लाधो नाडी भेद, मंत्री लह्यो ते उमेद ॥ आ० ॥
मज्वरें ते नृप नडयो ॥ मूरछा लह्यो तिण योग, पूर्व
भोग ॥ आ० ॥ काम अनल कुंडे पड्यो ॥ २२ ॥
नृपने रोग, तेह नुं जाणे लोग ॥ आ० ॥ अंतरगतनी
लहे ॥ कामनुं जेहेर अथाह, नृपने ते लाग्यो दाह ॥ आ०
कहो ते रोगने कुण ग्रहे ॥ २३ ॥ जिहांथी प्रगट्यो दुःख,
तांथी होये सुख ॥ आ० ॥ अगनि बल्यो अगनी ठरे ॥
रहानलनी बाफ. जेहने रहि तन व्याप ॥ आ० ॥ ते
रमणी करे ॥ २४ ॥ इम चिंती मनमांहे, राजा रामश उच्छाहे
आ० ॥ मेहर मंत्री इम भणे ॥ नृपने रोग न कांय ॥
कीधा उपाय ॥ आ० ॥ जाण मंत्रीगने अवगुणे ॥ २५ ॥
खरुं ओषध कान, कीरुं तेम निदान ॥ आ० ॥ सिद्ध
मूरख गिल्या ॥ अंतरगतनी पीड, कामज्वरनी रीड ॥ आ०
ते कुणे नवि अटकल्या ॥ २६ ॥ जे लहे शास्त्र विचार,
जे गुरु मुख सार ॥ आ० ॥ ते जाणे सघली कला ॥ शुं करे
कितसा कर्म, न जाणे शास्त्रनो मर्म ॥ आ० ॥ ते करे

काल ॥ २७ ॥ सभा विसर्जी ताम, सहु पोहोता निज घा
॥ आ० ॥ मंत्री हिवे वैदु करे ॥ पोजा उल्लासनी ढाल,
हेत्यो कही उजमाल ॥ आ० ॥ लब्धिविजय इम उच्चरे ॥२८॥
॥ दुहा ॥ हिव मेहर मंत्रीसरु, लोकोने दे शीख ॥ नृपनी
टा टालवा, बेठो आइ नजीक ॥ १ ॥ कामातुर नृपने लही,
चित करे उपचार ॥ राणी सघली तेडीयो, शोल सजी शिण
ार ॥ २ ॥ रम झम करती आवीई, रूवें अपछर सार ॥
दन तणी जे वालिका, कामीने सुखकार ॥ ३ ॥ आवी नृपना
ग तणां, ओल्लासें उल्लास ॥ पवन करे रंभादलें, आंजे नेत्र व
ास ॥ ४ ॥ पद्मराणी जे पदमणी, नृपनुं भींडी अग ॥ श
यन करयों पडि दो लगें, उतरयों ताम अनंग ॥ ५ ॥ कोक
शास्त्र लगे वलें, कीधो ए उपचार ॥ आंख उघाडी तणीखणें, म
हिपतिये तिण वार ॥ ६ ॥ कामज्वर हलको थयो, पाम्यो चे
तन सार ॥ मेहर मंत्री पास न्ह्यो, वरत्यो जयजय कार ॥ ७ ॥
मदनरोग हरत्यो घणुं, देखी बुद्धि निधान ॥ सन्मान्यों
मंत्रीसरु, देई बहुलं मान ॥ ८ ॥ बीजा सचिव दूरें करया,
थाप्यो एह प्रधान ॥ मुझने मोहोटो गुण करयो, दीर्घ जीवित
दान ॥ ९ ॥ नृप कहे मंत्री तुं थयो, माहरा दुखनो जाण ॥
में राख्यो मुझने सही, तन मन करिने माण ॥ १० ॥ तव कहे
मंत्री नृप सुणो, हुं छुं तुमारो दास ॥ केहवो ते करवा अमे, तन
मन करि एकगास ॥ ११ ॥ पण मुझने साची कहो, ए कारण
थयुं केम ॥ अंतरमननी वातडी, जाणी जाए जेम ॥ १२ ॥
विगर कहे किम जाणिये, पारका मननी वात ॥ तव नृप मंत्रीने
कहे, मांडी सघली वात ॥ १३ ॥

॥ ढाल २ जी ॥ नदी जमुनाके तीर, उडे दोय पंखीयां ॥
ए देशी ॥ नृप कहे सांभल मंत्री, कहुं मुझ वीतकनी ॥ हरिवंश

खे को नारियां ॥ जेणें कर्यो ते जेम, तेणें परखुं तेम
आ० ॥ पण नृप चित्त न मारियां ॥ १८ ॥ एम अंत
पाय, मळमळा जाण कहाय ॥ आ० ॥ जागरणुं
स्या ॥ विराउला हता जेह, परधरी पण तेह ॥ आ०
सिद्ध साधक सघला गल्या ॥ १९ ॥ भगत संन्यासी
गलिया ज्युं पाणी लुख ॥ आ० ॥ कामड गारुड कुशल
भट्टी बुद्धीना जाण, वादीगर गया ताण ॥ आ० ॥
पणुं जे कुंलावता ॥ २० ॥ तिणसमे मंत्री एक, जाणे
वेक ॥ आ० ॥ मेहर नामें मंत्रीसरु ॥ जिहां पोशा
तिहांकिण आव्यो धाय ॥ आ० ॥ नाडी जोइ तिहां
॥ २१ ॥ लाधो नाडी भेद, मंत्री लह्यो ते उमेद ॥ आ०
मन्वरें ते नृप नडयो ॥ मुरछा ज्यो तिण योग, पूरव
भोग ॥ आ० ॥ काम अनल कुंडे पडयो ॥ २२ ॥
नृपने रोग, तेह न जाणे लोग ॥ आ० ॥ अतरगतनी
लहे ॥ कामनुं क्षेहेर अथाह, नृपने ते लाग्यो दाह ॥ आ
कहे ते रोगने कृश थेर ॥ २३ ॥ जिहांथी प्रगटयो दुख
हांथी होये सुख ॥ आ० ॥ अगनि बल्यो अगनी डरे
रहानलनी वाफ, जेहने रहि तन व्याप ॥ आ० ॥ ते
रमणी करे ॥ २४ ॥ इम चिंती मनमांहि, राजा रामत उच
आ० ॥ मेहर मंत्री इम भणे ॥ नृपने रोग न कांय ॥
कीधा उपाय ॥ आ० ॥ जाण प्रवीणने अवगुणे ॥ २५
खनुं ओषध कान, कीधुं तेम निदान ॥ आ० ॥ सिद्ध
मूरख गिलया ॥ अंतरगतनी पीड, कामज्वरनी रीड ॥
ते कृपे नहिं अटकला ॥ २६ ॥ जे लहे शास्त्र विचार
जे गुरु मुख सार ॥ आ० ॥ ते जाणे सघळी कला ॥ गु
कितसा कर्म, न जाणे शास्त्रनो मर्म ॥ आ० ॥ ते करे

ाला ॥ २७ ॥ सभा विसर्जी ताम, मद्द पोरोता निज घा ॥ आ० ॥ मंत्री हिये वेंदू करे ॥ वीजा उल्लासनी ढाल, हें कही उजमाल ॥ आ० ॥ लब्धिविजय इम उच्चरे ॥२८॥

॥ दुहा ॥ हिव मेहर मंत्रीसरु, लोकोने दे शीख ॥ नृपनी डा टालवा, बेठो आइ नजीक ॥ १ ॥ कामातुर नृपने लही, विव करे उपचार ॥ राणी सघली तेडीयो, शोल सजी शिण र ॥ २ ॥ रम झम करती आवीई, रूपे अपछर सार ॥ दन तणी जे पाटिका, कामीने सुखकार ॥ ३ ॥ आवी नृपना ग तली, ओलामें उल्लास ॥ पवन करे रंभादलें, अंजे नेत्र व ास ॥ ४ ॥ पटराणी जे पदमणी, नृपतु मीडी अंग ॥ श न करचो घडि दो लगें, उतरयो ताम अनंग ॥ ५ ॥ कोक ास्त्र नगे चलें, कीघो ए उपचार ॥ आंख उघाडी नगीखेंग, म हेपतियें तिण वार ॥ ६ ॥ कामज्वर हलको थयो, पाम्यो चे न सार ॥ मेहर मंत्री पास ग्यो, वरत्यो जयजय कार ॥ ७ ॥ मदनरोग हरव्यो घणुं, देखी बुद्धि निधान ॥ सन्मान्यो मंत्रीसरु, देई बहुल मान ॥ ८ ॥ वीजा सचिव दूरें कस्या, राख्यो एह मधान ॥ मुझने मोहोटो गुण करचो, दीधुं जीवित दान ॥ ९ ॥ नृप कहे मंत्री तुं थयो, माहरा दुखनो जाण ॥ में राख्यो तुझने सही, तन मन करिने माण ॥ १० ॥ तव कहे मंत्री नृप सुणो, हुं छुं तुमारो दास ॥ केहशो ते करश अमें, तन मन करि एकराग ॥ ११ ॥ पण मुझने साची कहो, ए कारण थयुं केम ॥ अंतरगतनी वातडी, जाणी जाए जेम ॥ १२ ॥ विगर कहे किम जाणिये, परका मननी वात ॥ तव नृप मंत्रीने कहे, मांडी सघली घात ॥ १३ ॥

॥ ढाल २ जी ॥ नदी जमुनाके तीर, उडे दोय पंखीयां ॥ ए देशी ॥ नृप कहे सांभल मंत्री, कहुं तुझ नीपनी ॥ हरिक

हां सुणी ते मगपे न, नित्ये अति भले ॥ परनां कारज ति हां मुणी, कांहि न ऊकले ॥ १० ॥ लोभीनी परें जीव, रहे निज ते कने ॥ खावा पिवानी सुच, नहीं तें जीवने ॥ सूनी फिरे मम देह के, मन विण मानवी ॥ लय लागी पण जोर जे, ललना अभिनवी ॥ ११ ॥ विरुओ विषय विकार के, दृष्टि लागे जिका ॥ वीषयीनों दिल दाह, जाणे केवली तिका ॥ मदिरा पीधे जीव, घुमाई ज्युं रहे ॥ विरहनो लीणो जीव, मुं झाइ त्यु थहे ॥ १२ ॥ जोजो भरियां मीनडी, लागे जेहने ॥ रोवे एह इवाल के, मानव तेहने ॥ विरहनी वारता वीती, हसे ते जाणशे ॥ पण निमनेही मूरख, शुं ते पिछाणशे ॥ ॥ १३ ॥ मननी लालच रात, दिवस रहे नेहशुं ॥ न गणे सुख दुःख जीव, बंधाणो जेहशुं ॥ मानिणि लीणो जीव, पडे ते कूपमां ॥ तन धन सोंपे नेहीं ने, सरवे ते चूपमां ॥ ॥ १४ ॥ रमणी वणां जे नेत्र ते, कज्जल पंकथी ॥ मगटे क दर्प मच, बगाड निःशंकथी ॥ कामी जन मनवनें, वराह ते सं घरी ॥ मानकला लिण एकने, जाये ते घरी ॥ १५ ॥ का मी जनने काम, सुभट रेडे पडे ॥ विरही जनने अहनिशि, विष घूर्ने नडे ॥ कान वराह ते कामिनी, संगथी ओसरे ॥ बीराग्जननां मन ते, तव शांतल करे ॥ १६ ॥ सबल पुरुष मद कोड ने, जीते पराक्रमें ॥ कामिनी जीते बीजग, एक कटा क्षे ॥ कामनगारी नारी ते, सहुने वश करे ॥ रागना लीणा सुरनर, सौ केई फिरे ॥ १७ ॥ सबला ते नवला थई, स्त्री मन्त्राहे घन ॥ तो मारो कोण आशरो, मंत्री तुम कहुं ॥ ते मैंथी तुम मागजो, मोदि में करी ॥ वसंतमिरनु कारण, ए नीरनुं सही ॥१८॥ भोजन करवा मया तव, ए फल त्यांहिया ॥ कारन करीने कारन. लोकने साथिया ॥ करण विशालां

नाक, विचारी आवियो । ए उत्थाणो लोकमें, साचो क॰
वियो ॥ १९ ॥ ते माटे हिवे कोइक उपाय कीजियें । ॰
नामिरोमुख देखि, सुधारस पीजियें जो कोइ विद्या होत तो
पलकमें जइ मिलुं ॥ एम मान मन चिंतवी न नीकलुं !
॥ २० ॥ बुद्धि धरुं ए परपंच करुं काइ केलवे । ठे॰
प्रभुनो वाहालो, मुझने मेलव तन मन रूप स्वरूप ने ।
मुझने मिले ॥ अर्थ कोटि पमाय करी भले भव ॥ २१ ॥
ए भोरुकार ते सयलो, मंत्रीयें साभल्यो ॥ कामातुर थयो ।
य, ते मवीयें अटकल्यो ॥ पण बळीया पण सिद, अनादी
में पड्यो ॥ तिम रमणी माहे सालमा नृप पूरो जड्यो ॥
॥ २२ ॥ तो हिवे कोइक बोल, म थाल करो भला ॥ नृपना
मनमें चीतो, फिकर काइ म करो ॥ सकल कुशल हशे तो, क
या नृप मानशे ॥ तो श्रीस्वामण सपलो, लेखें आणशे ॥
॥ २३ ॥ सामळजो भवि भागल, मीठी वारता ॥ साभळतां
स्वोवयाल थोता दिल ठारतां ॥ भीजा उल्लासमनी ढाल, ए बी
जी पर्व करा ॥ नेहीने मन गमती ए, लब्धियें उच्चरी ॥ २४ ॥
॥ दुहा ॥ हिवे मंत्री नृपने कहे, सांभलो प्रभु महाराज ॥
अतरगतनी जे कही, ते में निसुणी आज ॥ १ ॥ पण ए वा
त हलकी नहीं, छे भारी सहिनाथ ॥ गणवा दुरान यमदंडना,
नभमुं भरवी बाथ ॥ २ ॥ तिम ए थोडुं नेहलो, करवो भ
ति दुर्लभ ॥ छडी संगति पहनी, ज्युं लहो सुख सुमल ॥
॥ ३ ॥ जे कीजे तुमने प्रभु, सामी खाणे अपार ॥ बाद जो ग
लेश चांपइसें, क्यों होय ताम पुकार ॥ ४ ॥ पर दुःखभंजन
गाजवी, परजन पाळे मार ॥ वाहार मोडयें जिहां थकी,
किहा किम केड थाइ ॥ ५ ॥ अणघटती ए वातरी, किम
कीजे प्रभु नाथ ॥ देखी पेखी वायना, मुखमें घाल्यो हाथ ॥

॥ ६ ॥ वसंतसिरी नारी तणो, जो कीजे प्रतिबंध ॥ छानी वातों नवि रहे, हिंग तणो जेम गंध ॥ ७ ॥ पोतानी परणी प्रिया, उपजावे रंगरेल ॥ जगमें छे परणी भली, पर परणी विषवेल ॥ ८ ॥ काणी कोची करवली, काली कुबडी जाण ॥ परणी जेह पनोतडी, पदमिणी तेह पिछाण ॥ ९ ॥ आपणी गावडी चंद्रमा, जे दोही पीवाय ॥ शुं कीजें परनी भली, जे दोही नवि जाय ॥ १० ॥ परस्री संगति जे करे, तेहनां पूर ण पाप ॥ झंप करी बेसे नही, न मिटे तास संताप ॥ ११ ॥ घृतकुंभ सरिखा नर कह्या, अगनि सरीखी नार ॥ मधु खरडी आसिधार ज्युं, तिम स्त्रीसंग विचार ॥ १२ ॥ परनारीना ला छथी, जे थया विषयाअंध ॥ नरकनिगोदें रडवड्या, सुणजो तास संबंध ॥ १३ ॥

॥ ढाळ १ ली ॥ भणदलनी देशी ॥ राजन हे राजन, रा वण सरिखो राजवी, जे बलीयो कहेवाय ॥ हे राजन ॥ ला ख बेतालीस गज तुरी, सेवे सोल सहस राय ॥ हे राजन ॥ १ ॥ धिक धिक काम विटंबना, कामें लुब्धा जेह ॥ हे रा० ॥ जस अपजस कांइ नवि गणे, नगणे सुख दुःख तेह ॥ हे रा० ॥ धि० ॥ २ ॥ बत्रीस सहस अंतेउरी, रूपें अपछर भाय ॥ हे रा० ॥ ते सरव्यांने अवगुणी, रावण सीता हराय ॥ हे रा० ॥ धि० ॥ ३ ॥ राम ने लिछमण बेहु मिली, मेली कटक अपार ॥ हे रा० ॥ बार वरस लगें आकरा, कुंस्या नर झुंझार ॥ हे रा० ॥ धि० ॥ ४ ॥ सीताकारणें रावणें, केइ सुभट हणाय ॥ हे रा० ॥ अंतें पण रावण तणां, दश म स्तक छेदाय ॥ हे रा० ॥ धि० ॥ ५ ॥ त्रिजगमें कंटके भर्यो, नाम धरावतो जेह ॥ हे रा० ॥ चोथी नरकें ते गयो, परस्त्रीनां फल एह ॥ हे रा० ॥ धि० ॥ ६ ॥ लंका परलं

हे रा० ॥ चरित्र रमे केई जातिनां, पामी ते निज दाव ॥ हे रा० ॥ त्रि० ॥१९॥ कूड कपटनी ओरडी, गोरडी निगुण निटोल ॥ हे रा० ॥ अमया राणी तणि परें, कोइ न राखे तोल ॥ हे रा० ॥ त्रि० ॥ २० ॥ रमणी तणां मन एहवां, जेहवां धाकां घोर ॥ हे रा० ॥ बाहिर सुंदर देखणां, मांहे कठिण कठोर ॥ हे रा० ॥ त्रि० ॥ २१ ॥ महिला केरो नेहलो, जेहवो संध्या राग ॥ हे रा० ॥ थासीं मासनो मेहलो, तेहवो स्त्रीनो राग ॥ हे रा० ॥ त्रि० ॥ २२ ॥ स्वारथ पहोंचे जिहं लगें, तिहां लगें करे रंग रेल ॥ हे रा० ॥ त्रुटी तन धन हरि लिये, रुठी विषनी वेल ॥ हे रा० ॥ त्रि० ॥ २३ ॥ सुरी कंतायें कंतने, हणियो देई झेर ॥ हे रा० ॥ नारी दुष्ट होवे सदा, न जुवे करतां केर ॥ हे रा० ॥ त्रि० ॥ २४ ॥ ब्रह्मदत्तने मारवा, लाखनां मंदिर कीध ॥ हे रा० ॥ चुल्लणीयें निज पुत्रने, स्वहस्तें वन्हि दीध ॥ हे रा० ॥ त्रि० ॥ २५ ॥ पायुं रक्त भुजातणुं, खवराव्युं उरमांस ॥ हे रा० ॥ ते जित शत्रुने राणीयें, नाख्यो जलधिमें त्रास ॥ हे रा० ॥ त्रि० ॥ ॥ २६ ॥ नारी न होवे आपणी, वानांजो कीजें लक्ष ॥ हे रा० ॥ नृपने डांग दो भामिनी, देखाडे परतक्ष ॥ हे रा० ॥ त्रि० ॥ २७ ॥ मोह देखाडी दगो करे, स्त्रीनो छे ए ढंग ॥ हे रा० ॥ ते माटे तुमे रामवी, म करो परसी संग ॥ हे रा० ॥ त्रि० ॥ २८ ॥ इणि परें नृपने मंत्रीयें, दाख्या केइ दृष्टांत ॥ हे रा० ॥ पण नृपनुं मन नवि मिलें, वसंतसिरी चित्त भ्रांत ॥ हे रा० ॥ त्रि० ॥ २९ ॥ मन लाग्युं जेह उपरें, विसारयुं नवि जाय ॥ हे रा० ॥ मोहनी मदिरा छाकमां, उपदेश नावे दाय ॥ हे रा० ॥ त्रि० ॥ ३० ॥ लब्धि बीजा उल्हासनी,

[illegible] ॥ [illegible] मनि तुमें सांभलो,
[illegible] ॥
[illegible] उपदेश ॥ जाणे
[illegible] ॥ इम जाणी मे
[illegible] समर्थ छे अति घणी,
[illegible] भावणा, मणसा
[illegible] पाप ॥
[illegible] ॥ परना
[illegible] किमें मू
[illegible] छांडिये, सुरत
[illegible] भाग ॥
[illegible] मनव
[illegible], माए
[illegible] गुण
[illegible] नी
[illegible]

[illegible] महिमा
[illegible] निमगो
[illegible] भाव रे
[illegible]
[illegible] नाग
[illegible]
[illegible], श्री
[illegible]
[illegible]

रे एक तान, थिर रमणी रे तस मान रे ॥ न० ॥ ४ ॥ ए
तो शील छे गुणनुं निधान, शीलें पामे स्वर्ग विमान रे ॥ न० ॥
ए तो शीलें संकट भांजे, शीलें ते हरि ज्युं गाजे रे ॥ न० ॥
॥ ५ ॥ ए तो शीलें कुंभर श्रीपाल, तस कोढ गयो ततकाल रे
॥ न० ॥ ए तो शीलें सुदर्शन शेठे, शूलि फीटी सिंहासन बेठ
रे ॥ न० ॥ ६ ॥ ए तो शीलें जंबू स्वामी, लघुवयमें थयो
शिवगामी रे ॥ न० ॥ ए तो शीलें नेम कुमार, थयो शिवरम
णी उरहार रे ॥ न० ॥ ७ ॥ एतो शीले मेघकुमार. जेणें
छंडी आठे नार रे ॥ न० ॥ ए तो शीलें गजसुकुमाल, शिवप
दवी लही सुरसाल रे ॥ न० ॥ ८ ॥ ए तो शीलें थूलिभद्र
नाम, राख्युं चिहुं जगमे अभिराम रे ॥ न० ॥ ए तो शीले
श्रीमल्लिनाथ, ए तो मुगतिवधू करि हाथ रे ॥ न० ॥ ९ ॥
ए तो शीलें सीता नारी, करी धीजतां शीलें समारी रे ॥
न० ॥ ए तो शीलें सुभद्रा सुहाती, चंपा पोल उघाडी रे ॥
न० ॥ १० ॥ ए तो द्रोपदी पांडव केरी, जेणें कौरवें लज्जा उवे
री रे ॥ न० ॥ ए तो तेहने शील मनावें, सुर सत अठ्ठ ची
र पहेरावे रे ॥ न० ॥ ११ ॥ ए तो शीलवती सुकुमाल,
अहि फीटी थए फुलमाल रे ॥ न० ॥ ए तो शीलें चंदनवा
ला, थीरें करी झाक झमाला रे ॥ न० ॥ १२ ॥ ए तो इ
त्यादिक अवदात. कहुं शीलनी केती आख्यात रे ॥ न० ॥
जे पाले शील नर नारी. हुं जाउं तस बलिहारी रे ॥ न० ॥
॥ १३ ॥ कुशीलियो किहां न खटाय. कुकर ज्युं धका खाय रे
॥ न० ॥ कुशीलने पडे फूटी, जिम परमांथी हांडी फूटी रे ॥
॥ न० ॥ १४ ॥ कुशीलनो नावे विमास, कुशीलियो फिरे थइ
दास रे ॥ न० ॥ कुशीलियो गति नवि पामे, जाये नरक नि
गोदने ठामें रे ॥ न० ॥ १५ ॥ कुशीलियो सघले भंडाय,

गोविंद दंडके दंडाय रे ॥ न० ॥ कुशीलना कर्म अघोर, भ
वो भव [illegible] थई चोर रे ॥ न० ॥ [illegible] ॥ मंत्र यंत्र नें वि
द्या जेह, कुशीलने न फले तेह रे ॥ न० ॥ सिद्ध साधक ना
म धरावे, कुशीलने जस कांइ नावे रे ॥ न० ॥ १७ ॥ मा
हादेव जे देव कहाय, मृगली पाछें नग्न जाय रे ॥ न० ॥
अहिल्यासुं इंद्र जे लुब्धो, ते सहस्रभगो नाम दीधो रे ॥ न०
॥ १८ ॥ [illegible] मार कहेवो [illegible] किम जातो रे
॥ न० ॥ [illegible] गया गणिका संगें ऊंडी नरकें कुशीलने दंगें रे ॥
न० ॥ १९ ॥ [illegible] चारित्र पाल्यो कंडरीकें नरक परजा
ल्यो रे ॥ न० ॥ [illegible] गतें जइ बेठो नारकी पां
[illegible] ॥ न० ॥ [illegible] ॥ कुशीलनी करणी मोटी, करतो फिरे
[illegible] ॥ न० ॥ कुशीलनुं तप जप फोक, वध बंधन
[illegible] फल शक रे ॥ न० ॥ [illegible] ॥ [illegible] दिल नवि आवे,
[illegible] ॥ न० ॥ [illegible] जे पदी
[illegible] रे ॥ न० ॥ २२ ॥ ते माटे
[illegible] पस्ताना [illegible] रे ॥ न० ॥ कुशीलनुं ना
म [illegible] रे ॥ न० ॥ २३ ॥ दिल
[illegible] रे ॥ न० ॥ प
[illegible] रे ॥ न०
॥ [illegible] ॥ [illegible] चालीरे
॥ न० ॥ [illegible] पण वार न लागे ज
[illegible] रे ॥ न० ॥ [illegible] ॥ [illegible] छूटे, पण
[illegible] रे ॥ न० ॥ [illegible] ते परचावे, पण
[illegible] रे ॥ न० ॥ २६ ॥ मनोये ज कदी
[illegible] रे ॥ न० ॥ तव मर्म थयो
[illegible] राय [illegible] रे ॥ न० ॥ २७ ॥

(

हिवे सुणजो ने नृप बोले, मंत्री आगल पोथी खोले रे ॥ न० ॥ ए दो बीजा उल्लासनी ढाल, कही चोथी रूव्वे र साल रे ॥ न० ॥ १८ ॥ इति ॥

॥ दुहा ॥ वयण सुणी मंत्री तणां, नृपने लागी हिंग ॥ भूत भराइ ते नृप थयो, जाणे लाग्यु विंग ॥ १ ॥ हित सीखामण देवतां, नृपने ऊठी झाल ॥ आगे आहि छंछेडियो, तिम हुवो नृप विकराल ॥ २ ॥ आगे वानरने वली, विछीये चटको कीध ॥ आगे केसरीने वली, मानतुं बिरुद ते दीध ॥ ३ ॥ तिम नृप मंत्री उपरे, कोपाकुल थइ राय ॥ मदनवेग तिहां सचिवसुं बोल्यो भ्रकुटी चढाय ॥ ४ ॥ रे मंत्री हुं जाणतो, तुझने चातुर कोक ॥ बे दाणा तुझमें नही, जे बोले ते फोक ॥ ५ ॥ तें किम जाण्या कुशीलिया, करणी हीणा जेह ॥ परस्त्री गमन किया पछे, स्वर्गे पहोता केह ॥ ६ ॥ ते सांभल तुझ ने कहुं, शास्त्र तणे अनुसार ॥ व्रत भांगी ते मुनिवरा, पाम्या भवनो पार ॥ ६ ॥

॥ ढाल ९ मी ॥ जीणा मारुजीरी करहलडी ॥ ए देशी ॥ प्रधान कहे सचिवने, सांभल तुं एकंगो थइने कान उघाडी हो राज ॥ चोविश वर्ष परे रही, मुनिवर आर्द्र कुमारें व्रतने लाज लगाडी हो राज ॥ १ ॥ ते गया ज्योति आगारमें, सिद्ध वधुना संगमें जइ सुख भोगवे पुरां हो राज ॥ साख भली नस ए कही, श्रीवसुदेवनी हिंडमें अक्षर जो तुं सनूरा हो राज ॥ ॥ २ ॥ श्रेणिक रायनो कुंवर, नामें नंदिषेण जे चलियो थइ म न लीनो हो राज ॥ तेणें पण व्रत भांजीने, गणिकासुं पर मांडि रह्यो रंग भीनो हो राज ॥ ३ ॥ बार वरस सुख भोग वी, अजरामर पद लहियो करणी सहु जग जाणे हो राज ॥ महानिशीथ जे सूत्रमां, साख भली जाणजे मंत्री लिखित प्रमाण

हो राज ॥ ४ ॥ पार्श्व थित्रानी पुत्र जे, स्त्री हत्या जिणे [illegible]
थी मरोडी कामें व्यापा हो राज ॥ ते गयो सुर लोक आठ[illegible]
साख भर्णी ते जाणजे श्री योगशास्त्रे उपायो हो राज ॥ ५ [illegible]
आषाढभूति अणगार जे, नाटकणीने साथे बार वरस घर [illegible]
रह्यो हो राज । साख भर्णी तस चरित्रमां, ते गयो शिवग[illegible]
माहे जाणी जे अन गदर्यो हो राज ॥ ६ ॥ चंद्रशेखर विध[illegible]
धक ते निज भगिनि साथे निशिदिन रंगे रमतो हो राज ॥ ते [illegible]
या मुगतिरा[illegible] लिया, श्रीमित्रजो माहातम साखी छ मन गम[illegible]
[illegible] राज ॥ ७ ॥ चर्मा भगत नरेसर, गंगा देवीने घर रहि[illegible]
[illegible] सहस्रामी [illegible] राज ॥ सहस वरस सुख भोगवी, भुव[illegible]
[illegible] पाम्या ज्ञान उल्लासी हो राज ॥ ८ ॥ अष्टाप[illegible]
[illegible] जिनेसर साथे सगाने पुगीय पहुता हो रा[illegible]
[illegible] जाणजे, जंबुद्वीपपन्नतिमाहे अक्षर सुहला हो रा[illegible]
[illegible] जाणीय, नाटकणीना लार्गे भटक्यो [illegible]
[illegible] केवल ज्ञान ते पामिन, सुगति पुरमें [illegible]
[illegible] सुणो हो राज ॥ १० ॥ [illegible] सकमाकुशला [illegible]
[illegible] हो भाट नेहनी श्रेन [illegible] हो राज
[illegible] मारी, मारवसाहन [illegible] गयी अ[illegible]
[illegible] ॥ ११ ॥ ते वट भाया [illegible]
[illegible] रहिस एव सुरलोके हो राज । तेहना प[illegible]
[illegible] मालामाहे वाची जोके हो राज
[illegible] चूकव्या, नागरभ [illegible]
[illegible] राज । चित्तदिनि चउमुग नापना, सदभ[illegible]
[illegible] उपने गयो हो राज ॥ १२ ॥ मारग [illegible]
[illegible] दाढा रीछडी मीठी मनमें लागी हो राज
[illegible] भावना रीछरूपि ते रीछडी पेटे उपना मा[illegible]

हो राज ॥ १४ ॥ ब्रह्मपुराणें ते ब्रह्माने, परमेसर करि माने दुनियां एकण ध्यानें हो राज ॥ तारक जग परमेसरु, निज पुत्रीशुं विलसे रंगें थइ एक ताने हो राज ॥ १५ ॥ उमया नारी देवखीने, जटामध्ये घाली राखी ईश्वरें गंगा हो राज ॥ तारक जाणी शंभुने, वरण अढार जे मानवि रुद्रने पूजे एकंगा हो राज ॥ १६ ॥ पृथ्वी ऊरसा देखीने, त्रिनेत्री थयो शंकर तिण दिनथी गवराणो हो राज ॥ लिंगपूजा थइ तिण दिनथी लिंग पुराणें चावो असर छे सपराणो हो राज ॥ १७ ॥ विष्णु पुराणें विष्णु जे, कान गोवाल थइने लोकमांहि पूजाणो हो राज ॥ बत्रीस सहस अंतेउरी, ते छंडी मर्यादा राधा साथें गवाणो हो राज ॥ १८ ॥ कुंता पांडु नृप तणी, रूपवंतनें कुमारी सूरज देवे विलसी हो राज ॥ करण थयो ते उदरथी, जग थयो ते देवनी सहु जग माने उलसी हो राज ॥ १९ ॥ ए अवदात जे में कह्या, करमा दीपक लेइ देखी कूप केइ पडिया हो राज ॥ बलवंतमांहि शिरोमणि, ते सारिखा पण वलि या गलिया कर्मे नाडिया हो राज ॥ २० ॥ तो माहारो कोण आसरो, निज भुवनमें सर्वने कर्मे भुक्या चूर्णी हो राज ॥ जे पवनें गज उडिया, तेणे पवने करी थाई डोकरी लेवा पूर्णी हो राज ॥ २१ ॥ कुगति सुगति जे पामवी, ते करणी छे सघली भवितव्यताने हाथें हो राज ॥ जे जे समयें प्राणीयें, शुभाशुभ ना बंध जे बांध्या ते आवे साथें हो राज ॥ २२ ॥ उग्र तपस्या नो धणी, जितारि नृप जिननो रागी पूरण हुतो हो राज ॥ ते मरीने थयो सूअडो, किहां गइ करणी तेहनी तिरियंच गतिमां पहोतो हो राज ॥ २३ ॥ ए अधिकार तुं जाणजे, श्री शेत्रुंजा माहातम मांहि छे ए साखी हो राज ॥ करणीनुं कारण को नहीं, भवितव्यतानुं कारण सघले जिन वाणी भांखी हो राज

॥ २४ ॥ भवस्थिति पूरी थया विना, उद्यम जीव करे पण ले खे कदिय न आवे हो राज ॥ माली सींचे सो गणां, पण ते हनीं ऊतावलें ऋतु विना फल नवि पावे हो राज ॥ २५ ॥ तिम आपणी ऊतावलें, समकित रयण विना किम भवस्थिति पाकी जाय हो राज ॥ घणुंअ भूख्यो पण हुं करे, लाल उ तावल करीयें वे करथी न जिमाय हो राज ॥ २६ ॥ तिम द्रव्य क्रियाथी न ऊपदे, भावक्रिया जब अभ्यंतर प्रगटे तव शिव पावे हो राज ॥ जिहां सुधी समकित नवि व्यो तिहां सुधी ते जीवने चिहु गति कर्म भमावे हो राज ॥ २७ ॥ द्रव्यथी भो घा चरवला, एकठा कीधा जीवें मेरु जेवडा ढगला हो राज ॥ तो पण गरज सरी नहीं, भाव विना जे किरिया कीधी दंभी ज्युं बगला हो राज ॥ २८ ॥ ते माटे मंत्री तुमें, शील ऋद्धी लनुं कारण कोइ इहां मत गणजो हो राज ॥ पांचे कारण ज ब मिलें, भवितव्यताने जोगें शुभाशुभ तव भणजो हो राज ॥ ॥ २९ ॥ एहवो उत्तर मंत्रीने, मदनवेगें दीधो बोलो हाथमें लाइ हो राज ॥ वली कहे सांभल मंत्रवी, तुज करणी विगता वी ताहरा कान उघाडु हो राज ॥ ३० ॥ लब्धे बीजा उ ल्लासना, मंत्रीने समझाव्यो भलि परें पांचमी ढालें हो राज ॥ हिवे सुणजो भवियण तुमें, आगल श्री श्री वात नि पजे ते उजमालें हो राज ॥ ३१ ॥

॥ दुहा ॥ रे मंत्री हुं ताहरां, जाणुं सयल चरित्र ॥ पा पट खाइ पदमनी, तुं थयो महोटो पवित्र ॥ १ ॥ पटा खा ओ भम तणा, त्यों बलि लोकां लांच ॥ लेवा देवा मापलां, राखो कूडां माच ॥ २ ॥ कूड कपट हइयें धरी, बोलो मिठाबोल ॥ धोले दिन धुतो सर्वु, राखी कूडां तोल ॥ ३ ॥ परनिंदा करता फिरो, पारकुं ताको छिद्र ॥ साची जुठी करो घणी, काढो मु

मा शुद्र ॥ ४ ॥ अम उपराले लोकने, यो लेखणनो भार ॥ वेरे वींटी परजने, देवो दुःख अपार ॥ ५ ॥ अमें ओसरीयें पा पवी, तुमें न ओसरो कोय ॥ मरण बीक राखो नही, छाती ट पद ज्यु होय ॥ ६ ॥ पर उपदेश देवा पणुं, डाह्यपण राखो ठीक ॥ आप न जाये सासरे, दिये परायां शीख ॥ ७ ॥ निज अवगुण जोवो नही, पर अवगुण तुम लेय ॥ पापनी बांधी गांठडी, शीशे शीश धरेय ॥ ८ ॥ चंदन भार गर्दभ शिरें, जाणे लोकें दीप ॥ भारोदाह गर्दभ थयो, पण चंदन स्वाद न लीय ॥ ९ ॥ तिम मंत्री तुं जाणजे, तुझमां एह सभाव ॥ गुण उपगार जाण्यो नहीं, गर्दभ सम थयो ठाव ॥ १० ॥ एह व चन महिपति तणां, सांभलि चमक्यो चित्त ॥ मनमां चीनो मंत्र वी, राजा केहना मित्र ॥ ११ ॥ हित शीखामण देवतां, सा हाडुं देवे दोष ॥ गोलो गर्दभने हणी, गामडुं राखे रोष ॥ ॥ १२ ॥ महिपतिनुं मन ओलखी, बोल्यो मंत्रि तिवार ॥ हा स्वामी तुमें ज कही, मानुं वे निरधार ॥ १३ ॥ राजा के पर मेसरु, जे बोले ते सत्त ॥ एहमें जूठ न संपजे, दोषमें छे दैवत ॥ ॥ १४ ॥ मुखथी साकर पालीने, नृपने कर्यो प्रसन्न ॥ महिप तियें पण मंत्रीने, सनमान्यो सुवचन ॥ १५ ॥ सिरपाव देइ बोलावियो, मंत्रीने निज ठाय ॥ राजकाज शुभ चालवे, मद नवेग तिहां राय ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ ढाल ६ ठी ॥ धन मेतारज मुनिवरु ॥ ए देशी ॥ एक दिन बेठो मालीये, नृप मदन वेग ॥ वसंतसिरी चित्त सांभरी, मन थयो उद्वेग ॥ १ ॥ धिग धिग काम विटंबना, मोटे जोबन जागे ॥ ए आंकणी ॥ मोहनी दुर्जय जीततां, प ण दोहलुं लागे ॥ धि० ॥ २ ॥ तिण अवसरें एक मेहेतलो, कालसेन वे नामे ॥ नृपने नमि अति टूकडो, बेठो अभिराम ॥

॥ धि० ॥ ३ ॥ मननो मेळा मागीवियों, मट भग्यो कंठ
सूधी ॥ पण ते मने नणी पडे, माहा दुष्ट कुबुद्धि ॥ धि० ॥
॥ ४ ॥ नगट भामामी ने वगुं जाणे जडगनो मेळ ॥ चाडी
चुगली करी धर्णा, काढे [illegible] ॥ धि० ॥ ५ ॥ एह
वा कुर्बुद्ध मंत्रीमरू, पेडा नरक कानें ॥ [illegible] केरी वारता,
माडी एक वाने ॥ धि० ॥ ६ ॥ [illegible] कीर्ति विस्तरी, न
गर्गा जन मा [illegible] न मामकी एन नेनको [illegible] वडे तांहे ॥
॥ धि० ॥ [illegible] अकमात [illegible] ने, ततकाल संभेरयो ॥
[illegible] ॥ धि० ॥ ८ ॥
[illegible] उच्छापवा, मां
[illegible] जाणो अछो, हरि
[illegible] घातो ॥
[illegible] सेवा ॥
[illegible] ॥ ११ ॥
[illegible] कृपा ॥ पछे कहेसो जे
[illegible] ॥ पन्दसी अब
[illegible] अपणा, सणो भूरति
[illegible] समो, हरिचन्द्र
[illegible] जननी ए वाडी ॥
[illegible] अलेखे ॥
[illegible] ॥ धि० ॥ १५ ॥ धन्य
[illegible] जेने घरे, तस
[illegible] हरिचन्द्रनी करी,
[illegible] काइ बाकी न रा
[illegible] चमक्यो चित्तमांहे
॥ [illegible] ॥ धि० ॥

॥ १८ ॥ आगें वेरी कर वक्र्यो. वली करपकी छूटो ॥ आगें जुहारीने वली, मिल्यो साथी त्रुटो ॥ थि० ॥ १९ ॥ आगें सर्प छेडेडिने, कस्यो पुंठयी खांडो ॥ आगें अग्नि झालमां, सिच्यो घृत मांडो ॥ थि० ॥ २० ॥ तिम नृप हरिबल ऊपरें, घणुं रोष भराणो ॥ रे मंत्री हरिबल हणी, वस स्त्री घर आणो ॥ थि० ॥ २१ ॥ तव मंत्री कालसेन ते, कहे नृपने वाणी ॥ स्वामी हरिबलने हणे, जनमां जाय पाणी ॥ थि० ॥ २२ ॥ पण एक स्वामी उपाय छे. तुम बुद्धि बतावुं ॥ हरिबलने तुमें मोकलो, लंका गढ ठावुं ॥ ॥ २३ ॥ जलनिधिमें जातां थकां बहेसे एह बोलें ॥ तव नारी तुम मंदिरें, आवसें रंगरोलें ॥ थि० ॥ २४ ॥ ठाकुर चाकरनी इहां, साची खबर ते पडसे ॥ तुम आणा ते शिर धरी, लंका गढ चढछे ॥ थि० ॥ २५ ॥ ते माटे तेडी तुमें, हरिबलने पूछो ॥ एम कही घेर मेंहेतलो, गयो घालो छुंछो ॥ थि० ॥ २६ ॥ लव्वें बीजा वल्लासनी, कही छठी ढाल ॥ आगल भवि तुमें सांभलो, मींठी वात रसाल ॥ थि० ॥ २७ ॥

॥ दुहा ॥ इणि परें नृप मंत्रीसरु, एक मनो करि दोय ॥ महिपति पहोतो मंहेलमां, मंत्री गयो घर सोय ॥ १ ॥ बीजे दिन रवि ऊगियो, प्रगट्यो राग विभास ॥ शकुनियें बांह पसारीयां. केरव कीध विकास ॥ २ ॥ वाछरुआं वछुमां जई, धावाने हर्षेण ॥ दोवा बेसे भामिनी. लेइने छे घर धेण ॥ ॥ ३ ॥ देउल सघले वाजियां, झालरना झणकार ॥ तास शबद सुणतां थकां, रजनी नाठि निवार ॥ ४ ॥ सुश्रुभ बोधी जीवडा, मांडे निज खटकर्म्म ॥ साधुजन सुख मोमसी. धांधी दे जिनधर्म ॥ ५ ॥ मंगल वाजां वाजियां, वाज्यां गुहिर निशाण ॥ ए करणी परभातनी, जब ऊगे शुभ भाण ॥ ६ ॥

[illegible]

[illegible] सिंहासन [illegible]

[illegible]

[illegible] मोरदीनिय [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] मदत्ता मर्यो रे, कोइ न [illegible]

[illegible] ८ ॥ [illegible] पद्मिनी पोंरे रे, [illegible] करी [illegible]

[illegible] ॥ [illegible] वीके करी रे, [illegible]

[illegible] ९ ॥ [illegible] करी रही रे, [illegible]

र ॥ स० ॥ वंची रहूँ नवि जुवे रे, लज्जामणा सहु कोय ॥
॥ स० ॥ १० ॥ नव कर जोडी मंत्री कहे रे, कालसेन ने दृ
ष्ट ॥ स० ॥ स्वामीयें जे कही वारता रे, सांभली हुआ संतुष्ट
॥ स० ॥ ११ ॥ पण विषम पंथ आकरो रे, जलधिमें केम ज
वाय ॥ स० ॥ पण वटे सिद्ध न संपजे रे, भुजाथी न तराय
॥ स० ॥ १२ ॥ गज पाखर अंबुवाडिये रे, नावशी तुमें राजान
॥ स० ॥ ते किम निगयी कंथरा रे, वंची थावा निदान ॥
॥ स० ॥ १३ ॥ मनकोटनी कटि उपरें रे, मूकी गोळनी गुण
॥ स० ॥ गात्र विना केम उपडे रे, जे करे गभा विहुण ॥
॥ स० ॥ १४ ॥ निप स्वामी लंका गडे रे, शक्ति विना कुण
जाय ॥ स० ॥ पूरो पराक्रमी जे हुवे रे, ते जावा भंगमाय
॥ स० ॥ १५ ॥ के वहे लंका देवता रे, के विद्याधर होय
॥ स० ॥ के तपसी साधु जना रे, तो तरे जलनिधि तोय ॥
॥ स० ॥ १६ ॥ सीतानो शो आशरो रे, जलनिधिनो लहे ना
म ॥ स० ॥ दशरथसुत एक सांभल्यो रे, जलधियें बांधी पाग
॥ स० ॥ १७ ॥ केवली हरिबलने सुण्यो रे, जे बेठो तुम
पास ॥ स० ॥ जावे ए लंका गडे रे, वीडु छवीने उल्लास ॥
॥ स० ॥ १८ ॥ सबल पुरुष ए जाणियें रे, एहमां छे जग
दीश ॥ स० ॥ काम तुमारुं सारशे रे, पूरशे मननी जगीश
॥ स० ॥ १९ ॥ इणि परें कुमति मंत्रियें रे, नृपने विनति
कीध ॥ स० ॥ सुभट शिरोमणि इण समे रे, दीसे हरिबल
सिद्ध ॥ स० ॥ २० ॥ ते निसुणी नृप तिण वेळा रे, हरि
बलने कहे राय ॥ स० ॥ लोक पर्ड वीडुं ग्रहो रे, जिम सुख
संपद थाय ॥ स० ॥ २१ ॥ राय बिभीषणने जई रे, तेडि
आवजो भाटि ॥ स० ॥ मानशुं सुजशो तुम तणो रे, जाणिश
मनो उच्छाहि ॥ स० ॥ २२ ॥ नव हरिबल श्र

मनशुं विमासे आज ॥ स० ॥ जो नाकारो इहां करुं रे, तो
न रहे मुझ लाज ॥ स० ॥ २३ ॥ लाजें कप्पड पहेरीयें रे,
लाजें दीजें दान ॥ स० ॥ लाजें पंचमें बेसीयें रे, लाजें वाधे
मान ॥ स० ॥ २४ ॥ लाजें गढ कोट लीजियें रे, लाजें
रार्खीयें मत्त ॥ स० ॥ लाज वधी मुझ चित्त जमें रे, किन
कहुं ना हिंते झत्त ॥ स० ॥ २५ ॥ इणिपरें मनमां सोचीनें रे,
बोल्यो हरिबल ताम ॥ स० ॥ लावुं जइ लंकाधणी रे, तो हुं
खरो मुझ स्वाम ॥ स० ॥ २६ ॥ मेलवुं तुम लंकापति रे, तो
मुझ देजो शाबाश ॥ स० ॥ एम कही वंदु ग्रही रे, हरिबल
आव्यो आवास ॥ स० ॥ २७ ॥ थइ निजपति मुख देखि
ने रे, वसंतसिरी उजमाळ ॥ स० ॥ बीजा उल्लासनी ए
कही रे, लब्धियें सातमी ढाळ ॥ स० ॥ २८ ॥

॥ दुहा ॥ हरिबल कहे निज नारिने, सांभळ प्यारी मुझ ॥
जावो छे लंका भणी, मागुं आगा तुझ ॥ १ ॥ थिर चित्त करी
रहेजो तुमें, देजो दान सुपात्र ॥ शील सुरंगुं पालीने, करजो
निर्मळ गात्र ॥ २ ॥ धरजो ध्यान नवपद तणुं, चउद पूरव
नुसार ॥ समरचा जिम सानिध करे, भवे शिवसुखकार ॥
॥ ३ ॥ सेवजो गुरु देव एक मनें, जेणे वधारो धर्म ॥ कीर्ति
थी कुमर करचा, ओळखावी जिनधर्म ॥ ४ ॥ प्रीतम वचन
ते सांभळी, वसंतसिरी कहे एम ॥ शे कारण जावुं पडे, ते कहे
जाण जेम ॥ ५ ॥ नृप मांडी हकिगत कही, प्यारी आगल
तेह ॥ तिण कारण जावुं पडे, सांभळ तुं ससनेह ॥ ६ ॥
पियुनुं गमन ते सांभळी, कुमरी थइ दिलगीर ॥ आणे भाद्रवे
ह ज्युं, वरसे आंसु नीर ॥ ७ ॥ काळजेको घाली बहां, प्रे
मन तुम निसनेह ॥ निशि दिन विरहे तुम विना, बळे सुरंगी दे
ह ॥ ८ ॥ सघलुं दुःख खमीयें, प्रभु, पण विरहो न खमाय ॥

विरहानलनी झाळ जे, पिउ विण केम ओलाय ॥ ९ ॥ तेमाटे मोहन तुमें, मत जाओ परदेश ॥ मन किम रहेशे मुजतणुं, मुजने पाळो नेह ॥ १० ॥ नृपनुं कारज पिउ तुमें, मकरो लाळचा लिंग ॥ लंकापतिनो जाणज्यो, शिर गयो कंदर्पनी लिंग ॥ ११ ॥ जो मिथ्या भाखो तुमें, तो मुज तेहनो संग ॥ देखो परेशु तुम तणी, ओछुं लंका रंग ॥ १२ ॥

॥ ढाल ८ मी ॥ मामणरा योगी ॥ ए देशी ॥ तव श्री मय कहे मोहन प्यारी, मुज तुं छे मोहनगारी रे ॥ सुंदरी सम नेही ॥ तुज मुख देखि हुं सुख पाउं, तुज निशि दिन चित्तमें ध्याउं रे ॥ सुं० ॥ १ ॥ प्राणथकी छे तुं मुज वाहाली, जिम चंदने रोहणी वाहाली रे ॥ सुं० ॥ तुं मुज चित्रावेल समानी, तुं मुज बुद्धि निधानी रे ॥ सुं० ॥ २ ॥ जब गड ने प्रभुनी परिस्वानी, मीनदी तुज घुं छानी रे ॥ सुं० ॥ नेह निशिदिन थयो तुमसुं मेळो, थयो संदेश पुण्ये मेळो रे ॥ सुं० ॥ ३ ॥ महोनिश लालच रहे तुज केरी, शुं पयुं कहुं तुं फेरी रे ॥ सुं० ॥ तुमने इकतां मन नथी कहेतो, पण पाळतो पग नथी वहेतो रे ॥ सुं० ॥ ४ ॥ पण हुं कहुंछे नृपनी सेवा, करवी पडे पेटनी हेवा रे ॥ सुं० ॥ जो नृपनुं कह्युं नवि करिये, तो नृपनो जश किम वरिये रे । सुं० ॥ ५ ॥ जेहना घरनो रोटियो खावो, तस घरनो धोनो कहावो रे ॥ सुं० ॥ ए संसारमें शीर हे भलले, कारज कीरे जस रघे मरवे रे ॥ ॥ सुं० ॥ ६ ॥ ते माटे तुं सुंदरी मोरि, मुज भाखा हैं दिसोरि रे ॥ सुं० ॥ दीपकने जई आविस वेहलो, तुजनुं न्याय नेपरेशो रे ॥ सुं० ॥ ७ ॥ तव रमणी कहे मोहन प्यारा, तुम केम जमाना ध्याग रे ॥ मोहन सनेही ॥ मुज कहवे तुं पे गडाने सारिखा, मिळशो तो पुण्ये आकरषी रे ॥ मो० ॥ ८ ॥

मनशुं विमासे आम ॥ स० ॥ जो नाकारो इहां करुं रे, न रहे मुझ काम ॥ स० ॥ २३ ॥ लाजें कपड पहेरीयें लाजें दीजें दान ॥ स० ॥ लाजें पंथमें बेसीयें रे, लाजें मान ॥ स० ॥ २४ ॥ लाजें गढ कोट भांजियें रे, राखीयें मान ॥ स० ॥ लाज वडी मुझ पिउ तणी रे, [illegible] ना दिये सत ॥ स० ॥ २५ ॥ इणिपरें मनमां सोचीनें, बोल्यो हरिवंश ताम ॥ स० ॥ जाउं गइ लंकापुरी रे, लावुं मुज दास ॥ स० ॥ २६ ॥ मेलवुं तुम लंकापति रे, मुझ देवो [illegible] ॥ स० ॥ एम कही वीडु ग्रही रे, हरि [illegible] आराम ॥ स० ॥ २७ ॥ थइ निजपति मुरछी [illegible] ने रे, बलवंता बलवान ॥ स० ॥ बीजा उल्लासनी ढाली रे, [illegible] दास ॥ स० ॥ २८ ॥

॥ दुहा ॥ हरिवंश तव निज नारिनें, [illegible] पुत्र [illegible] अवो [illegible] मणी, [illegible] आगा तुम ॥ १ ॥ [illegible] तुम, [illegible] दान सुजाण ॥ [illegible] मुरछी [illegible], [illegible] ॥ २ ॥ [illegible] नव पद [illegible], [illegible] ॥ [illegible] मालिक [illegible], [illegible] ॥ [illegible] पद [illegible], [illegible] ॥ [illegible] जिनधर्म ॥ ४ ॥ [illegible] कहे एम ॥ [illegible] नारी तेह, [illegible] ॥ [illegible] हरिनाम कही, [illegible] ॥ [illegible] तु [illegible] ॥ ६ ॥ [illegible] कुमरी गइ [illegible] ॥ [illegible] ॥ ७ ॥ [illegible] ॥ [illegible] दिन [illegible], [illegible] ॥

विरहानलनी बाफ जे, पियुं विण केम ओल्हाय ॥ ९ ॥ तेमाटे मोकल तुमें, मन जाओ परदेश ॥ मन किम रहशे मूकतां, मझने घाले केश ॥ १० ॥ नृपनुं कारज पियु तुमें, महोटुं लाग्या विंग ॥ लंकापतिनो आणज्यो, जिहां गया वंदनो शिंग ॥ ११ ॥ जो भिलय मालो तुमें, तो मुझ तेडो संग ॥ देहज परेंतु तुम तणी, जोवा लंका रंग ॥ १२ ॥

॥ ढाल ८ मी ॥ आसणरा योगी ॥ ए देशी ॥ तव मी मय कहे सांभल प्यारी, मुझ तुं छे मोहनगारी रे ॥ सुंदरी सम नेहा ॥ तुझ मुख देखि हुं सुख पाउं, तुझ निशि दिन चित्तमें ध्याउं रे ॥ सुं० ॥ १ ॥ प्राणथकी छे तुं मुझ वाहाली, जिम चंदने रोहणी वाहाली रे ॥ सु० ॥ तुं मुझ चित्तवेल समानी, तुं मुझ बुद्धि निधानी रे ॥ सुं० ॥ २ ॥ जब थइ ते प्रभुनी मोहवाली, मीनदी तुझ पानी रे ॥ सुं० ॥ तेव [illegible] थयो तुझनुं मेलो, थयो संबंध पुण्ये मेलो रे ॥ सुं० ॥ ३ ॥ महोनिश लालच रहे तुझ केरी, मनुं पण कां० कहुं हुं फेरी रे ॥ सुं० ॥ तुझने मूकतां मन नथी कहेतो, पंथे चालतां पग नथी वहेतो रे ॥ सुं० ॥ ४ ॥ पण शुं करीयें नृपनी सेवा, कोइ पर पेरनी हेवा रे ॥ सुं० ॥ जो नृपनुं कह्यो नवि करी यें, तो नृपनो जस किम धरियें रे । सु० ॥ ५ ॥ जेहने ने ओलिग्यो स्वामी, तस घरनो धोलो थावो रे ॥ सुं० ॥ ए संग, ते शोर छे सयले, कान वींधे जस पछे मरके रे ॥ ॥ सुं० ॥ ६ ॥ ते माटे तुं सुंदरी भोरी, मुज आला दे हिवे गोरी रे ॥ सुं० ॥ शीघ्रपणे जइ आविस वेह्यो, नृपनुं कारज [illegible] ने करशो रे ॥ सु० ॥ ७ ॥ तव रमणी कहे सांभल प्यारा, [illegible] तुमें जावो रे ॥ सांभल मनमोहनरा ॥ मुझ वचनें [illegible] ने गुणवंत सांभलिया, जिनवर तो पूरणे आवज्यो रे ॥ सां० ॥

नें करी कहेजो रे. तेहनुं मन वश करी लेजोरे ॥ घणी लामण दीजे रे, तस अमृतफलरस लीजे रे ॥ १७ ॥ व वयामणी वहेली रे, लेइ भावजो दी छतां पहेली रे ॥ स मलामण दीधी रे, दोय दासीने विदाय कीधी रे ॥ १ दासी पण छाब ने लेई रे, पहोती हरिबल घरें वेई रे ॥ बेठी हरिबल नारी रे, मुकी छाब ते आगल सारी रे ॥ कहे दासी मधुरी वाणी रे, नृप मुकी ए तुमने जाणीरे ॥ उपर छे घणो नेह रे. घणुं शुं कहियें गुणगेह रे ॥ २० ॥ दिनथी तुम घर आव्यांरे, तिण दिनथी तुमें दिल भाव्यां भलां भोजन जव तुमें भीरुयां रे, तिण वेलायें नृप दिल स्यां रे ॥ २१ ॥ देखा तुमारी सुघडाइरे. नृप पाडे तुमने दाइ रे ॥ एक लालच रहे तुम केरीरे, जिम कोमीने रिरे ॥ २२ ॥ तुम विरहें क[illegible] नृप झुरे रे, राज काज ते मुक्यां रे ॥ जेम योगी प्रभुने ध्यावे रे, तेम नृप तुम नाम जपावे ॥ २३ ॥ इम रातें एकदी तुमशुं, मन मेल करो तुमें ॥ सरिखा सरिखो मिल्यो जोडो रे, नृपशुं तुमें तान म तोडोरे ॥ २४ ॥ थाइ तुन मोहोटां पुण्यारे, नृपशुं थइ मीत सगाइरे ए वात विधातायें मेली रे, आणे पयमां साकर भेली रे ॥ २५ तुमें मो कहो सांभलपणी रे, नृप आवे तुम घरे रयणींरे ॥ वातें छाम छे तुमनेरे, रामां करी थोडलो अमनेरे ॥ २६ इम दासीनी सांभली वाणीरे, तव कुमरी रोषें भराणीरे ॥ ब लागे विरहीनो चटकोरे, निम कुमरीने लागे भटकोरे ॥ २७ ॥ हिवे सुगणी कुमरी ध्यावे रे, [illegible] सुखडी ने आवे रे ॥ एतो बीजा उल्लासनी ढाल रे, लब्धें नवमी रसाल रे ॥ २८ ॥

॥ दुहा ॥ हिवे कुमरी कोपें करी, दे दासीने मार ॥

निम जीवित लगे, नहदा पाट महार ॥ १ ॥ नाठी जीवित ले इने, चतुरा दासी जेह ॥ नृप आगल आवी कहे, सघली मांडी तेह ॥ २ ॥ आसंत धूमारे थइ, केनी कहुं माहाराज ॥ लहेणे थी देणे पडी, ए फल लयो तुम काम ॥ ३ ॥ स्वामी तुम प रसादथी, जडियो कुंडीपाक ॥ साजो हलदर सेवशुं, तव हो शे तन चाक ॥ ४ ॥ स्वामी हरिबलनी प्रिया, 'दीठी वली कु पात्र ॥ जाणे कांअचवेलडी, पर सरखी नही पात्र ॥ ५ ॥ ते माहे प्रभुजी सुणो, ए नाते तुम हाथ ॥ एहथी मनडु चाल जो, कर छोडी कहु नाथ ॥ ६ ॥ एह वचन दासी तणां, सांभलि नृप बलझाप ॥ हा हा में ए शुं कर्युं, इम नृप धोखो कराय ॥ ॥ ७ ॥ ही मनमें धारी हतो, दैवें थी करी वात ॥ नृप कन्या परसादथी, त्यामें द्विज भसात ॥ ८ ॥ जाण्युं हतु वडा आव शे, हरिबल केरी नारि ॥ पण साहामुं इणि नारिये, उतार्युं नृपवारि ॥ ९ ॥ हाणि अने हांसी बहु, थइ नृप चिंते एम ॥ एह दुख केहने दाखवुं, होठें दाधो जेम ॥ १० ॥ इम नरपति झुरण करे, सांभलि दासी वेण ॥ ते दिन वयारे आवशे, देखशुं ते म्हो नेण ॥ ११ ॥ पोले वीजी फिरि मोकलुं, जेह विचक्षण होय ॥ हयद सरीखा मानवी, भिजवी आगे सोय ॥ १२ ॥ तव पटराणी निजप्रिया, प्रीतिमती गुण गेह ॥ तेहने तेडी नृप कहे, सांभल तु ससनेह ॥ १३ ॥ कारज एक तुमशुं भले, सुगुण लहां कहुं तुझ ॥ हरिबल केरी जे प्रिया, मेलव आणी मुझ ॥ १४ ॥ तव राणी कहे कंतने, सांभलजो मोहनाथ ॥ प्रीति घणी पलकर्यें, लेइ सोंपुं तुम हाथ ॥ १५ ॥ एम कही ऊठी तुरत, बीडुं छवि निज दार ॥ चाली हरिबल मंदिरे, ग णी लेइ परिवार ॥ १६ ॥

॥ ढाल १० मी ॥ सूरती हिमनानी देशी ॥ हिवे कुमरी अपरी

परें, बेठी महेल मझार ॥ निज सखीयांशुं परवरी, करती केलि अपार ॥ तिण अवसर नृपराणी रे, जे गुणखाणी रे सार ॥ आवती दीठी रे मीठीयें, वसतसीरीयें निवार ॥ १ ॥ कुमरीये जाण्युं जे में हणी, दासीने काढी रे मोय ॥ क्रोध वशें जे में हणी, तेहनी आवी ए लोय ॥ खीज्यो नृप तव जाणी रे, मुकी ए राणीने धाय ॥ इम कुमरी मन चिंतवी, लटपट मांड्यो उपाय ॥ २ ॥ तव कुमरी सनमुख जइ, राणीने भीडी रे बाथ ॥ अंगोअंग मिलीने रे, चरणे नमे सहु साथ ॥ आगत स्वागत राणीनी, कुमरीयें कीधी रे जोर ॥ राणीनुं मन रीझवे, वसतसिरी तिण ठोर ॥ ३ ॥ चंद्रवदनी दो बेठी रे, वातें एकण थान ॥ जाणे स्वर्गथी ऊतरी, रंभा उरवशी मान ॥ रूप अनुपम वे हुनां, हुं करु केनां वखाण ॥ जाणे कंदर्प वाडीयें, मगटी पुण्य प्रमाण ॥ ४ ॥ एहवी ए राज कुमारी रे, प्यारी दो गुणवंत ॥ सरखा सरखी रे जोडी, मिलि करी वातडी संत ॥ वसंतसिरी शुभ रंगशुं, कहे पटराणीने थाग ॥ भलें रे पधारयां राणीजी, कोडी सुधारयां रे काज ॥ ५ ॥ तुम आवे अम मंदिर, पावन हुवो जी चंग ॥ अम सरिखु जे काम हुवे, ते कहो जी सुरंग ॥ तव राणी कहे कुमरीने, छ एक तुमशुं जी काग ॥ बहिन करीने थापवा, आवी छुं गुणधाम ॥ ६ ॥ एम कहीने रे आपे रे, नवलखो नवसरो हार ॥ वली बीजां बहु भूषणो, भूषण आपे श्रीकार ॥ तव कुमरीयें जाण्युं जे, राणीयें मांड्यो जी दाम ॥ जो नवि राखुं तो आगल, होवे महोटो विनाश ॥ ७ ॥ नृपनी राणीने दुखवतां, पूरवे नहि इण ठाम ॥ ते माटे कुमरीयें, सुरभ राख्यां जी ताम ॥ सुरनी पिठायें कंगी रहे, नृपनी राणीने नेह ॥ बहेन करीने थापी, ते अंब जाण्यु जी तेह ॥ ८ ॥ ते मन जाणजो राणीजी, वसंतसिरी नं

भोराय ॥ ते नहीं कोड जे आकरा, पवने करी डोलाय ॥ उग
मणी दिशि मूकी जो, ऊगे पश्चिम भाण ॥ गसिहर जो अग्नि
झरे, तो सतीं न चूके ठाण ॥ ९ ॥ पण तुं कराये राणी जी,
अंते तमतणी काम ॥ नृपने जो अर्मे दूहवीयें, तो वली कोडेजी
दाम ॥ ते जाणी अमें राखीयें, राणीजी तुमतु प्यार ॥ आजथी
राखीयें तुमतुं, वंदनपणुं निरधार ॥ १० ॥ पण एक सांभलो
विनती, राणीजी कहुं तुम वात ॥ में व्रत लीधुं छे गुप्तन, नामे
तप विख्यात ॥ ते तप छे एक मासनुं, ते जव पूरुं रे थाय ॥
तव नरपतिनी राणीजी, मननी हाम पुराय ॥ ११ ॥ इम स
त्य राखवा कुमरीयें, मुखथी साकर बोल ॥ दीधो दिलासो ग
हीने, उपजावी रंगरोल ॥ तव हरखित थइ राणीए, सांभली
कुमरी बोल ॥ राणी जाणे मुज आव्यानो, कुमरीयें राख्यो जी
तोल ॥ १२ ॥ अवसर लही कुमरीयें, राणीने हर्ष उपाय ॥ अ
शन वसन करी रीझवी, राणीने कीध विदाय ॥ राणीयें पण
जइ नृपने, दीध वधाई दीय ॥ आजथी एक मासांतरें, नृप तुम
मनोरथ सिद्ध ॥ १३ ॥ मासनु तप कुमरीयें, मांड्युं महोटे मंडा
ण ॥ ते तप पूरण थइ रहे, कुमरी मिल्यें सुजाण ॥ तिहां लगें
नाथजी बेठा, प्रभुनुं भजन करेय ॥ निशें मकशे कुमरी, जीव
ने धैर्य धरेय ॥ १४ ॥ इणिपरें राणीनी सांभळी, वाणी नृ
प हरखेन ॥ भाग्य दिशा तुम जागी, भांगी भावट प्रांत ॥ नृप
ना मनमें रंग, तरंग ज्युं जलधीमां रंग ॥ जाणे मासनुं मासने,
अंतरे कुमरीनो संग ॥ १५ ॥ सागर पल्योपमनां जे, कह्यां महा
टां रे आय ॥ ते सरख्या पण जीवने, भोगवतां वही जाय ॥
तो गुं इणमें मासनुं, जातुं केतिक वार ॥ आजने काल करतां,
वहेसे मास विचार ॥ १६ ॥ इणिपरें आशा वासमें, मदनवेग
उल्लास ॥ निशिदिन रहे मगन थइ, ज्युं मद पीथ विलास ॥

परें, बेठी महेल मझार ॥ निज सखीयांशुं परवरी, करती केलि अपार ॥ तिण अवसर नृपराणी रे, जे गुणखाणी रे सार ॥ आवती दीठी रे मीठीयें, वसतसीरीयें तिवार ॥ १ ॥ हृदे विमासे जाण्युं जे में हणी, दासीने काढी रे मोथ ॥ क्रोध वशे जे में हणी, तेहनी आवी ए लोथ ॥ खीज्यो नृप तव जाणी रे, मुकी ए राणीने धाय ॥ इम कुमरी मन चिंतवी, लटपट मांड्यो उपाय ॥ २ ॥ तव कुमरी सनमुख जइ, राणीने भीडी रे बाथ ॥ अंगोअंग मिलीने रे, चरणे नमे सहु साथ ॥ आगत स्वागत राणीनी, कुमरीयें कीधी रे जोर ॥ राणीनुं मन रीझवे, वसंतसिरी तिण ठोर ॥ ३ ॥ चंद्रवदनी दो बेठी रे, वातें एकण थान, ॥ जाणे स्वर्गथी ऊतरी, रंभा उरवशी मान ॥ रूप अनूपम रे हुनां, हुं करुं केतां वखाण ॥ जाणे कंदर्प वाटीयें, मगटी पुन्य प्रमाण ॥ ४ ॥ एहवी ए राज कुमारी रे, प्यारी दो गुणवंत ॥ सरखा सरखी रे जोडी, मिलि करी वातडी संत ॥ वसंतसिरी शुभ मुहरी, कहे पटराणीने आज ॥ भलें रे पधारयां राणीजी, कीधां सुधारयां रे काज ॥ ५ ॥ तुम आवे अम मंदिर, पावन हुवो जी चंग ॥ अम सारिखुं जे काम हुवे, ते कहो जी सुंग ॥ तव राणी कहे कुमरीने, छे एक तुमशुं जी काम ॥ वहिन करीने थापवा, आवी छुं गुणधाम ॥ ६ ॥ एम कहीने ते आपे रे, नवलखो नवसरो हार ॥ वली बीजां बहु आं, भुषण आपे श्रीकार ॥ तव कुमरीयें जाण्युं जे, राणीयें ह्यो जी धाम ॥ जो नवि राख्यो आगल, होवे महोटो [illegible] न ॥ ७ ॥ नृपनी राणीने हुइवनां, पुरवे नहि इण ठाम ॥ जाणीने कुमरीयें, भुषण राख्यां जी नाम ॥ मुखनी मिठाशें जी कहे, सुनजी राणीने नेह ॥ वंदन करीने थापो, ते भैन [illegible] णु जी तेह ॥ ८ ॥ तें मन नाणजो राणीजी, वसंतसिरी जे

भोराय ॥ ने नदी कोट जे आकरा, पवनें करी डोलाय ॥ उग
मणी दिशि मूकी जो, ऊगे पश्चिम भाण ॥ मंगिरि जो अग्नि
झरे, तो मती न चूके ठाण ॥ ९ ॥ पण शुं कराये राणी जी,
अने मनशुद्धी काम ॥ नृपने जो अमें दुहवीयें, तो वली फोडनी
ठाम ॥ ने जाणी अमें राखीयें, राणीजी तुमशुं प्यार ॥ आजथी
राखीयें तुमशुं, बेहेनपणुं निरधार ॥ १० ॥ पण एक मांभलो
विनती, राणीजी कहुं तुम वात ॥ में व्रत लीधुं छे गुप्तत, नावे
तर विख्यात ॥ ते तप छे एक मासनुं, ते जव पूरूं रे थाय ॥
तव नरपतिनी राणीजी, मननी हाम पूराय ॥ ११ ॥ इम स
त्य राखवा कुमरीयें, मुखथी साकर घोल ॥ दीधो दिलासो ग
हीने, उपजावी रंगरोल ॥ तव हरखित थइ राणीए, सांभली
कुमरी बोल ॥ राणी नाणे मुख आव्या जो, कुमरीयें राख्यो जी
तोल ॥ १२ ॥ अवसर लही कुमरीयें, राणीने हर्ष उपाय ॥ अ
शन वसन करी रीझवी, राणीने कीध विदाय ॥ राणीयें पण
जइ नृपने, शीघ्र वधाई दीध ॥ आजथी एक मासांतरें, नृप तुम
मनोरथ सिद्ध ॥ १३ ॥ मासनु तप कुमरीयें, मांड्युं मनोहर मंडा
ण ॥ ते तप पूरण थइ रहे, कुमरी चिन्तवे सुजाण ॥ जिहां लगें
नाथजी वेठा, प्रभुनुं भजन करेय ॥ निश्चें मक्रेश कुमरी, जीव
ने धैर्य धरेय ॥ १४ ॥ इणिपरें राणीनी सांभळी, वाणी नृप
हरखंत ॥ भाग्य दिशा तुम जागी, भांगी भावठ भ्रांत ॥ नृप
ना मनमें रंग, तरंग ज्युं चढ्यो रंग ॥ जाग माणशुं मामने,
अंतरें कुमरीशुं संग ॥ १५ ॥ सागर पल्योपमनां जे, कह्यां मही
दां रे आय ॥ ते मरता पण जीवने, भोगवतां पछी जाय ॥
तो शुं इणमें मासनुं, जातुं केतिक वार ॥ आजने काल करतां,
वहेशे मास विचार ॥ १६ ॥ इणिपरें आशा वासमें, मदनवेग
उद्दाम ॥ निशिदिन रहे मगन थइ, ज्युं मद पीध गुलाम ॥

भोलाय ॥ ते नहीं कोट जे आकरा, पवनें करी डोलाय ॥ उग मणी दिशि मुकी जो, ऊगे पच्छिम भाण ॥ शशिहर जो अग्नि झरे, तो सती न चूके ठाण ॥ ९ ॥ पण शुं करीयें राणी जी, अंतें तमशुंजी काम ॥ नृपने जो अमें दुहवीयें, तो वली फोडनी ठाम ॥ ते जाणी अमें राखीयें, राणीजी तुमशुं प्यार ॥ आजथी राखीयें तुमशुं, बेहेनपणुं निरधार ॥ १० ॥ पण एक सांभलो विनती, राणीजी कहुं तुम वात ॥ में व्रत लीधुं छे सुव्रत, नामें तप विख्यात ॥ ते तप छे एक मासनुं, ते जब पूरुं रे थाय ॥ तव नरपतिनी राणीजी,' मननी हाम पूराय ॥ ११ ॥ इम स्त्य राखवा कुमरीयें, मुखथी साकर घोल ॥ दीधो दिलासो ग खीने, उपजावी रंगरोल ॥ तव हरखित थइ राणीए, सांभली कुमरी बोल ॥ राणी जाणे मुझ आव्यानो, कुमरीयें राख्यो जी तोल ॥ १२ ॥ अवसर लही कुमरीयें, राणीने हर्ष उपाय ॥ अ शन वसन करी रीझवी, राणीने कीध विदाय ॥ राणीयें पण जइ नृपने, शीघ्र वधाई दीध ॥ आजथी एक मासांतरें, नृप तुम मनोरथ सिद्ध ॥ १३ ॥ मासनुं तप कुमरीयें, मांड्युं महोटे मंडा ण ॥ ते तप पूरण थइ रहे, कुमरी मिलशे सुजाण ॥ तिहां लगें नाथजी वेठा, प्रभुनुं भजन करेय ॥ निश्चें मळशे कुमरी, जीव ने धैर्य धरेय ॥ १४ ॥ इणिपरें राणीनी सांभली, वाणी नृप हरखेत ॥ भाग्य दिशा तुझ जागी, भांगी भावठ भ्रांत ॥ नृप ना मनमें गंग, तरंग ज्युं वहतो रंग ॥ जोग माणशुं मासने, अंतरे कुमरीशुं चंग ॥ १५ ॥ सागर पल्योपमनां जे, कह्यां महा ठां रे आय ॥ ते सरखां पण जीवने, भोगवतां वही जाय ॥ तो शुं इणमें मासनुं, जाणुं केतिक वार ॥ आजने काल करतां, वहेशे भास विचार ॥ १६ ॥ इणिपरें आशा वासमें, मदनवेग उड़ान ॥ निशिदिन रहे मगन थइ, ज्युं मद पीध ।विराम ॥

भोराय ॥ ते नदी कोट ने आकरा, पवने करी दोलाय ॥ उग
मणी दिशि दुकी जो, ऊगे पश्चिम भाण ॥ गगिहर जो भीष
झरे, तो मती न चूके टाण ॥ ९ ॥ पण तुं करीये रागी भी,
अंते नमराजी काम ॥ नृपने जो अपे दुरवीये, तो वर्णा फोरनी
टाम ॥ ते जाणी अमे रागीये, राणीजी तुमयु प्यार ॥ आजथी
रागीये तुमनुं, वडेनपणुं निरधार ॥ १० ॥ पण एक मांभलो
विनती, राणीनी कहुं तुम वात ॥ मे ग्रन लीधुं छे गुप्रन, नावे
नव विरूपान ॥ ते नप छे एक मासनु, ते जव पूरुं रे थाय ॥
तव नरपतिनी राणीनी,' मननी हाम पुराय ॥ ११ ॥ इम स
त्य गरसवा कुमरीये, मुखथी साकर घोल ॥ दीधो दिलासो ग
र्भने, वपनावी रंगरोल ॥ तर हरखित थई राणीए, मांभल्यो
कुमरी बोल ॥ रागी आणे मुख भाव्यागो, कुमरीये गल्यां जी
तोल ॥ १२ ॥ अवसर लही कुमरीये, राणीने हर्ष उपाय ॥ अ
शन वसन करी रोमथी, राणीने कीध विदाय ॥ रागीये पण
जद नृपने, शीघ्र वधाई दीध ॥ आजथी एक मासांतरे, नृप तुम
मनोरथ सिद्ध ॥ १३ ॥ मासनु तप कुमरीये, मांडयु मरोटे मंदा
ण ॥ ते तप पूरण थई रहे, कुमरी मिल्डे सुजाग ॥ निहां लगे
नायजी नेहा, प्रभुनुं भजन करेय ॥ निर्भे मछेशे कुमरी, जीव
ने धैर्य धरेय ॥ १४ ॥ इणिपरे रागीनी भोमछे, वाणी नृप
हरखंत ॥ भाग्य दिशा तुम जागी, भांगी भावठ ध्रांत ॥ नृप
ना मनमे गंग, तरंग ज्युं उछलो रंग ॥ जांग माणमुं मामने,
अंतरे कुमरीशुं संग ॥ १५ ॥ सागर पल्योपमनां जे, कर्या मदा
ठां रे आय ॥ ते सगला पण भोगवे, भोगवतां वही जाय ॥
तो शुं इणमे मासनु, नावुं केतिक वार ॥ भाजने फाऊ करतां,
वदेशे नाम विचार ॥ १६ ॥ इणिपरे आशा नागमे, मदनरंग
उल्लास ॥ निशिदिन रहे मगन थई, ज्यु मद पीध ।दिलास ॥

भीराय ॥ ते नहीं कोइ मे आकरा, पवने करी दोमाय ॥ उग
मणी दिशि पूर्वी जो. ऊगे पश्चिम भाण ॥ गगिरर जो भीम
डगे, तो मनी न चूके ठाण ॥ ९ ॥ पण नृं कर्णीयें राणी भी.
अने सतगुणी धाम ॥ नृपने जो अमे दुहवीयें, तो चली फोकमी
ठाम ॥ ते आणी अमे राग्वीयें, राणीनी तुमगु प्यार ॥ आगथी
राखीयें तुमगुं, बहेनपणुं निरधार ॥ १० ॥ पण एक गोभनी
विनती, राणीजी कहुं तुम बात ॥ में अन भीगुं छे गुप्त, नावे
मन विश्राम ॥ ते नप छे एक मासनू, ते जर पूर्ण थे थाय ॥
तव नरपतिनी राणीनी, मननी हाम पुराय ॥ ११ ॥ इम स
रुप राखवा कुमरीयें, सुखथी साकर थोल ॥ दीधो दिलासो ग
र्भीने, उपजावी रंगरोल ॥ तव हरखित थइ राणीए, सांभली
कुमरी बोल ॥ राणी जाणे मुझ आपणो, कुमरीयें राख्यो जी
तोल ॥ १२ ॥ अवसर लही कुमरीयें, राणीने हर्ष उपाय ॥ अ
शन वसन करी रोसडी, राणीने कीध विदाय ॥ राणीयें पण
जइ नृपने, आवी वधाई दीध ॥ आजथी एक मासांतरें, नृप तुम
मनोरथ सिद्ध ॥ १३ ॥ मासनु तप कुमरीयें, मांडयु मरोरे मंडा
ण ॥ ते तप पूरण थइ रहे, कुमरी मिलशे सुजाण ॥ तिहां लगे
नायजी नेहा, प्रभुनुं भजन करेय ॥ निर्मे मनमें कुमरी, जीव
ने धैर्य धरेय ॥ १४ ॥ इणिपरें राणीनी सांभली, वाणी नृप
हरखंत ॥ मास दिवस तुम आगी, भांगी भावठ भ्रांत ॥ नृप
ना मनमें रंग. तरंग ज्युं उछल्यो रंग ॥ जोग माणशुं मामने,
अंतरे कुमरीशुं चंग ॥ १५ ॥ सागर पल्योपमनां जे, कह्यां मही
डां रे माय ॥ ते समस्त पण जीवने, भोगवतां वही जाय ॥
तो शुं इणमें मासनुं, जातुं केतिक वार ॥ आजने काल करंतां,
वरेशे नाम विचार ॥ १६ ॥ इणिपरें आशा वागमें, मदनेंग
उद्दाम ॥ निशदिन रहे मगन थइ. ज्युं मद पीथ ।विराम ॥

भोगवे ॥ ते नहीं कोइ बे भावथी, पवने वर्ग दोलाय ॥ इण
पर्णी शिर मूकी ओ, करे पश्चिम भाण ॥ नरिवर जो शील
हणे, तो सर्ता न मूके टाण ॥ ९ ॥ पण तुं वर्गवे गयो ओ,
अने मदनोनो काम ॥ नृपने जो अमे दुरवीये, तो बनी पतंगनो
दाव ॥ ते जाणी अवे राणीये, राणीनी नृपशुं प्यार ॥ भावथी
राणीये मुनशुं, वीनवणुं निरधार ॥ १० ॥ पण एक मांहमां
विनती, राणीनी करे नृप वात ॥ ते मन लीधुं छे गुप्त, नावे
नर विख्यात ॥ ते मन छे एक आसनु, ते मन पूरुं रे धाम ॥
मन नरपतिनी राणीनी, मननी हाम पूराय ॥ ११ ॥ इम म
रूप राखवा कुमरीने, मुखथी साकर घोल ॥ दीधो दिलासो रा
णीने, उपजावी रंगरोळ ॥ नर हरखित थइ राणीए, सांभरी
कुमरी बोल ॥ राणी जाणे सुख आव्यानो, कुमरीने राख्यो जी
तोल ॥ १२ ॥ अवसर लही कुमरीये, राणीने रूप उपाय ॥ अ
गन वमन करी गमशी, राणीने कीध विदाय ॥ राणीये पण
जइ नृपने, शीघ्र वधाई दीर ॥ भावथी एक मासांतरे, नृप तुम
मनोरथ सिद्ध ॥ १३ ॥ मासनु तव कुमरीये, मांड्यु पहोरे मंडा
ण ॥ ते तव पूरण थइ रहे, कुमरी चित्तमें सुजाण ॥ शिर करो
नाथनी सेवा, प्रभुनुं भजन करेय ॥ निर्धे पण कुमरी, शील
ने धैर्य धरेय ॥ १४ ॥ इणिपरे राणीनो थांभ हो, वाणी नृप
दरबार ॥ भाग्य दिशा तुम जागी, मांगी भावरू सार ॥ नृप
ना मनमें रंग, तरंग ज्युं वरस्यो रंग ॥ जोग आपणुं आमने,
अंतरे कुमरीशुं संग ॥ १५ ॥ सागर पल्योपमनां जे, कह्यां मह
टां रे आय ॥ ते सरखा पण ओछवने, भोगवतां वही जाय ॥
तो शुं इणमें मासनुं, जाणुं केतिक वार ॥ आजने काल करतां,
वहेशे मास विचार ॥ १६ ॥ इणिपरे आशा वासमें, मदनवेग
उल्लास ॥ निशदिन रहे मगन थइ, ज्युं मद पीध विलास ॥

भोलाय ॥ ते नहीं कोट जे भाकरा, पवने कर्ग डोलाय ॥ उग मणी दिशि सुर्का जो, ऊगे पश्चिम भाण ॥ मगिरर जो अग्नि झरे, तो सती न चूके ठाण ॥ ९ ॥ पण शुं करीयें रागी जी, अंगे समदंजी काम ॥ नृपने जो अर्मे दुहवीयें, तो वर्ली कोडेजी दाम ॥ ने जाणी अमें राखीयें, राणीजी तुमशु प्यार ॥ आजथी राखीयें तुमनुं, बहेनपणुं निरधार ॥ १० ॥ पण एक सांभलो विनती, राणीजी कहुं तुम वात ॥ में व्रत लीधुं छे गुप्रत, नामे तप विख्यात ॥ ते तप छे एक मासनुं, ते जव पूरूं रे थाय ॥ तव नरपतिनी राणीजी, मननी हाम पूराय ॥ ११ ॥ इम स त्य राखवा कुमरीयें, मुखथी साकर बोल ॥ दीधो दिलासो ग सीने, उपजावी रंगरोल ॥ तव हरखित थइ राणीए, सांभली कुमरी बोल ॥ रागी जाणे मुज आव्यानो, कुमरीयें राख्यो जी तोल ॥ १२ ॥ अवसर लही कुमरीयें, राणीने हर्ष उपाय ॥ अ शन वसन करी रीझवी, राणीने कीध विदाय ॥ राणीयें पण जइ नृपने, दीध वधाई दीर ॥ आजथी एक मासांतरें, नृप तुम मनोरथ सिद्ध ॥ १३ ॥ मासनुं तप कुमरीयें, मांड्युं महोटे मंडा ण ॥ ते तप पूरण थइ रहे, कुमरी मिलशे सुजाण ॥ तिहां लगें नायजी बेठा, प्रभुनुं भजन करेय ॥ निश्चें मलशे कुमरी, जीव ने धैर्य धरेय ॥ १४ ॥ इणिपरें रागीनी सांभली, वाणी नृ प हरखंत ॥ भाग्य दिशा तुम जागी, भांगी भावठ भ्रांत ॥ नृप ना मनमें रंग, तरंग ज्युं उछल्यो रंग ॥ जाणे माणशुं मानने, अंगरे कुमरीशुं संग ॥ १५ ॥ सागर पल्योपमनां जे, कह्यां महा टां रे आय ॥ ते सरखा पण औवने, भोगवतां नहीं जाय ॥ तो शुं इणमें मासनुं, जातुं केतिक वार ॥ आजने काल करतां, वहेशे भाग विचार ॥ १६ ॥ इणिपरें आशा पासमें, मदनवेग उल्लास ॥ निशिदिन रहे मगन थइ, ज्युं मद पीध विलास ॥

भोजाय ॥ ते नहीं कोट जे आकरा, पवने करी डोलाय ॥ उग
मणी दिशि मुकी जो, ऊगे पच्छिम भाण ॥ गगिहर जो अग्नि
झरे, तो सती न चूके ठाण ॥ ९ ॥ पण शुं करीयें राणी जी,
अंबे समर्पजो काम ॥ नृपने जो अमें दुहवीयें, तो वली कोडेनी
ठाम ॥ ते जाणी अमें राखीयें, राणीजी तुमशुं प्यार ॥ आजथी
राखीयें तुमशुं, बहेनपणुं निरधार ॥ १० ॥ पण एक सांभलो
विनती, राणीजी कहुं तुम वात ॥ में व्रत लीधुं छे सुव्रत, नामे
तर विख्यात ॥ ते तप छे एक मासनुं, ते जब पूरूं रे थाय ॥
तब नरपतिनी राणीजी,' मननी हाम पुराय ॥ ११ ॥ इम स
रस रासवा कुमरीयें, मुखथी साकर घोल ॥ दीधो दिलासो ग
खीने, उपजावी रंगरोल ॥ तब हरखित थइ राणीए, सांभली
कुमरी बोल ॥ राणी जाणे मुझ आव्याजो, कुमरीयें राख्यो जी
तोल ॥ १२ ॥ अवसर लही कुमरीयें, राणीने हर्ष उपाय ॥ अ
शन वसन करी रीझवी, राणीने कीध विदाय ॥ राणीयें पण
जइ नृपने, शीघ्र वधाई दीध ॥ आजथी एक मासांतरें, नृप तुम
मनोरथ सिद्ध ॥ १३ ॥ मासनुं तप कुमरीयें, मांड्युं मनोहर मंडा
ण ॥ ते तप पूरण थइ रहे, कुमरी मिलशे सुजाण ॥ तिहां लगें
नायजी वेठा, प्रभुनुं भजन करेय ॥ निश्चें मलशे कुमरी, धीर
ने धैर्य धरेय ॥ १४ ॥ इणिपरें राणीनी सांभली, वाणी नृ
हरखंत ॥ भाग्य दिशा तुम जागी, भांगी भावठ भ्रांत ॥ नृप
ना मनमें रंग, तरंग ज्युं वळवळ्यां रंग ॥ आगे माणशुं मामने,
अंतरे कुमरीशुं संग ॥ १५ ॥ सागर पल्योपमनां जे, कह्यां मही
ठां रे आय ॥ ते सरखा पण जीवने, भोगवतां वही जाय ॥
तो शुं इणमें मासनुं, आवुं केतिक वार ॥ आजने काल करंतां,
वहेसे मास विचार ॥ १६ ॥ इणिपरें आशा वागमें, मदनवेग
उद्दाम ॥ निशिदिन रहे मगन थइ, ज्युं मद पीय ।लिमाम ॥

भोलाय ॥ ते नदी कोट जे आकरा, पवनें करी डोलाय ॥ उग मणी दिशि मुकी जो, ऊगे पश्चिम भाण ॥ मसिहर जो अग्नि झरे, तो सती न चूके ठाण ॥ ९ ॥ पण तुं करीयें राणी जी, अंतें तमथी काम ॥ नृपने जो भ्रमें दुहवीयें, तो वली फोडिजी ठाम ॥ ते जाणी अमें राखीयें, राणीजी तुमशुं प्यार ॥ आजथी राखीयें तुमशुं, बहेनपणुं निरधार ॥ १० ॥ पण एक सांभलो विनती, राणीजी कहुं तुम वात ॥ में मन लीधुं छे मुझन, नामें तप विख्यात ॥ ते तप छे एक मासनुं, ते जव पूरुं रे थाय ॥ तव नरपतिनी राणीनी, मननी हाम पुराय ॥ ११ ॥ इम स त्य राखवा कुमरीयें, मुखथी साकर घोल ॥ दीधो दिलासो ग खीने, उपजावी रंगरोल ॥ तव हरखित थइ राणीए, सांभली कुमरी बोल ॥ राणी जाणे मुझ आव्यानो, कुमरीयें राख्यो जी तोल ॥ १२ ॥ अवसर लही कुमरीयें, राणीने हर्ष उपाय ॥ अ शन वसन करी रीझवी, राणीने कीध विदाय ॥ राणीयें पण जइ नृपने, दीध वधाई दीध ॥ आजथी एक मासांतरें, नृप तुम मनोरथ सिद्ध ॥ १३ ॥ मासनुं तप कुमरीयें, मांडयुं मरोडे मंडा ण ॥ ते तप पूरण थइ रहे, कुमरी चित्तमें सुजाण ॥ तिहां लगे नायकी बेठा, प्रभुनुं भजन करेय ॥ निशें मकरी कुमरी, जीव नें धैर्य धरेय ॥ १४ ॥ इणिपरें राणीनी भांभणी, वाणी नृप हरखंत ॥ भाग्य दिशा तुम जागी, भांगी भावट भ्रांत ॥ नृप ना मनमें गंग, तरंग ज्युं ब हक्यो रंग ॥ जाणे माणसुं मासने, अनेरे कुमरीशुं संग ॥ १५ ॥ सागर पल्योपमनां जे, कह्यां महा ठाणे आय ॥ ते सरखा पण जोवने, भोगवतां वही जाय ॥ तो मुं इणमें मासनुं, जावुं कौतक वाग ॥ आजने काल करंतां, वहेशे भाल विचार ॥ १६ ॥ इणिपरें आशा वासमें, मदनरंग उल्लास ॥ निशिदिन रहे मगन थइ, ज्युं मद पीध ऽविलास ॥

भोजाय ॥ ते नहीं कोट जे आकरा, पवनें करी डोलाय ॥ उग मणी दिशि मुकी जो, ऊगे पच्छिम भाण ॥ मेरुगिर जो अग्नि झरे, तो सती न चूके ठाण ॥ ९ ॥ पण हुं कांयें राणी जी, अछे तमतणी काम ॥ नृपने जो अमें दूहवीयें, तो वली फोडिसी ठाम ॥ ते जाणी अमें राखीयें, राणीजी तुमशुं प्यार ॥ आजथी राखीयें तुमशुं, बहेनपणुं निरधार ॥ १० ॥ पण एक सांभलो विनती, राणीजी कहुं तुम वात ॥ में व्रत लीधुं छे सुव्रत, नामें तप विख्यात ॥ ते तप छे एक मासनुं, ते जव पूरुं रे थाय ॥ तव नरपतिनी राणीजी, मननी हाम पूराय ॥ ११ ॥ इम स त्य राखवा कुमरीयें, मुखथी साकर घोल ॥ दीधो दिलासो ग खीने, उपजावी रंगरोल ॥ तव हरखित थइ राणीए, सांभल्यो कुमरी बोल ॥ राणी जाणे मुझ आव्यातो, कुमरीयें राख्यो जी तोल ॥ १२ ॥ अवसर लही कुमरीयें, राणीने हर्ष उपाय ॥ भ क्षन वसन करी रीझवी, राणीने कीध विदाय ॥ राणीयें पण जइ नृपने, दीध वधाई दीव ॥ आजथी एक मासांतरें, नृप तुम मनोरथ सिद्ध ॥ १३ ॥ मासनुं तप कुमरीयें, मांड्युं मरोटे मंडा ण ॥ ते तप पूरण थइ रहे, कुमरी मिलशे सुजाण ॥ तिहां लगें नाथजी बेठा, प्रभुनुं भजन करेय ॥ निश्चें मलशे कुमरी, जीर नें धैर्य धरेय ॥ १४ ॥ इणिपरें राणीनी सांभली, वाणी नृप हरखंत ॥ भाग्य दिशा मुझ जागी, भांगी भावठ भ्रांत ॥ नृप ना मनमें रंग, तरंग ज्युं डलक्यो रंग ॥ जाणे माणशुं मासने, अंतरें कुमरीशुं चंग ॥ १५ ॥ सागर पल्योपमनां जे, काल्यां महा टां रे आप ॥ ते सरखा पण जीवने, भोगवतां वही जाय ॥ तो शुं इणमें मासनुं, जातुं केतिक वार ॥ आजने काल करतां, वहेशे मास विचार ॥ १६ ॥ इणिपरें आशा वासमें, मदनरंग उल्लास ॥ निशिदिन रहे मगन थइ, ज्युं मद पीध विलास ॥

भीराय ॥ ते नदी कोठ जे आकरा, पवनें करी डोलाय ॥ उग
मणी दिशि मुकी जो, ऊगे पश्चिम भाण ॥ गिरिवर जो अग्नि
झगे, तो सती न चूके ठाण ॥ ९ ॥ पण शुं करीयें राणी जी,
अंते नमशेजी काम ॥ नृपने जो अमे दुहवीयें, तो वली फोडेजी
ठाम ॥ ते जाणी अमे राखीयें, राणीजी तुमशुं प्यार ॥ आजथी
राखीयें तुमशुं, बहेनपणुं निरधार ॥ १० ॥ पण एक सांभलो
विनती, राणीजी कहुं तुम वात ॥ में व्रत लीधुं छे सुव्रत, नामें
तप विख्यात ॥ ते तप छे एक मासनुं, ते जब पूरूं रे थाय ॥
तब नरपतिनी राणीजी, मननी हाम पुराय ॥ ११ ॥ इम स
त्य राखवा कुमरीयें, मुखथी साकर घोल ॥ दीधो दिलासो ग
स्त्रीने, उपजावी रंगरोल ॥ तव हरखित थइ राणीए, सांभली
कुमरी बोल ॥ राणी जाणे मुज आव्याणो, कुमरीयें राख्यो जी
तोल ॥ १२ ॥ अवसर लही कुमरीयें, राणीने हर्ष उपाय ॥ अ
शन वसन करी रीझवी, राणीने कीध विदाय ॥ राणीयें पण
जइ नृपने, दीधि वधाई दीध ॥ आजथी एक मासांतरें, नृप तुम
मनोरथ सिद्ध ॥ १३ ॥ मासनुं तप कुमरीयें, मांड्युं महोटे मंडा
ण ॥ ते तप पूरण थइ रहे, कुमरी चित्तमें सुजाण ॥ तिहां कोंग
नायनो वेठा, प्रभुनुं भजन करेय ॥ निशे मनशे कुमरी, जीव
ने धैर्य धरेय ॥ १४ ॥ इणिपरें राणीनी सांभली, वाणी नृ
प हरखंत ॥ भाग्य दिशा तुम जागी, भांगी भावठ भ्रांत ॥ नृप
ना मनमें गंग, तरंग ज्युं चडक्यो रंग ॥ आंगे माणशुं मासने,
अंतरें कुमरीशुं संग ॥ १५ ॥ सागर पल्योपमनां जे, कह्यां महो
टां रे आय ॥ ते सरखा पण जीवने, भोगवतां वही जाय ॥
तो शुं इणमें मासनुं, जातुं केतिक वार ॥ आजने काल करतां,
वरशे मास विचार ॥ १६ ॥ इणिपरें आशा वागमें, मदनवेग
उल्लास ॥ निशिदिन रहें मगन थइ, ज्युं मद पीथ विलास ॥

भोराय ॥ जे नदी कोइ पे आकरा, पवनें करी दोलाय ॥ उग मणी दिशि मुकी जो, ऊगे पश्चिम भाण ॥ नागिहर जो शीघ्र ढले, तो सती न चूके ठाण ॥ ९ ॥ पण शुं करीयें राणी जी, अनें समझणी काम ॥ नृपने जो अमें दुहवीयें, तो थमी कोडनी हाम ॥ ते जाणी अमें राखीयें, राणीजी तुमशु प्यार ॥ आजथी राखीयें तुमशुं, बेहेनपणुं निरधार ॥ १० ॥ पण एक सांभलो विनती, राणीजी कहुं तुम वात ॥ में मन धीरुं छे मुजन, नावें नर विख्यात ॥ ते नप छे एक मासनु, ते जर पूरुं रे थाय ॥ तव नरपतिनी राणीजी, मननी हाम पुराय ॥ ११ ॥ इम स त्य राखवा कुमरीयें, मुखथी साकर घोल ॥ दीधो दिलासो रा णीने, उपजावी रंगरोल ॥ सब हरखित थइ राणीए, सांभली कुमरी बोल ॥ रागी माणे मुझ आव्यानो, कुमरीयें राख्यो जी तोल ॥ १२ ॥ अवसर लही कुमरीयें, राणीने हर्ष उपाय ॥ अ शन वसन करी रीझवी, राणीने दीध विदाय ॥ राणीयें पण जइ नृपने, शीघ्र वधाई दीध ॥ आजथी एक मासांतरें, नृप तुम मनोरथ सिद्ध ॥ १३ ॥ मासनु तप कुमरीयें, मांडयु पहोटे मंडा ण ॥ ते तप पूरण थइ रहे, कुमरी मिलशे सुजाण ॥ तिहां लगें नायजी नेहा, प्रभुनुं भजन करेय ॥ निर्भे मनशे कुमरी, जीर ने धैर्य धरेय ॥ १४ ॥ इणिपरें राणीनी सांभली, वाणी नृ प हरखेन ॥ भाग्य दिशा तुझ जागी, भांगी भावठ ग्रांथ ॥ नृप ना मनमें रंग, तरंग ज्यु व रुक्यो रंग ॥ जाग माणशुं मामने, अंतेर कुमरीशुं संग ॥ १५ ॥ सागर पल्योपमनां जे, काळां महां ठां रे भाय ॥ ते सरखा पण जीवने, भोगवतां वही जाय ॥ तो शुं इणमें मासनुं, जाउं केतिक वार ॥ आजने काज करतां, नरेंश नास विचार ॥ १६ ॥ इणिपरें आशा वासमें, मदनवेग उल्लास ॥ निशिदिन रहे मगन थइ, ज्यु मद पीध विलास ॥

गेरे, बेरी मंदेल मझार ॥ निज सखीयांशुं परवरी, कामी के [illegible] भार ॥ निश अलमर नृपराणी रे, अे गुणखाणी रे मा ॥ भाखतो दीठी रे मीठीयें, वसतमीगेयें निसार ॥ १ ॥ [illegible] मगीये जाण्युं जे में हणीर, धार्मीने काढी रे मोश ॥ क्रोध [illegible] ज में हणी, नहनी भारी प क्रोध ॥ खीजयो नृप तव जाणी रे, पुत्री प राणान थाप ॥ इम कुमरी मन चिंतवी, लसट मांहे [illegible] ॥ २ ॥ नव कुमरी सनमुख भट, राणान मीठी रे [illegible] ॥ [illegible] चिन्तीन र, शरण नेह मह गां ॥ आगत [illegible] [illegible] कुमरीय कीधी र भार ॥ [illegible] मन रीझे, [illegible] [illegible] दार ॥ ३ ॥ भट्टारकनी हां वही रे, वाने पकण [illegible] ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] थान ॥ रूप अनुराग रे [illegible] [illegible] [illegible] ॥ नाम दिदर वाहीय, मगधी गुण [illegible] ॥ ४ ॥ [illegible] [illegible] ने, प्यारी दो गुणराय ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] वानडी मेंन ॥ नवर्गीनी [illegible] [illegible] [illegible] ॥ [illegible] [illegible] ॥ ५ ॥ नय भाव भव मंदर, [illegible] [illegible] ॥ [illegible] [illegible] ॥ [illegible] कुमान [illegible] ॥ [illegible] [illegible] ॥ ६ ॥ [illegible] [illegible] ॥ [illegible] ॥ नव कुमरीयें जाण्यो रे, [illegible] [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] [illegible] [illegible] ॥ [illegible] ॥

भोलाय ॥ ते नदी कोइ जे आकरा, पवनें करी डोलाय ॥ उग मणी दिशि सूर्य जो, ऊगे पश्चिम भाण ॥ गत्तिहर जो अग्नि झरे, तो सती न चूके ठाण ॥ ९ ॥ पण तुं करीयें राणी जी, अंतें तमसंजी काम ॥ नृपने जो अमें दुहवीयें, तो वली कोइनी ठाम ॥ ने जाणी अमें राखीयें, राणीजी तुमशु प्यार ॥ आजथी राखीयें तमसुं, बेहेनपणुं निरधार ॥ १० ॥ पण एक सांभलो विनती, राणीजी कहुं तुम वात ॥ में मन लीधुं छे गुव्रत, नामें तप विख्यात ॥ ते तप छे एक मासनुं, ते जब पूरुं रे थाय ॥ तब नरपतिनी राणीजी, मननी हाम पुगाय ॥ ११ ॥ इम स त्य रासवा कुमरीयें, मुखथी साकर घोल ॥ दीधो दिलासो ग खीने, उपजावी रंगरोल ॥ तब हरखित थइ राणीए, सांभली कुमरी बोल ॥ राणी जाणे मुझ आव्यानो, कुमरीयें राख्यो जी तोल ॥ १२ ॥ अवसर लही कुमरीयें, राणीने हर्ष उपाय ॥ अ शन वसन करी रीझवी, राणीने कीध विदाय ॥ राणीयें पण जइ नृपने, दीध वधाई दीन ॥ आजथी एक मासांतरें, नृप तुम मनोरथ सिद्ध ॥ १३ ॥ मासनुं तप कुमरीयें, मांड्यु महोटे मंडा ण ॥ ते तप पूरण थइ रहे, कुमरी मिल्यें सुजाण ॥ निशी लगें नाथजी वेश, प्रभुनुं भजन करेय ॥ निश्चें मनशे कुमरी, जीव ने धैर्य धरेय ॥ १४ ॥ इणिपरें राणीजी सांभली, वाणी नृप हरखंत ॥ भाग्य दिशा तुम जागी, भांगी भावठ भ्रांत ॥ नृप ना मनमें गंग, तरंग ज्युं चढत्यों रंग ॥ आगे मासनुं मासने, अंतरे कुमरीशुं संग ॥ १५ ॥ सागर पल्योपमनां जे, काला महा टां रे आप ॥ ते सरखा पण जीवने, भोगवतां वही जाय ॥ तो शुं इणमें मासनुं, जातुं केतिक वार ॥ आजने काल करतां, वहेशे मास विचार ॥ १६ ॥ इणिपरें आशा वासमें, मदनवेग उल्लास ॥ निशिदिन रहे मगन थइ, ज्युं मद पीध विलास ॥

भोराय ॥ ते नहीं कोट जे आकरा, पवनें करी डोलाय ॥ उग मणी दिशि मूकी जो, ऊगे पच्छिम भाण ॥ मेगिरर जो अग्नि झगे, तो सती न मूके टाण ॥ ९ ॥ पण तुं करीयें राणी जी, अंतें तमगेंजी काम ॥ नृपने जो अमें दूहवीयें, तो वलो फोडेनो ठाम ॥ ते जाणी अमें राखीयें, राणीजी तुमशुं प्यार ॥ आजथी राखीयें तुमशुं, बहेनपणुं निरधार ॥ १० ॥ पण एक सांभलो विनती, राणीजी कहुं तुम वात ॥ में व्रत लीधुं छे सुव्रत, नामें तर विख्यात ॥ ते तप छे एक मासनुं, ते जब पूरुं रे थाय ॥ तव नरपतिनी राणीजी, मननी हाम पूराय ॥ ११ ॥ इम स त्य राखवा कुमरीयें, मुखथी साकर बोल ॥ दीधो दिलासो ग खीने, चपजावी रंगरोल ॥ तव हरखित थइ राणीए, सांभली कुमरी बोल ॥ राणी जाणे मुझ आव्यानो, कुमरीयें राख्यो जी तोल ॥ १२ ॥ अवसर लही कुमरीयें, राणीने हर्ष उपाय ॥ अ शन वसन करी रीझवी, राणीने कीध विदाय ॥ राणीयें पण जइ नृपने, शीघ्र वधाई दीध ॥ आजथी एक मासांतरें, नृप तुम मनोरथ सिद्ध ॥ १३ ॥ मासनु तप कुमरीयें, मांड्यु मरोटे मंडा ण ॥ ते तप पूरण थइ रहे, कुमरी मिलशे सुजाण ॥ तिहां कुमरी नायजी वेठा, प्रभुनुं भजन करेय ॥ निर्मे मनने कुमरी, जीव ने धैर्य धरेय ॥ १४ ॥ इणिपरें राणीनी सांभली, वाणी नृप हरखंत ॥ भाग्य दिशा तुम जागी, भांगी भावठ भ्रांत ॥ नृप ना मनमें गंग, तरंग ज्युं उलस्यो रंग ॥ जाणे माणसुं मामने, अंतरें कुमरीशुं चंग ॥ १५ ॥ सागर पल्योपमनां जे, कह्यां मही टां रे आय ॥ ते सम्व्या पण जीवने, भोगवतां वही जाय ॥ तो शुं इणमें मासनुं, जातां केतिक वार ॥ आजने काल करतां, वहेशे मास विचार ॥ १६ ॥ इणिपरें आशा वासमें, मदनवेग उल्लास ॥ निशिदिन रहे मगन थइ, ज्युं मद पीध उल्लास ॥

भोलाय ॥ ते नही कोइ के भाकरा, पवने करी डोलाय ॥ उग मणी दिशि मूकी जो, ऊगे पच्छिम भाण ॥ नगिरवर जो अग्नि झगे, तो मनी न चूके ठाण ॥ ९ ॥ पण तुं करीये राणी जी, अंते सतशीजी वाम ॥ नृपने जो अमे दुहवीये, तो वली फोकटनी ठाम ॥ ने जाणी अमे राखीये, राणीजी तुमशुं प्यार ॥ आजथी राखीये तुमसुं, बेहनपणुं निरधार ॥ १० ॥ पण एक सांभलो विनती, राणीजी कहुं तुम वात ॥ में व्रत लीधुं छे मुझन, नावे नर विख्यात ॥ ते तप छे एक मासनुं, ते जब पूरुं रे थाय ॥ तब नरपतिनी राणीजी, मननी हाम पुराय ॥ ११ ॥ इम स रस वाचना कुमरीये, सुखथी साकर घोल ॥ दीवो दिलासो ग हीने, उपजावी रंगरोल ॥ तव हरखित थइ राणीए, सांभली कुमरी बोल ॥ राणी जाणे मुझ आव्यानो, कुमरीये राख्यो जी तोल ॥ १२ ॥ अवसर लही कुमरीये, राणीने हर्ष उपाय ॥ अ शन वसन करी गोरडी, राणीने कीध विदाय ॥ राणीये पण जइ नृपने, दीध वधाई हीर ॥ आजथी एक मासांतरे, नृप तुम मनोरथ सिद्ध ॥ १३ ॥ मासनु तप कुमरीये, मांड्युं मरोटे मंडा ण ॥ ते तप पूरण थइ रहे, कुमरी मिलशे सुजाण ॥ तिहां लगे नाथजी केरा, प्रभुनुं भजन करेय ॥ निश्चे मकरे कुमरी, जीव ने धैर्य धरेय ॥ १४ ॥ इणिपरे राणीनी सांभली, वाणी नृ प हरखंत ॥ भाग्य दिशा तुम जागी, भांगी भावठ भ्रांत ॥ नृप ना मनमे रंग, तरंग ज्युं चढ्यो रंग ॥ जाणे मासनुं मासने, थनेरे कुमरीशुं संग ॥ १५ ॥ सागर पल्योपमनां जे, कह्यां मह टां रे आय ॥ ते सघला पण जीवने, भोगवतां वही जाय ॥ तो शुं इणमें मासनुं, जाशुं केतिक वार ॥ आजने काल करतां, वहेशे मास विचार ॥ १६ ॥ इणिपरे आशा वासमें, मदनवेग उल्लास ॥ निशिदिन रहे मगन थइ, ज्युं मद पीय विलास ॥

भोगाय ॥ ते नहीं कोट जे आकरा, पवनें करी डोलाय ॥ उग मणी दिशि मूकी जो, ऊगे पश्चिम भाण ॥ मसिहर जो अग्नि झरे, तो सती न चूके ठाण ॥ ९ ॥ पण शुं करीयें राणी जी, अंते सघळुंजी काम ॥ नृपने जो अमें दुहवीयें, तो वळी फोडेजी ठाम ॥ ते जाणी अमें राखीयें, राणीजी तुमशुं प्यार ॥ आजथी राखीयें तुमशुं, बहेनपणुं निरधार ॥ १० ॥ पण एक सांभळो विनती, राणीनी कहुं तुम वात ॥ में व्रत लीधुं छे सुव्रत, नामें तप विख्यात ॥ ते तप छे एक मासनुं, ते जब पूरुं रे थाय ॥ तब नरपतिनी राणीनी, मननी हाम पूराय ॥ ११ ॥ इम स त्य राखवा कुमरीयें, मुखथी साकर घोल ॥ दीधो दिलासो ग खीने, उपजावी रंगरोल ॥ तव हरखित थइ राणीए, सांभळी कुमरी बोल ॥ राणी जाणे मुझ आव्यानो, कुमरीयें राख्यो जी तोल ॥ १२ ॥ अवसर लही कुमरीयें, राणीने इम उपाय ॥ अ शन वसन करी रीझवी, राणीने कीध विदाय ॥ राणीयें पण जइ नृपने, दीधी वधाई दीध ॥ आजथी एक मासांतरें, नृप तुम मनोरथ सिद्ध ॥ १३ ॥ मासनुं तप कुमरीयें, मांड्यु महोटे मंडा ण ॥ ते तप पूरण थइ रहे, कुमरी चिन्तें सुजाण ॥ तिहां लगें मायजी वेठा, प्रभुनुं भजन करेय ॥ निश्चें मळशे कुमरी, जीव ने धैर्य धरेय ॥ १४ ॥ इणिपरें राणीनी सांभळी, राणी नृप इत्यंत ॥ भाग्य दिशा तुम जागी, भांगी भावठ भ्रांत ॥ नृप ना मनमें गंग, तरंग ज्युं उछळ्यो रंग ॥ जाणे माणशुं मासने, अंतरें कुमरीशुं संग ॥ १५ ॥ सागर पल्योपमनां जे, कर्यां मही टां रे आय ॥ ते सरखा पण जीवने, भोगवतां वही जाय ॥ तो शुं इणमें मासनुं, आंतुं केतिक वार ॥ आजने काल करतां, वहेशे मास विचार ॥ १६ ॥ इणिपरें आशा पाशमें, मदनवेग उद्दाम ॥ निशिदिन रहे मगन थइ, ज्युं मद पीध ।दिलाम ॥

खारो सागर रे, उछके जलें असमान ॥ ते देखी धीवर यगुो, डरप्यो गइ तस शान रे ॥ प्र० ॥ ५ ॥ जो फिरी पाछों पर भणी रे, जाउं तो नरहे मान ॥ बीहुं छो हुं आवियो रे, कीइं अजाण्युं काम रे ॥ प्र० ॥ ६ ॥ नागें ग्रही ज्युं छछुंदरी रे, मुके तो अंध थाय ॥ भक्षणथी जीव संहरे रे, ए दृष्टांत बनाय रे ॥ प्र० ॥ ७ ॥ वळी चरकर्णीयें ग्रह्यो रे, मुखमां चंगिए थोर ॥ आयुं पाछुं न ऊतरे रे, करे पस्तावो जोर ॥ प्र० ॥ ॥ ८ ॥ इम धीवर मुरे यगुं रे, सागर कांठे उभाय ॥ धांखें जाण्युं आवी बन्यो रे, वाय न दीनो न्याय रे ॥ प्र० ॥ ९ ॥ किहां गयो मारो इण समे रे, प्राणवल्लभ मुझ इष्ट ॥ सनरपां मार करे यगुं रे, टाल्ले सघलां रिष्ट रे ॥ प्र० ॥ १० ॥ इम चिंतवतां ततखिणें रे, आव्यो सागर देव ॥ कहे सुर शी तुं चिंता करे रे, मूकुं लंका तुझ हेव रे ॥ प्र० ॥ ११ ॥ हुं व छ तुसने इहां कणे रे, आवतुं थयुं हो केम ॥ सुर कहे कहो मु झ मांदिने रे, जाण्युं जाये जेम रे ॥ प्र० ॥ १२ ॥ तव हरि वक कहे देवने रे, सांभलो तातजी मुझ ॥ नृप हेतें वंदु छवीरे, आव्यो कहुं हुं तुझ रे ॥ प्र० ॥ १३ ॥ ते सांभळी जलपति पर्यारे, देव स्वरुपी अश्व ॥ हरिवळ ते अश्वें चढी रे, जलधि तरी लयो विश्व रे ॥ प्र० ॥ १४ ॥ प्रभुनां भळे आव्या तु में नाथ ॥ सुर तरुनी ग्रही बाथ ॥ प्र० ॥ मुझ शरण थयो तुम हाथ ॥ प्र० ॥ तर हुं थयो महोटो मनाथ रे ॥ प्र० ॥ ॥ १५ ॥ ए आंकणी ॥ लंका मारगमें मूकीने रे, देव भयो परगट काम पडे तुं संभारजे रे, मुझने करी गहगट रे ॥ प्र० ॥ १६ ॥ कहीने सुर गयो रे, पहोतो ते निज ठाम ॥ हरिवळ लंका ने रे, मनमें लह्यो आराम रे ॥ प्र० ॥ १७ ॥ तेजें प्र ञ इन्द्रनी रे, हेममय लंका पीठ ॥ जेहवी जनपुर्यें माभ

ं रे. नेहवी ननेरे डीठ रे ॥ म० ॥ १८ ॥ नंदन वन सम
ाटिका रे. देखी दसो सुरतरु ॥ परीमल पसरयो विंइ दिस
. कुमन गना जिहां वस रे ॥ म० ॥ १९ ॥ चंपा गुलाब
केतकी रे. मोगरा मालती जेह ॥ जाणे सुरवाटी फुली रे. इ
वन्द निरखे नेह रे ॥ म० ॥ २० ॥ अब कदंब ने सुरतरु
:. सुरलता मोहन वेल ॥ हेम रजतनी ओषधी रे, पसरी विंइ
दिशे रेल रे ॥ म० ॥ २१ ॥ नागरवल्ली द्राखना रे, मांड
ा अति सोहंत ॥ केलि अंवेरी फालसां रे. दाडिम फल मोहंत
॥ म० ॥ २२ ॥ आलो पान आवंतरी रे. गज ने तमाल ते पण
॥ दके मरवे नीपजे रे, चातुरजातक नाम रे ॥ म० ॥ २३ ॥
देव कुसुम ने एलची रे, सुंदर केसर छोड ॥ निमजो पिस्ता
चारोली रे, देव वदाम अखोड रे ॥ म० ॥ २४ ॥ पुंगी
श्रीफल मेलडी रे, सीताफल सह तूर ॥ रायण रायण करण
दां रे, लिंबु जांबु तूर रे ॥ म० ॥ २५ ॥ इम अनेक ते जा
तिनी रे. वनस्पति भार अढार ॥ भोगी जनने कारणे रे. दगद
धई संसार रे ॥ म० ॥ २६ ॥ वासो कुल सगंधक रे, भरि
यां अनुमोद ॥ हंसचकोर ने सारसा रे, जलक्रीडा करे मोद
रे ॥ म० ॥ २७ ॥ इम इन्द्रिय सुखो रहे रे, जै
कावन सुरसाल ॥ लब्धि धीना कुलामनी रे. पसली इ
म्यारसी दाल रे ॥ म० ॥ २८ ॥

॥ दुहा ॥ संकाशरिमर वाटिका, सोहे अति रलियात ॥
जाणे नंदनवन अच्छी भगिनी प्रगट नजीक ॥ १ ॥ कनक
रयणने प्रकटा, मांहाा मेरेन मलेन ॥ तरोवरयो उज्ज्वल ध
री, शामित तिन उतमेन ॥ २ ॥ नर नारी दिवापिटी, क्रिप
न सन्दर वान ॥ सरवे स्वरे टोळे मिली सारे गीत ईमान ॥
॥ ३ ॥ बधुणी स्वानि आगमदे, धर नहि राखे सान ॥ इन्द्रिय

म जे कोय ॥ तब तुम भागयकें कगी, बीहुं में छन्युं सोय।
॥ ७ ॥ ते नूर भागालेइने, हु आव्यो छुं आंहि ॥ लंकापति
तेडया विना, किम नवराए त्यांहि ॥ ८ ॥ कुसमासिरी बल
कह, गाभ्यो महारी वात ॥ लंकापति मदिरा वहीं, कंपनें के
मुग जाम ॥ ९ ॥ ते मांधो किम पामशे, आपगे जातुं गेह।
लंकापति कोन नायनु, काढग कवो तुमें एह ॥ १० ॥ ओ मं
तप मनन कहो, जातु बीभाषण पास ॥ देवनमी एक खडग छे
[illegible] नाम ॥ ११ ॥
॥ ढाल [illegible] मी ॥ [illegible] ढोला ॥ ए देशी ॥ तब ह
[illegible] नागीने रे, जाऊ उतावलां त्यांहि ॥ मोमन प्यारी।
[illegible] खडग जे चंद्रहास आंहि ॥ मो०।
॥ [illegible] जइ आवो, तुमें ढीलम करशो कर्या
[illegible] दिन पंचमी रे, लगत
[illegible] मो० ॥ तो गमे मुझने मानमें रे, मदनेरग
[illegible] खडगनी रे, लंकापतीनी मे
[illegible] निन बगेना रे, ते विं लावतो तेह।
[illegible] बदनामी घड रे, मगमें हामु हा
[illegible] खडगना रग घडे र, ते मन कर जो कोप ॥ मो०
[illegible] हाथ ने [illegible], [illegible] न कीजें काम ॥ मो०।
[illegible] दो धाम ॥ ॥ ५ ॥ ते म
काम्या काज्यनो र [illegible] ने ठोर ॥ मो० ॥ इम
[illegible] मोत ॥ मो० ॥ ६ ॥ वि
कुवरा [illegible] वि भीलन ज्यांहि ॥ मो० ॥ म
विमासें सूतो [illegible] रे, मदिरा छाकनी मांहि ॥ मो० ॥ ७ ।
हम विकल कर्गाने प्रदे र, मगत मे छे चंद्रहास ॥ मो० ॥ ना
बमर [illegible] नहिं [illegible] रे, भागी [illegible] धाम ॥ मो० ॥ ८

क्यो स्वामी आ खडगनी रे, जे कहि सहिनाणी एह ॥ मो० ॥ देवनमी खडग स्वर्गनी रे, कलसे मच्छां विशेष ॥ मो० ॥ ॥ ९ ॥ हिवे सामग्री दंपती रे, मेलवे आवागेह ॥ मो० ॥ सार रयण ने मोमती रे, पिछुने जे कोश भरेय ॥ मो० ॥ १० ॥ तुंबी जलमाये ग्रही रे, दंपती चाल्या दोय ॥ मो० ॥ चाल्यां जे दंश वही रे, लहे मनोवंछित सोय ॥ मो० ॥ ११ ॥ स मरयो सागर देवतां रे, मच्छांयें थई उजमाल ॥ मो० ॥ आ व्यो सुर पण देवता रे. करुणावंत कृपाल ॥ मो० ॥ १२ ॥ किहां मूकुं हिवे तुमने रे. सुर बोल्या ततकाल ॥ मो० ॥ मूको स्वामी अमने रे, निज नगरी विशाल ॥ मो० ॥ १३ ॥ अ श्व चढावी दो जणा रे, मुक्या नगर नजीक ॥ मो० ॥ चिंत व्युं होंशे तुम तणुं रे, सुर कहे जाणजो ठीक ॥ मो० ॥ १४ ॥ एम कहीने ते गयो रे, नाखी जे निज थान ॥ मो० ॥ मन वंछित सफलुं थयुं रे, दंपतिपुण्य निधान ॥ मो० ॥ १५ ॥ नग रीनी जे वाटिका रे. तेहमें उतारो कीध ॥ मो० ॥ दंपति करे गहगहिका रे. जाणे मनोरथ सिद्ध ॥ मो० ॥ १६ ॥ हिवे माली संध्या समे रे. आव्यो निज घर हेत ॥ मो० ॥ सुम्या स्वामी रहिये रे. आवी ते मजरें रेत ॥ १७ ॥ किहां गई प्या री. मो मन प्यारी ॥ ए आंकणी ॥ हल फलतो जोतो फिरे रे, सघले मंदिर मझ ॥ कि० ॥ पुत्री न दीठी शुं करे रे, वलि थयो जोवा सझ ॥ कि० ॥ १८ ॥ वलि नवि दीठी सुंदरी रे, ने भरी अमृत तोय ॥ कि० ॥ ले गई साथें तुंबडी रे, कोइक पुरुषने जोय ॥ कि० ॥ १९ ॥ पगलु जोवा नीकल्यो रे, पग पग जोतो वाट ॥ कि० ॥ परद्वीपनो पग अटकल्यो रे, तब थयो तेहने उच्चाट ॥ कि० ॥ २० ॥ पग जोयो नजरें म णी रे. पुत्री गइ करि नाथ ॥ कि० ॥ आरामिक ने भीमनाद,

भूमि पड्या दोष हाथ ॥ कि० ॥ २१ ॥ जीतो रीतो तेह लयो रे, आव्यो ते निज घेर ॥ कि० ॥ पुत्री विरहें ते घल्यो, शुं हिवे करूं ते पेर ॥ कि० ॥ २२ ॥ पुत्री तुंबी गत थइ रे, जाणे गइ रण खेत ॥ कि० ॥ रंडानी रंडा गई रे, टपसुं पण गइ खेत ॥ कि० ॥ २३ ॥ रांक तणे घरे सुरमणी रे, ते रहे केती वार ॥ कि० ॥ पूरव भवनी वेरणी रे, दे गइ मों दो स्नार ॥ कि० ॥ २४ ॥ पुत्री परणे जाणतो रे, पामशुं म हांटुं राज ॥ कि० ॥ होंस घणी मन आणतो रे, माणशुं पुत्री राग ॥ कि० ॥ २५ ॥ तेहमें एके न संपजो रे, फोक फजेती कीध ॥ कि० ॥ दैवना मनमां शी भजी रे, एको वात न सीध ॥ कि० ॥ २६ ॥ पण पुत्री पर घरें भई रे, बसति आणे संसार ॥ कि० ॥ एक एकने देइ वरे रे, पुत्री पर घर बार ॥ कि० ॥ २७ ॥ ते में खोटी आदरी रे, लोभें खोयो कार ॥ कि० ॥ तो किम आवे पाधरी रे, लोप्यो मैं व्यवहार ॥ मो० ॥ २८ ॥ नीतिनी चाल में नवि गणी रे, कीधो अनीति विचार ॥ मो० ॥ तो किम रहे ए पद्मणी रे, रांक घरे सुम सार ॥ मो० ॥ २९ ॥ जेहनो संबंध ते ले गयो रे, छाना करी ने शोष ॥ मो० ॥ जे थानुं हतुं ते थयु रे, शो हिवे करवो शो ष ॥ मो० ॥ ३० ॥ माल्हीयें एम मन वाल्हीयु रे भाविनो प्रपंच ॥ मो० ॥ आतम कृत्य समाल्हीयुं रे, काढी नाख्यु शल्य ॥ मो० ॥ ३१ ॥ सगां संबंधि नागिले रे, रीत उताणि नाम ॥ मो० ॥ मालिये वात रिसाणिने रे, तेडी आव्यो आवास ॥ मो० ॥ ३२ ॥ रूपका वियोग ते भोगियां रे, उपन्यो रंग रसाल ॥ मो० ॥ पूरव सुकृत जागीयां रे, भोगीया दुःख जंजाल ॥ मो० ॥ ३३ ॥ हिवे हरिबलनी जे थइ रे, सांभलो पुण्य विशाल ॥ मो० ॥ बीजा उल्लासनी ए कही रे, ढाल चौदमी हाल ॥ मो० ॥ ३४ ॥

॥ दुहा ॥ हिवे हरिबल रजनीसमे, वाडेंय कीधुं ठाम ॥
कुसुमगिरी मूकी तिहां, पहोतो ते निजधाम ॥ १ ॥ वसंतसिरी
देहेली मिया, जोवे तेहनुं चरित्र ॥ मुझ ऊपर पण केहवुं, राखे
मनइ पवित्र ॥ २ ॥ इम जाणी निज मंदिरे, आव्यो रजनी म
ध्य ॥ तस्करनी परें सांभले, देई कान ने शुद्ध ॥ ३ ॥ तिण
अवसर जे विरहिणी, वसंतसिरी ते बाल ॥ पीयु नाव्यो मासे
तरें, तेहनी थइ धकचाल ॥ ४ ॥ तव एक पंखी सूवडो, पा
ल्यो छे घरमांहि ॥ तस आगल कहे विरहणी, वसंतसिरी जे
उछांहि ॥ ५ ॥ रे पंखी मुझ पीयुडो, गयो लंका शुभ काज ॥
अवधि करी एक मासनी, ते थइ पूरी आज ॥ ६ ॥ केसरभ
र पियो कहचले, छांड गयंदभरमांहि ॥ जलभरव रयण पोका
रियो. मो भरव भावत नांहि ॥ हजीअ लगण आव्यो नहीं, ना
व्यो को संदेश ॥ नाह निठर मेहेली गयो, मुझने वाले वेश ॥
॥ ७ ॥ तो दीहा किम निगमुं, किम करी राखुं शील ॥ मदनवे
ग ते भूरणी, केंड पडियो दुःशील ॥ ८ ॥ आज लगण तो
माहरुं, में पण राख्युं एह ॥ पण ते अवधि पूरी थइ, कुमति चुक
चे नेह ॥ शुकवाक्यं ॥ दधिसुता सुत नामारिपु, ता त्रिय वाहनाहा
र ॥ सो सुंदर तुझमें नाहिं. कीवो कौन विचार ॥ ९ ॥ ते
माटे तुं सूडला, जा. मुझ प्रीतम पास ॥ संदेशो मुझ घरतणो.
तहने कहेजे ताम ॥ १० ॥

॥ ढाल १५ मी ॥ जिनराजीनी ए देशी ॥ सुडाजी हो अमी
रस पाउ तुझनें रे ॥ सु० ॥ चखवुं दाडिम द्राख ॥ सूडा सयण
वाउ ॥ ए आंकणी ॥ सूडा डीहो चांच भरावुं कुंकुमे रे ॥ सु० ॥
देउं वली आंबा साख ॥ सु० ॥ १ ॥ सु० ॥ संदेशो मुझ
दाखजो रे ॥ सु० ॥ मेलव तुं मुझ जीव ॥ सु० ॥ सु० ॥ गाइ
स हुं गुन ताहरा रे ॥ सु० ॥ जीवित सर्यो सजीव ॥ सु० ॥

॥ २ ॥ सु० ॥ रूंधं भरीश तुझ पेटने रे ॥ सु० ॥ देइश
मे चांच ॥ सु० ॥ सु० ॥ जे हुं बोलुं ते सहो रे ॥ सु० ॥
जे करीने साच ॥ सु० ॥ ३ ॥ सु० ॥ हुं कर जोडी वीनवुं रे
सु० ॥ सांभल माहरी वात ॥ सु० ॥ सु० ॥ सघला पंखीमें कहीरे
॥ सु० ॥ उत्तम ताहरी जात ॥ सु० ॥ ४ ॥ सु० ॥ सहु पंखी
शिरसेहरो रे ॥ सु० ॥ तुं छे चतुर सुजाण ॥ सु० ॥ सु०, ॥
रूपें तु रलियामणो रे ॥ सु० ॥ मीठी ताहरी वाण ॥ सु० ॥ ५॥
॥ सु० ॥ लीली ताहरी पांखडी रे ॥ सु० ॥ चांच राती सुरं
गेग ॥ सु० ॥ सु० ॥ रूडी ताहरी आंखडी रे ॥ सु० ॥
राती केसु रग ॥ सु० ॥ ६ ॥ सु० ॥ सोने मढावुं
ही रे ॥ सु० ॥ रूपें पखालु पंख ॥ सु० ॥ सु० ॥ हार
वलु गले मोतीनो रे ॥ सु० ॥ लाख टकानो अटंक ॥ सु० ॥
॥ ७ ॥ सु० ॥ विरहिणी नारी तुं देखीने रे ॥ सु० ॥
दया धरे मनमांहे ॥ सु० ॥ सु० ॥ संदेशो मुझ नाहने रे
॥ सु० ॥ तुं जइ कहेजे उछांहे ॥ सु० ॥ ८ ॥ सु० ॥ मानिश
तुझ उपगारडो रे ॥ सु० ॥ थाइश नहीं गुण चोर ॥ सु० ॥सु०॥
कर्यो गुण जाणे नही रे ॥ सु० ॥ माणस नही ते ढोर ॥ सु० ॥
॥ ९ ॥ सु० ॥ उडीने तु पंखीया रे ॥ सु० ॥ तुं मत करेश
ढील ॥ सु० ॥ सु० ॥ कहेजे मुझ संदेशडो रे ॥ सु० ॥ कि
शी हांये नाइ रंगील ॥ सु० ॥ १० ॥ सु० ॥ अबला मुझ
घर एकली रे ॥ सु० ॥ छे विरहिणीने वेन ॥ सु० ॥ सु० ॥
झूरि झूरि पंजर थइ रे ॥ सु० ॥ थइ नागी नरवेश ॥ सु०
॥ ११ ॥ सु० ॥ शीतमना विरहापकी रे ॥ सु० ॥ सुखी न
देखे कोय ॥ सु० ॥ सु० ॥ पण तंबोली पान ज्युं रे ॥ सु०
दिन दिन पीलां होय ॥ सु० ॥ १२ ॥ सु० ॥ पिउ विरहे
करि नारिने रे ॥ सु० ॥ तजिया तेल तंबोल ॥ सु० ॥ सु०

सार्गा दीधां पहेरयां रे ॥ मु० ॥ नमीयां सर्वांहुं दवोल ॥
मु० ॥ १३ ॥ मु० ॥ पियु विण शिणगार पहेरतां रे ॥ मु० ॥
लागे अंगार समान ॥ मु० ॥ मु० ॥ चंदन चुआ अगीठियां रे
॥ मु० ॥ नागिणी नागर पान ॥ मु० ॥ १४ ॥ मु० ॥ पि
यु विरहे घडी नामडो रे ॥ मु० ॥ मास में वरसज होय ॥ मु०
॥ मु० ॥ भिण पलमें त्रिण आंमणे रे ॥ मु० ॥ पियु विण ए
पनि जोर ॥ मु० ॥ १५ ॥ मु० ॥ नयणे नावे निद्रडी रे
॥ मु० ॥ भावे न अन्न ने पान ॥ मु० ॥ मु० ॥ नाह विना घेली म
गुं रे ॥ मु० ॥ कर्हांगि केनु सयाग ॥ मु० ॥ १६ ॥ मु०
पूरव पासना योगथी रे ॥ मु० ॥ पामी स्त्री अवतार ॥ मु० ॥
मु० ॥ भरजोबन पियु पर नही रे ॥ मु० ॥ तम एणे गयो
अवतार ॥ मु० ॥ १७ ॥ मु ॥ ए मंदिर ए मालियां रे ॥
मु० ॥ पियु विना शून्य आगार ॥ मु० ॥ मु० ॥ रस कस
सार्तो छेरडां रे ॥ मु० ॥ लागे ते विष पक्षार ॥ मु० ॥ १८ ॥
मु० ॥ यौवन करवत धार ज्युं रे ॥ मु० ॥ विरहिणी नारीने
होय ॥ मु० ॥ मु० ॥ नाहविहूणी कामिनी रे ॥ मु० ॥ पग
पग पामे ते दोष ॥ मु० ॥ १९ ॥ मु० ॥ कालने कंठ मे
ली गयो रे ॥ मु० ॥ निशिदिन रही ते घुमाय ॥ मु० ॥
मु० ॥ नेह सुधारस सिंचिने रे ॥ मु० ॥ अोल्हो पियु घर आव
॥ मु० ॥ २० ॥ मु० ॥ ते दिन क्यारे देखशुं रे ॥ मु० ॥
करशुं मननी रे वात ॥ मु० ॥ मु० ॥ प्राणजीवन मुख दे
खीने रे ॥ मु० ॥ कांइक शीतल गात्र ॥ मु० ॥ २१ ॥
मु० ॥ दिनकर पहेलां ऊगने रे ॥ मु० ॥ जो सीतम घरे आव
॥ मु० ॥ मु० ॥ तो मागणनी ऊगवे रे ॥ मु० ॥ जीवतुं ते जुगमा
य ॥ मु० ॥ २२ ॥ मु० ॥ जो कांइ नाव्यो ऊगने रे ॥ मु० ॥
तो मर लिधि संसार ॥ मु० ॥ मु० ॥ पेट कटारी खाइ मरुं रे

ख बीनी भेद ॥ २ ॥ में तुमने पहेल्यां कही, ते संभारो नाथ ॥ नृपने मंदिर दाखव्युं, दीपक लेइ निज हाथ ॥ ५ ॥ ते वात आवी आगळे, जव तुमें चाल्या लंक ॥ तव नृप मुझ केडे पड्यो, कामिनि निःशंक ॥ ६ ॥ मेहेमंतो कपट भइ, गज सिर नाखे धूळ ॥ निज नृप दासी मोकली, करवा मुझ अनुकूल ॥ ७ ॥

॥ ढाल १६ मी ॥ एतो नयरंगे मोवी अजव बन्यो ॥ ए देशी ॥ एतो दासी मुझ कने मोकली, एतो लेइ भूखण साच ॥ साहेब मोरा हे ॥ एतो चुवा रे चंदन भरगजा, एतो सीं सा भरिया काच ॥ सा० ॥ १ ॥ सांभळो प्रीतम माहरा ॥ एतो देश मुझने लांच ॥ सा० ॥ ए आंकणी ॥ एतो, मीठी साकर सुखडी, एतो मीठा मेवा द्राख ॥ सा० ॥ एतो छाब भरी वळी मोकली, एतो मीठी आंबा साख ॥ सा० ॥ २ ॥ सां० ॥ एतो जरतारी शालु भलां, एतो आप्यां नव नवां चीर ॥ सा०॥ कापे वाचा सुरनारी तणां, एतो सोहे नेजमें हीर ॥ सा० ॥ ॥३॥ सां० ॥ इत्यादिक लेइ भेटणां, एतो मुकयां चेडी साथ ॥ सा० ॥ कहे चेडी मुझ आवीने, तुम भेट करे भूनाथ ॥ सा० ॥ ४ ॥ सां० ॥ एतो दासी कहे वळी मुझने, तुमें सांभळो हे। मिरूक नार ॥ सा० ॥ एतो नृप राखे तुम ऊपरें, एकंगो घइ घणो प्यार ॥ सा० ॥ ५ ॥ सां० एतो जे दिन तुम घरे आवियां, एतो भोजन करता सार ॥ सा० ॥ एतो ते दिनथी तुने चित्त वस्यां, मनथी न विसारे लिगार ॥ सा० ॥ ६ ॥ सां० ॥ एतो ते ते दिनथी तुमनें घणुं, दिलवानी राखे हुंस ॥ सा० ॥ एतो एहमें कुड न जाणजो, तुम सत्य करि कहुं सूंस ॥ सा० ॥ ७ ॥ सां० ॥ एतो नव समझी हुं चित्तमां, नृप जाण्यो लंड कुमान ॥ सा० ॥ एतो निपु मुझ रीस चडी घणी, उठीने में दीधी लात ॥ सा० ॥ ८ ॥ सां० ॥ एतो कुंदीपाक करमे घणा;

॥ मु० ॥ के मरुं सही विष खाय ॥ मु० ॥ २३ ॥ मु० ॥ कंत विना शुं जीववुं रे ॥ मु० ॥ कंत विना किशुं हेज ॥ मु० ॥ मु० ॥ कंत विना शुं मालवुं रे ॥ मु० ॥ कंत विना शी सेज ॥ मु० ॥ २४ ॥ मु० ॥ दुःख भर छाती फाटती रे ॥ मु० ॥ रही नथी शकती गेह ॥ मु० ॥ मु० ॥ विरहानलनी बाफमां रे ॥ मु० ॥ दाझी रही छुं तेह ॥ मु० ॥ २५ ॥ मु० ॥ विरहिणी एम विलपे घणु रे ॥ मु० ॥ बसंतसिरी ससनेह ॥ मु० ॥ मु० ॥ नयणे आंसु रेडती रे ॥ मु० ॥ जाणे ज्युं भाद्रव मेह ॥ मु० ॥ २६ ॥ मु० ॥ बसतसिरी एम पाडवे रे ॥ मु० ॥ शकुने संदेशा लिखाय ॥ मु० ॥ मु० ॥ नारीनुं दुःख सांभळीने ॥ मु० ॥ बोल्यो मच्छीं लिखाय ॥ मु० ॥ २७ ॥ मु० ॥ खोल्यो किवाड गहेलीयां रे ॥ मु० ॥ मुकी मननी राड ॥ मु० ॥ मु० ॥ ऊलखियो पति आवियो रे ॥ मु० ॥ हर्षे उघाड्यां किवाड ॥ मु० ॥ २८ ॥ मु० ॥ निजरंगनतुं मुख देखतां रे ॥ मु० ॥ कामिनि हर्ष भराय ॥ मु० ॥ मु० ॥ हर्ष विनोद जे उपनो रे ॥ मु० ॥ पुस्तकें लिखियो न जाय ॥ मु० ॥ २९ ॥ मु० ॥ मन वल्लही रे ॥ मु० ॥ ए पंचवदसमी ढाल ॥ मु० ॥ मु० ॥ वेधकने लटके बीजा उल्लासनी रे ॥ मु० ॥ कही शुभ रंग रसाल ॥ मु० ॥ ३० ॥

॥ दुहा ॥ हिवे प्रीतम घरे आवतां, बाध्यो नवलो नेह ॥ मुह माग्य पासा ढल्या, अमिये वूठा मेह ॥ १ ॥ नर पहुंच घर आवता, बसंतसिरी गुणगेह ॥ प्रेम सरोवर झीलतां, वानो बांधयो देह ॥ २ ॥ दंपति दोरंगें मिल्यां, सुख भर कीधी वात ॥ दुःख दोहग दूरे गयां, मगयी ने सुख शात ॥ ३ ॥ कहे नारी पिउ सांभळो, मुगधी कहुं ससनेह ॥ तुमे चाल्या लंकापुरी, पाछ

या पाल्यो, एतो सांभली गुरु उपदेश ॥ सा० ॥ एतो हरि लक्ष्मी परें पामेश, एतो मनोमय सुख विशेष ॥ सा० ॥ १० ॥ सां० ॥ एतो मोहन गुरु परंपरा, तप गच्छपति हीर सूरिंद ॥ सा० ॥ एतो शाह अकब्बर भूपती, एतो मेलव्यो सुकृत वृंद ॥ सा० ॥ २१ ॥ सां० ॥ एतो तस शिष्य पंडित सोहता, श्री विजय कविराय ॥ सा० ॥ एतो तस शिष्य धनहर्ष जग जयो, एतो पंडित माहे गराय ॥ सा० ॥ २२ ॥ सां० ॥ एतो तस शिष्य कुशल विजय गणि, कमल विजय तस भ्रात ॥ सा० ॥ एतो तस शिष्य लक्ष्मीविजय कवि, एतो ज्ञान क्रिपावें वरात ॥ सा० ॥ २३ ॥ सां० ॥ एतो तस शिष्य केसर अमर दो, एतो जगतमां कर्म निरत ॥ सा० ॥ एतो सूरत पे इ नगरी परें, दोय बंधव तेज दीसेत ॥ सा० ॥ २४ ॥ सां० ॥ एतो तस पद पंकज भ्रमर, एतो कान्तिविजय उवझाय ॥ सा० ॥ श्रीजे ढाले पूरो करयो, एतो धीमो उल्लास रसाल ॥ सा० ॥ २५ ॥ सां० ॥ इति श्री सौभाग्यपंचमी गुणगर्भित श्रीवरदत्तगुणमंजरी संपूर्ण ॥ २ ॥

॥ दुहा ॥ शांति सुधारसमें मग्न, मगन रहे निशिदिन ॥ केवलज्ञान प्रकाशयी, दर्शन जिन जगदीश ॥ १ ॥ ज्योति स्वरूप सेवतें, निशिदिन ध्यावो नाम ॥ तस पद पंकज हुं नमुं, वामानंदन नाम ॥ २ ॥ वचनामृत वरसती, कविजन मुख रहेवाश ॥ नवनवर वरिने सदा, सरस्वती माता तेह ॥ ३ ॥ चरण कमल नमुं तेहनां, बाला त्रिपुरा सोय ॥ गुण गाती एक शी सदा, गुरु मन वंछित होय ॥ ४ ॥ दोलत केसर अमर गुं, परम कृपाल मनि धाम ॥ मम साहिब हरिवल नमुं, गमाई सौहो उल्लास ॥ ५ ॥ उपदेश गुण गातसां, होते वचन सार ॥ माताजी केरे नामसों, कहें कथ संसार ॥ ६ ॥

नेम हरिबलने दोरे. दो नृप मंत्री लेवे हो० ॥ दो० ॥ क [illegible]
ोमे रंग देखाडी. कहे मुखथी घणु हो० ॥ कहे० ॥ [illegible]
र देइ आदर. दे नृप पेसणु हो० ॥ दे० ॥ ६ ॥ [illegible]
स्वागत कीध, पर्णा हरिबल तणा हो० ॥ प० ॥ पूछे [illegible]
समाचार, नृप हरिबल भणी हो० ॥ नृ० ॥ कहो [illegible]
तुमे केता, गढ भांगि किम गया हो० ॥ ग० ॥ [illegible]
ण वेग, समाचार किम थया हो० ॥ स० ॥ ६ ॥ [illegible]
रिबल ते स्वदग, कहे लेइ भेटणु हो० ॥ क० ॥ [illegible]
णे मोकल्युं, ए नृप देटणु हो० ॥ ए० ॥ [illegible]
सांभलो. स्वामी तुम भणु हो० ॥ स्वा० ॥ [illegible]
सायार, हवा वह तुम पणु हो० ॥ स्वा० ॥ ९ ॥ [illegible]
मारग आवतां सांया मे घणा हो० ॥ को० ॥ [illegible]
करी, जान्यो गया घणा हो० ॥ ज्ञा० ॥ [illegible]
हेतां, पूगो जलांनथी हो० ॥ पू० ॥ [illegible]
लागे जलादथी हो० ॥ ज्ञा० ॥ १ ॥ [illegible]
देवी पोसन रथो हो० ॥ मेरो० ॥ [illegible]
र जइ हर्षो हो०॥गा०॥ नाना [illegible]
॥ ह० ॥ रावने गिरने कौ, [illegible]
॥ ९ ॥ किम गिनेथ हल पूरो. [illegible]
भाव्या पर्यावाव न. दीसे [illegible]
सोह घने ने. हिवा ता [illegible] १.
अमसमान. गिरवा एहे [illegible] नव
भवादी मेह. थई दरिसी [illegible] हो०
मल, ते हुवे मांलवो [illegible] हो०
देखी विरायमो [illegible] ० ॥
[illegible] हो० ॥ [illegible]

कामने हो० ॥ तु० ॥ कठिण करयो तिहां मन, संभारी
मने हो० ॥ स० ॥ पाछो केम वळाय जे, कामें नीकल्यो
॥ का० ॥ मरण कबूल करयो पण, पाछो नवि
हो० ॥ पा० ॥ १२ ॥ उत्तमना ज बोल, ते मनदत
ग्या हो० ॥ ते० ॥ ते पाछा किम ओसरे, पंचमें
हो० ॥पं०॥ पचनी सामे बोल जे बोल्यो ते टळे हो० ॥ ते
ते नरनारी जीवतां, मूआमां भळे हो० ॥ मू० ॥ १३
बयण चूको ते मानवी, लेखे नवि गणे हो० ॥ ले० ॥
भव परभव कार, गयो तस जिन भणे हो० ॥ ग० ॥ इम
णीने स्वामी, तुमारा काजने हो० ॥ तु० ॥ घाल्यो जलमें
जीव, कठिण करी लाजने हो० ॥ क० ॥ १४ ॥ वीठ
हरिबल कौतुक, नी नृप आगळे हो० ॥ नी० ॥ कल्पित वात
करी कहे, ते सहु सांभळे हो० ॥ ते० ॥ जलमें गयो जने
आयो, ते हु मन सबरो हो० ॥ ते० ॥ तब एक राक्षस आ
व्यो ने, माहामा जक तरी हो० ॥ सा० ॥ १५ ॥ इं
नो जाणीयें मस ए, ताट प्रमाण ज्यु हो० ॥ ता० ॥ लांबे
होठ ते जाणीयें बडसमान ज्यु हो० ॥ व० ॥ दता लोढा
ल, करे करी कलमलो हो० ॥ क० ॥ अवळी सवळी दीठ
दीसे घणी झलफली हो० ॥ दी० ॥ १६ ॥ जाणे आंगो
उदो, धूंदी डुंगर दरी हो० ॥ धूं० ॥ माथुं महोटु ने जाणीयें
हलपले धूंमरी हो० ॥ ह० ॥ माथे कावरा केश, ते जाणीयें
आंतरां हो० ॥ ते० ॥ दंताळी समा दांत. ते विरला भा
रा हो० ॥ नवि० ॥ १७ ॥ नाटमना दा हाथ ते, गायम
ना हो० ॥ गा० ॥ अंगुळीना नख जाणीयें, पावडा
हो० ॥ पा० ॥ पेट तो जाणियें, बडो, कूवो झडतो
॥ कू० ॥ थंभ समान दो चरण, ते रावण भूंडनो हो० ॥ ते०

॥ १८ ॥ काल कंकाल समान. भयंकर भैरवो हो० ॥ भ० ॥
नागे मदनो वंचय, मगडलो ओपिनो हो० ॥ म० ॥ क्रोध
नल्नी झाल ने. एपणी काडतो हो० ॥ क्रु० ॥ करतो अट्ट
हास, ने कर दो पछाडतो हो० ॥ ते० ॥ १९ ॥ मूक्ष्म
मार उठे कंप, गेनाय दुर्वानिनो हो० ॥ गं० ॥ उदरथी
निकले आहार जे, ते दिन माननो हो० ॥ ते० ॥ पहेलो वि
हासपो गासम, ते गाहायो फिर्यो हो० ॥ ते० ॥ फूक नो नग्न
दि बोलो, मासम देवों कन्यो हो० ॥ मा० ॥ १० ॥ घो दव
मालियो फूनो, पुरुष भाखियो हो० ॥ पु० ॥ विवानंदनो
पर्वतनो नगाडियो हो० ॥ द० ॥ गल्पन माय मधान ने,
मव वृद्धिकरो हो० ॥ मे० ॥ पाली वहिने बोलाव्यो, माग
मने प्रेम फिने हो० ॥ म० ॥ ११ ॥ आवो मामा सुदाम,
मालिक तुमने घरे हो० ॥ मा० ॥ वो अंधकार ने पामा,
मालिने भक्ति घरे हो० ॥ भा० ॥ मानो तुम नमाहयो. व
ति ए उकर्यो हो० ॥ व० ॥ गलो घडो मन गाडम, वानो
मुर्मो मलो हो० ॥ वा० ॥ १२ ॥ पुरुं नावस मांस. नं
दो दिलो घरो हो० ॥ न० ॥ जिन मु आवयो मनविषे. न
मन करे घरो हो० ॥ ने० ॥ नर हजिद वदे माना. दुग
मेहा मलो हो० ॥ दु० ॥ हाम्यो मांग मारे, काल के
दिलो घलो हो० ॥ वा० ॥ १३ ॥ जाई ठुं मूर्त काल. थी
ध हालसो हो० ॥ हो० ॥ नर मासन घडे मापन, हसि ने,
नासनो हे० ॥ हो० ॥ मीरो वाड घोर. घना दुए नहे
हे० ॥ घ० ॥ दयो तुम आवशे मालेन. अंतर्गे नहुं हो०
॥ मे० ॥ १४ ॥ मूर्ग नि तुम मासन, धोले हो पलो हा०
पो० ॥ जिन तुम तुमे मांडे, मेवा न्ह नमो हो० ॥ मे० ॥
मेघो मिले पान. न मेह हरी मके हो० ॥ मे० ॥ घोनो

॥ १८ ॥ काळ कंकाळ समान, भयंकर भैरवो हो० ॥ भ० ॥
जाणे यमनो बंधव, मगरनो अभिनरो हो० ॥ म० ॥
नलनी झाल ते, मुखथी काढतो हो० ॥ मु० ॥ क्रोधा
हास, ते कर दो पछाडतो हो० ॥ ते० ॥ करतो अट्टह
साप ज्युं गंध, गंधाय दुर्वाननो हो० ॥ गं० ॥ मुखथी
निकळे आहार जे, ते दिन सातनो हो० ॥ ते० ॥ उदरथी
हासणो राक्षस, ते साहमो मिल्यो हो० ॥ ते० ॥ एहवो वि
धि बीजो, राक्षस देखी छल्यो हो० ॥ रा० ॥ २० ॥ एक तो मन्त्र
जाणियो सूनो, पूरेन आवियो हो० ॥ पू० ॥ विद्यानीवरचो
घपरणो जगाडियो हो० ॥ ग० ॥ राज्यनुं काम सधारा मे,
तव बुद्धिकरी हो० ॥ मे० ॥ मामो कहिने बोलाव्यो, राज्य
सने हुं फिरी हो० ॥ रा० ॥ २१ ॥ आवो मामा जुहार,
भाणेज तुमने करे हो० ॥ मा० ॥ यो अभेदान ते मामा,
भाणेजने भक्ति धरे हो० ॥ भा० ॥ स्वामी तुम्ह पसायथी, व
दि ए उकली हो० ॥ वु० ॥ राजी थयो तव राक्षस, वाणी
सुणी भली हो० ॥ वा० ॥ २२ ॥ पूछे राक्षस भाणेज, तुं
इहां किहां थकी हो० ॥ तुं० ॥ किन तुं आव्यो मलयिमें, ते
हुं कहे वकी हो० ॥ ने० ॥ तव हरिबल कहे मामा, मुझ
काज तणो हो० ॥ मु० ॥ दाखवो मारग माहरे, काज छे
इहां घणो हो० ॥ का० ॥ २३ ॥ जाउं छुं नृप कारज, शी
उतावळो हो० ॥ शी० ॥ तव राक्षस कहे भाणेज, दीसे तं
भलो हो० ॥ दी० ॥ मीयां वाडे चाले. चगा तुं ए नवुं
॥ च० ॥ इयो तुझ आवगो भाणेज, लंकामें जवुं हो०
हो० ॥ २४ ॥ चूर्मी ले तुझ रासग, धोळे दी छनां हो०
॥ किन तुझ प्रत्ये भाणेज, लंका गढ जनां हो० ॥ लं० ॥
नो निपजे काम, ते वेद करी शके हो० ॥ ते० ॥ इति

कामने हो० ॥ तु० ॥ कठिण करशो तिहां मन, संभारी
मने हो० ॥ सं० ॥ पोछु केम वलाय जे, कामें नीकल्यो
॥ का० ॥ मरण कबूल करशो पण, पाछो नवि
हो० ॥ पा० ॥ १२ ॥ उत्तमना ज बोल, ते मनदत
रया हो० ॥ तं० ॥ त पाछा किम ओसरे, पंचमें
हो० ॥ पं० ॥ पचनी साखें बोल जे बोलियो ते टले हो० ॥ ते०
ते नरनारी जीवनो, मुआमां भले हो० ॥ मु० ॥ १३
वयण सुहा त मानवी, लेखे नवि गणे हो० ॥ ले० ॥
मर पत्थर कार, गया दस जिन भणे हो० ॥ ग० ॥ इन
नी स्वामी, तुमारा कामने हो० ॥ तु० ॥ घाल्यो
जीव, कठिन करी लालने हो० ॥ क० ॥ १४ ॥ वदि
इच्छित कौतुक, नी नृप भागमें हो० ॥ नी० ॥
करी कहे, ते सहु सांभले हो० ॥ ते० ॥ मलने गयोन
आणो, ते मन मसगो हो० ॥ ते० ॥ तब एक रावत
क्या ते, मारापा नक नगी हो० ॥ मा० ॥ १५ ॥
नो आणीयें मन प, नाद मनाग उग हो० ॥ ना० ॥
हाट ने आणीयें वनमयान उग हो० ॥ व० ॥ दना लोना
ल, कर करी कलमसा हो० ॥ क० ॥ अरली मासी
टीप पनी वलफलो हो० ॥ टी० ॥ १६ ॥ जाने भांना
उडा, बुंदी रंगर दगी हो० ॥ बु० ॥ मागु मशरु ने जाणि
दरहे घूमनी हो० ॥ द० ॥ पाये कायगा केम, ते
दस्तगा हो० ॥ ते० ॥ दंगली मना दान ने रिस्वा
ग हो० ॥ वहि० ॥ १७ ॥ नादनमा दा हाथ ने गरम
ना हो० ॥ ग० ॥ अनुदीना नमा नाणीयें, पारदा
हो० ॥ प० ॥ पेट नो जाणिये, वडा, कूवा प्रदना
॥ कू० ॥ मम ममान दो थाग ने गरम भरनो हो०

॥ १८ ॥ काल कंकाल समान, भयंकर भैरवो हो० ॥ भ० ॥
साथे पापनो संचय, मनड्यो अभिनवो हो० ॥ म० ॥ क्रोधा
नलनी झाल ते, मुखथी काढतो हो० ॥ मु० ॥ करतो अट्ट
हास, ते क्रूर दांत पसारतो हो० ॥ ते० ॥ १९ ॥ भूधर
नाप ज्युं गंध, गंभीर दुर्गतिनो हो० ॥ गं० ॥ उदरथी
निकले आहार जे, ते दिन सातनो हो० ॥ ते० ॥ एहवो वि
रामणो राक्षस, ने साहामो मिल्यो हो० ॥ ने० ॥ एक तो मन्द
ने बोलो, राक्षस देखी छल्यो हो० ॥ रा० ॥ २० ॥ में तव
आणियो जुओ, पूर्व आविसो हो० ॥ पू० ॥ चिंतानी रचवो
संवरणो जगाडियो हो० ॥ प० ॥ राज्यनुं काम सघाला में,
तव बुद्धिकरी हो० ॥ में० ॥ मामो कहिने बोलाव्यो, राक्ष
सने में फिरी हो० ॥ रा० ॥ २१ ॥ आवो मामा जुहार,
भाणेज तुमने करे हो० ॥ भा० ॥ थां अभेदान ते मामा,
भाणेजने माले परे हो० ॥ भा० ॥ स्वामी तुम्ह पसायथी, ब
द्धि ए उजरथी हो० ॥ बु० ॥ राजी थयो तव राक्षस, वाणी
सुणी भली हो० ॥ वा० ॥ २२ ॥ पूछे राक्षस भाणेज, तुं
इहां किहां थकी हो० ॥ तुं० ॥ किन तुं आव्यो मलयमें, ते
तुम्ह कहे वेकी हो० ॥ ते० ॥ तव हरिबल कहे मामा, तुम्ह
लंका तणो हो० ॥ तु० ॥ दाखवो कारण माहरे, काम छे
तिहां घणो हो० ॥ का० ॥ २३ ॥ जाउं छुं नृप कारज, थी
ध उतावलो हो० ॥ थी० ॥ तव राक्षस कहे भाणेज, दीसे तं,
पावलो हो० ॥ दी० ॥ मांगो कांई चोर, नगा नुं ए नवुं
हो० ॥ न० ॥ दयो तुम्ह आगळे भाणेज, लंकामें जवुं हो०
॥ लं० ॥ २४ ॥ भर्या छे तुम्ह राक्षस, पंखे दो उनां हा०
पां० ॥ किन तुम्ह पूरवे भाणेज, लंका गढ जवा हो० ॥ लं० ॥
तेथी निपजे काम, ते तेह करी शके हो० ॥ ते० ॥ हाल्यो

कामने हो० ॥ तु० ॥ कठिण करयो तिहां मन, संभारी मने हो० ॥ सं० ॥ पोछु केम वलाय जे, कामें नीकल्यो ॥ का० ॥ मरण कबूल करयो पग, पाछो नवि हो० ॥ पा० ॥ १२ ॥ उत्तमना ज बोल, ते मनदत रच्या हो० ॥ ते० ॥ ते पाछा किम ओसरे, पंचमें हो० ॥ पं० ॥ वचनी सामें बोल जे बोली यो ते टलें हो० ॥ ते० ते नरनारी जीवतां, मूआमां भले हो० ॥ मु० ॥ १३ वयण चूका ते मानवी, लेखे नवि गणे हो० ॥ ले० ॥ भव परभव कार, गयो तस जिन भणे हो० ॥ ग० ॥ इम णीने स्वामी, तुमारा काजने हो० ॥ तु० ॥ घाल्यो जीव, कठिण करी लाजने हो० ॥ क० ॥ १४ ॥ वढि इखिल कौतुक, नी नृप आगलें हो० ॥ नी० ॥ कौतुक करी कहे, ते सहु सांभले हो० ॥ ते० ॥ मलमें गयोज व आघो, ते हु मन सबगी हो० ॥ ते० ॥ तब एक राखस अ व्यो ने, माहामां जक तरी हो० ॥ सा० ॥ १५ ॥ दंता नो जाणीयें मम ए, ताड प्रमाण ज्यु हो० ॥ ता० ॥ लांबी होठ ते जाणीयें वंशसमान ज्यु हो० ॥ व० ॥ दता लोहा ल, करे करी कलमलो हो० ॥ क० ॥ अवली मवली दोड़ दीये धणी झलफली हो० ॥ दी० ॥ १६ ॥ जाणे आंखो दी उडी, भूंडी डुंगर दरी हो० ॥ भूं० ॥ माथुं महोड़ ते जाणीयें, डलपले धूंमरी हो० ॥ ड० ॥ माथे कावरा केश, ते जाणीयें झांखरां हो० ॥ ते० ॥ दंताली सना दांत, ते विरला भाग हो० ॥ नवि० ॥ १७ ॥ ताडसमा दो हाथ ते, राखस ना हो० ॥ रा० ॥ अंगुलीना नख जाणीयें, पावडा लोला हो० ॥ पा० ॥ पेट तो जाणिये, वडो, कूवो शृंडनो हो० ॥ कू० ॥ थंभ समान दो चरण, ते राखस भूंडनो हो० ॥ ते०

॥ १८ ॥ बारह संताप समान, भयंकर भैरवो हो० ॥ भ
जाने दबनो वेर. मगटो अभिनवो हो० ॥ म० ॥ ब
ननो काल मे, मरधी कारनो हो० ॥ ड० ॥ करतो
दाम, ते कर दो पछाटतो हो० ॥ मे० ॥ १९ ॥ म
मार सर्व मंच, मंगाव दुर्बलनो हो० ॥ मं० ॥ उ
निकले भारत अे, मे दिन गानमो हो० ॥ मे० ॥ दरबो
दामतो गाजन, मे मालादो मिन्दी हो० ॥ मे० ॥ छक दो
वि बांतो, गाभन हेनी मनो हो० ॥ गा० ॥ २० ॥ बे
मालिदो झनो, पुरेन आविबो हो० ॥ पु० ॥ दिवानिवस्वा
पंदनो नगादियो हो० ॥ प० ॥ गन्दन वाद गवाग
मर दुदिरी हो० ॥ जे० ॥ पानी वांदिने बोलाव्यो गाम
गये मे किरी हो० ॥ गा० ॥ २१ ॥ आवो माया सुदार.
भालेक दुवे करे हो० ॥ मा० ॥ नो भंडाग्न मे माया.
बालेने भरि दरे हो० ॥ मा० ॥ बराती दम नमारधी. ब
दि ए लकर्गी हो० ॥ बु० ॥ नाशे दवे मर गाजन. बानी
इस्ते भरो हो० ॥ बा० ॥ २२ ॥ दुजे गावन साहेब, दे
रतो दिरो हरी हो ॥ द ॥ दिन मुं मारवो मनाविये. म
दुर करे हरी हो० ॥ मे० ॥ मर होनदर वरे माया दुम
केवा गनो हो० ॥ दु० ॥ दामयो नाम मारे, बाद दे
हरो पनो हो० ॥ बा० ॥ २३ ॥ आई दे पुर बारज, बी
उ दावरो हो० ॥ बी० ॥ मर गावन वरे मवेस. दोने न
वारनो हो० ॥ दो० ॥ दोनो वाडे वारे वदा ह ए दे
हो० ॥ व० ॥ वरो दुद भारती मवेस. बवाने जावु हो०
॥ दे० ॥ २४ ॥ बुदो ते दुन गावन, बेर दो वत्त हा०
॥ दि दिन रु दुवे मरोर, बेबा रु जावे हो० ॥ २५ ॥
होवे निवे बार. दरेर हाँ दके हो० ॥ बे० ॥ दुवो

कामने हो० ॥ तु० ॥ कठिण कर्यो तिहां मन, संभारी
मने हो० ॥ सं० ॥ पोते केम कळाय जे, कामें नीकल्यो
॥ का० ॥ मरण कबुल कर्यो पण, पाछो नहि
हो० ॥ पा० ॥ १२ ॥ उत्तमना ज बोल, ते मनदन
रया हो० ॥ ते० ॥ न पाछा किम ओसरे, पंचमें
हो० ॥पं०॥ पचनी मांहे बोल ज बोली यी ते टळे हो० ॥ बे
ते नरनारी जीवतां, मुआमां भले हो० ॥ मु० ॥ १३ ॥
वगण चुरा न मानवी, लेख नहि गणे हो० ॥ ले० ॥
भर पत्थर कार, गयां नम जिन भणे हो० ॥ ग० ॥ इन
नीन स्वामी, तुमारा कामने हो० ॥ तु० ॥ पाल्यो
ओर, कठिन करी चालने हो० ॥ क० ॥ १४ ॥ वीह
हवित कौतक, नी नृप भागने हो० ॥ नी० ॥ कल्यिन
करी कह, ते मह संभळे हो० ॥ ते० ॥ मळले गयो
आंगो, ते ए मन मळगी हो० ॥ ते० ॥ नप एक रावण
व्या ने, मारामा नक नहि हो० ॥ मा० ॥ १५ ॥
ना आणीने पण प नाद प्रनाम थयु हो० ॥ ना० ॥
हाट ने आणीयें वजगमान थयु हो० ॥ व० ॥ दना लोक
ज हुए कहि कलमला हो० ॥ क० ॥ भरणी मारमी
हीने वनी वनकरी हो० ॥ ही० ॥ १६ ॥ नाने भांगी
उनर, बुद्धी हवार हरी हो० ॥ बु० ॥ माप मदार ने नाखी
ह रवने दुमगी हो० ॥ ह० ॥ माने कारवा केम न माने
करताम हो० ॥ ते० ॥ देखनी मना होत न किला
मा हि० न वहि० ॥ १७ ॥ नाहमा हा हाथ न आयम
ना हो० ॥ ना० ॥ वहीना नम आणीं, वारवा
हुए ॥ १८ ॥ केम नो आदिदे, वडी, वधो वधन
॥ १९ ॥ धन मनाव हो मान ने मागम भदवो ह०

। १८ ॥ काल कंकाल समान, भयंकर भैरवो हो० ॥ भ० ॥ राणे यमनो बंधव, मनदयो अभिनवो हो० ॥ म० ॥ क्रोधा ग्नीनी झाल ने, मुखथी काढतो हो० ॥ मु० ॥ करतो अट्ट हास, ते कर दो पछाडतो हो० ॥ ते० ॥ १९ ॥ मूआ नाग ज्युं गंध, गंभाय दुर्वांतनो हो० ॥ गं० ॥ उदरथी नेकले आहार जे, ते दिन मातनो हो० ॥ ते० ॥ एहवो वि रामणो राक्षस, ते सादायो मिल्यो हो० ॥ ने० ॥ एक तो जल वे बीजो, राक्षस देखी जल्यो हो० ॥ रा० ॥ २० ॥ मंदे दय गाणियो जुनो, पूरीन आवियो हो० ॥ पु० ॥ विवानीन्वत्त्वो स्वरणो जगाडियो हो० ॥ प० ॥ राज्यनुं काम मयारा में, ख बुद्धिकरी हो० ॥ मे० ॥ मामो कहिने बोलाव्यो, राक्ष सने हुं फिरी हो० ॥ रा० ॥ २१ ॥ आवो मामा जुहार, पाणेज तुमने करे हो० ॥ भा० ॥ यो अभेद्यान ते मामा, भाणेजने भलि परे हो० ॥ भा० ॥ स्वामी तुम मसादथी, बु द्धि ए उकरती हो० ॥ बु० ॥ राजी थयी तव राक्षस, वाणी सुणी भली हो० ॥ बा० ॥ २२ ॥ पूछे राक्षस भाणेज, तुं हवे किहां थकी हो० ॥ तुं० ॥ किन तुं आव्यो जलधिमें, ते मुझ कहे वेकी हो० ॥ ते० ॥ तव हरिबल कहे मामा, मुझ लंका तणो हो० ॥ मु० ॥ दाखवो सागर माहरे, काम छे किहां घणो हो० ॥ का० ॥ २३ ॥ जाउं छुं नृप कारज, शी घ्र उतावळो हो० ॥ शी० ॥ तव राक्षस कहे भाणेज, दीसे तं, पावळो हो० ॥ दी० ॥ आंयां वादे चारे, नगा मुंप, जवुं हो० ॥ च० ॥ स्यो तुज आशरो भाणेज, लंकामें जवुं हो० ॥ लं० ॥ २४ ॥ स्वामी के तुझ गम्यम, पोते दी छनां हो० घो० ॥ किन तुझ पूरवे भाणेज, लंका गढ जवां हो० ॥ लं० ॥ जेहथी निपजे काम, ते तेह करी शके हो० ॥ ते० ॥ पछिंवां

कामने हो० ॥ तु० ॥ कठिण करयो तिहां मन, संमार्ग
मने हो० ॥ स० ॥ पोछ केम वळाय जे. कामे नीकल्यो
॥ का० ॥ मरण कबूल करयो पण, पाछो नहि ०
हो० ॥ पा० ॥ १२ ॥ उत्तमना ज बोल, ते मनदन
गया हो० ॥ ते० ॥ न पाछा क्रिम ओसरे, पंचमें
हो० ॥पं०॥ वचनो माणे बोल ज बोलि गो ने टळे हो० ॥ ते०
ते नरनारी जीवतां. मुआमां भळे हो० ॥ मु० ॥ १३
वयण सुहा न मानवी. लेख नवि गणे हो० ॥ ले० ॥
भव पामर कार, गयो जिन भणे हो० ॥ ग० ॥ इन
गीन स्वामी, तुमारा कामने हो० ॥ तु० ॥ मान्यो
दीन, कठिन करी लाजन हो० ॥ क० ॥ १४ ॥ वीर
इग्विन्द कौतुक, नी नृप भागळे हो० ॥ नी० ॥ कल्पित
करी कर. ते मत सांभळे हो० ॥ ते० ॥ मळने गयोत
आयो, ते ए मन सबरी हो० ॥ ते० ॥ नष एक गामम
क्या ने. मातामा जक नवी हो० ॥ मा० ॥ १५ ॥ ते
नो जाणीने मन प नाद मनाग उग हो० ॥ मा० ॥ कां
हाट ने जाणीने वनगमान उग हो० ॥ व० ॥ दना लोहा
ल. कर करी कळमळा हो० ॥ क० ॥ भरली मारली
दीने पणी वळफळी हो० ॥ दी० ॥ १६ ॥ जाने भीमां
उठी. छेडी हराग दरी हो० ॥ प्र० ॥ पाप मदार ने जाणीने
द दनले घूमसी हो० ॥ द० ॥ पाये दाव । हेत न माने
कांडा हो० ॥ ते० ॥ देना की मना दान न रोत्रा
वग हो० ॥ वेरि० ॥ १७ ॥ नारदना दा दाग न गामम
मा हो० ॥ गा० ॥ भगुदीना नम जाणवे, दादा जावे
हो० ॥ प० ॥ दर नो जाणिदे, उठो, कयो झडना
॥ कु० ॥ एम मनाव दां नरन ते गामम भवो ह०

॥ १८ ॥ काळ कंकाळ समान. भयंकर भैरवो हो० ॥ भ०
लागे यमनो पंजर. मगरनो अभिनवो हो० ॥ म० ॥
नमनी झाळ ते, स्वधी काळनो हो० ॥ कु० ॥ कालो भइ
हाय, ते कर हो पण्डनो हो० ॥ तं० ॥ १९ ॥ सुभ
मार ज्युं मंध. संशय दुर्वाननो हो० ॥ मं० ॥ उत्तरथी
निकळे भारा जे, ते दिन मानतो हो० ॥ ने० ॥ एहवो वि
हायणो गाळग, ते नागनो मिल्यो हो० ॥ ने० ॥ एक सो सत
वि बांधी, शासन देवी छतो हो० ॥ सा० ॥ २० ॥ मे दय
आणियो छनो. पुत्र आवियो हो० ॥ पु० ॥ विवानीरख्यो
पत्यणो नगाडियो हो० ॥ द० ॥ रागयन् काम गयारा ने,
नर सुदिहरी हो० ॥ मे० ॥ पाचो कांहिं बोलाव्यो. गन
मने मे फिरी हो० ॥ म० ॥ २१ ॥ आयो माया तुहार,
मानेस तुमने करे हो० ॥ मा० ॥ पो संयसान ने माया.
भागे मने भलि परे हो० ॥ भा० ॥ प्यारो सुख नमारथी, व
दि ए उत्तर्या हो० ॥ दु० ॥ सागो थयो नव गानम, वाणी
मुलो भयो हो० ॥ वा० ॥ २२ ॥ पुळे नानस माने, तुं
रमो दिरो थयो हो० ॥ मु० ॥ दिन तु भाव्यो जलधिने. न
पुन करे केरी हो० ॥ ने० ॥ नर हरिदस करे माया. सुन
अंका मनो हो० ॥ सु० ॥ दारयो सागग नाहे, काम छे
सिरो दयो हो० ॥ वा० ॥ २३ ॥ आई छे सुर कारज, मी
म रसाय़ो हो० ॥ दी० ॥ नर गानम करे भाजन, दीसे न०
ासनो हो० ॥ दी० ॥ सीरो सारे घारे मना सु ए नवे
ो० ॥ य० ॥ दयो सुख आवगो नाचेन. मनावे नवुं हो०
े० ॥ २४ ॥ पूर्वो ते सुन राजन, पोढे हो पना हा०
ो० ॥ दिन मुकमुके माचेड, अंका गढ नमो हो० ॥ २०॥
यो निवसे दान. ज नेह कीर करे हो० ॥ ने० ॥ रान्ता

कामने हो० ॥ तु० ॥ कठिण करयो तिहां मन, संभारी
मने हो० ॥ सं० ॥ पोते केम वलाय जे, कामें नीकल्यो हो०
॥ का० ॥ मरण कबूल करयो पण, पाछो नवि ब
हो० ॥ पा० ॥ १२ ॥ उत्तमना ज बोल, ते मनवत ब
रया हो० ॥ ते० ॥ न पाछा किम ओसरे, पंचमें उच्चार
हो० ॥पं०॥ पचनी माखें बोल जे बोलि यो ने टले हो० ॥ ते
ते नरनारी जीवतां, मुआमां भले हो० ॥ मु० ॥ १३
वयण गुरुना न मानशी, लेखे नवि गणे हो० ॥ ले० ॥
मन परभव कार, गयो एम जिन भणे हो० ॥ ग० ॥ इम
णीने स्वामी, तुमारा कामने हो० ॥ तु० ॥ माल्यो क
शरीर, कठिन करी खामने हो० ॥ क० ॥ १४ ॥ वीर
इविल कौतुक, नी नृप भागने हो० ॥ नी० ॥ कलिय
करी कहे, ते सहु सांभले हो० ॥ ते० ॥ मलने गयो
आयो, ते हे मन मकरी हो० ॥ ते० ॥ नव एक गामम
रया ते, माहामा जल नवी हो० ॥ मा० ॥ १५ ॥ वे
तो जाणीयें मन प वाद मनाणा उग हो० ॥ मा० ॥ म
होद न जाणीयें वशगमान उग हो० ॥ व० ॥ दना मोहा
ल, कर करी कलमला हो० ॥ क० ॥ अरली मारली दे
टींग मर्ण अलफली हो० ॥ टीं० ॥ १६ ॥ जाने भांगी
उठी, बुंदी हगर दगी हो० ॥ बु० ॥ माय महार ते नाणी
हलपले धुंमरी हो० ॥ ह० ॥ पाये कावना केम न मा
ङासरा हो० ॥ ते० ॥ टंगा री मना टोन न राखा
रा हो० ॥ नरि० ॥ १७ ॥ माहम्मा दा हाथ ते गमय
ना हो० ॥ गा० ॥ भगुलीना नख जाणीयें, धारदा
हो० ॥ धा० ॥ देह तो जाणिये, वडो, कयो पुहना
॥ पु० ॥ अब मलान दो घाग ते आगम पुरनी हो०

॥ १८ ॥ काळ कंकाल समान. भयंकर भैरवो हो० ॥ भ०
लागे यमनो पंगर. मगदचो अभिनरो हो० ॥ म० ॥ क्रोध
नलनी झाल ते, मुखथी काढतो हो० ॥ मु० ॥ करतो अट्ट
हास, तं कर दो पछाडतो हो० ॥ ते० ॥ १९ ॥ मुआ
साप ज्युं गंध, गंधाय दुर्वांतनो हो० ॥ गं० ॥ उदरथी
निकले आहार जे, ते दिन मानतो हो० ॥ ते० ॥ एहवो वि
हामणो राक्षस, ते माहापो मिल्यो हो० ॥ ते० ॥ एक तो जन्म
वि बांजो, राक्षम देखी छल्यां हो० ॥ रा० ॥ २० ॥ श्वे तव
भाणियो जनो. पूरेग आविथो हो० ॥ पू० ॥ विवानीतच्चो
पयरणो नगाटियो हो० ॥ च० ॥ राज्यनुं काम सघारा में,
तव बुद्धिकरी हो० ॥ मे० ॥ मामो कहिने बोलाव्यो. राज्य
सने हुं फिरी हो० ॥ रा० ॥ २१ ॥ आवो मामा सुदार,
भाणेज तुमने करे हो० ॥ मा० ॥ घो अभेदान ने मामा,
भाणेजने भक्ति परे हो० ॥ मा० ॥ स्वामी तुझ पसादथी, बु
द्धि ए ऊजली हो० ॥ बु० ॥ गनो थयो तव राक्षस, वाणी
सुणी भली हो० ॥ वा० ॥ २२ ॥ पूछे राक्षस भाणेज, तुं
इहां किहां थकी हो० ॥ तुं० ॥ किम तुं आव्यो जलधिमें, ते
मुझ कहे वकी हो० ॥ ते० ॥ तव हरिबल कहे मामा, मुझ
लंका तणो हो० ॥ मु० ॥ दाखवो मारग माहरे, काम छे
तिहां घणो हो० ॥ का० ॥ २३ ॥ जाउं छुं नृप कारज,
अ दतावडो हो० ॥ दी० ॥ तव राक्षस कहे भाणेज, दीसे
रावलो हो० ॥ दी० ॥ गांपां वाद चोव. नगा तुं ए न
हां० ॥ च० ॥ दयो तुझ आवरो भाणेज, लंकामें जउं हो०
लं० ॥ २४ ॥ चूर्मी के तुम राक्षस, पोळे दी छनां हो०
हो० ॥ किम तुझ पूर्वे भाणेज, लंका गढ जनां हो० ॥ लं० ॥
रूपी निपजे काम, ते तेह करी शके हो० ॥ ते० ॥ शंधो

॥ १८ ॥ रुण्ड कंकाल ममान, भयंकर भैरवो हो० ॥ भ० ॥
नागे यमनो वंतर. मगटयो अभिनवो हो० ॥ म० ॥ क्रोधा
नलनी झाल ते, मुखथी काढतो हो० ॥ मु० ॥ करतो महट
नाप, ते कर दो पछाडतो हो० ॥ ते० ॥ १९ ॥ मुआ
सार ज्युं गंध. गंगाय दुर्वाननो हो० ॥ गं० ॥ उदरथी
नेकल्ले आहार जे, ते दिन मातनो हो० ॥ ते० ॥ पहवो वि
रामणो राक्षस, ते साहामो मिल्यो हो० ॥ ते० ॥ एक तो मन्द
धे बांधो, राक्षस देखी ठल्यो हो० ॥ रा० ॥ २० ॥ में तव
मागियो जुनो. पूरंज आवियो हो० ॥ पू० ॥ रिवानीरत्नां
मिरणो उगाटियो हो० ॥ प० ॥ राज्यन काम सवाना म,
तव पुष्टिकरी हो० ॥ मे० ॥ मामो कहिने बोलाव्यो. राग
इने हुं फिरी हो० ॥ रा० ॥ २१ ॥ आवो मामा उदार.
मागेल तुमने करे हो० ॥ मा० ॥ थो अभयदान ते मामा.
मागेजेने भक्ति धरे हो० ॥ भा० ॥ स्वामी तुम्ह नमाडथी, थ
डे ए उकर्डो हो० ॥ बु० ॥ राजा थयो तव राक्षस, वाणी
हुगी भली हो० ॥ वा० ॥ २२ ॥ पूछे राक्षस मामेन, तुं
हां फिरां थकी हो० ॥ तु० ॥ किन तुं आव्यो जलधिमें. ते
मि करे थकी हो० ॥ ते० ॥ नर हरिवन्द करे मामा. सुम
केका नगो हो० ॥ हु० ॥ दानवेश मागन मारे, कान छे
मेहां पनो हो० ॥ का० ॥ २३ ॥ जाउं छुं तुज कारज. श्री
म उगारजो हो० ॥ श्री० ॥ तव राक्षस कहे भामेम, दीसे तं,
ारयो हो० ॥ दी० ॥ मीरां बाटे घोर. चना तुं ए नवुं
हो० ॥ च० ॥ पयो तुज आनगे मामेन, लंकामें जवुं हो०
॥ लं० ॥ २४ ॥ पूर्वे के तुम राक्षस, पोंटे छो छतां हो०
हो० ॥ किन दुहाभुरवे भामेम, लंका गढ जतां हो० ॥ लं० ॥
केरपी निरखे वाम, ते नेह करी सके हो० ॥ ने० ॥ दांनो

कामने हो० ॥ तु० ॥ कठिण करयो तिहां मन, ॥
मने हो० ॥ सं० ॥ पाछे केम वलाय जे. कामें नीकल्यो
॥ का० ॥ मरण कबूल करयो पण, पाछो नवि
हो० ॥ पा० ॥ १२ ॥ उत्तमना ज बोल, ते मनरत
र्या हो० ॥ ते० ॥ ते पाछा किम ओसरे, पंचमें
हो० ॥पं०॥ पचनो सार्म बोल जे बोली यो ने टलें हो०॥
ते नरनारी जीवतां, मूआमां भले हो० ॥ मु० ॥ ११
वयण चूका ते मानवी, लेखे नवि गणे हो० ॥ ले० ॥
भव परभव कार, गयो तस जिन भणे हो० ॥ ग० ॥
र्णीने स्वामी, तुमारा कामने हो० ॥ तु० ॥ घाल्यो
जीव, कठिण करी लाजने हो० ॥ क० ॥ १४ ॥ वी
हरिवल कौतुक, नी नृप आगलें हो० ॥ नी० ॥
करी कहे, ते सहु सांभले हो० ॥ ते० ॥ सलमें
आयो, ते हु मन संवरी हो० ॥ ते० ॥ तब एक
र्या ते, माहामा जक तरी हो० ॥ सा० ॥ १५ ॥
तो जाणीयें मस्त ए, ताड समाण ज्युं हो० ॥ ता० ॥
होठ ते जाणीयें वंशसमान ज्युं हो० ॥ वं० ॥ दता
ल, करे करी कलमली हो० ॥ क० ॥ अवली सवली
दीसे धर्मा झलफली हो० ॥ दी० ॥ १६ ॥ जाने
वडी, भूंडी डुंगर दरी हो० ॥ भूं० ॥ माथुं महोटुं ते
हलपले भूंसरी हो० ॥ ह० ॥ माथे कावरा केस, ते
झांखरां हो० ॥ ते० ॥ दंताली समा दांत. ते विरल
रा हो० ॥ तेवि० ॥ १७ ॥ ताडसमा दा हाथ ते.
ना हो० ॥ रा० ॥ अंगुलीना नख जाणीयें, पावडा
हो० ॥ पा० ॥ पेट तो जाणियें, वडो, कूवो झूरनो
॥ कू० ॥ थंभ समान दो चरण, ते गायस भूरनो हो०

॥ ढाल २ जी ॥ भठियाणीनी देशी ॥ हिवे राक्षस कर जोडी हो कहे आलस छोडी रायने, एतो लंकापति अवधार ॥ हुं जव सायर कंठे हो उपकंठे छेक ते जायने, मुझ वलियो आगार ॥ हिवे० ॥ १ ॥ तव एक पंथी बेठो हो में दीठो निर्ग्रंथी पणे, ए तो सायर पेले पार ॥ हुं गयो जव ते साहामो हो ते पण क हि मामो भणे, तुमें आवो मामा जुहार ॥ हिवे० ॥ २ ॥ में पण पुछियुं तेहने हो तुं केहने भरोसे इहां रह्यो, तव बोल्यो पंथी सार ॥ राय विभीषण केरुं हो छे शरणुं भलेरुं मुझ कह्यो, ए तो भाणेज बोल्यो विचार ॥ हिवे० ॥ ३ ॥ तुम दक्षिणनो अर्थी हो करि करथी छाबनी पोटकी, मुझ चांपी दीधी एह ॥ कहे रा क्षस तुम सयणे हो तुम नयणे मुकि ए पोटकी, ए तो भेट करी में नेह ॥ हिवे० ॥ ४ ॥ इम राक्षस गयो कहिने हो ए तो वही ने फिरी निज थानके, तव चिंतवे विभीषण चित्त ॥ विस्मय पा म्यो मनमें हो राय जनमें छोडी जाणके, ए तो राक्षसनी पोटकी दीत ॥ ५ ॥ एम हरिबळ कहे नृपने हो घणे यत्ने भस्म करें अहीं मुझ छांटे अमृत तोय ॥ ए आंकणी॥ विद्याबळे करी शुद्धो हो मुझ कांधे जीवता देखतां, लिगे दीधो फिरि अवतार ॥ सन मान्यो मुने स्वामी हो घणुं अंतरजामी पेखतां, मुझ कीधो बहु उप गार ॥ ए० ॥ ६ ॥ लंकापति मुझ पूछे हो ए तुं छे तें कायर इहां, मुज मांडी कहो विरतांत ॥ तव में लंकापतिने हो कहि मनमें मांहोंने मरी, एतो आपणा घरनी वात ॥ ए० ॥ ७ ॥ वीशालापुर नगरी हो छे सघरी सघळा देशमें, एतो महोटी पुण्य पवित्र ॥ मदनवेग तिहां राया हो सुखदाया सघळा देशमें, एतो मोटे मनामें छत्र ॥ ए० ॥ ८ ॥ अंगजने पर णावा हो जस पावा चिहुं दिशिमें मनु, एतो मांड्यो उच्छव रंग ॥ तिण काजे नृप मेले हो मन भेले नव सारु विभु, एतो मेंदी

मनमें पापीयो, हरिबल सुणि तस वाण ॥ ४ ॥ दिनकर दे
खी एक ज्यूं, रजनीपति ज्यूं चोर ॥ जलधर देखि जवास ज्यूं,
त्यं थल सचिव ते जोर ॥ ५ ॥ पण शुं करे पड्यो एकलो,
जोर न चाले कोय ॥ जेहना दीहा पाधरा, तस अरि अंगज
होय ॥ ६ ॥ कर क्रम धोइ वांसे थयो, हरिबलने ते दुष्ट ॥
छलनाके छलवा भणी, कालसेन उच्छिष्ट ॥ ७ ॥ एक दिन
बेठो मालीये, मदनवेग ते राय ॥ कालसेन तिहां आवीयो,
बेठो प्रणमी पाय ॥ ८ ॥ कानें लाग्यो चाडियो, कालसेन
कीराड ॥ हरिबलने दुःख दाखवा, नृपने घाले राड ॥ ९ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥ इण सरोवरीयारी पाल, आंबा दोय राउ
ला ॥ ललना ॥ ए देशी ॥ हिवे हरिबलनां वयण, वखाणे ते
नृप करे ॥ ल० ॥ स्वामी त्यागी निकलंक के, शुर सुभट सो
॥ ल० ॥ जो परधान ते एकलो, लंका गइ गयो ॥ ल० ॥
माहरुं काज सुधारवा, वली भस्म थयो ॥ ल० ॥ १ ॥ का
ढ्यो आपणे दो जण, पिशुने मोकती ॥ ल० ॥ दाह पाणीयें
वेगली, खस काढी हनी ॥ ल० ॥ पण ते साहाजु गाढी, लंका
लेइने ॥ ल० ॥ आव्यो आपणे मंदिर, डंका देइने ॥
ल० ॥ २ ॥ ता में जाण्यो ए पुण्य, भाग्य वली घणो ॥ ल० ॥
जामाता थइ आव्यो ए, लंका गढतणो ॥ ल० ॥ लाव्यो सह
नाणी रावणनी, नृपनुं मन करी ॥ ल० ॥ लंका पतिनी माहरी,
दो राखी सरभरी ॥ ल० ॥ ३ ॥ बुद्धि अकल परपंच ए, मैं
दीठी सही ॥ ल० ॥ मदनवेगें मंत्रि आगल, वात ए सवि
कही ॥ ल० ॥ कालसेनने पगयां, मांडि माथा लगे ॥
ल० ॥ प्रगटी आग ते मांभली, जागी अंगो अंगे ॥ ल० ॥
॥ ४ ॥ बोल्यो मंत्री ताम, कहे रोंसे भरी ल० ॥ मंत्रि तुम अकल
के नरपति, हरिबलनी करी ॥ ल० ॥ शु तुमे जाणो स्वामी,

ए पुरवनी कन ॥ म० ॥ मानो सघडु धोलु ते, इप करी मन ॥
॥ न० ॥ ५ ॥ मारे हिंग असंबंधने, अणघटीतां वर्ग ॥
॥ न० ॥ गननुं कोंग तेमांहे, गन तेरनी कन्ी ॥ म० ॥ अथे
दीठो चंद्र अनारसनो रानदी ॥ स० ॥ तिम हरिवन्नी ए मा
नजो, इप गुन वानदी ॥ स० ॥ ६ ॥ हुं जाणी प्रभ वयण,
वखाण करो तुमें ॥ न० ॥ ए दर्भीनां सपन, चरित्र लहुं अ
मे ॥ म० ॥ जे परदेशी लोक ते, दीसे एहवा ॥ स० ॥ ना
टक पेटक नागे, घाडीगर जेहवा ॥ स० ॥ ७ ॥ कुट कपट
प्रपंच, करां कला केलवे ॥ स० ॥ कलिन वान करी, करी
पे करी देखवे ॥ स० ॥ परगामें परदेशी, फिरे घर छेलमा ॥
स० ॥ मोटा मोटा करे पणा, धीरी वेलमा ॥ म० ॥ ८ ॥
तेणी परनमें वातो, करे महोटी करी ॥ स० ॥ हिंग हिंग धन्ना
हे मे, लोक नाणे नरी ॥ स० ॥ साची जुठी करे मे, तुमें न
मणारीये ॥ म० ॥ थान धोलापु घाटे मे, वदन विगाडीये
॥ स० ॥ ९ ॥ ते माटे तुमें स्वामि. मरी करी मानजो ॥
॥ म० ॥ कनरीनो जिनदार ए, हरिवल आनजो ॥ म० ॥
फिरां मेरा फिरां मेर. पनिनी पुभिका ॥ म० ॥ अगाभिमनी
ए नार. परी पुणें पुभिका ॥ स० ॥ १० ॥ ए तो कोरक
रे, पणे करी वानदी ॥ स० ॥ दरल्यो नारी ए रमन. दाघम
नारो ॥ स० ॥ नान लिये निज नार, वधारवा मनवरी ॥
म० ॥ किहां ए लंकापतिनी, पुत्री नलो परां ॥ स० ॥
!! ॥ श्री हरिवलने रोड. परां हवो पुणनी ॥ म० ॥
लिनिने पंथ. मनार ए पुरुषनो ॥ स० ॥ नवन
मन विचेर. नमा वर मरिडजे ॥ म० ॥ माल्युं वा
नि. राजनरे मे अगारिजे ॥ म० ॥ ११ ॥ ए हवानो
री. हुर हुवे घारजो ॥ म० ॥ तिम हरिवलनी कन्नी

गनमें पामीयो, हरियल मुणि तम वाण ॥ ४ ॥ तिलहर दे
सा एक ज्युं, रजनीपति ज्युं चोर ॥ जलधर देखि जवास ज्यूं,
स्युं वच्छ मनिर ते जाग ॥ ५ ॥ पग शुं करे पड्यो एकठो,
जोर न चाले कोप ॥ अेहना दीठा पावगा, तम अरि अज
होय ॥ ६ ॥ कर क्रम थोइ थांभे थयो, हरिबलने ते दृष्ट ॥
छलताके छलरा भणी, कालसेन उच्चिष्ट ॥ ७ ॥ एक दिन
बेठो मार्लीये, मदनवेग ने राय ॥ कालसेन तिहां आवियो,
बेठो नगमी पाय ॥ ८ ॥ कानें लाग्यो चाडियो, कालसेन
कीराड ॥ हरिबलने दुःख दाखवा, नृपने घाले गाड ॥ ९ ॥
॥ ढाळ २ जी ॥ इण सरोवरयांगि पाल, आंबा दोय गा
रहा ॥ एहना [illegible] ए दसा ॥ हिवे हरिबलनां वखाण, नवाग ते
नृप करे ॥ १० ॥ त्या [illegible] त्यागी निकलंक के, शर सुभट मी
॥ २० ॥ जो परधान न एकल्या, लंका गढ गयो ॥ २० ॥
माइरु काज सुधारवा, वली भस्म थयो ॥ २० ॥ ? ॥ का
रया आगंग दा सग, दिसिने मोकली ॥ २० ॥ राइ पामीये
वेग [illegible], स्वस काढी हवी ॥ २० ॥ एग ने मातृ [illegible]
देहने ॥ २० ॥ आव्या आपण मंदिर, दहा देहने ॥
२० ॥ [illegible] ॥ मार में ताग्यो ए पुण्य, भाग्य द [illegible] गयो ॥ २० ॥
सामाता थइ आव्यो ए, लंका गढनगी ॥ २० ॥ [illegible] मर
नार्गी गढगर्नो, दुरस दन करी ॥ २० ॥ [illegible] पंतना माडी,
दा गढो मसभरी ॥ २० ॥ [illegible] बुद्धि अक [illegible] पर्पत ए [illegible]
दीथ मरी ॥ २० ॥ मदनांगे मोर भाग, शर ए मरी
करी ॥ २० ॥ कालसेनने पगयां, मांडी माया दर [illegible]
२० ॥ नगरी प्रात ने मायनी, नगरी भगा अर्ग [illegible]
॥ [illegible] ॥ मेल्यों नयो नाम, कहे मांगे वरी ॥ २० ॥ मांड नृप अहव
मि आरती, हरिबलना तर्ने ॥ २० ॥ दुःख ता [illegible]

पुरंगनी कन ॥ ल० ॥ मानों सघलु धोलु ते, दूध करी मन ॥
ल० ॥ ५ ॥ मारे डिंग असंबंधने, अणघटीयां वर्ग ॥
ल० ॥ गजतुं कलिंग तेमांहि, गज तेरनी कली ॥ ल० ॥ अंधे
दीठो चंद्र अमावसनी रातडी ॥ ल० ॥ तिम हरिबलनी ए मा
नो, नृप तुम वातडी ॥ ल० ॥ ६ ॥ शुं जाणी प्रभु वयण,
न्याय करो तुमें ॥ ल० ॥ ए दंभीनां सघल, चरित्र लहुं अ
में ॥ ल० ॥ जे परदेशी लोक ते, दीसे एहवा ॥ ल० ॥ ना
टक चेटक जाणे, बाजीगर जेहवा ॥ ल० ॥ ७ ॥ कूड कपट
प्रपंच, सर्व कला केलवे ॥ ल० ॥ कल्पित वात करी, कहीं
पें कहीं मेलवे ॥ ल० ॥ परगामें परदेशी, फिरे पड छेलसा ॥
ल० ॥ मोडा मोडी करे घणा, घोंचा बेलसा ॥ ल० ॥ ८ ॥
वेसी परजमें वातो, करे महोटी करी ॥ ल० ॥ डिंग डिंग चला
वे ने, लोक जाणे खरी ॥ ल० ॥ साची जुठी करे ते, सुखें न
लगाडीयें ॥ ल० ॥ मान बोलाव्युं चाटे ते, वदन विगाडीयें
॥ ल० ॥ ९ ॥ ते माटे तुमें स्वामि. सही करी मानजो ॥
॥ ल० ॥ कवडीमां शिरदार ए, हरिबल जाणजो ॥ ल० ॥
किहां लंका किहां लंक, पतिनी पुत्रिका ॥ ल० ॥ अणमिलती
ए वात, घडी एणें कुत्रिका ॥ ल० ॥ १० ॥ ए तो कोइक
धूर्त, पणे करी वातडी ॥ ल० ॥ परण्यो नारी ए उत्तम, मध्यम
जातडी ॥ ल० ॥ नाम लिये निज आप, वधारवा अणघटी ॥
॥ ल० ॥ किहां ए लंकापतिनी, पुत्री रली घटी ॥ ल० ॥
॥ ११ ॥ जो दुनियानें खोट, पडो हती पुरुषनी ॥ ल० ॥
लंकापतियें कीध, सगाइ ए पुरुषनी ॥ ल० ॥ नवक
ल नाग विच्छेद, गया जर महितलें ॥ ल० ॥ आव्युं का
कोटाने, रामसरे ने अणमिलें ॥ ल० ॥ १२ ॥ ए उखाणो
गोपनों, तुम तुमें धारजो ॥ ल० ॥ तिम हरिबलनो वातो

मनमें पारीयो, हरिबल सुणि गम वाण ॥ ३ ॥ दिनकर
सो घुक ज्युं, रजनीपति ज्युं चोर ॥ जलधर देखि जवास ज्युं,
त्युं खल मनिर ते जार ॥ ५ ॥ पग शुं करे पड्यो एकठो,
जोर न चाले कोय ॥ जेहना दीठा पाधरा, तस अरि अंजन
होय ॥ ६ ॥ कर क्रम जोड़ बांधे थयो, हरिबलने ते दुष्ट ॥
छदनाके छठरा भणी, कालसेन उच्छिष्ट ॥ ७ ॥ एक दिन
बेठो मालीये, मदनवेग ने राय ॥ कालसेन तिहां आवीयो,
बेठो नगमी पाय ॥ ८ ॥ कानें लाग्यो चाडियो, कालसेन
कोराड ॥ हरिबलने दुःख दाखवा, नृपने घाले राड ॥ ९ ॥
॥ ढाल २ जी ॥ इण सरोवरियारी पाल, ओता दोय गा
रा ॥ [illegible] ॥ दिसे हरिबलनां वचण, [illegible] ते
नृप करे ॥ १० ॥ त्या [illegible] त्यागी निकलक के, [illegible] सुभट मे
॥ २० ॥ जो परधान त एकला, लंका गढ गयो ॥ २० ॥
माइक कान सुणाग्यो, वली भस्म थयो ॥ २० ॥ [illegible] ॥ का
रचा आरणे दा जग, फिरीने [illegible] ॥ २० ॥ दोइ पाणीरे
वेग [illegible], स्यग काठी हनी ॥ २० ॥ पण ते [illegible]
देहने ॥ २० ॥ आव्या आपण मांदर, टंका देइने ॥
२० ॥ [illegible] ॥ ना मे आव्यो [illegible], भाग्य [illegible] ॥ २० ॥
आनासा यद भाग्यो प, लंका नदनगो ॥ २० ॥ [illegible]
नाग्यों मदनर्गा, नृपनु मन करो ॥ २० ॥ लंका पतिना [illegible]
दो [illegible] ॥ २० ॥ [illegible] ॥ बुद्धि अकल [illegible]
[illegible] ॥ २० ॥ मदनवेगा [illegible], [illegible]
करी ॥ २० ॥ कालसेनने दगयो, [illegible]
२० ॥ [illegible] ने [illegible], [illegible] अग [illegible]
[illegible] ॥ बोल्यो [illegible] नाम, कहे [illegible] ॥ [illegible]
[illegible] हरिबल [illegible] ॥ २० ॥ [illegible]

ए शृंगतणी कण ॥ ल० ॥ मानो सयलु धोलु ते, दूप करी भन ॥
॥ ल० ॥ ५ ॥ मारें डिंग असंबंधने, अणघडीयां वर्ग ॥
॥ ल० ॥ गजतुं कर्णि तेमांहे, गज तेरनी कडी ॥ ल० ॥ अंधे
दीठो चंद्र अमावसनी रातडी ॥ ल० ॥ तिम हरिवलनो ए मा
नजो, नृप तुम वातडी ॥ ल० ॥ ६ ॥ हुं जाणी प्रभु वयण,
वखाण करो ढुमें ॥ ल० ॥ ए दंभीनां सयल, चरित्र लहुं अ
मे ॥ ल० ॥ जे परदेशी लोक ते, दीसे एहवा ॥ ल० ॥ ना
टक चेटक मागे, वादीगर जेहवा ॥ ल० ॥ ७ ॥ कूड कपट
परपंच, करां कला केलवे ॥ ल० ॥ कल्पित वात करी, कडी
ये कडी मेलवे ॥ ल० ॥ परगामें परदेशी, फिरे पड़ छेलसा ॥
ल० ॥ मोटा मोटी करे घणा, थोथी बेलसा ॥ ल० ॥ ८ ॥
वैसी परजमें वातो, करे महोटी करी ॥ ल० ॥ डिंग डिंग चला
वे मे, लोक जाणे खरी ॥ ल० ॥ साची जुठी करे ते, मुखें न
लगाडीये ॥ ल० ॥ श्वान बोलाव्युं चाटे ते, वदन विगाडीयें
॥ ल० ॥ ९ ॥ ते माटे तुमें स्वामि. सही करी मानजो ॥
॥ ल० ॥ करटीमां शिरदार ए, हरिवल जाणजो ॥ ल० ॥
किहां लंका किहां लंक, पतिनी पुत्रिका ॥ ल० ॥ अणमिलती
र वात, घडी एणें धुनिका ॥ ल० ॥ १० ॥ ए तो कोटक
नें, एणे करी वातडी ॥ ल० ॥ परण्यो नारी ए उत्तम, मध्यम
नातडी ॥ ल० ॥ नाम लिये निज आप, वधारवा अणघडी ॥
ल० ॥ किहां ए लंकापतिनी, पुत्री रली पडी ॥ ल० ॥
११ ॥ शी हुनियानें खोट, पडो हती पुण्यनी ॥ ल० ॥
पतिये दीध, सनाइ ए पुण्यनी ॥ ल० ॥ नवक
ाग विच्छेद, गया जर महितलें ॥ ल० ॥ आव्युं का
नें, रामसेर ने अणामिलें ॥ ल० ॥ १२ ॥ ए उखाणो
ली, हर तुमें धारजो ॥ ल० ॥ तिम हरिवलनी वातो

मनमें पारीयो, हरिबल मुणि गम चाग ॥ ४ ॥ दिनकर दे सा घूक ज्युं, रजनीराति ज्युं चोर ॥ जलधर देखि जवास ज्युं, त्यं पल मलिन ते जार ॥ ५ ॥ पग शुं कर पड्यो एकदो, जोर न चाले कोय ॥ जेहना दीठा पावगा, नस और अंग होय ॥ ६ ॥ कर कम धोइ बांभे थयो, हरिबलने देइ ॥ छलनाके छलना भणी, कालसेन उच्छिष्ट ॥ ७ ॥ एक दिन बेठो मालीये, मदनवेग ते राय ॥ कालसेन तिहां आवियो, बेठो भगमी पाय ॥ ८ ॥ कानें लाग्यो चाडियो, कालसेन कीराड ॥ हरिबलने दुःख दाखवा, नृपने घाले राड ॥ ९ ॥

॥ ढाल १ ओ ॥ इण सरोवरीयांरी पाल, ओंना दोय गइ ला ॥ [illegible] ॥ हरिबलनां वचण, वचाण नें नृप करें ॥ १० ॥ [illegible] निकलंक [illegible], दास मुजरे में ॥ १० ॥ तो परधान त एकला, [illegible] गइ गयो ॥ १० ॥ माइक काज सुराजसा, बलीं भस्म थयो ॥ १० ॥ १ ॥ [illegible] आरम्भ दा जग, [illegible] [illegible] ॥ १० ॥ [illegible] वेगनी, [illegible] काटी हनी ॥ १० ॥ पण ते [illegible] [illegible] ॥ १० ॥ आव्या आगम माटेर, [illegible] ॥ १० ॥ २ ॥ ना में [illegible] ए पुण्य, [illegible] ॥ १० ॥ [illegible] थइ आव्यो ए, [illegible] ॥ १० ॥ [illegible] नागी मदगनी, [illegible] करी ॥ १० ॥ [illegible] मांही [illegible] ॥ १० ॥ ३ ॥ बुद्धि [illegible] ए, में [illegible] ॥ १० ॥ मदनवेग [illegible], [illegible] करी ॥ १० ॥ कालसेनने [illegible], [illegible] ॥ १० ॥ [illegible] आद ने [illegible], [illegible] ॥ ४ ॥ [illegible] नाम, कहे [illegible] ॥ १० ॥ [illegible] ॥ १० ॥ [illegible]

धुरंनरी कहा ॥ ल० ॥ मानो सचलु बोलु ते, दूप करी भग ॥ ल० ॥ ५ ॥ मारें हिंग असंबंधने, अणघटीयां वगी ॥ ल० ॥ गगनलुं कांइंग तेमांहे, गज तेरनी कनी ॥ ल० ॥ अबे तो चंद्र अमावसनो रातडी ॥ ल० ॥ तिम इरिबलनी ए या तो. रूप तुम वातडी ॥ ल० ॥ ६ ॥ हुं जाणी प्रभु बंपण, नाग करो तुमें ॥ ल० ॥ ए दंभीनां सयल, चरित्र लहुं अ ॥ ल० ॥ जे परदेशी लोक ते, दीसे एहवा ॥ ल० ॥ ना क चेटक जाणे, बादीगर जेहवा ॥ ल० ॥ ७ ॥ कुड कपट रपंच, करी कला केलवे ॥ ल० ॥ कल्पित बात करी, कहीं कही मेलवे ॥ ल० ॥ परगामें परदेशी, फिरे यह छेलसा ॥ ल० ॥ मोटा मोटी करे घणा, थोथी बेलसा ॥ ल० ॥ ८ ॥ मी परजमें वातो, करे महोटी करी ॥ ल० ॥ हिंग हिंग घला ते, लोक जाणे खरी ॥ ल० ॥ साची जुठी करे ते, मुखें न हगार्डीयें ॥ ल० ॥ ध्यान बोलाण्युं चाहे ते, वदन विगाडीयें ॥ ल० ॥ ९ ॥ ते माटे तुमें स्वामि. सही करी मानजो ॥ ल० ॥ कपटीमां शिरदार ए, इरिबल जाणजो ॥ ल० ॥ किहां लंका किहां लंक, पतिनी पुत्रिका ॥ ल० ॥ अणमिलती ए वात, घडी एणे कुत्रिका ॥ ल० ॥ १० ॥ ए तो कोइक सुर, एणे करी वातडी ॥ ल० ॥ परण्यो नारि ए उत्तम, मध्यम मातडी ॥ ल० ॥ नाम लिये निज आप, वधारवा अणघडी ॥ ल० ॥ किहां ए लंकापतिनी, पुत्री रली पडी ॥ ल० ॥ ११ ॥ शी दूनियानें खोट, पडी इनी पुरुपनी ॥ ल० ॥ लंकापतियें दीध, सगाइ ए पुरुपनी ॥ ल० ॥ नवक ल नाग विच्छेद, गया जइ महितलें ॥ ल० ॥ आव्यो का कोदाने, राजसेंग ने अणामिलें ॥ ल० ॥ १२ ॥ ए उसाणी गांभर्डी. तुम तुमें धारजो ॥ ल० ॥ निज इरिबलनी वातो

मनपें पारीयो, हरिबल सुणि नम वाग ॥ ४ ॥ दिनकर दे
रा एक ज्युं, रजनीपति ज्युं चोर ॥ जलधर देखि जराम ज्युं
त्युं पच शरिर ते जाग ॥ ५ ॥ पग शुं कोर पड्यो एकदो
जोर न चाले कोय ॥ जेहना दीठा पाथरा, नम और अन
होय ॥ ६ ॥ कर क्रम थोड बांधे थयो, हरिबलने ते दृष्ट ॥
छरमाके छलरा भणी, कालसेन उच्छिष्ट ॥ ७ ॥ एक दिन
बेठो मार्गमें, मदनरेग ने राय ॥ कालसेन निहां आविने
बेठो अगमी पाप ॥ ८ ॥ कांन लाग्यो नाडियो, कालसेन
कोराड ॥ हरिबलने दुःख दाखवा, नृपने घाले गाड ॥ ९ ॥

॥ ढाल २ जी ॥ इण सरोवरयांरि पाल, ओतो ढोय रा
ला ॥ ऐलना [illegible] ण दशा ॥ हिवे हरिबलनां वाण, नवाण ते
नृप हीर ॥ १० ॥ स्या [illegible] त्यागी निकलंक है, शर सुभट में
॥ १० ॥ जो परधान न एकला, लंका गड गयो ॥ १० ॥
माइक कास सुराग्या, पछी भस्म थयो ॥ १० ॥ ! ॥ का
ह्यो आगे हा जग, दिनीने मोकली ॥ १० ॥ होड पामीने
वेगे, स्वप काढी हती ॥ १० ॥ पग ने मारा [illegible] गाडी [illegible]
देहने ॥ १० ॥ आव्या आपग मंदिर, टेका देहने ॥
१० ॥ [illegible] ॥ ना मं जाण्यो प पुराण, भाग्य [illegible] गयो ॥ १० ॥
जानाना थड आव्यो ण, लंका नदनगो ॥ १० ॥ [illegible] मा
नाम्यो मदनगर्भ, दृपदु मन करो ॥ १० ॥ लंका पतिना मारी
हो गाढी मनपगे ॥ १० ॥ [illegible] बुद्धि अहः परंपर ण, मैं
होश मसे ॥ १० ॥ मदनवेगे मोत माग, [illegible] ण मति
बही ॥ १० ॥ कालसेनने पगरो, मांदि माता [illegible]
१० ॥ मस्ती आर ने मामनी, जागो भगा अग [illegible]
॥ [illegible] ॥ बोल्यो दंभी नाम, कहे गीत बनी १० ॥ मां [illegible] अहक
है आवन्ये, हरिबलना करे ॥ १० ॥ दुनृप मा [illegible]

ए पुरुषनी कला ॥ ल० ॥ मार्ने सघलुं बोलु ते, दूप करी मन ॥ ॥ ल० ॥ ५ ॥ मारे हिंग असंबंधने, अणघडीयां वर्गे ॥ ॥ ल० ॥ गनलुं कठिग तेमांहि, गज तेरनी कली ॥ ल० ॥ अंधे दीठो चंद्र अमावसनी रातडी ॥ ल० ॥ तिम हरिबलनी ए मा नजो. रूप तुम वातडी ॥ ल० ॥ ६ ॥ हुं जाणी मम वयण, वखाण करी तुमे ॥ ल० ॥ ए दंभीनां सघल, चरित्र लहुं अ मे ॥ ल० ॥ जे परदेशी लोक ते, दीसे एहवा ॥ ल० ॥ ना टक चेटक जागे, बाजीगर जेहवा ॥ ल० ॥ ७ ॥ कूड कपट परपंच, करी कला केलवे ॥ ल० ॥ कल्पित वात करी, कहीं कहीं मेलवे ॥ ल० ॥ परगामें परदेशी, फिरे यह छिलसा ॥ ॥ ल० ॥ मोटा मोटी करे घणा, धोबी बेलसा ॥ ल० ॥ ८ ॥ ती परजमें वातो, करे महोटी करी ॥ ल० ॥ हिंग हिंग चला ते, लोक जाणे खरी ॥ ल० ॥ साची जुठी करे ते, कुले न गार्दीयें ॥ ल० ॥ श्वान बोलाव्यु चाटे ते, वदन विगाडीयें ॥ ल० ॥ ९ ॥ ते माटे तुमें स्वामि, सही करी मानजो ॥ ल० ॥ कपटीनां सिरदार ए, हरिबल जाणजो ॥ ल० ॥ किहां लंका किहां लंक, पतिनी पुत्रिका ॥ ल० ॥ अणमिलती वात, घडी एणें कुचिका ॥ ल० ॥ १० ॥ ए तो कोइक ते, पणे करी वातडी ॥ ल० ॥ परण्यो नारी ए उत्तम, मध्यम रातडी ॥ ल० ॥ नाम लिये निज आप, वधारवा अगवडी ॥ ॥ ल० ॥ किहां ए लंकापतिनी, पुत्री रली पडी ॥ ल० ॥ ११ ॥ श्री दुनियानें खोट, पडी हती पुण्यनी ॥ ल० ॥ लंकापतिने कोप, सगाइ ए पुरुषनी ॥ ल० ॥ नवक नाम विच्छेद, गया जब महितलें ॥ ल० ॥ आव्यो का कोडाने, राजसेर ते अणमिलें ॥ ल० ॥ १२ ॥ ए उसाणो गोपनी, तुर तुमें पारजो ॥ ल० ॥ निम हरिबलनी वातो

मनमें पारीयो, हरिवल सुणि जम वाग ॥ ४ ॥ दिनकर दे
खा घूक ज्युं, रजनीपति ज्युं चोर ॥ जलधर देखि जवास ज्युं
त्युं खल सचिव ते जाग ॥ ५ ॥ पग शुं केर पड्यो एकठो.
जोर न चाले कोय ॥ जेहना दीधा पावगा, तस अरि आन
होय ॥ ६ ॥ कर क्रम धोइ वांसे थयो, हरिबलने ते दुष्ट ॥
छलनाके छलवा भणी, कालसेन उच्छिष्ट ॥ ७ ॥ एक दिन
बेठो मालीये, मदनवेग ते राय ॥ कालसेन तिहां आवियो,
बेठो सगमी पाय ॥ ८ ॥ कानें लाग्यो चाडियो, कालसेन
कीराड ॥ हरिबलने दुःख दाखवा, नृपने घाले राड ॥ ९ ॥
॥ ढाल २ जी ॥ इण सरोवरीयानी पाल, ओ ढाल [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] हरिबलनां वयण, [illegible] ते
नृप [illegible] ॥ १० ॥ [illegible] त्यागी निकलंक छे, [illegible] सुभट [illegible]
॥ ११ ॥ जो परधान न एकलो, लंका गढ गयो ॥ १२ ॥
[illegible] काज सुधारवा, वली भस्म थयो ॥ १० ॥ १ ॥ [illegible]
[illegible] आपणे [illegible] मन, [illegible] सीवनी ॥ १३ ॥ [illegible]
[illegible], [illegible] हती ॥ १४ ॥ पण ते [illegible] [illegible]
[illegible] ॥ १५ ॥ आव्या आपण मंदिर, [illegible] ॥
१६ ॥ २ ॥ ना में जाण्यो ए पुरुष, आग्य [illegible] ॥ १७ ॥
[illegible] आव्यो ए, लंका [illegible] ॥ १८ ॥ [illegible]
[illegible], [illegible] करो ॥ १९ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ २० ॥ ३ ॥ बुद्धि [illegible] ए, [illegible]
[illegible] ॥ २१ ॥ मदनवेगें [illegible], [illegible] ए [illegible]
करी ॥ २२ ॥ कालसेनने [illegible], [illegible]
२३ ॥ [illegible] ने [illegible], [illegible] ॥ [illegible]
॥ ४ ॥ [illegible] नाम, [illegible] ॥ २४ ॥ [illegible]
[illegible], [illegible] ॥ २५ ॥ [illegible]

पुण्यनो उदय ॥ म० ॥ मानो मथवा धोलु ने, दूध वरी मन ॥
म० ॥ ५ ॥ मारे दिन सरसंवत, भणवरीसा वरे ॥
म० ॥ मननुं कमिन मेवाडे, गज मेरनी कनी ॥ म० ॥ अंधे
रो मेह अमावसनी रातडी ॥ म० ॥ निद दरिदनी एम मा
री, रूप हुम मानती ॥ म० ॥ ६ ॥ हुं मारी मन वचन,
राग करी मुने ॥ म० ॥ ए दमीनो सपन, पवित्र नई म
॥ म० ॥ जे परदेशी मीरु ने, दीसे परा ॥ म० ॥ ना
चेरक जागे, वारीगर जेरवा ॥ म० ॥ ७ ॥ कुट कपट
रेम, करां कला केलवे ॥ म० ॥ कामिन वान करी, करी
करी देलवे ॥ म० ॥ परनारी परदेशी, फिर मर दिलसा ॥
म० ॥ मोरा मोही कं० मन, मीठी वेनना ॥ म० ॥ ८ ॥
नी परमवे वानो, करे मोटी वरी ॥ म० ॥ दिन दिन मन
ने, मोह आणे रमी ॥ म० ॥ मानो जुवो कर ने, दुवे न
मारीदे ॥ म० ॥ मान मोगम्बु पाडे ने, वदन दिलाडीवे
म० ॥ ९ ॥ ने मारे मुने मनावे, मारो वरी मानको ॥
म० ॥ मननोनी निरवार ए, दरिवन आननी ॥ म० ॥
मेरी मेमा फिरी मंर, पोमनी दुकिवा ॥ म० ॥ मन्तीवरनी
मन, मरी एवे दुनिवा ॥ म० ॥ १० ॥ ए मेरी मोरक
ने एवे करी वासडी ॥ म० ॥ परनी मारी ए वरक, मनसन
मारी ॥ म० ॥ मान लिखे निज मान, वधारवा मनसरी ॥
म० ॥ फिरी ए नोकरनिनी, दुरी मनी परी ॥ म० ॥
११ ॥ मी दुनियाने मोर, वरी एवे दुपकी ॥ म० ॥
मानोवे रीर, मनार ए दुकवनी ॥ म० ॥ नवक
ए मान दिरोवर, मनर वह मोरनवे ॥ म० ॥ मान्दे मा
रीनवे, मारनि ने मनादिवे ॥ म० ॥ १२ ॥ ए दरनदें
नवीं, मन दूधे परनो ॥ म० ॥ दिन दरिदनी मानें

मनमें पापीयो, हरिबल सुणि गम वाण ॥ ४ ॥ दिनकरके खो घूक ज्युं, रजनीपति ज्युं चोर ॥ जलधर देखि जवास ज्युं त्युं वले सचिव ते जोर ॥ ५ ॥ पण शुं करे पड्यो एकलो, जोर न चाले कोय ॥ जेहना दीहा पाधरा, तस अरि अंबन होय ॥ ६ ॥ कर क्रम धोइ वांसे थयो, हरिबलने ते दुष्ट ॥ छलताके छलवा भणी, कालसेन उच्छिष्ट ॥ ७ ॥ एक दिन बेठो मालीये, मदनवेग ते राय ॥ कालसेन तिहां आवियो, बेठो प्रणमी पाय ॥ ८ ॥ कान लाग्यो चाडियो, कालसेन कीराड ॥ हरिबलने दुःख दाखवा, नृपने घाले राड ॥ ९ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥ इण सरोवरीयारी पाल, आंबा दोय रा ला ॥ ललना ॥ ए देशी ॥ हिवे हरिबलनां वयण, नखाण ते नृप करे ॥ ल० ॥ स्वामी त्यागी निकलंक के, शुरा सुभट सरे ॥ ल० ॥ जो परधान ते एकलो, लंका गढ गयो ॥ ल० ॥ माहरूं काज सुधारवा, वली भस्म थयो ॥ ल० ॥ १ ॥ का दयों आपणे दो जण, मिलीने सीवती ॥ ल० ॥ दाहे पाणीवे वेगथी, खम काढी हती ॥ ल० ॥ पण ते साहस्र गाढी लंका लेइने ॥ ल० ॥ आव्यो आपणे मंदिर, डंका देइने ॥ ल० ॥ २ ॥ ता में जाण्यो ए पूरण, भाग्य वली घणो ॥ ल० ॥ जामाता यइ आव्यो ए, लंका गढतणो ॥ ल० ॥ लाव्यो सर नाणी खडगनी, नृपशुं मन करी ॥ ल० ॥ लंका पतिनां माहरी, दो राखी सरभरी ॥ ल० ॥ ३ ॥ बुद्धि अकल परपंच ए, में दीठे सही ॥ ल० ॥ मदनवेगे मंत्रि आगल, वात ए मनि कही ॥ ल० ॥ कालसेनने पगयां, मांडी माथा लगे ॥ ल० ॥ प्रगटी झाल ते मांभली, जागी अंगो अगे ॥ ल० ॥ ४ ॥ बोल्यो मंत्री ताम, कहे रीसे घणी ल० ॥ भलि तुम अकल जे नरपति, हरिबलनां कणी ॥ ल० ॥ शुं तुमे जाणी स्वामी

[धुरमेनी कग ॥ ल० ॥ मानो सघलु बोलु ते, हुप करी भग ॥
॥ ल० ॥ ५ ॥ मार्गें डिग असंबंधने, अणघडीयां वर्ग ॥
॥ ल० ॥ गजनुं कलिंग तेमांहे, गज तेरनी करी ॥ ल० ॥ अंबे
ठीयो चंद्र अणावसनो रातडी ॥ ल० ॥ तिम हरिवल्लनी ए मा
रजो, हुप तुम वातडी ॥ ल० ॥ ६ ॥ शुं जाणी प्रभु वंयण,
त्याग करो तुमें ॥ ल० ॥ ए दंभीनां सघल, चरित्र लहुं अ
में ॥ ल० ॥ जे परदेशी लोक ते, दीसे एहवा ॥ ल० ॥ ना
टक चेटक जागे, वादीगर जेहवा ॥ ल० ॥ ७ ॥ कूड कपट
परपंच, करी कला केलवे ॥ ल० ॥ कल्पित वात करी, कडी
पे कडी मेलवे ॥ ल० ॥ परगामें परदेशी, फिरे यह छेलसा ॥
ल० ॥ मोटा मोटी करे घणा, घोवी बेलसा ॥ ल० ॥ ८ ॥
वंसी परजमें वानो, करे महोटी करी ॥ ल० ॥ डिंग डिंग चन्ना
वे ने, लोक जाणे खरी ॥ ल० ॥ साची जुठी करे ने, मुखें न
लगाडीयें ॥ ल० ॥ श्वान बोलाव्युं चाटे ने, वदन विगाडीयें
॥ ल० ॥ ९ ॥ ते माटे तुमें स्वामि. सही करी मानजो ॥
॥ ल० ॥ कपटीनो शिरदार ए, हरिवल जाणजो ॥ ल० ॥
किहां लंका किहां लंक, पतिनी पुत्रिका ॥ ल० ॥ अणमिलती
ए वात, घडी एणे कुत्रिका ॥ ल० ॥ १० ॥ ए तो कोइक
धूर्त, पणे करी वातडी ॥ ल० ॥ परण्यो नारी ए उत्तम, मध्यम
जातडी ॥ ल० ॥ नाम लिये निज आप, बधारवा अणघडी ॥
॥ ल० ॥ किहां ए लंकापतिनी, पुत्री रली पडी ॥ ल० ॥
॥ ११ ॥ श्री दुनियानें खोट. पडी हती धुरपनी ॥ ल० ॥
लंकापतियें रांध, सगाइ ए धुरपनी ॥ ल० ॥ नबक
ने नाग विच्छेद, गया जब महितलें ॥ ल० ॥ आव्युं का
कोडाने, रावणेर ने अणमिल्ले ॥ ल० ॥ १२ ॥ ए उत्ताणो
गोपजी. तुम तुमें धारजो ॥ ल० ॥ तिम हरिवल्लनो वातो

मनमें पापीयो, हरिबल सुणि जस वाण ॥ ४ ॥ दिनकर देखी एक ज्युं, रजनीपति ज्युं चोर ॥ जलधर देखि जवास ज्युं, त्युं बले सचिव ते जोर ॥ ५ ॥ पण शुं करे पड्यो एकलो, जोर न चाले कोय ॥ जेहना दीहा पाधरा, तस अरि अवल होय ॥ ६ ॥ कर क्रम थोड़ वांसे थयो, हरिबलने ते दुष्ट ॥ छलताके छलवा भणी, कालसेन उच्छिष्ट ॥ ७ ॥ एक दिन बेठो मालीये, मदनवेग ते राय ॥ कालसेन तिहां आवीने, बेठो प्रणमी पाय ॥ ८ ॥ कानें लाग्यो चाडियो, कालसेन कीराड ॥ हरिबलने दुःख दाखवा, नृपने घाले राड ॥ ९ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥ इण सरोवरीयांरी पाल, आंबा दोय रा ला ॥ ललना ॥ ए देशी ॥ हिवे हरिबलनां वयण, वखाण ते नृप करे ॥ ल० ॥ स्वामी त्यागी निकलंक के, शूर सुभट मेरु ॥ ल० ॥ जो परधान त एकलो, लंका गढ गयो ॥ ल० ॥ माहरुं काज सुधारवा, वही भस्म थयो ॥ ल० ॥ १ ॥ का ढ्यो आपणे दो जणे, मिलीने सींचती ॥ ल० ॥ दोई पाणीयें वेगली, खस काढी हती ॥ ल० ॥ पण ते साहाजु गाडी लंका छेहने ॥ ल० ॥ आव्यो आपणे मंदिर, डंका देईने ॥ ल० ॥ २ ॥ ता में जाण्यो ए पूरण, भाग्य वली घणो ॥ ल० ॥ जामाता थइ आव्यो ए, लंका गढतणो ॥ ल० ॥ लाव्यो सह माणी सहगतनी, नृपशुं मन करी ॥ ल० ॥ लंका पतिनी माहरी, दो राखी सरभरी ॥ ल० ॥ ३ ॥ बुद्धि अकल परपंच ए, में दीठो सही ॥ ल० ॥ मदनवेगें मंत्रि आगल, वात ए मांडि कही ॥ ल० ॥ कालसेनने परगयां, मांडी माया लगें ॥ ल० ॥ प्रगटी झाल ते सांभली, जागी अंगा अगें ॥ ल० ॥ ॥ ४ ॥ बोल्यो मंत्री ताम, कहे रीसें बली ल०॥ भलि तुम अकल जे नरपति. हरिबलनी करी ॥ ल० ॥ शुं तुमें जाणो स्वामी.

॥ ल० ॥ २० ॥ शगे परें हास्य कुतूहल, नी करी मंत्रीयें ।
॥ ल० ॥ सनउयो मनमां हरिबल, सांभली मंत्रीयें ॥ ल० ॥
पापी कुमति मंत्रीयें, चकमक झेरियो ॥ ल० ॥ जिमण तणो
मिष करी, नृपने भंभेरियो ॥ ल० ॥ २१ ॥ एहवा दुष्ट कु
बुद्धि ने, कां जगें अवतरया ॥ ल० ॥ यमने मंदिरें कां न, ग
या जे पापें भरया ॥ ल० ॥ परनिंदा करता फिरे, दुष्ट सुसा
यनी ॥ ल० ॥ सात्रे ओसर निंदकी, काक ज्युं वायनी ॥ ल०
॥ २२ ॥ तप जप क्रिया कष्ट, करे जे निंदकी ॥ ल० ॥
ते मरि जाये नगर, निगोदें ए चकी ॥ ल० ॥ भारे कर्मी जी
व, कह्या ए जिनवरें ॥ ल० ॥ इह भव परभव सरवे न, देखे
नर्को परें ॥ ल० ॥ २३ ॥ पारकां छिद्र जूवे ते, निंदकी यो
कदा ॥ ल० ॥ देवकीरिखें ते उपने, ए फल रोकडां ॥ ल० ॥
मल्ल पडने जीव, करे निंदा पारकी ॥ ल० ॥ ते जीवने शिम
लेनी नथी, चंडा बारकी ॥ ल० ॥ २४ ॥ इम हरिबल म
न मनशी, सुगस रासी रयो ॥ ल० ॥ रेरगु दाव ते आग
र, आवे जे लयो ॥ ल० ॥ गुहथी मरे जे जीव ते, विषथी न
मारिये ॥ ल० ॥ ए उखाणो लोक, कहे ते संभारिये ॥ ल०
॥ २५ ॥ इम धारी मनमांहि ते, हरिबल बोलीयो ॥ ल० ॥
स्वो प्रभु लंकाभेजन, वचन ए खोलीयो ॥ ल० ॥ नगरि सपेत
ने परवट, लेइ पधारजो ॥ ल० ॥ करशु टहेल ते समाने,
माह अवधारजो ॥ ल० ॥ २६ ॥ इम कही नृपने प्रणमी, ह
रिबल उठीयो ॥ ल० ॥ पण हिवे नृपने, मंत्रीने, जगदीश
रूठीयो ॥ ल० ॥ त्रीजा उल्लासनी ढाल ए, पांचमी पूरी थई
॥ ल० ॥ लब्धि कहे भवि सांभलो, जे आगे थई ॥ ल० ॥ २७ ॥

॥ दुहा ॥ हिवे हरिबल घरे आवियो, देखी नारी दोय ॥
जिमनो झांखो नाडने, उठी प्रणमे सोय ॥ १ ॥ निज भर वेडा

रंगमें, दंपति करे कल्लोल ॥ प्रेम सगोवर झीलतां, निरमे ... टकोल ॥ २ ॥ हरिवल कहे पटनारीने, सांभल प्रिया मुझ ... ॥ ... आडी लेहणुं. ते नृप मागे लांच ॥ ३ ॥ पंच मंत्रीयें. माग्युं भोजन सार ॥ तव हुं नृपने नोतरी, आव्यो आगार ॥ ४ ॥ तव पटनारी कंतने, कहे पियु सांभल मुझ एक वार नृप तेडतां, लाज व... नहीं तुज्ज ॥ ५ ॥ नरठी बी देवळें, सरड पूजारो जेम ॥ लोक वखाणे जे कहे. ... छो तुमें तेम ॥ ६ ॥ बाळि ही शक तुम धाइयो, प्रीतम वार ॥ ते हु इम जाणुं अछुं, शान गइ तुम सार ॥ ७ ॥ ... पेसी कूपमें, दीपक लेइ पडो हच्च ॥ नृप मंत्री मीठुं चवे. ते में मानो सच्च ॥ ८ ॥ मीठां बोलां मानवी, केम पतीजां ॥ न...कंठ मधुर लवे, साप सपुच्छो खाय ॥ ९ ॥ तेहनी ए जातडी, नृप मंत्री दो ...ठ ॥ चूक करी तुमने प्रभु, ... दो भंड ॥ १० ॥ ते माटे स्वामी तुमें, म करो कोइ सास ॥ एतां कदाहि न धीरियें, जो वंछो तन आस ॥ ११ भैंष भुजंगम भामिनी, महेत ने भूराज ॥ ए पांचने जे धीरे ते नर पामशे काज ॥ १२ ॥ यम वेश्या दासी नदी, जूआरी काज ॥ ए साते नही आपणां, प्रीतम निज संभाल ॥ १३ ॥ तव प्रीतम बल्लतुं कहे, हरिवळी निसुणेह ॥ जो दीठा पाधरा, शुं नृप करशे तेह ॥ १४ ॥

॥ ढाळ ४ थी ॥ प्रीतमसेंनी वीनवे ॥ ए देशी ॥ ... एहवो जवाब ते थीवरें, वसंतसिरीने दीध ॥ मोरा लाल भोजननी जे जोइयें, मेळी सामग्री सुसिद्ध ॥ मोरा लाल ॥ १ ॥ सार निपाई रसवती, जेहवी कही सूपशास्त्र ॥ मो० ॥ एक कडल तेरेदमां, उनेर तो चडी गई छाक ॥ मो० ॥ २ ॥ ढारं ... सागर देव पसायथी, नोतर्यां नगरी लोक ॥ मो० ॥

रे - दीपे पन दिवे नीतरुं, अधिक नेह करे दोर ॥ दो० ॥ मा०
॥ ३ ॥ हां० ॥ लाग कहि पद चिह दिवे, पंचरंगी चनाव ॥
॥ दो० ॥ करतानी लेग किया. बेठे वारि रुनान ॥ दो० ॥
मा० ॥ ४ ॥ हां० ॥ नर नारीनी पांतमां, मांड्या मोर
म पाल ॥ दो० ॥ रतन कपोलमां चाहनी, मांड्या लाक
झनाव ॥ दो० ॥ मा० ॥ ५ ॥ हां० ॥ कुमर कुमारी
पांतमां, विरां पन मांड्यां दाव ॥ दो० ॥ वारे दरवाज
आ, मंडप हवे उजवाल ॥ दो० ॥ मा० ॥ ६ ॥ हां० ॥
पीरसन वेगने मचे. हरिके बेठां चोर ॥ दो० ॥ राज राजा
लस्यो जना, बेठो पान मसिह ॥ दो० ॥ मा० ॥ ७ ॥
॥ हां० ॥ छपन पदीग पेलापुर्मा, गनिरा ताम्व जेर ॥
दो० ॥ भोग अवन चढावे, ध्यान फेरा मेर ॥ दो० ॥ मा०
॥ ८ ॥ हां० ॥ पीने परि पीमलां, मुलटी एकविध आदि ॥
दो० ॥ बेरा बंटी आरनी, पीने पांडिनी मांहि ॥ दो० ॥
मा० ॥ ९ ॥ हां० ॥ पेरा देरा पांसीता, कमनरीया कर्नरा
हि ॥ दो० ॥ झरदोला लिर केनी, लागनार सराहि ॥
दो० ॥ मा० ॥ १० ॥ हां० ॥ लिरा दुतानी भाली, मु
लरो सुनाह ॥ दो० ॥ सहि करेबी है सखी, देहि पशनी
ह ॥ दो० ॥ मा० ॥ ११ ॥ हां० ॥ दरसन केरा मा
ली. लागे लालो लिम ॥ दो० ॥ धरकर ने मरदा म
. हित हवालया हरिन ॥ दो० ॥ मा० ॥ १२ ॥ हां० ॥
लिलोर में दरसना, मोर रसिया चार ॥ दो० ॥ मरनी म
रु हुना. बहे मे देरान धार ॥ दो० ॥ मा० ॥ १३ ॥
हां० ॥ हर मुनर रस केरहे, सई मोहे कामन चेत ॥ दो० ॥
रसिया मने बोलहे, हर कुनर केर देरे ॥ दो० ॥ मा०
॥ १४ ॥ हां० ॥ करन दान दे सुराना, कारी मु अंलिहि

॥ ढाल ५ मी ॥ थारे माथे पचरंगी पाग, सोनारो छोगलो ॥ मारुजी ॥ ए देशी ॥ हिवे बोल्यो मत्री नाम कठिन काल सेन ते ॥ साहिबजी ॥ तुमे सांभलो स्वामी नाथ, प्रजाना पाल ते ॥ साहिबजी ॥ प्रभु शु तुम पहने नेहो, आवो गुण करो ॥ सा० ॥ निज घरनुं सघलु सोंपी आपोप शु वरो ॥ सा० ॥ १ ॥ एतो गईभने जिम, गुरव रगो दयवो । सा० ॥ तिम हरिबलने प्रभु मान, देइ जश लेयवो ॥ सा० ॥ वलि गई भ पामे शालि, घेवाल्यानी करो ॥ सा० ॥ एतो पाइ दूध ने व्याल, वछेरो जनहरो ॥ सा० ॥ २ ॥ तुमे इणि परे रा जन माचो, उवखाणो मेलव्यो ॥ सा० ॥ परदेशी अजाण वे दूशन, श्वानने हेलव्यो ॥ सा० ॥ एतो वेगे तुनचो प्रगट्यो हरिने शोपसा ॥ सा० ॥ तुन हृदये नारीनो झाल वे, घा ली टोपसा ॥ सा० ॥ ३ ॥ एतो त माटे प्रभु, ऊगतो वैरी छेदीये ॥ सा० ॥ एतो काल कंटकने छेदतां, पर्प न वेदीये ॥ सा० ॥ एतो शु तुमे स्वामी, मोहे लगाडो एहने ॥ सा० ॥ एतो कपटांमा शिरदार, में दीठो तेहने ॥ सा० ॥ ४ ॥ एतो कपटे करीने काढी, लाव्यो नारी दो ॥ सा० ॥ वली लाव्यो अखूट खजानो, धूनी सारो दो ॥ सा० ॥ एतो जाणजो स्वामी मोटो छे, जगनो चोर ने ॥ सा० ॥ तुम आगे मारे हिग, अमवर जोर ने ॥ सा० ॥ ५ ॥ एतो प्रभु तुमे मानो साचो, जाणि मत्री कहो ॥ सा० ॥ पण हुं जाणुं इणे कल्पित, वात करी सही ॥ सा० ॥ एतो एहनो शो विश्वास, करो तुमे गानवी ॥ सा० ॥ एतो एहना स्वाशामां पाणी, न मागे ते मानवी ॥ सा० ॥ ६ ॥ एतो सी लका शीलंका, गढना नायनो ॥ सा० ॥ एतो समुद्र उल्लंघी जाय, ने सुरकुल सा

मर्नो ॥ सा० ॥ ए तो जो जलमें गयो होत तो, पाछो नावतो ॥ सा० ॥ ए तो मरेठा मगरमच्छ, मुख गिली जावतो ॥ सा० ॥ ७ ॥ तव आपणुं नायजी महोटुं, जोर ते फाववुं ॥ सा० ॥ ए तो आपणुं चितव्युं थावत, सघलुं भाववुं ॥ सा० ॥ पण ए तो नाटक चेटक, करीने आवियो ॥ सा० ॥ ए तो नारीने चंद्रहास, खड्ग दो लावियो ॥ सा० ॥ ८ ॥ जिम श्वान भगाव्यो धाइने, रोटी ले गयो ॥ सा० ॥ वली काकतालीनो न्याय, उखाणो तिम थयो ॥ सा० ॥ तिम आव्यो जाणजो ह रिवल्, लंका गढ जइ ॥ सा० ॥ तुम आगल फूल्यो ए रह्द, पोन्हो होदर थइ ॥ सा० ॥ ९ ॥ ए तो एहवा नरने मूकीये, स्वामी घनघरे ॥ सा० ॥ ए तो कारीय आभड छेट मे, दूरे मर्यो परें ॥ सा० ॥ ए तो हिवे तुमे स्वामी मारशो, घुढें चालशो ॥ सा० ॥ ए तो मधु तुमे शीघ्र दो नारी, साथे माल शो ॥ सा० ॥ १० ॥ तब नरपति जेवे सांभल्, मंत्री मा हरी ॥ सा० ॥ हिवे आज पछे कदि आन न, लेउं माहरी ॥ ॥ सा० ॥ ए तो जेटली वात करीने, मंत्री ते खरी ॥ ॥ सा० ॥ ए तो चोकस वेढो मारडे, मनडे मछरी ॥ सा० ॥ ॥ ११ ॥ पण ते हिवे मंत्री वात, घटो कोट अभिनवी ॥ सा० ॥ ए तो आपणुं जेहथी कार्य, सीझे सुगणवी ॥ सा० ॥ ए तो हरिवलनो जे घल्प छे, ते काढो परो ॥ सा० ॥ ए तो आपणे मंदिर राखा, दो आवे ते करो ॥ सा० ॥ १२ ॥ तव मंत्री बोल्यो नृपने, मनमां हुइ ते ॥ सा० ॥ एह वातनुं धीरे छनुं छे, हुं थइ एह ते ॥ सा० ॥ नृप बुद्धि बतावुं स्वामी, एहवी हिय ठरे ॥ सा० ॥ ए तो जे षम्पर्थी नवि सीझे, काम ते क रू करे ॥ सा० ॥ १३ ॥ हिवे ते माटे सुणे सभा, सर्वे वेसी ने ॥ सा० ॥ तुमे एक मोतरना हरिवल, इको शिरपि

॥ ढाल ५ मी ॥ थारे माथे पचरंगो पाग, सोनारो ॥ मारुजी ॥ ए देशी ॥ हिवे बोल्यो मंत्री ताम, कुटिल सेन ते ॥ साहेबजी ॥ तुमें सांभलो स्वामी नाथ, मजाना पा ने ॥ साहेबजी ॥ प्रभु शुं तुमें एहने तेडी, आयो गुण करो ॥ सा० ॥ निज घरनुं सघलुं सोंपी आपोपुं शुं वरो ॥ सा० ॥ १ ॥ एतो गर्दभने जिम, गुरत्व रगो देयवो ॥ सा० ॥ हरिवलने प्रभु मान, देइ जश लेयवो ॥ सा० ॥ वलि प पासें शालि, मेहलावानी करो ॥ सा० ॥ ए तो पा ने ग्याल, उठेरो जनहरो ॥ सा० ॥ २ ॥ तुमें हागे पर्ने मन माथे, वखाणो मेलव्यो ॥ सा० ॥ परदेशी अजाण दुर्जन, आनने हेलव्यो ॥ सा० ॥ ए तो वेरी तुमचो करिने शोपसा ॥ सा० ॥ तुन हृदये नारीनी झाळ नें, ली डोपसा ॥ सा० ॥ ३ ॥ ए तो ते माटे प्रभु, ऊगतो डोगरे ॥ सा० ॥ ए तो काळ कटकने छेदतो, धर्म न ॥ सा० ॥ ए तो शु तुमें स्वामी, मोढे लगाडो एहने ॥ सा० ॥ ए तो कामांमां शिरदार, में दीठो नेहने ॥ सा० ॥ ४ ॥ ए तो करटे करीने काढो, लाव्यो नारी दो ॥ सा० ॥ लाव्यो मसूर मजानो, भूमी मारी दो ॥ सा० ॥ ए तो स्वामी मणोरो छे, मगनो चोर ने ॥ सा० ॥ तुम रिम, भमवर जोर नें ॥ सा० ॥ ५ ॥ ए तो प्रभु मारो मारो, शांथ मसी करो ॥ सा० ॥ पण हुं कल्पित, थान करो म्हो ॥ सा० ॥ ए तो एहनो शो र, करो तुमें गजवो ॥ सा० ॥ ए तो एहना मारानां न मारो ते मनवो ॥ सा० ॥ ६ ॥ ए तो शी लंका सोलंका, मारवो ॥ सा० ॥ ए तो समुद्र उतरी जाई, ने सुकृत

धर्मी ॥ सा० ॥ ए तो जो जलमें गयो होत तो, पाछो नावतो ॥ सा० ॥ ए तो महोटा मगरमच्छ, मुखें गिली जावतो ॥ सा० ॥ ७ ॥ तव आपणुं नायजी महोटुं, जोर ते फावनुं ॥ सा० ॥ ए तो आपणुं चिनल्युं थात्र, सघलुं मावतुं ॥ सा० ॥ पण ए तो नाटक चेटक, कर्गीने आवियो ॥ सा० ॥ ए तो नारीने चंद्रहास्य, खड्ग दो लावियो ॥ सा० ॥ ८ ॥ जिम श्वान अजाग्यो घाइने, गेहि ले गयो ॥ सा० ॥ वली काकतालीनो न्याय, उखाणो तिम थयो ॥ सा० ॥ तिम आव्यो जाणजो इ रिवल, लंका गढ जइ ॥ सा० ॥ तुम आगल फूल्यो ए वढ, चोल्यो होइर थइ ॥ सा० ॥ ९ ॥ ए तो एहवा नरने मूकीये, स्वामी दमपरे ॥ सा० ॥ ए तो काढीये आमड छेट ते, दूरें भली परें ॥ सा० ॥ ए तो हिवे तुमें स्वामी माहरी, बुद्धे चालशो ॥ सा० ॥ ए तो प्रभु तुमें शीघ्र दो नारी, साथे माल शो ॥ सा० ॥ १० ॥ तव नरपति जंपे सांभल, मंत्री मा हरी ॥ सा० ॥ हिवे आज पछें कदि आण न, लोडुं ताहरी ॥ ॥ सा० ॥ ए तो जेटली वात करीतें, मंत्री ते खरी ॥ ॥ सा० ॥ ए तो चोकस बेठी माहरे, मनडे महत्वरी ॥ सा० ॥ ॥ ११ ॥ पण ते हिवे मंत्री वात, घडो कोइ अभिनवी ॥ सा० ॥ ए तो आपणुं जेहथी कार्य, सीझे सुगणवी ॥ सा० ॥ ए तो हरिवलनो जे शल्य छे, ते काढो परो ॥ सा० ॥ ए तो आपणे मंदिर राश, दो आने ते करो ॥ सा० ॥ १२ ॥ तव मंत्री बोल्यो नृपने, मरमी दुष्ट ते ॥ सा० ॥ एह वातनुं चीडुं छनुं छे. हुं थइ पुष्ट ते ॥ सा० ॥ तुम बुद्धि धतालुं स्वामी, एहवी किम डरे ॥ सा० ॥ ए तो जे बलथी नवि सांझे, काम ते कल करे ॥ सा० ॥ १३ ॥ हिवे ते माटे तुमें सभा, मध्ये वेसी ने ॥ सा० ॥ तुमें यम नोतरवा हरिवल, मुको तिहांगि

॥ ढाल ९ मी ॥ थारे माथे पचरंगी पाग, सोनारो ..
॥ मारुजी ॥ ए देशी ॥ हिवे बोल्यो मंत्री ताम, कुटिल
सेन ते ॥ साहेबजी ॥ तुमें सांभलो स्वामी नाथ, प्रजानां
ते ॥ साहिबजी ॥ प्रभु शुं तुमें एहने तेडी, आयो गुण करी
॥ सा० ॥ निज घरनुं सघलुं सोंपी आपोपुं शुं वरो ॥ सा०
॥ १ ॥ एतो गर्दभने जिम, गुरव रंगो देयवो ॥ सा० ॥
म हरिबलने प्रभु मान, देइ जश लेयवो ॥ सा० ॥ बलि
भ पासें शालिक, भेलाव्यानी करो ॥ सा० ॥ ए तो पा
ने व्याल, तछेरो जनहरो ॥ सा० ॥ २ ॥ तुमें इणि
जन मारयो, सयाणो मेलव्यो ॥ सा० ॥ परदेशी
दुर्मन, श्वानने हेलव्यो ॥ सा० ॥ ए तो वेरी तुमचो
हरिने शोपरा ॥ सा० ॥ तुम हृदये नारीनी झाल ते,
नो दोपरा ॥ सा० ॥ ३ ॥ ए तो ते माडे प्रभु, उगतो वैरी
छेदीयें ॥ सा० ॥ ए तो काल कंटकने छेदतां, धर्म न वेरी
॥ सा० ॥ ए तो शुं तुमें स्वामी, मोंडे लगाडो एहने ॥ सा०
॥ ए तो कर्शयां सिरदार, में दीठो तेहने ॥ सा० ॥ ४ ॥
ए तो कपटे करीने काढी, लाव्यो नारी दो ॥ सा० ॥
गव्यो अखूट खजानो, धूनी मारी दो ॥ सा० ॥ ए तो
तो स्वामी मझोटो छे, जगनो चोर ते ॥ सा० ॥ तुम
तो दिन, अमवर जोर ते ॥ सा० ॥ ५ ॥ ए तो प्रभु
नी सार्थी, आणि मरी कहो ॥ सा० ॥ प्रभु हुं
दन्निन, वात करो सही ॥ सा० ॥ ए तो एहनो शो
म, करो तुमें गनवरी ॥ सा० ॥ ए तो एहना खावानो
न मारि ते मनवो ॥ सा० ॥ ६ ॥ ए तो श्री लंका श्रीलंका,
नाथनो ॥ सा० ॥ ए तो समुद्र उलंघो जाय, ने सुरकत

धर्मा ॥ सा० ॥ ए तो जो जलमें गयो होत तो, पाछो नावतो ॥ सा० ॥ ए तो मोहोटा मगरमच्छ, मुखें गिळी जावतो ॥ सा० ॥ ७ ॥ तव आपणुं नायको मोहोटुं, जोर ते फावतुं ॥ सा० ॥ ए तो आपणुं चिन्तव्युं थावत, सघळुं भावतुं ॥ सा० ॥ पण ए तो नाटक चेटक, करीने आवियो ॥ सा० ॥ ए तो नारीने चंद्रहास्य, खड्ग दो लावियो ॥ सा० ॥ ८ ॥ जिम श्वान अजाण्यां पाडीने, गेहे ले गयो ॥ सा० ॥ वळी काकतालीनो न्याय, उन्चारो तिम थयो ॥ सा० ॥ तिन आव्यो जाणजो ह रिवल, कंठ गळ जइ ॥ सा० ॥ तुम आगळ फूल्यो ए वद, बोल्यो होदर थइ ॥ सा० ॥ ९ ॥ ए तो पहेवा नरने मूकीये, स्वामी सत्वरे ॥ सा० ॥ ए तो काढीये आमड छेट ने, दूरे भर्वा धरे ॥ सा० ॥ ए तो हिवे तुमें स्वामी माहरी, बुद्धे चा-लजो ॥ सा० ॥ ए तो प्रभु तुमें शीघ्र दो नारी, साथे माल शो ॥ सा० ॥ १० ॥ तव नरपति जेवे सांभळ, मंत्री मा हरी ॥ सा० ॥ हिवे आज पछे करि आण न, लोपुं माहरी ॥ ॥ सा० ॥ ए तो जेटली वात कहीने, मंत्री ते गयो ॥ ॥ सा० ॥ ए तो चोकस बेठो माहरे, मनडे मत्सरी ॥ सा० ॥ ॥ ११ ॥ पण ते हिवे मंत्री वात, पडो कोट अभिनवी ॥ सा० ॥ ए तो आपणे जेहनी साथे, सीखे गुरुजनवी ॥ सा० ॥ ए तो हरिवलनो ते कन्य ते, ते काशे पगे ॥ सा० ॥ ए तो आपणे मंदिर राखा, दो ओर ते करो ॥ सा० ॥ १२ ॥ तव मंत्री बोल्यो नृपने, सघळां हुइ ने ॥ सा० ॥ पइ वातनुं धीरुं छतुं ए, हुं थइ छुट ते ॥ सा० ॥ तुम बुद्धि बतावुं स्वामी, एहवी दिल ठरे ॥ सा० ॥ ए तो जे वनधी नहि मोटे, हान ते क ली करे ॥ सा० ॥ १३ ॥ हिवे ते माटे तुमें सभा, करो तेनी ने ॥ सा० ॥ तुमें सव लोकनां होवियन, इहां तिहांथी

॥ ढाल ५ मी ॥ थारे माथे पचरंगी पाग, सोनारो
॥ मारुजी ॥ ए देशी ॥ हिवे बोल्यो मंत्री ताम, कुटिल
सेन ते ॥ साहेबजी ॥ तुमे सांभळो स्वामी नाथ, भजाना
ते ॥ साहेबजी ॥ प्रभु शुं तुमे एहने तेडी, आयो ॥
॥ सा० ॥ निज घरनुं सघळुं सोंपी आपोपुं शुं वरो ॥ सा
॥ १ ॥ एतो गर्दभने जिम, गुरब रगो देयवो ॥ सा० ॥
मं हरिबळने प्रभु मान, देइ जश लेयवो ॥ सा० ॥ वलि
भ पासें शालि, भेळाव्यानी करो ॥ सा० ॥ ए तो पाइ
ने व्याल, उछेरो जनहरो ॥ सा० ॥ २ ॥ तुमें इणि पर
जन साचो, वखाणो मेलव्यो ॥ सा० ॥ परदेशी अजाण
दर्शन, थानने हेळव्यो ॥ सा० ॥ ए तो वेरी तुमचो प्रगट
हरिने शोपवा ॥ सा० ॥ तुम हृदये नारीनी झाल ते,
ली टोपवा ॥ सा० ॥ ३ ॥ ए तो ते माटे प्रभु, ऊगतो
छेदीये ॥ सा० ॥ ए तो काल कंटकने छेदतां, धर्म न वेदीं
॥ सा० ॥ ए तो शुं तुमें स्वामी, मोढे लगाडो एहने ॥ सा
॥ ए तो कपटीमां सिरदार, में दीठो तेहने ॥ सा० ॥ ४ ॥
ए तो कपटें करीने काढी, लाव्यो नारी दो ॥ सा० ॥
लाव्यो अखूट खजानो, धूती सारी दो ॥ सा० ॥ ए तो
पजो स्वामी मशेरो छे, जगनो चोर ते ॥ सा० ॥ तुम
मारे हिंग, असवर जोर ते ॥ सा० ॥ ५ ॥ ए तो प्रभु
मानो साचीं, जाणि मती कही ॥ सा० ॥ पण हुं आगें
कन्धिन, वात करुं सही ॥ सा० ॥ ए तो एहनो शो विश्वा
स, करो तुमें गजवी ॥ सा० ॥ ए तो एहना ख्यालमां
न मागे ते मानवी ॥ सा० ॥ ६ ॥ ए तो श्री लंका शीळंका,
नायनी ॥ सा० ॥ ए तो समुद्र उलंघी जाय, ते सुखरु

धर्मी ॥ सा० ॥ ए तो जो जन्ममें गयो होत तो, पाछो नावतो ॥ सा० ॥ ए तो महोटा मगरमच्छ, मुखे गिली जावतो ॥ सा० ॥ ७ ॥ तव आपणुं नाथजी महोटुं, जोर ते फावतुं ॥ सा० ॥ ए तो आपणुं चिंतव्युं थातुं, मनलुं भावतुं ॥ सा० ॥ पण ए तो नाटक चेटक, कांईने आवियो ॥ सा० ॥ ए तो नारीने चंद्रहास्य, खडग दो लावियो ॥ सा० ॥ ८ ॥ जिम श्वान अजाण्यां घाडने, गेहि ले गयो ॥ सा० ॥ वली काकनालीनो न्याय, उत्तागो तिम थयो ॥ सा० ॥ तिम आव्यो जाणजो इ हिनल, लंका गढ जइ ॥ सा० ॥ तुम आगल फल्यो ए वृद्ध, पोलो होइर थइ ॥ सा० ॥ ९ ॥ ए तो एहवा नरने मूकाये, स्वामी समघरे ॥ सा० ॥ ए तो कांईये आभड छेट ते, दूरे भली दरे ॥ सा० ॥ ए तो हिवे तुमे स्वामी माहरी, बुद्धे चालजो ॥ सा० ॥ ए तो प्रभु तुमे शीघ्र दो नारी, साथे माल सो ॥ सा० ॥ १० ॥ तव नरपति जंपे सांभल, मंत्री माहरी ॥ सा० ॥ हिवे आज पछे कदि आण न, लोपुं ताहरी ॥ ॥ सा० ॥ ए तो जेठली वात करीने, मंत्री ते गयो ॥ ॥ सा० ॥ ए तो चोकस बेठो मादरे, मनहे सहचरी ॥ सा० ॥ ॥ ११ ॥ पण ते हिवे मंत्री वात, घडो कोइ अभिनवी ॥ सा० ॥ ए तो आपणुं जेहथी कार्य, सीझे सुगणवी ॥ सा० ॥ ए तो हरिबलनो जे शल्य छे, ते काढो पगे ॥ सा० ॥ ए तो आपणे मंदिर राखो, दो आवे ते करो ॥ सा० ॥ १२ ॥ तव मंत्री बोल्यो नृपने, भगमी दुष्ट ते ॥ सा० ॥ एह वातनुं बीडुं छडुं छे, हुं घर पुष्ट ते ॥ सा० ॥ तुम बुद्धि बतावुं स्वामी, एहवी दिल्ल ठरे ॥ सा० ॥ ए तो ते बलथी नवि सीझे, काम ते कल करे ॥ सा० ॥ १३ ॥ हिवे ते माटे तुमे सभा, मध्ये बेसी ने ॥ सा० ॥ तुमे यम नोतरवा हरिबल, इको विहागे

॥ ढाल ५ मी ॥ थारे माथे पचरंगी पाग, सोनारो ॥ मारुनां ॥ ए देशी ॥ हिवे वोल्यो मंत्री ताम, कुटिल सेन ते ॥ साहेबजी ॥ तुमें सांभलो स्वामी नाथ, मजाना, मे ॥ साहेबजी ॥ प्रभु शुं तुमें एहने तेडी, आयो गुण काले ॥ सा० ॥ निज घरनुं सघलुं सोंपी आपोपुं शुं वरो ॥ सा० ॥ १ ॥ एतो गर्दभने जिम, गुरव रगां देयशो ॥ सा० ॥ म हरिवळने प्रभु मान, देइ जश लेयशो ॥ सा० ॥ वलि म पामें शान्ति, मेहाव्यानी करो ॥ सा० ॥ ए तो पाए ने ध्याल. उछेरो जनहरो ॥ सा० ॥ २ ॥ तुमें हाणे वर्ते ता जन माथो, उवाणो मेलव्यो ॥ सा० ॥ परदेशी अजाण ते दुर्शन, शाननें हेलव्यो ॥ सा० ॥ ए तो वेरी तुमचो प्रगट हरिग्ने शोमता ॥ सा० ॥ तुन हृदये नारीनी झाल ते, स्त्री होशता ॥ सा० ॥ ३ ॥ ए तो त माटे प्रभु, उगतो वैरी छेदीये ॥ सा० ॥ ए नों काळ कंटकने छेदतां, घर्म न वेरी ॥ सा० ॥ ए तो शु तुमें स्वामी, मोडे लगाडो एहने ॥ सा० ॥ ए तो कपटीमां शिरदार, में दीठो तेहने ॥ सा० ॥ ४ ॥ ए तो कपट करीने कादी, लाव्यो नारी दो ॥ सा० ॥ वळी लाव्यो मयूर खजानो, धुनी मारी दो ॥ सा० ॥ ए तो ग तमो स्वामी भरोसे छे, जगनो चोर ने ॥ सा० ॥ तुम आ माने रिग, अमथर मोर ने ॥ सा० ॥ ५ ॥ ए तो प्रभु मानो मारो, माणि सवी कहां ॥ सा० ॥ पण हुं जाणुं कृत्रिम, वात करो म्हो ॥ सा० ॥ ए तो एहनो शो विश्वास, करो तुमें गानशो ॥ सा० ॥ ए नो एहना स्वाधानो न पाणे वे मनशो ॥ सा० ॥ ६ ॥ ए तो नी लंका शोकंका, नाशनो ॥ सा० ॥ ए तो मयूर उडतो जाय, ते शुकन

धनी ॥ सा० ॥ ए तो जो जलमें गयो होत तो, पाछो नावतो ॥ सा० ॥ ए तो मदोटा मगरमच्छ, मुखे गिली जावतो ॥ सा० ॥ ७ ॥ तव आपणुं नायजो महोटुं, जोर ते फावतुं ॥ सा० ॥ ए तो आपणुं चिंतव्युं थावत, सघलुं भावतुं ॥ सा० ॥ पण ए तो नाटक चेटक, कांईने आवियो ॥ सा० ॥ ए तो नारीने चंद्रहास्य, खडग दो लावियो ॥ सा० ॥ ८ ॥ जिम श्वान अजाण्यो थाईने, गेंदी ले गयो ॥ सा० ॥ वली काकतालीनो न्याय, उखाणो तिम थयो ॥ सा० ॥ तिम आव्यो जाणजो इ रिवल्ल, लंका गढ जइ ॥ सा० ॥ तुम आगल फुल्यो ए रद्द, बोल्यो होहर थइ ॥ सा० ॥ ९ ॥ ए तो एहवा नरने मुकीये, स्वामी घमघरे ॥ सा० ॥ ए तो काढीये आभड छेट ते, दूरे मली परें ॥ सा० ॥ ए तो हिवे तुमें स्वामी माहरी, बुद्धे चालजो ॥ सा० ॥ ए तो प्रभु तुमें सौंप दो नारी, साथे माल जो ॥ सा० ॥ १० ॥ तव नरपति जंपे सांभल, मंत्री मा हरी ॥ सा० ॥ हिवे आज पछे कदि आप न, लोपुं ताहरी ॥ ॥ सा० ॥ ए तो जेटली वात करीले, मंत्री ते खरी ॥ ॥ सा० ॥ ए तो चोकस वेरी माहरे, मनडे सहचरी ॥ सा० ॥ ॥ ११ ॥ पण ते हिवे मंत्री वात, घडो कोइ अभिनवी ॥ सा० ॥ ए तो आपणुं जेहथी कार्य, सीझे सुगणवी ॥ सा० ॥ ए तो हरिबलनो जे शल्य छे, ते काढो परो ॥ सा० ॥ ए तो आपणे मंदिर रात्र, दो आवे ते करो ॥ सा० ॥ १२ ॥ तव मंत्री बोल्यो नृपने, मगमां दुष्ट ते ॥ सा० ॥ एह वातनुं बीडुं छतुं ए, हुं थइ पुष्ट ते ॥ सा० ॥ तुम बुद्धि थतांनुं स्वामी, एहवो दिल्ल ठरे ॥ सा० ॥ ए तो जे बलथी नवि सीझे, काम ते क ल करे ॥ सा० ॥ १३ ॥ हिवे ते माटे तुमें सभा, मध्ये वेसा ने ॥ सा० ॥ तुमें घम नोतरना हरिबल्ल, मुको तिहांगि

॥ ढाल ५ मी ॥ थारे माथे पचरंगी पाग, सोनारो ..
॥ मारुजी ॥ ए देशी ॥ हिवे बोल्यो मंत्री ताम, कुटिल
सेन ते ॥ साहेबजी ॥ तुमे सांभलो स्वामी नाथ, प्रजाना
ते ॥ साहेबजी ॥ प्रभु शुं तुमे एहने तेडी, आव्यो गुण करो
॥ सा० ॥ निज घरनुं सघलुं सोंपी आपोपुं शुं वरो ॥ सा०
॥ १ ॥ एतो गर्दभने जिम, गुरव रंगो देयशे ॥ सा० ॥ कि
म हरिबलने प्रभु मान, देइ जश लेयशे ॥ सा० ॥ वलि
म पामे शान्ति, मेकाव्यानी करो ॥ सा० ॥ ए तो पाइ दू
ने व्याल, डंखशे जनहरो ॥ सा० ॥ २ ॥ तुमे इणि परे ग
जन माथो, वखाणो मेलव्यो ॥ सा० ॥ परदेशी अमाप
दुर्शन, श्वानने हेलव्यो ॥ सा० ॥ ए तो वेरी तुमचो प्रगट
दशिने शोपशे ॥ सा० ॥ तुम हृदये नारीनी झाल ते, प्र
को दीपशे ॥ सा० ॥ ३ ॥ ए तो त माटे प्रभु, उगतो वैरी
छेदीये ॥ सा० ॥ ए तो काल कंटकने छेदतां, धर्म न वेदीये
॥ सा० ॥ ए तो शुं तुमे स्वामी, मोहे लगाडो एहने ॥ सा०
॥ ए तो कपटीमां शिरदार, मे दीठो तेहने ॥ सा० ॥ ४ ॥
ए तो कपटे करीने काठी, लाव्यो नारी दो ॥ सा० ॥ वली
लाव्यो मुकुट खजानो, धूनी मारी दो ॥ सा० ॥ ए तो अ
पनो स्वामी मरोडो छे, जगनो चोर ते ॥ सा० ॥ तुम आ
गे हिम, अमंदर जोर ते ॥ सा० ॥ ५ ॥ ए तो प्रभु तुं
मानी साची, माणि मंत्री कहे ॥ सा० ॥ पण हुं जाणुं ए
कल्पित, बात करे मही ॥ सा० ॥ ए तो एहनो शी विश्वा
स, करो तुमे गजवी ॥ सा० ॥ ए तो एहना स्वामीनी दासी
न मागे ते मानवी ॥ सा० ॥ ६ ॥ ए तो शी लंका शीलंका, सा०
नागनी ॥ सा० ॥ ए तो समुद्र उडवी जाय, ते सुरकन्या

धर्मो ॥ सा० ॥ ए तो जो जल्पमें गयो होत तो, पाछो नावतो ॥ सा० ॥ ए तो मोहोटा मगरमच्छ, मुखे गिली जावतो ॥ सा० ॥ ७ ॥ तव आपणुं नायको मोहोटुं, जोर ते फावतुं ॥ सा० ॥ ए तो आपणुं चिंतव्युं थायत, सघलुं भावतुं ॥ सा० ॥ पण ए तो नाटक चेटक, करीने आवियो ॥ सा० ॥ ए तो नारीने चंद्रहास्य, खडग दो लावियो ॥ सा० ॥ ८ ॥ जिम श्वान अनाज्यो धाइने, गेही ले गयो ॥ सा० ॥ वली काकनाशीनो न्याय, उजवाणो तिम थयो ॥ सा० ॥ तिम आव्यो जाणजो ह दिवस, लेवा गढ जइ ॥ सा० ॥ तुम आगल फल्यो ए वृद्ध, बोल्यो दोहर थइ ॥ सा० ॥ ९ ॥ ए तो एहवा नरने मूकोपे, स्वामी पसर्यो ॥ सा० ॥ ए तो काढोये आमद छेद ते, दूरे भरी धरे ॥ सा० ॥ ए तो हिवे तुमे स्वामी माहरी, बुद्धे चालजो ॥ सा० ॥ ए तो प्रभु तुमे शीघ्र दो नारी, माथे माल शो ॥ सा० ॥ १० ॥ तव नरपति जंपे सांभल, मंत्री मा हरी ॥ सा० ॥ हिवे आज पछे काढि आण न, लोंडुं माहरी ॥ ॥ सा० ॥ ए तो जेटली यात कर्त्तीने, मंत्री ते स्वरो ॥ ॥ सा० ॥ ए तो चोवन बेठी मादे, मनडे मत्सरी ॥ सा० ॥ ॥ ११ ॥ पण ते हिवे मंत्री वात, घटो कोइ अभिनवी ॥ सा० ॥ ए तो आपणे जेहथी कार्य, सीझे सुगुणरी ॥ सा० ॥ ए तो हरिबलनो जे अल्प छे, ते काढो पगे ॥ सा० ॥ ए तो आपणे मंदिर रोला, दो आवे ते करगे ॥ सा० ॥ १२ ॥ तव मंत्री बोल्यो नृपने, मरमी दुष्ट ते ॥ सा० ॥ एह वाततुं चीडुं छबूं छे, हुं थइ दुष्ट ते ॥ सा० ॥ तुम बद्दि बनावुं स्वामी, एहवी दिन डरे ॥ सा० ॥ ए तो जे बल्पी नवि मीजे, रान ते क न करे ॥ सा० ॥ १३ ॥ हिवे ते माटे तुमे सभा, मध्ये बेसी ने ॥ सा० ॥ तुमे यस नोतरवा हरिबल, दुरो विदाणि

॥ ढाल ५ मी ॥ थारे माथे पचरंगी पाग, सोनारो ॥ मारुजी ॥ ए देशी ॥ हिवे बोल्यो मंत्री ताम, कुटिल सेन ते ॥ साहेबजी ॥ तुमें सांभलो स्वामी नाथ, प्रजाना ते ॥ साहेबजी ॥ प्रभु शुं तुमें एहने तेडी, आयो गुण करो ॥ सा० ॥ निज घरनुं सघलुं सोंपी आपोपुं शुं वरो ॥ सा० ॥ १ ॥ एतो गर्दभने जिम, गुरव रगो देयवो ॥ सा० ॥ म इग्विलने प्रभु मान, देइ जश लेयवो ॥ सा० ॥ वलि म पासें शालि, भेलाव्यानी करो ॥ सा० ॥ ए तो पाइ ने व्याल, उछेरो जनहरो ॥ सा० ॥ २ ॥ तुमें इणि जन साथो, बखाणी मेलव्यो ॥ सा० ॥ परदेशी अजाण दुर्जन, श्वानने हेलव्यो ॥ सा० ॥ ए तो वेरी तुमचो रविने शोषवा ॥ सा० ॥ तुम हृदये नारीनी झाल ते, लो दीपवा ॥ सा० ॥ ३ ॥ ए तो ते माटे प्रभु, उगनो छेदीयें ॥ सा० ॥ ए तो काल कंटकने छेदतां, धर्म न वींं ॥ सा० ॥ ए तो शुं तुमें स्वामी, मोढे लगाडो एहने ॥ सा ॥ ए तो कपटीमां सिरदार, में दीठो तेहने ॥ सा० ॥ ४ ॥ ए तो कपटें करीने काढी, लाव्यो नारी दो ॥ सा० ॥ वली लाव्यो प्रचुर खजानो, भूमी सारी दो ॥ सा० ॥ ए तो आ णजो स्वामी मझोटो छे, जगनो चोर ते ॥ सा० ॥ तुम आगे मोर रिम, अमंतर जोर ते ॥ सा० ॥ ५ ॥ ए तो प्रभु मानी साची, आणि मनी कदी ॥ सा० ॥ प्रभु हुं आज कल्पित, वात करो म्हो ॥ सा० ॥ ए तो एहनो शो विश्वास, करो तुमें गजवी ॥ सा० ॥ ए तो एहना खागमां पाणी, न पारो ते मनवी ॥ सा० ॥ ६ ॥ ए तो सो लंका सोलंका, गहना नारनी ॥ सा० ॥ ए तो समुद्र उलर्घी जाय, ते दुष्कर मा

गर्मी ॥ सा० ॥ ए तो जो जन्ममें गयो होत तो, पाछो नावतो ॥ सा० ॥ ए तो महोटा मगरमच्छ, मुखें गिली जावतो ॥ सा० ॥ ७ ॥ तव आपणुं नायजो महोटुं, जोर ते फावतुं ॥ सा० ॥ ए तो आपणुं चिंतव्युं थावत, सघलुं भावतुं ॥ सा० ॥ पण ए तो नाटक चेटक, करीने आवियो ॥ सा० ॥ ए तो नारीने चंद्रास्य, खडग दो लावियो ॥ सा० ॥ ८ ॥ जिम श्वान अजाण्यो धाइने, रोटी ले गयो ॥ सा० ॥ वली काकनालीनो न्याय, उखाणो तिम थयो ॥ सा० ॥ तिम आव्यो जाणजो इ दिवस, लंका गढ जइ ॥ सा० ॥ तुम आगल फल्यो ए वृद्ध, चोलो डोडर थइ ॥ सा० ॥ ९ ॥ ए तो एहवा नरने मूकीये, स्वामी घनघरे ॥ सा० ॥ ए तो काढीये आभड छेट ते, दूर भली परें ॥ सा० ॥ एनो हिवे तुमें स्वामी माहरी, बुद्धे चालजो ॥ सा० ॥ ए तो प्रभु तुमें शीघ्र दो नारी, साथे माल सो ॥ सा० ॥ १० ॥ तव नरपति जंपे सांभल, मंत्री माहरी ॥ सा० ॥ हिवे आज पछे कदि आप न, लोडुं नाहरी ॥ ॥ सा० ॥ ए तो जेहनी वात करीनें, मंत्री ते खरी ॥ ॥ सा० ॥ ए तो चोकस बेठी माहरे, मनडे महचरी ॥ सा० ॥ ॥ ११ ॥ पण ते हिवे मंत्री वात, घडो कोइ अभिनवी ॥ सा० ॥ ए तो आपणुं जेहथी कार्य, सीझे सुगुणवी ॥ सा० ॥ ए तो हरिवलनो जे शल्य छे, ते काढो परो ॥ सा० ॥ ए तो आपणे मंदिर राणी, दो आवे ते करो ॥ सा० ॥ १२ ॥ तव मंत्री बोल्यो नृपने, मनमां हुए ते ॥ सा० ॥ एइ वातनुं बीडुं छवुं छुं, हुं थइ एष्ट ते ॥ सा० ॥ तुम बुद्धि घतावुं स्वामी, एहवी दिल ठरे ॥ सा० ॥ ए तो जे बलथी नवि सीझे, काम ते कल करे ॥ सा० ॥ १३ ॥ हिवे ते माटे तुमें सभा, मध्यें बेसी ने ॥ सा० ॥ तुमें यम नोतरवा हरिवल, मूको विहसि

॥ ढाल ५ मी ॥ थारे माथे पचरंगी पाग, सोनारो
॥ मारुजी ॥ ए देशी ॥ हिवे बोल्यो मंत्री ताम, कुटिल
शेन ते ॥ साहेबजी ॥ तुमें सांभलो स्वामी नाथ, मजाना
मे ॥ साहेबजी ॥ प्रभु शुं तुमें एहने तेडी, आयो गुण को
॥ सा० ॥ निज घरनुं सघलुं सोंपी आपोपुं शुं वरो ॥ सा०
॥ १ ॥ एतो गर्दभने जिम, गुरब रगो दयवो ॥ सा० ॥
म हरिबळने प्रभु मान, देइ जश लेयशो ॥ सा० ॥ वलि
भ पामें शांति, पेटाव्यानी करो ॥ सा० ॥ ए तो पा
ने व्याल, उछेरो मनहरो ॥ सा० ॥ २ ॥ तुमें इणि परें
मन साची, वखाणो मेलव्यो ॥ सा० ॥ परदेशी अजाण
दुर्जन, थानने हेलव्यो ॥ सा० ॥ ए तो वेरी तुमचो
दरिग्ने शोगरा ॥ सा० ॥ तुम हृदये नारीनो शाल छे,
को डोलरा ॥ सा० ॥ ३ ॥ ए तो न माटे प्रभु, ऊगतो
छेदीयें ॥ सा० ॥ ए तो काळ कंटकने छेदनो, धर्म न
॥ सा० ॥ ए तो शु तुमें स्वामी, मोहे लगाडो एहने ॥ सा०
॥ ए तो कपटमां शिरदार, में दीठो तेहने ॥ सा० ॥ ४ ॥
ए तो कपटें करीने काढी, लाव्यो नारी दो ॥ सा० ॥ वली
लाव्यो मयूर समानो, पूर्ण मार्ग दो ॥ सा० ॥ ए तो
गजी स्वामी मरोटो छे, मगनो पोर ने ॥ सा० ॥ तुम
मोटे दिन, अमवर मोर ने ॥ सा० ॥ ५ ॥ ए तो प्रभु
मानी मानी, मांग मनी करो ॥ सा० ॥ प्रभु हुं आज
वर्जित, वार वार मही ॥ सा० ॥ ए तो एहनो सो निश्च
म, करो तुमें गतवी ॥ सा० ॥ ए तो एहना गायानो पार,
न पामे ते मतरी ॥ सा० ॥ ६ ॥ ए तो सो लका सोकंका, गहना
नारनो ॥ सा० ॥ ए तो गरुड उडती जाय, ने

धनी ॥ सा० ॥ ए तो जो जलमें गयो होत तो, पाछो नावतो ॥ सा० ॥ ए तो महोटा मगरमच्छ, मुखें गिली जावतो ॥ सा० ॥ ७ ॥ तव आपणुं नायकां महोटुं, जोर ते फावनुं ॥ सा० ॥ ए तो आपणुं चिंतव्युं थावत, सघलुं भावनुं ॥ सा० ॥ पण ए तो नाटक चेटक, करीने आवियो ॥ सा० ॥ ए तो नारीने चंद्रहास, खडग दो लावियो ॥ सा० ॥ ८ ॥ जिम श्वान अजाण्यो थाइने, गेटी ले गयो ॥ सा० ॥ वली काकतालीनो न्याय, उत्तागो तिम थयो ॥ सा० ॥ तिम आव्यो जाणजो ह रिवल, लंका गढ जइ ॥ सा० ॥ तुम आगल फल्यो ए वृद्ध, चोन्नो होइर थइ ॥ सा० ॥ ९ ॥ ए तो एहवा नरने मूकीये, स्वामी यमघरे ॥ सा० ॥ ए तो कांईये आमड छेट ते, दूरें मरी परें ॥ सा० ॥ ए तो हिवे तुमें स्वामी माहरी, बुद्धे चालजो ॥ सा० ॥ ए तो प्रभु तुमें शीघ्र दो नारी, साथे माल शी ॥ सा० ॥ १० ॥ तव नरपति जंपे सांभल, मंत्री मा हरी ॥ सा० ॥ हिवे आज पछें कदि आण न, लोपुं ताहरी ॥ ॥ सा० ॥ ए तो जेटली बात करीलें, मंत्री ते खरी ॥ ॥ सा० ॥ ए तो चोकस बेठो माहरे, मनडे सहचरी ॥ सा० ॥ ॥ ११ ॥ पण ते हिवे मंत्री वात, घडो कोट अभिनवी ॥ सा० ॥ ए तो आपणुं जेहथी कार्य, सीझे सुगुणवी ॥ सा० ॥ ए तो हरिवलनो जे शल्य छे, ते काढो परो ॥ सा० ॥ ए तो आपणे मंदिर राणी, दो आने ते करो ॥ सा० ॥ १२ ॥ तव मंत्री बोल्यो नृपने, मरमी दुष्ट ते ॥ सा० ॥ एह वातनुं बीडुं छुं छुं ए, हे थइ पुष्ट ते ॥ सा० ॥ तुम बुद्धि बतावुं स्वामी, एहवी दिल डरे ॥ सा० ॥ ए तो जे बलथी नवि सीझे, काम ते कल करे ॥ सा० ॥ १३ ॥ हिवे ते माटे तुमें सभा, मध्यें बेसी ने ॥ सा० ॥ तुमें यम नोतरवा हरिबल, मूको रिहाने

ने ॥ सा० ॥ जब थोड़ं छवशे हरियल, ते चित्त राखशुं ॥
॥ तव वाली जाली खाख, करीने नाखशुं ॥ सा० ॥ १४
विण पइशे आपणि दूर, विराध ते जायशे ॥ सा० ॥
शिवयणी मृगनयणी, आपणी थायशे ॥ सा० ॥ नवि
वायस कंठे, रयणनो हार ते ॥ सा० ॥ ए तो छे तुम
नायजी, नारि श्रीकार ते ॥ सा० ॥ १५ ॥ मन
महिपति मंत्रिनी, वाणी सांभली ॥ सा० ॥ ए तो भली
वताइ ते सुखदायीमां भली ॥ सा० ॥ इम दो जणे
परठ, करचो नृप मंत्रीयें ॥ सा० ॥ यम नोतरवानो
करि, हरिवल यंत्रीयें ॥ सा० ॥ १६ ॥ इम दुर्मति दीधि
पने, काल सेन ते ॥ सा० ॥ हरिवलने चुकवा दो जन,
लय लीन ते ॥ सा० ॥ पण एवु न जाणे मूरख, दो जण
ते ॥ सा० ॥ किण ठाणे किणे कडणे, वेसशे ऊंट ते ॥
॥ १७ ॥ जीमलालचियो यइ आकरि, बांधी मोहनी ॥ सा
कोडा कोडी सागर सत्तर, लहे दु ख द्रोहनी ॥ सा० ।
चोराशी लाख जोनिमें. जीव ते यइ रले ॥ सा० ॥
टि पाप भोगवतां. साट नवि वले ॥ सा० ॥ १८ ॥
काटे काट वले जिम, लोहने भाजनें ॥ सा० ॥ तेम जीवने
मे कर्म, व रे सुसाझने ॥ सा० ॥ ए तो पर निंद्रा परद्रोह,
ने आकरा ॥ सा० ॥ तेणें दीधां शिवपद वारणें, आडा
मरां ॥ सा० ॥ १९ ॥ ए तो कंचन कामिनी ए दो,
बापडा ॥ सा० ॥ जीव बांधे निकाचित कर्म, गर्लीनां
डां ॥ सा० ॥ जीव भटके वार अनंती, नरक निगोदमां
॥ सा० ॥ ए तो सूक्ष्म बादर यइ फिर, राज ते चौदमां ॥
॥ २० ॥ ए तो कंचन कामिनी सारु, जीव भंडाय छे ॥ सा०
ए तो टस्भर परभर मोर, थई दंडाय छे ॥ सा० ॥ जिम

नी देखे दूध, न देखे डांगडी ॥ सा० ॥ तिम जीव न देखे करणी, आगें अपलाकडी ॥ सा० ॥ २१ ॥ इम जाणतां जीव चेते नांहि, कर्मना जोरथी ॥ सा० ॥ ए तो ज्ञान क्रिया दो नवि गमे, कर्म कठोरथी ॥ सा० ॥ इम मैंथी पांचे निका चित, कर्मने कालने ॥ सा० ॥ ए नो हारिबल उपर द्वेष, धरे चंडाल ने ॥ सा० ॥ २२ ॥ तिण सुने मंत्रि बोले पयो, पट दीधा शूल वे ॥ सा० ॥ पण नृप मंत्रीना मुखमें, पडशे धूल ते ॥ सा० ॥ कोइ वातें रूपी भींहे नही, मंत्री च्पाल ते ॥ सा० ॥ पण अंते जातां वहेशे, पाणी डाल ते ॥ सा० ॥ २३ ॥ ए तो साहिबने घरे जोतां, केवुं एक छे ॥ सा० ॥ रूडी धूं दीनो जाणारो, प्रभु नेक छे ॥ सा० ॥ ए तो काल प्रस्तावने योगें, करणी संभालेश ॥ सा० ॥ तब दुर्जन जलनो वेहरो, कोरे देखाडेश ॥ सा० ॥ २४ ॥ एक समकित विना जे जीवने घोर अंधारछे ॥ सा० ॥ निशि दिन घन घाणी करेनो, पर्व व घार छे ॥ सा० ॥ पुद्गल परावर्तन काल, अनतो ते करे ॥ ॥ सा० ॥ जप तप क्रिया कष्ट करे ते, सर्वे निःफल परे ॥ ॥ सा० ॥ २५ ॥ जेहने घट अंतर समकित, केरो उद्योत छे ॥ सा० ॥ तस अनुभव गुणमणि वंछित, पुण्य उद्योत छे ॥ ॥ सा० ॥ तस जोगें उपाने सफलानु, स्वर ते ओलख ॥ ॥ सा० ॥ चिदानंद ने आनंदमें रहे, शिव सुख तिन लहेशे ॥ ॥ सा० ॥ २६ ॥ जेहनी करणी शुभ करेंधी, छे संसारमें ॥ ॥ सा० ॥ तस दान रूडो मनवाने, सुख भाणारमें ॥ सा० ॥ ए तो ढाल कही शुभ पांचमी, पीला रागनी ॥ सा० ॥ ए तो रुचिर कहे मारे मन जो, आगे सुरागनी ॥ सा० ॥ २७ ॥

॥ दुहा ॥ इणि परें परठ करी मनो, नृप मंत्री जग होय ॥ परोत्ता निज निज मंदिरें, पर घणी मन मांय ॥ १ ॥

दिन नृप मांडियें, किधी कचेरी सार ॥ चामर छत्र विराजते बेठो तखत उदार ॥ २ ॥ छत्रिश राजकुली मिली, वड वडा ते सांमंत ॥ खान उमराव ते आविया, परखदयें माइंत ॥ ३ ॥ हरिबल पण तिहां आवियो, बेठो नृपनी संग ॥ एकण गादी विराजता, जाणे शशि रवि चंग ॥ ४ ॥ हिवे नृप तेडु मोकले, वणिकनें घर घर सार ॥ महाजन सममत मेलियां, मूकी निज तकार ॥ ५ ॥ वड वसती व्यवहारिया, डाही माना जेह ॥ टाही मति छे जेहनी, मिलिया ते गुणगेह ॥ ६ ॥ दानें मानें आगला, दीसता जइवार ॥ धनद भंडारी मालिया, गावे वड व्यवहार ॥ ७ ॥

॥ ढाल ६ ठी ॥ लूहारण जायो दीकरो ॥ सोभागी हे ॥ आयो मास वसंत के ॥ लाल सोभागी हे ॥ ए देशी ॥ महाजन साथें सहू मिली ॥ सोभागीह ॥ पहेरी भला सिणगार के ॥ लालसोभागीह ॥ निज निज घरनां भेटणां ॥सो०॥ ले आया दरबार के ॥ ला० ॥ १ ॥ श्रीवंत श्रीमंत सारसें ॥ सो० ॥ शंकर शंभु सगाठ के ॥ ला० ॥ सूरचंद सुगो सूरजी ॥ सो० ॥ सोभागी सदर माल के ॥ ला० ॥ २ ॥ मानो मीठो माल्जी ॥ सो० ॥ माणक मोतीलाल के ॥ ला० ॥ जेठो जसमी जीरणो ॥ सो० ॥ जगजीवन जगपाल के ॥ ला० ॥ ३ ॥ थानो थोभन थावरु ॥ सो० ॥ भाणो भीमो भवान के ॥ ला० ॥ कानो केसर करमसी ॥ सो० ॥ कल्याण कसी कान के ॥ ला० ॥ ४ ॥ दूदो देवो देवसी ॥ सो० ॥ दांसो दानो दयाल के ॥ ला० ॥ मेघो नेणजी पोमसी ॥ सो० ॥ पूरो ने पूनम पाल के ॥ ला० ॥ ५ ॥ नेणो नेणसी नागजी ॥ सो० ॥ नाथो नथमल नील के ॥ ला० ॥ रेवो

रंगजी रंगजी ॥ सो० ॥ रांको रंगो रंगील के ॥ ला० ॥
॥ ६ ॥ वालो वेलो वालजी ॥ सो० ॥ वीरो ने वीरचंद
के ॥ ला० ॥ हेमो हीरो हरपसी ॥ सो० ॥ हंसो ने हरखं
द के ॥ ला० ॥ ७ ॥ गोडीदास गगलजी ॥ सो० ॥
गांगोने गोपाल के ॥ ला० ॥ मगजी गलेश ने गांगजी ॥
॥ सो० ॥ गोविंद गोरो गलाल के ॥ ला० ॥ ८ ॥ खवो
खीमो खेमजी ॥ सो० ॥ खागोने खुशाल के ॥ ला० ॥
तारो तुलसी थीकमो ॥ सो० ॥ त्र्यंबकने त्रिभुवन के ॥
॥ ला० ॥ ९ ॥ शिवो सेवक श्यामजी ॥ सो० ॥ शामो
ने शिवचंद के ॥ ला० ॥ सारो शिवशी शामजी ॥ सो० ॥
साचो साकर छूंद के ॥ ला० ॥ १० ॥ इत्यादिक व्यवहा
रिया ॥ सो० ॥ मिलिया माहाजन साथ के ॥ ला० ॥ भेट
भली नृपने करी ॥ सो० ॥ वेठा भगपी नाथ के ॥ ला० ॥
॥ ११ ॥ इणि परें सहु नगरी जना ॥ सो० ॥ मेलवा वर्ण
अढार के ॥ ला० ॥ वेठी परखद सहु मिली ॥ सो० ॥
नृपने करीने जुहार के ॥ ला० ॥ १२ ॥ हिवे नृप अवसर
जोईने ॥ सो० ॥ बोल्यो वयण विचस के ॥ ला० ॥ वीहुं
पम आमंत्रवा ॥ सो० ॥ मूके पंच समक्ष के ॥ ला० ॥
॥ १३ ॥ रे सामंतो सांभलो ॥ सो० ॥ वीहुं ग्रहो तुम एह
के ॥ ला० ॥ यमने नोतरुं देइने ॥ सो० ॥ तेडी आवो
नेह के ॥ ला० ॥ १४ ॥ वैशाख शुदि पांचम लगें ॥ सो०
॥ तेडी ल्यावे जेह के ॥ ला० ॥ माहरी रीझ ते पामशे ॥
सो० ॥ मनोवंछित सम नेह के ॥ ला० ॥ १५ ॥ ते माटे
वीडुं ग्रहो ॥ सो० ॥ जेहमां होवे साच के ॥ ला० ॥ जीवित न्हानो
हुं तेहनो ॥ सो० ॥ पालीश सुपरें वाच के ॥ ला० ॥
॥ १६ ॥ इम नृप वाणी सांभली ॥ सो० ॥ सभा थई निश्चल

के ॥ ला० ॥ परषद मौन करी रही ॥ सो० ॥ जाणे ते
बुद्धी मक्ष के ॥ ला० ॥ १७ ॥ निज निज मुख ॥
सो० ॥ परषद थइ मन भूर के ॥ ला० ॥ उपाडे कों
जीभडी ॥ सो० ॥ जाणे गळे देवाणो सिंदूर के ॥ ला०
॥ १८ ॥ परषद जाणे मक्षमें ॥ सो० ॥ ए शुं बोल्यो
के ॥ ला० ॥ देखी पेखी यम घरें ॥ सा० ॥ कहो किम
हां जनराय के ॥ ला० ॥ १९ ॥ साहि तो ए परजो
॥ सो० ॥ नृपनी दृष्टि फिरेय के ॥ ला० ॥ लूंटी घनने
॥ सो० ॥ यमनु ममलू करेय के ॥ ला० ॥ २० ॥
तो नृप जाणतो ॥ सो० ॥ भिनि कंकण पहेरयां केदार के
॥ ला० ॥ पण काम पडे मौनी मुपक्रेने ॥ सो० ॥
भिन करे संहार के ॥ ला० ॥ २१ ॥ ए दृष्टांत ते नृप
रच्यो ॥ सो० ॥ मांड्यो निडानो ए पास के ॥ ला०
कोइकनी ते फिरी दिशा ॥ सो० ॥ लमी मुपी
॥ ला० ॥ २२ ॥ इम समझी मनमें रही ॥ सो० ॥
परजा मौन धरेय के ॥ ला० ॥ स्वर्ग मशा मट जोइ रही
॥ सो० ॥ पग उत्तर कोइ न देय क ॥ ला० ॥ २३
तब नृप बोल्यो परकीने ॥ सो० ॥ ए तो लमणे भृकुटी
के ॥ ला० ॥ प्राग स्वामां तुमें अम तगा ॥ सो० ॥ हिवे
डा कान द हाय के ॥ ला० ॥ २४ ॥ जो अम प्रापनो
करो ॥ सो० ॥ तो तुमें प्रशो वीहु एह के ॥ ला० ॥
हितर को माग्ग प्रशो ॥ सो० ॥ अन्य मूरकनो होय
॥ ला० ॥ २५ ॥ इणि परें नरपति बोलियो ॥ सो० ॥
रकी परखट त्यांहि के ॥ ला० ॥ चमरयां मह्नां मांग ते
॥ सो० ॥ नृप मुकने छे पन ज्यांहि के ॥ ला० ॥ २६
अदित्र ते दुःख छोरने ॥ सो० ॥ कहो तम कृण

॥ ला० ॥ वार जो गनशे चीमशां ॥ मो० ॥ किहां हो वान पुकार के ॥ ला० ॥ २७ ॥ हिवे सुणजो भविय ग तुमे मो० ॥ जे बोलसे मंत्री काल के ॥ ला० ॥ ए कोइ न हि लब्धि कही सही ॥ मो० ॥ ए तो धीजा उल्लासनी ल के ॥ ला० ॥ २८ ॥

॥ दुहा ॥ अवसर लही कानसेन ते, बोल्यो नव कर जोडि ॥ रज सुणो प्रभु माहरी, कहुं तुम आलस छोडि ॥ १ ॥ पद निरखा नायनी, धीहुं प्रहावो जेह ॥ देसन मरवा फु । है. मरननुं धीहुं एह ॥ २ ॥ बोलनुं धीह जे नवि लहे, जाणे ते पम्प ॥ गज पाखर अंधकामेर, नाखी स्हानि तुम्न । ३ ॥ देर रूर जे मानवी, छे नेहनां ए काम ॥ तुं जाणे म कीडलां, पम राजानुं ठाम ॥ ४ ॥ आगे काम सुधारिया, रा केरां जेह ॥ ते जाणे पम नेहवा, हरिवइ छे गुणगेह ॥ ५ ॥ माहलिक शिरोमणी, लपने कामे मझ ॥ चीरबल के पुत्रो, ते करशे शुभ काझ ॥ ६ ॥ इणि परें परखद देखतां ग हुइ ते कान ॥ चोरथी चरण हतागिनि, दूर रहो स्याल ॥ ७ ॥

॥ ढाल ७ मी ॥ काली ने पीली वादली राजिंद ॥ ए देशी ॥ हिवे हरिबलने तूप कहे, नाना नीमक जीवन सुम ॥ पमता गाने नेहवा, लाग मोंघु ए धीर्रे दुह ॥ १ ॥ दधीला रे पमरंग दर्ष वदे तुं वेगे हो प्यारा लाल ॥ ए आंकणी ॥ माहरूं काम सुधारवा, लाग सुझ विन धीजुं न कोय ॥ स्वारथीया मद की निन्दा, न्याला सेहीतारा तुं जोय ॥ दं० ॥ २ ॥ रूपडीया के दर्षे मानवे, लाग पारे मे निरदेन ॥ पड्बुम्ह गनि ने दरवदे, माला मावा कांपे के सेम्प ॥ दं० ॥ ३ ॥ बचन किल्लो ना

नवी, लाला अगनी झंप समशान ॥ दो परवें उझल लाला तन मन करे कुरबान ॥ पं० ॥ ४ ॥ शिर ओढे वयणथी, लाला रूडी भूंडी गाल ॥ सुख दुःख न गणे लाला वयण तणा मति पाल ॥ पं० ॥ ५ ॥ श्रेणिक ण करो, लाला परणावी निज धीय ॥ मेतारज मातंगने कीधो जमाइ जीय ॥ पं० ॥ ६ ॥ तेमाटे हरिवल तुमें, बीडु ग्रहो ए पान ॥ वैशाख शुदि पांचम लगें, लाला घरे आण ॥ पं० ॥ ७ ॥ इम नृपवाणी सांभली, लाला ल चिंते ताम ॥ जो नाकारो हुं करुं, लाला तो न रहे मुझ ॥ प० ॥ ८ ॥ जामगरी सलगाडीने, लाला दुष्ट रह्यो ते दूर भरी गोलिमें कोश ते, लाला नावी नृपनी हजूर ॥ पं० ॥ ९ कोइक भवनो नीमडथो, लाला मंत्री वैरी थ्याउ ॥ मरणलं ग्रहावतां, लाला कीधो महोटो जनाउ ॥ पं० ॥ १० ॥ तो मुं मभु माहरो, लाला जोछे पाधरो तेह ॥ तास पसायें लाला जीवथी टालुं छेह ॥ पं० ॥ ११ ॥ तो मुजरो सारो रो, लाला जग सर चाले वात ॥ महिषी नीत ते महिषीने, ला पाईने करूं ख्यात ॥ पं० ॥ १२ ॥ एम विचारी लाला हरिवल उठयो त्यांह ॥ नृपने प्रणमी हाथशुं, लाला ग्रयों ते उल्लांहि ॥ प० ॥ १३ ॥ तव परजा कर जोडी लाला विनवे त्यां महिनाथ ॥ हरिवलने उगारीये, राज करो दो हाथ ॥ १४ ॥ राजनजी रे अम वयण विशेषे हो राज प्राणाधार ॥ ए आंकणी ॥ कटकी कीडी उपरें, तृण पर ज्युं कुठार ॥ ते उखाणो नायजी, राज मेलो धारे ॥ रा० ॥ १५ ॥ ए परदेशी माहुणो, राज वायु झकोल ॥ आपणी नगरी भमाडीने, राज देखाड्यो थोड ॥ रा० ॥ १६ ॥ ते नरने किम दुविये, राज गुण

पण करंद ॥ देव करीने पूजीयें. राज होवे लाभ असंद ॥
रा० ॥ १७ ॥ ते माटे तुमें नापजी, राज दीजें वंछित दान
मजा मिले गहु वीनवे. राज मागे एतुं मान ॥ रा० ॥ १८ ॥
धीइं यमदूतनुं, राज थो धीमाने जोय ॥ तुम सुखने जे वांछसे,
नि करशे काज ते सोय ॥ रा० ॥ १९ ॥ परियागतना माछ
, राज खाता हशे तुम जेह ॥ ते किम पाछा देयशे, राज
मप पडे पग नेंइ ॥ रा० ॥ २० ॥ तव नृप रीप चढाइनें,
ज बोल्यो भृकुटी चढाय ॥ रहो अणबोली परज ते, राज से
शो नहीं तुनें दांय ॥ रा० ॥ २१ ॥ तव परजा छानी रहि,
ज मयक्षी ते मनमांहि ॥ विण खूटे नृप कोपियो, राजे सुगुण
करशे आंहि ॥ रा० ॥ २२ ॥ थे नृप पजेने दीखडी,
ज करतो क्रोध थपार ॥ आव्यो चांनलदे शिरें, राज माल
केरो भार ॥ रा० ॥ २३ ॥ ए उखाणो दाखवी, राज प
नि कीध विदाय ॥ विलखी थइने परज ते, राज ढठी मन उल
ाय ॥ रा० ॥ २४ ॥ चहूटे चहूटे चाचरें, राज मिलीयां
लोक अनेक ॥ टोले टोलें सहु मली, राज करतां वात विवेक
। रा० ॥ २५ ॥ कहे केतांइक मानवी, राज नृप बिगड्यो खां
स ॥ राखे हरिबल उपरें, राज ते मलचथी द्वेष ॥ रा० ॥
। २६ ॥ कहे केताइक मनडो, राज कामसेन विनिष्ट ॥ सा
ी सूशी ते कहे, राज-काग परें ते उच्चिष्ट ॥ रा० ॥ २७ ॥
ए मंत्री ते पापीयो. राज महोटा दीठा कुजात ॥ हरिबलने
दुःख देयशे, राज युग लगें रहेशे वात ॥ रा० ॥ २८ ॥ इणि
परें साजन सहु मिले, राज वातां थोकें थाक ॥ करता हाहारव
करें, राज सघलों नगरीनां लोक ॥ रा० ॥ २९ ॥ पण
मा मपू छे पा गे. राज मटशे दुःख जंजाल ॥ लब्धि कहे इम
मानवी, राज थीजा उल्लासनी ढाल ॥ रा० ॥ ३० ॥

नवी, लाला भगनी थंपे समशान ॥ दो पलँ उग्रल
लाला तन मन करे खुरवान ॥ पं० ॥ ४ ॥ शिर आंबे
वयणथी, लाला रूढी भूंडी गाल ॥ सुख दुःख न गणे
लाला वयण तणा मति पाल ॥ पं० ॥ ५ ॥ श्रेणिक
णे कगी, लाला परणावी निज धीय ॥ मेतारज मातंगने,
कीधो जमाइ जीय ॥ पं० ॥ ६ ॥ तेमाटे हरिवल तुमे,
बीडुं ग्रहो ए पान ॥ वैशाख शुद्धि पांचम लगे, लाला
घरे आण ॥ प० ॥ ७ ॥ इम नृपवाणी सांभली, लाला
ल चिंते ताम ॥ जो नाकारो हुं करुं, लाला तो न रहे मुझ
॥ पं० ॥ ८ ॥ जामगरी सलगाडीने, लाला दुष्ट रह्यो ते
भरी गांठमें कोश ते, लाला नाखी नृपनी हजूर ॥ पं० ॥
कोइक भवनो नीमडचो, लाला मंत्री वैरी ज्यां ॥ मरणनुं
प्रहावनां, लाला कीधो महोटो जमाऊ ॥ पं० ॥ १० ॥ तो
मुज माहरो, लाला जोछे पाथरो तेह ॥ तास पसायें
लाला जीवथी टालुं छेह ॥ पं० ॥ ११ ॥ तो मुजरो लखो
रो, लाला जग मग चाले वात ॥ महिषी नीन ते महिषीने,
ला पाईने करुं ख्यात ॥ पं० ॥ १२ ॥ एम विचारी
लाला हरिवल उठयो त्यांहि ॥ नृपने प्रणमी हाथशुं, लाला
ग्रयो ते उच्छांहि ॥ प० ॥ १३ ॥ तव परजा कर
लाला विनवे त्यां महिनाथ ॥ हरिवलने उगारीये, राज
करो दो हाथ ॥ १४ ॥ राजनजी रे अम वयण विशेष
हो राज प्राणाधार ॥ ए आंकणी ॥ कदली कीडी उपर,
तृण पर ज्युं कुठार ॥ ते उखाणो नायजी, राज मनमें
धारे ॥ रा० ॥ १५ ॥ ए परदेशी माहणो, राज
वायु झकोल ॥ आपणी नगरी जमाडीने, राज देसावो
धो रा० ॥ १६ ॥ ते नरने किम दुविये, राज मुज

ो कुण नाह रे ॥ १ ॥ प्रीतम प्यारा रे सांभलो ॥ ए आं
णी ॥ नाह विहूणी ने नारीने, न गमे पात सोहाह रे ॥ प्री
त सुधां धखती रहे, जाणे इटनो दाह रे ॥ लागे रोमें रोमें
ार रे, विरहनी झाळ असाह रे ॥ पीडे मदन अथाह रे, न
ा थके ते वधाह रे ॥ प्री० ॥ २ ॥ ए सुख मंदिर मालिया,
ारियां छे धन धान्य रे ॥ कंत विना ते कामिनी, जाणे अल्
े धान रे ॥ नंदिपे को तस मान रे, मूर्ख जिम तरुपान रे,
ाम्हां कानतुं ध्यान रे, जाय तिहां लहे अपमान रे, इम स्त्री वि
ां ते जाण रे ॥ प्री० ॥ ३ ॥ दे दोष कुमगी दो देवने,
ो सुझ कीधो अपराध रे, विण खूने मुझ कंतने, यमदूत मूके
मार रे, हां तें कीधी ए व्याध रे, कांइ ने को मरनी दाप रे,
ीडे वियोग अगाध रे, पीडे मंतने साथ रे ॥ प्री० ॥ ४ ॥
ने सुख मंदिपुरी पटो, जेह पाडे छे वियोग रे ॥ गल्पा दिन
ां ते नागनी. को नथी लेतो बलिभोग रे, जांपे सपटाना रो
रे, भांगे मनना ते सोग रे, लागे ज्युं सपला ते सोग रे ॥,
प्री० ॥ ५ ॥ कंत विना ते विजोगणी, पामे दुःख अपार रे
विरहानलनी ते वापमां, सोसी रहे तनसार रे ॥ होवे वसूलाका
रे, खारे थावे ते छार रे, जावे कोने आगार रे, नव दे दड्
धोकार रे, झिा ते स्त्री अवतार रे, जीवती नियन ते भार रे
प्री० ॥ ६ ॥ विरहिणी नारीने कंतनुं, ध्यान रहे वस की
रे ॥ वंदुलमच्छ परे कर्मने, बांधे निकाचि सदीर रे, वन
ारस नारि पीव रे, मोहनी कर्म अतीव रे, जीवनो दुर्गत सा
ीर रे, चिन्ह ए विरही लहीव रे ॥ प्री० ॥ ७ ॥ एम
े प्यारी कंतने, करे वाणी ससनेह रे ॥ नयने जलधर वर
से, जाणे भाद्रव मेह रे, रहो मंदिर सुमें गेह रे. म दहो फुरंग
देह रे, भोगवो तन धन एह रे, पामी पुन्यनी रेह रे ॥ प्री० ॥

॥ दुहा ॥ हिवे हरिवलने नृप कहे, सांभळ तुं मुझ
पंथ ग्रहो पम राजनो, पहोंचो जेम सदीव ॥ १ ॥ तव
पांल्यो हसि, सांभलो स्वामी मूल ॥ कामें से ते आवशे,
ने न घडे फूल ॥ २ ॥ तिम तुम कारजमें मग्न,
कुण ॥ दशरा अश्व न दोडियां, कुण देशे वर तुण ॥
सेवक जे साचो हशे. ते तुम करशे काम ॥ ढील रखे तुम
धीरज धरजो स्वाम ॥ ४ ॥ एम कही उठ्यो तुरत,
करी प्रणाम ॥ बीडुं ग्रही यमदूतनुं, आव्यो ते निज धाम ॥
निज नारी शे आगलें, हरिबलें मागी शीख ॥ यमने
भणी, जावुं छे सहि इख ॥ ६ ॥ नृपनुं कारज साधवा,
ग्रह्यो छे एह ॥ यम तेडी नृप मंदिरें, आवी सोंपूं तेह ॥
ते माटे तुमें शीख द्यो, तुमें छो चतुर दोय ॥ होशे मेलो
लिख जो पानें होय ॥ ८ ॥ ए मंदिर सोंपूं अछे, तुम
री इच्छ ॥ दान सुपात्रे पोषजो, करजो पुण्य कयच्छ ॥
देव गुरु समरी सदा, धरजो नव पद ध्यान ॥ पूजा भक्ति
धना, करजो गहि सावधान ॥ १० ॥ कुळ मर्यादें चालजो
जो श्री जिनधर्म ॥ करजो उज्ज्वल पक्ष दो, राखजो नि
मर्म ॥ ११ ॥ शीख भलामण इणि परें, निज नारीने
॥ पंथ भणी संचाहिने, गमन भणी पग दीध ॥ १२ ॥
नां वयण ते सांभळी, नारी दो अकुलाय ॥ जाणे रंभा
पडी, तिम नारी मूर्च्छाय ॥ १३ ॥

॥ ढाळ ८ मी ॥ राम भणे हरि उठीयें ॥ ए देशी
चेतन लहि नारी तदा, पल्लव पियनो ते साही रे ॥
ठ स्वरें करी, कहे नारी ग्रहि बांही रे ॥ गृहमें रहो तुम
म करो मरणनो राह रे, छो प्रीतम मुख छाह रे, लीने
मार रे, होवे ज्युं नारी उच्छाह रे. होवे गजबनो धार रे.

।कुण माह रे ॥ १ ॥ मीतम प्यारा रे सांभलो ॥ ए आं
णी ॥ नाह विहूणी ने नारी ॥, न गमे वात सोच्छाह रे ॥ धी
त सुधी धरती रहे, जाणे इटनो दाह रे ॥ लागे रोमें रोमें
ाह रे, विरहनी झाळ असाह रे ॥ पीडे मदन अथाह रे, न
ी शके ते कर्याह रे ॥ मी० ॥ २ ॥ ए सुख मंदिर मालिया,
रियां छे धन धान्य रे ॥ कंत विना ते कामिनी, जाणे अल
।ते धान रे ॥ नदिये को तस मान रे, सूकां जिम तरुपान रे,
ाद्या काननं श्वान रे, जाय तिहां लहे अपमान रे, इम स्त्री वि
ी ते जाण रे ॥ मी० ॥ ३ ॥ दे दोष कुमरी दो दैवने,
यो तुम कीधो अपराध रे, विण स्वने मुझ कंतने, यमगृह मूके
ाभार रे, स्त्री तें कीधी ए ञाथ रे, काढि ते को मदनी दाघ रे,
ादे वियोग अगाध रे, पीडे संतने साध रे ॥ मी० ॥ ४ ॥
हने मुख मन्दिपुत्री पदो, जेह पाडे छे वियोग रे ॥ गम्या दिन
ां ते नाथजी. कां नथी लेतो बलिभोग रे, जोये सयछाना रो
।रे, भांगे मनना ते सोग रे, जाणे ज्युं सयला ते लोग रे ॥
।मी० ॥ ५ ॥ कंत विना ते विजोगणी, पामे दुःख अपार रे
। विरहानलनी ते धाफमां, सीझी रहे तनसार रे ॥ होवे बबूलाका
।रे, खावे धावे ते छार रे, जावे कोने आगार रे, नव दे सुकु
।शृंगार रे, धिग ते स्त्री अवतार रे, जीवती निधन से नार रे
।मी० ॥ ६ ॥ विरहिणी नारीने कंतनं, ध्यान रहे तस जी
।रे ॥ तंदुलमच्छ परें कर्मने, बांधे निकाचि सदीव रे, भ्रम
ारस नवि पीव रे, मोहनी कर्म अतीव रे, जीवतो दुर्जन था
ीव रे, चिन्ह ए विरही लहीव रे ॥ मी० ॥ ७ ॥ एमि
ो प्यारी कंतने, कहे वाणी ससनेह रे ॥ नयणें जलधर वर
ती, जाणे भाद्रव मेह रे, रहो मीतम तुमें गेह रे, म दहो सुरंग
देह रे, भोगवो तन धन एह रे, पामी पुण्यनी रेह रे ॥ मी० ॥

॥ ८ ॥ हरिबल कहे दीय प्यारीने, मांसी अमृत वाण रे म करो मन कोइ सोचना, तुमें छो जीवन प्राण रे, आंखनी की समान रे, पण छे नृपनी ते आण रे, वीहुं प्रश्नों में ते जाण रे, होवे ज्यु कोडि कल्याण रे, तुमें छो घम्ना मंडाण रे, म खांचा ए ताण रे, अमें छुं पथी केकाण रे, करतु शीघ्र प्रयाण रे ॥ ९ ॥ सांभळ गोरि रे माहरी ॥ ए आंकणी ॥ एम कही मच्छी चालीयो, गेली मुकी ते नार रे, नृपनु वयण ते पालवा आव्यो यहि दरबार रे, नृपने कीया जुहार रे, कहे मच्छी तिणि वार रे, करो तुमें चिता तैय्यार रे. म करो ढील लिगार रे, सु णी नृप चित्त मझार रे, पाम्यो हर्ष अपार रे. तेडाव्यो ते तलार रे. चिता विरचावी सार रे, हरिबल बले नृप कारणे ॥ ए आंकणी ॥ १० ॥ अगर चंदन काष्ठ नी, रचना चयनी ते कीध रे ॥ सुगंध द्रव्य ते होमतां. नृप करे मनोरथ लीध रे, आणे रमणी ते सिद्ध रे, प्रमुखे पुत्रने दीध रे, थइ मन्त्र लुपनी रुद्ध रे, आजथी वंछित सिद्ध रे ॥ ॥ ह० ॥ ११ ॥ हरिबल तव मच्छी आवीयो, पहेरी वस्त्र विशाल रे ॥ अंगे भूषण शोभतां, पहेर्यां भाल झमाल रे, कीधां तिलक ते भाल रे, करमां श्रीफळ जाल रे, जोवे मनुष्यनी माल रे, मगटी चयनी ते झाल रे, दीसंती महा विकराल रे ॥ ह० ॥ ॥ १२ ॥ तिण समे सागर देवता, हरिबल सुमरे ते चित्त रे ॥ ततक्षण अगनिडि नाखवा, आव्यो सुरर्षे करि हीत रे, नाख्यो सकळ पवित्र रे, बोल्यो सुर थइ मित्र रे, हरिबल मननी पवित्र रे, राखजे अविचल चित्त रे ॥ ह० ॥ १३ ॥ एम कहीं सुर ते सदे हरिबल सुर कर्यो रूप रे ॥ नृपजन आवि न देखतां, बेठो घरमें ते चूप रे. जन सहु देखे मच्छा रे, जलतो मच्छी अनूप रे, हरख्यो मंत्री ते भूप रे, पण ते पडियो भवकूप रे ॥

ह० ॥ १४ ॥ हरिविना बनमां मन टोलिने, सवला थया रि
सहीर रे ॥ हा हा करता रे मानवी, रोवे आनंद वीर रे, न
रहे वो नहीं नीर रे, वहियां जल निर्विषार रे, सहन मन क
ठोर रे, न नथी मन कोइनां धीर रे ॥ ह० ॥ १५ ॥
ऐसी वाणी ने सांभळी, चरणमां मस्ति सराह रे ॥ मट मट मट
के मन मानवी, फट फट करवे हाट रे, मट मट मटके ते नाटके,
ऐसे टोले किराड रे, रोवे कुंज बनजाड रे, रोवे वेली पहाड रे
॥ ह० ॥ १६ ॥ हरिविना बनमांनी जाल ते, लागी मन लवे
रोड रे ॥ श्याम पडुं नम ते पडी, दीसे कालो ने घोर रे, र
सिपने दुःख दौड रे, दीधी लाग्ने ते झोड रे, थयो रवि आथमो
मोर रे, वमने मरणनो जोड रे, वाले जगमांनो गोट रे, थयो
ते निर्धा उचकोड रे ॥ ह० ॥ १७ ॥ इति पर्व वैचित्र्य रूप
ते, हरिविनानुं करी लांहि रे ॥ जागीने हरिविना जानियो, जो
यो निज दुःखमांहि रे, सन्त करी महु मारी रे, मन कडे सांइ
सांहे रे, थयो अडगुहन उवांहि रे, मेहुं न घटे ते मांहि रे,
ईश्वर सन्तापे यहि रे ॥ ह० ॥ १८ ॥ सन्त यह ने विरा
गी, रांची वस्तु ने लाव रे ॥ जनजल्पे करी सन्त रे, ह
रिना सेवीने साथ रे, कायो वस्त ते मान रे, सन्नी सिद्ध दे
वन रे, रिवे जुग गंजिन माल रे, काइवा सेवीनुं नाव रे, [illegible]
रे ईंदि लाल रे, हन जगमां घर मान रे, [illegible]
रे ॥ ह० ॥ १९ ॥ छिट छिट करे नर संगेने, [illegible]
नां मोन रे ॥ सवमां कोन नाविषो, [illegible]
रे, ते मेर मानो ते शोप रे, [illegible]
सीने मोर रे, ते कुंडे ते मोन रे, [illegible]
॥ ह० ॥ २० ॥ सुजन गह वन्दां [illegible]
नो ॥ कीर्तन थये गवनी, [illegible]



लोरे रे ॥ म० ॥ साहामीवच्छल भाव धरीजे, जे को घाह करीजेरे ॥ म० ॥ २ ॥ श्रीजिनकेरी भक्ति कोजा, दुःकृत पाप हंगावोरे ॥ म० ॥ बध बंधनादिक जीव छोडावे, करुणा भावी भावेरे ॥ म० ॥ ३ ॥ शेत्रुंजादिक तीरथ जात्रा, जे को निर्मल गात्रारे ॥ म० ॥ परिधानतनां नाम रखावे, संघवी तिलक धरावेरे ॥ म० ॥ ४ ॥ तप जप संयम ज्ञान क्रिया दो, पाले करि मरीयादोरे ॥ म० ॥ नय विवहारथी व्रत पच्च खाण, जे को चतुर सुजाणरे ॥ म० ॥ ५ ॥ इत्यादिक शुभ करणी भाखी, सघली ए पुण्यनी साखीरे ॥ म० ॥ द्रव्यथी भावथी जे करे करणी, ते धरे पुण्यनी धरणीरे ॥ म० ॥ ६ ॥ द्रव्य स्तवथी पामे स्वर्ग, उपजे सुर उपवर्गे रे ॥ ॥ म० ॥ भाव स्तवथी केवल नाणी, थइ वरे मुक्ति ते मागारे ॥ म० ॥ ७ ॥ द्रव्यथी आणी धरे जे करणी, करे ते लइ रिद्ध रमणी रे ॥ म० ॥ जे करे भावथी करणी निरागी, होवे ते ज्योतिविलासीरे ॥ म० ॥ ८ ॥ पुन्यथी होवे हर सुर नर इंदा, हलधर चक्री जिणंदारे ॥ म० ॥ त्रिशट शलाका पुरुष कहावे, उत्तम पदवी पावेरे ॥ म० ॥ ९ ॥ ते भव सिद्धि निकट भवि, शिव पदमां सुख चाखेरे ॥ म० ॥ देव दानव पण सहु वश थावे, अरियण सवि गलि जावेरे ॥ म० ॥ ॥ १० ॥ अष्ट महा भय कहिय न देखे, निर्भय सपने पेखेरे ॥ म० ॥ ईति उपद्रव रोग न होवे, पातक सघलां खोवे ॥ ॥ म० ॥ ११ ॥ पंचमे सघले बोल सुबोला, पामे जसतह मोलारे ॥ म० ॥ सूत्र सिद्धांतमे छे नर भावा, हुआ ते पुण्य नावारे ॥ म० ॥ १२ ॥ ते भावथी मनोदधि तरीया, उप शम रसथी भरीयारे ॥ म० ॥ अभ्यंतरनी गांठ विछोडी, शिव रमणी वरी दोडीरे ॥ म० ॥ १३ ॥ सवा कोडी साधनी

चित लगे, उपनो हर्ष अपार ॥ ७ ॥ दो नारी मुझ प्रभुयें दीधी इच्छ ॥ तो हुं जइ सफल करूं, मुझ जीवित च्छ ॥ ८ ॥ इम जाणी ते सज थयो, मदनवेग ते राय वज्री सम ते नृप थयो, चूवा चंदन लगाय ॥ ९ ॥ को जाणे राजमें, तिम चाल्यो धरी आश ॥ रजनी थइ समे, पहोतो मच्छी आवास ॥ १० ॥ दूरथी भूषणी वसंतसिरीयें दीठ ॥ शान करी निजकंतने, हरिवलगृहमें ॥ ११ ॥ एटले महिपति आवियो, दो नारीनी पास कुमरी तव उठी तुरत, आसन आप्युं तास ॥ १२ ॥ स्वागत पणि करी, मुखथी साकर घोल ॥ कर जोडी ग्रही. कामिनी करी रंगचोल ॥ १३ ॥ कामिनी कहे महि ने, केम पधारचा स्वाम ॥ ते कारण मुझने कहो, खोली मन विराम ॥ १४ ॥ इमणां पियु गयो यम घरे, रालवो चार ॥ अध्यवसाय जे मन तणा, कही पहोंचो दरबार ॥ १५ मुझ मंदिर स्वामी तुमें, आव्या छो महाराय ॥ पण वापलो, कहो ने केम समाय ॥ १६॥

॥ ढाल १ ली ॥ मेंदी रंग लागो ॥ ए देशी ॥ तव खित थइ राजवी रे, बोल्यो ते मदनवेग ॥ विषयी वसुधाना कोइक पुण्यना योगथी रे, थयो तुमशुं शुभ नेग ॥ वि० ॥ १ ॥ जब आव्यो हुं मंदिरें रे. तुमरे भोजन काज ॥ वि० ॥ मोहनी लागी ते थकी रे, ते जाणे जिनराज ॥ वि० ॥ २ ॥ जगमां छे नारी घणी रे, पण तुमरी जोड ॥ वि० ॥ तुम सुघडाइ देखीने रे, वाध्यो मोहनो ॥ वि० ॥ ३ ॥ ते दिनथी नवि वीसरो रे, दो नारी स ॥ वि० ॥ जीव रहे चरणांबुज रे, तुमरे अविहड ॥ वि० ॥ ४ ॥ ज्यु धरे ध्यान जोगीसरा रे, तिम धरु

ध्यान ॥ वि० ॥ सास उसासमें साँभरो रे, मन वार तुम गु
ण धान ॥ वि० ॥ ५ ॥ ते गुणनो लीनो थको रे, आव्यो
छुं घरी हुंश ॥ वि० ॥ एहमां जुठ न जाणजो रे, सत्य कहुं
तुम मुंस ॥ वि० ॥ ६ ॥ कांइ न करशो शोचना रे, चतुर
तुमें गुणधाम ॥ वि० ॥ वाणी सुधारस साँभली रे, थयो मन
सुख अभिराम ॥ वि० ॥ ७ ॥ तन धन जोवन पामीने रे,
लीजें यनुभव ल्हाइ ॥ वि० ॥ पामी अवसर भूलशे रे, तस
रहेशे दिल दाह ॥ वि० ॥ ८ ॥ यौवनवय सुख पामीने रे,
जे नहीं माणे पूर ॥ वि० ॥ वननां कुसुम तणी परें रे, ते रहेशे
मन सूर ॥ वि० ॥ ९ ॥ जीवित सूरी तुम तणुं रे, पालशुं
निशिदिन वेण ॥ वि० ॥ हरिवलनी परें राखशुं रे, तन मन
करीने सेण ॥ वि० ॥ १० ॥ तुम हम विच्चें कोइ वातनो रे,
देहेरो न राखियें कोय ॥ वि० ॥ मुझ मन प्राणनिकुंजमें रे,
राखुं तुमने दोय ॥ वि० ॥ ११ ॥ माहारी छती जे राजनी
रे, आजथी सोंपी तुम्म ॥ वि० ॥ जो तुमें आपशो हेतशुं रे,
ते सही जिमशुं अम्म ॥ वि० ॥ १२ ॥ कोइ वातें दुहवुं नहीं
रे, माहरी करीने जीह ॥ वि० ॥ सवलुं कमरु हृदें धरी रे,
भाव रखो मुझ गीह ॥ वि० ॥ १३ ॥ इम नारी दो आगलें
रे, नृप कहे मूकी मान ॥ वि० ॥ कामातुर थइ आकलो रे,
खोई सघली शान ॥ वि० ॥ १४ ॥ धिग धिग काम विटंब
ना रे, धिग धिग मदनविकार ॥ वि० ॥ सुर नर नारी आ
गलें रे, नवि रहे लज्जा लिगार ॥ वि० ॥ १५ ॥ कामें केइ
नर छेतरया रे. कहेतां नावे पार ॥ वि० ॥ काम वशें मरु कू
पकें रे, पड्यो ललितांग कुमार ॥ वि० ॥ १६ ॥ कामवशें
थयो नारकी रे, सोनी सुवनकुमार ॥ वि० ॥ हास्य महासाका
रर्णे रे, पहोतो दरीया पार ॥ वि० ॥ १७ ॥ कामिनी

[illegible] ॥ कामनां कूष्या
[illegible] वि० ॥ १८ ॥ उत्तम म
[illegible] वि० ॥ नर नारीनो
[illegible] वि० ॥ १९ ॥ कामिनी
[illegible] वि० ॥ केवलरयणने
[illegible] ॥ श्रेणिक रा
[illegible] वि० ॥ ते देखी वि
[illegible] वि० ॥ २१ ॥ वळि
[illegible] वि० ॥ निरखी
[illegible] वि० ॥ २२ ॥
[illegible] वि० ॥ धारे
[illegible] वि० ॥ २३ ॥
[illegible] वि० ॥ श्रम
[illegible] वि० ॥ २४ ॥
[illegible] वि० ॥
[illegible] वि० ॥
[illegible] रहे थड दास ॥
[illegible] कषाये नास ॥
[illegible] ने रक्षा का
[illegible] चडते सूर ॥
[illegible] पुण्य पहेली
[illegible] बोले दी
[illegible]
[illegible] नाम ॥ ए
[illegible] महोटी म
[illegible] स्वामी तुमें०

भाग्य पइ बेकड ॥ २ ॥ एम न कीजें नापनी. छोकरवाणी मत ॥ विण कहे कोइ गेहमें, नावे पेसीजे मत ॥ ३ ॥ ए तो काम छे ठंठुं, जेहमें भांगे मार ॥ जे करणी पहेवी करे, करवा नरगनें सार ॥ ४ ॥ परणी घरणी जे हुवे, तेहने पदावो पाट ॥ स्याने ते समझे प्रभु, रहेवा द्यो ए लाट ॥ ५ ॥ परदुःख भंजन राजवी, ए छे तुम्म बिरुद ॥ परनारी सहोदरु, ते किम छंडो हद ॥ ६ ॥ ए परजा अमें तुम तणी, बेटा बेटी समान ॥ अण परणी ए बापडी, केम करो राजान ॥ ७ ॥ वारवार जोइयें निरांपकी, सिरांधी आवे घाट ॥ कहो ते कुण मागळ कहे, जे निज दुःखनी दाट ॥ ८ ॥ आवला जाणी दरदी, जाण्युं ते माठो मद ॥ तुं जाणीने आवीया, लेवा र मणी रुद ॥ ९ ॥ कंत विहूणी कामिनी, जाण्युं ते महिराण ॥ एन दुख मलदु हाथ छे, तेणें तुं सपराण ॥ १० ॥ लोक व नाणी पग करे, जो होय हैयुं हाथ ॥ कान हुवे तो चिंहु दिशें, आवे भिंगा साथ ॥ ११ ॥ एक तो माहरा कतंने, मूकयो जम पर अस ॥ वली तुं वरवा आवीया, पइ नवय्य निर्लंह ॥ ॥ १२ ॥ हवे तो म्हारा तात छो, एवा म कहो बोल ॥ सो वाते एक बापडी, सखी न चूके बोल ॥ १३ ॥ एहवां वचन ने सांभली, सगली नृपने जाल ॥ मोधानमनी दापमां, सी हि गयो ततकाल ॥ १४ ॥

॥ ढाल २ जी ॥ तुं मेरा साहेब सोना दीपावरा ॥ ए देशी ॥

तव रीसियो नृप भराणो, जिम आगें दांपां हराटे, बोल्यो वइ लाते रे, दो बुल्यांतुं गोप पगी मसो ॥ हवे सांभलो दोव म रेखो, नृप तेणइं मोरवीणी, पानो पर बेठेजे रे, दृढ बोहर मोल दूरी पगी ॥ १ ॥ हवे वाडं बोले राज्यमें, हवे वा यं म बोलो राजनमी. मारी पोलाणी रे, राज्यतो वारेसे वां

मही ॥ मेना रिम्णी जाणी, पण मनथी के मपराणी, भांखे इम वाणी रे, हो कमगी नपने नमें रही ॥ न० ॥ २ ॥ तुम मन नो रहेश रमे, अम नाग्य थाशे मलगे, भांखे मद पूरे रे, तृप कामातुर थइ रमो ॥ तृप आकुल व्याकुल थाय, निम जल विना मछ तडफाय देखो [illegible] रे, हो कमगीनुं रूप सोहामणु ॥ न० [illegible] ॥ [illegible] नेमी जग ने मांहिनाथ, तुमें सांभलो कुमरी साथ करो तुम [illegible] रे [illegible] ठोरी में आजथी ॥ नमें [illegible] ने [illegible] तुम आनमकम [illegible] धरजु, मन सुख वरे रे, मागी [illegible] आजथी ॥ न० ॥ ४ ॥ तव जे पे कमगी [illegible] मानी [illegible] मयणा इण दशु रयणां रे, [illegible] ना जो फिरे पथिवा सारी, ए तो मो फिर [illegible] न फिरे मनी कर्णी [illegible] वक वां धो मझ [illegible] गने ॥ नव [illegible] रमनो, राखो मन समना [illegible] द । फरी जब [illegible] कर्णी थामे रे, मझ [illegible] नारो, तुम ना [illegible] नोरी कहु ॥ [illegible] अगनी [illegible] ॥ मुझ दामिन [illegible] म्हारे रे, नव [illegible] हिवे किश [illegible] निम [illegible] तुम रा खिश अहोनिश [illegible] मु

क चितगुं बेहे ॥ तु० ॥ ९ ॥ अहि आगें डेडकुं जेते, हरि आगें मृग जाय केते, जाय कहो केवें रे, बाझ आगें चिडकली दो रोने ॥ तिम तुमेंहीज भामिनी भोली, तुमें म्हेशो आंख्यो चो ली, जाशो किहां रोली रे, मुझ आगलें ढ्रिंग ते छोडीने ॥ ॥ तु० ॥ १० ॥ तव कुमरी भांखे बोल, नृप दीसो छो फूटा ढोल, निगुण निटोल रे, वडा दीसो छो कोइ तुमें ॥ कहे कुम री रवि अंधेरी, जिम कूदे कच्छी वछेरी, नाखुं नस वेरी रे, नर पतिजी छुं अवला अमें ॥ तु० ॥ ११ ॥ के शुं नृप हियडो फूटो, के शुं तुम जगदीश रूठो, के शुं कांइ खूटो रे, तुम सा सोसास हतो जिके ॥ तुमें शुं नृप आप वखाणो, तुमें अवलाशुं म्न ताणो, अबलायी जाणो रे, केइ हारया नर वलीया तिके ॥ ॥ तु० ॥ १२ ॥ तुमें सुणो परदेशी राजा, जेहनी हती मही टी माजा, तेहनी ने भार्या रे, मूर्गांकलेखें नख देइ हण्यो ॥ वली जितशत्रु महिनाथ, हतो परजनों महोटी आथ, राणीयें भरी बाथ रे, पियु नाख्यो जयनिधिमें सुण्यो ॥ तु० ॥ १३ ॥ ए तो इत्यादिक नर बलीया, पण नारी आगलें गलीया, तो शुं तुमें बलीया रे, अम आगल नरपति शुं वको ॥ अथ चरि त्रनां को नवि जीत्यो, श्रीजगनें नाख्यो चीतो, सुर नर सूनो रे, सी आगल को नवि जयवो ॥ तु० ॥ १४ ॥ सिद्ध साधक ने होय जाण, तेहनां अमें ञुकर्तु टाण, एकादश गुणठाणें रे, अमें पाइ निरांधी नरभणी ॥ अमें जाने छुं सौ भूंडी, अमें चालनी नरकनां कुंडी, छुं अमें हुंडी रे, ए तो चालती नव दंडक तणी ॥ ॥ तु० ॥ १५ ॥ तेमाटे नृप तुम आलुं, अमें कूड कदिय न भांखुं, चपटोमें नाखुं रे, उडाडी खोखुं नहि जडे ॥ अमें सतीप न ञुकुं टाहुं, अने दीठो ते भा राहुं, बीजो न चाहुं रे, नरपति सो गुरुगीर सो पडे ॥ तु० ॥ १६ ॥ तुम करवुं होय ते क

[illegible] एतौ पै
[illegible] निप परयी
[illegible] छन ॥
[illegible] बडगुर
धान [illegible] छोड़ने ॥
[illegible] आता, मूको ठे
[illegible] १८ ॥
[illegible] कामि के
[illegible] पनी दुर्मति
[illegible] दो कुन
[illegible] दासी, नृप
[illegible] नाग्या वेव म
[illegible] महार, दासी
[illegible] नृ० ॥ २० ॥
नृप [illegible] कुमरी ते रांगे
[illegible] नृपनी मूछ. फल
[illegible] गय वल तुम जा
[illegible] काचो पूरें
[illegible] नहचो हेडकी ॥
[illegible] गाल्हडीथी
[illegible] २२ ॥ नृप
न [illegible] न ते वर्गे रे,
नृपपाणी उतार [illegible] नृप बोल्यो मा
न मर्कोह मका मझ ठा [illegible] नांहि करुं ॥
॥ नृ० ॥ [illegible] कन्ना [illegible] गावरें सघ
ली वात, मन्छाना जाना [illegible] पाम्या [illegible] ॥ ए

चोथा उल्लासनी मीठी, कही ...
। लिखी चौथी गे, कही चौथी ढाल ...

॥ दुहा ॥ इम करतां ते दइ ...
दिना क्षणकार तिम, मगध्या ... १ ॥
नरपति कहे कुमरीने कर जोड ॥ हुं ...
बंधन छोड ॥ २ ॥ हुं सुरम ...
य ॥ जेहवी करि तेहवी लही, ... साथ
मानुं तो धणी ए थइ, कीजे करुणा माग ॥ ...
ई, जिम रहे लोकाचार ॥ ४ ॥ ...
बुद्धि क्षेत्र ॥ कुंदीपाक देइ खरो, कीधो ...
तीपोने दुःख दाखवी, जे कीयो अपराध ॥ ...
ज्जी, हुं छुं तुम सुत साथ ॥ ६ ॥ इत्या ...
इमरी दोय ॥ बंधनथी छोडयो परो, ...
॥ ७ ॥ गुप्त पणे नृप तिहां थकी, ...
गुप्त पोपाबी आवियो, निगुण थइ निलज्ज ॥ ...
ने सुख पालीने, रोवे तस्कर मान ॥ ... ॥
दो मच्छेस थान ॥ ९ ॥ जाण्युं इतं ...
साथ॥ लेणेथी देणे पडी खालीपडी ...
वासडो, देखी परायो माल ॥ ...
माल ॥ ११ ॥ ते करणी नृपने ...
दीवाली दाखवे, वहे मन होलापूर ॥ ...
लीधुं, मूकी ममता दूर ॥ राज ...
न चढते नूर ॥ १२ ॥

॥ ढाल ३ जी ॥ धण ... ॥
हिवे कुमरी दो कतने, कहे ...

ने काढयो कूटीने, जिम हांकोटी काढे श्वान ॥ १ ॥
लो प्रीतम माहरा, तुम परसादें वाध्यु जोर ॥ टेक ॥
हारथी, मजबुत काढयो ज्युं करी ढोर ॥ सां० ॥ २ ॥
वित लगें नृप जाणशे, खटकशे निशि दिन कालजे साल
निराशी थइ दीन ते मारनी, पुंजी ले गयो माल ॥ सां०
॥ ३ ॥ साजी इलदर फटकडी, सेववी पडशे मास बे चार
मम्मइ अशेलीयो, खाशे त्यारें पाशे करार ॥ सां० ॥ ४
इत्यादिक श्रवणे सुणी, हरिबल नारीनां करय वखाण ॥
लोणी साची तुमें, पणधारी में दीठी सुजाण ॥ ५ ॥
प्यारी माहरी ॥ ए आंकणी ॥ तुमें छो आतम जीवन प्राण
आंखनी कीकी छो तुमें, तुमें छो महोटां घरनां मंडान ॥ सां०
॥ ६ ॥ कुलवधूनां ए चिन्ह छे, पियुशुं राखे मनह पवित्त ॥
कष्ट पडे केइ जातिना, तो पण सतीय न मूके सत्त ॥ सां० ॥
॥ ७ ॥ सत्य वडुं संसारमां, सत्यथी वरशे जग जल धार ॥
सत्यथी पृथिवी थिर रहे, धूतारी रहे सत्य आधार ॥ सां० ॥
॥ ८ ॥ सुरगिरि पण रहे सत्यथी, सत्यथी शशि रवि चाले
आकाश ॥ पृथिवी पण फले सत्यथी, वणसइ भार अढार उ
ल्लास ॥ सां० ॥ ९ ॥ वणज व्यापार चाले बहु, हुंडी चाले दे
श प्रदेश ॥ ते पण सत्यथी जाणजो, त्रिजग कह्यो सत्य विशेष
॥ सां० ॥ १० ॥ केवली केवल सत्यने, त्रिगडे बेसी करेय प्रकाश
॥ धर्मनुं मर्म ते सत्य छे, सत्यथी पामे ज्योति निवास ॥ सां० ॥
॥ ११ ॥ नर नारी सोइ सत्यथी, सत्यथी माने सहु संसार ॥
सत्यथी चूके जे मानवी, नव दंडक लहे ते निरधार ॥ सां० ॥
॥ १२ ॥ शिरनामें लिखे कागलें, साटी चम्पोतर आंक जे दोय
॥ तेहमें पण जन पंडितें, सत्य ठराव्यु लोकमें जोय ॥ सां० ॥
॥ १३ ॥ सत्य मत छोडे मित्र तुं चोगडे लच्छी चोगणी होय ॥

मूर पुत्र रेखा दो कर्मनी, टाले पण न टले टोय ॥ सां० ॥
॥ १४ ॥ इणि परें पण लौकिक मतें, सत्यथी पामे सुजनी रेख ॥
जनरी पूरे जो सत्यथी, तो टले दुःखनी रेखा देख ॥ सां० ॥
॥ १५ ॥ सतीया सत्य न छोडीये, सत्य छोडे पत जाय ॥ सगनी
पांथि करजो ते, आवे सन्मुख धाय ॥ सां० ॥ १६ ॥ मुंद्र
मारे दिन घणो, तेंमें न मुर्य सत्य सिणगार ॥ दस दोकडा नृप
रावरी, सत्यथी लह्यो ते अखूट भंडार ॥ सां० ॥ १७ ॥
दस दस कंचन पामीयें, ते पण सत्य तणो परभाव ॥ मनरंजि
कोला मिले, सातिय निर्गोबगि शुद्ध गुभाव ॥ सां० ॥
॥ १८ ॥ खोल सतां धर मोटका, ते पण अचारी नवगाव ॥
सत्य जो राखे आपणो, जिनवर ने पण सुधि पराय ॥ सां० ॥
॥ १९ ॥ बेडट दिखावा पुरष ते, सत्यवादी थया थाय भले
क। इम जाणी मा नि हूं, राखजो पूरो नरप विवेक ॥ सां० ॥
॥ २० ॥ शर्ण परें हरिचन्दे नारीने, मन्त्र उपर देई दृष्टांत ॥
करदेनी दो दरान्तिन करी, दपनां मोहोबाई इगवान ॥ २१ ॥
॥ सां० ॥ सुर्ये समाजे दपनां रहे, निकलादिर मांहे पडझार ॥
रो दुरुक सूर्नी परे, पद दिवप कुग भोगवे स्यार ॥ सां० ॥
॥ २२ ॥ निज मंदिर जंहो पनो, अब थयो पुरष एक माण ॥
नर हरिवल दिन बिगडे, निरखु दिनें मनने उल्लास ॥ सां०
॥ २३ ॥ नृपने ते अडो दोमदो, दणें साउं; मन मांहे न मोत
॥ एन दर्शा कानोन भे, दणे सौंदी ते न रहे केरव ॥ सां० ॥
॥ २४ ॥ जे जनदेहनु पसेहे ए, तो वले बाधडांचने दूर ॥
परां आनी ते लावे, केह जर आइ ते हरिने दूर ॥ सां० ॥
॥ २५ ॥ दिल बचनोंवे दो रो, बनिसिंडे दारणे केर बखन ॥
सूपना बदन वेदीने, छुटेन दूरवो रवडे सार ॥ सां० ॥
॥ २६ ॥ मो हे रहो नृ बंदेने दूरवे दाद हातु ल्यार ॥

शल्य काढुं आखा जगतनुं, मो मननो पण काढुं खार ॥ सां० ॥ ॥ २७ ॥ इणनाशुं इर्णीयें सही, तेहनुं पाप न गणीयें कांय ॥ जेहवी देवी ते हवी पानरी, एम उखाणो जगमां कहाय ॥ सां० ॥ ॥ २८ ॥ ए मुद्रायें कामिनी, कालने वाल्यानुं छे काम ॥ काल भूंडो छे संसारमां, कालथी बिगडे केहिनां ठाम ॥ सां० ॥ ॥ २९ ॥ इम जाणी हरिबल तिहां, समरयो सागरसुर उज माल ॥ लब्धि कहे शुभ सत्यनी, चोथा उल्लासनी श्रीजी ढाल ॥ सां० ॥ ३० ॥ इति ॥

॥ दुहा ॥ हिवे हरिबल हरखें करी, समरयो सागर देव ॥ ते प ततखिण आवियो, कहो वच्छ किम समरेव ॥ १ ॥ तव ह रिबल कर जोडिने, सुरने कहे सोच्छाह ॥ कालसेन कम जातिने, थं सुमें अग्निमांह ॥ २ शल्य काढो मुम माहरुं, जिम लहुं सुख म पूर ॥ विण खूने मुझने नडे, तेहने टालो दूर ॥ ३ ॥ हरिब लनी वाणी सुणी, थयो तव सुर परसन्न ॥ हरिबल केरी का निमें, संक्रम्यो सुर तस तन्न ॥ ४ ॥ दिव्यांबर पहेरी करी पहेरी भूषण चंग ॥ दिव्य रूप हरिबल तणुं, कांयुं सुरसम अंग ॥ ५ ॥ हरिबल पासें सुर करे, वैक्रिय बीजुं रूप ॥ नभ म रगथकी उतरी, आवि दो मेदे भूप ॥ ६ ॥ चमत्कार चित्तमें लई ह रखित परखद सार ॥ हरिबलने देखी तिहां, मलिया थांट पसार ॥ ७ ॥ नृप मंत्रीने मगटीयं, मर्हाई दुःख अपार ॥ जिम रोगीने दीर्जीयें, चांदा उपर खार ॥ ८ ॥ हरि लने वाली पगे, पश्चमे नाखी छार ॥ ते किम पाछो आवीयो, सुदरें करि शिणगार ॥ ९ ॥ हरिबलने सही ओलख्यो, मदनवेग ते राय ॥ आगत स्वागत नृप करे, बंदा मगमी पाय ॥ १० ॥ पुछे नृप हरिबल भणें, कहो यमराजनी वात ॥ सी सी हकीगत थाति या, सुण ए नृप हमात ॥ ११ ॥

॥ हरि हरिवल नृपने कहे, कुंड गृहवंश हे सुंदर ॥
वीनी तेहवी कहु, तुम आगन छार हे ॥ सांभलो प्राणाधार हे ॥ जेहवी
मांइ ते सांभलो ॥ ए आंकणी ॥ जब धइ करुणा नृप तणी; श्री
रीमें भगनी शुं प्यार हे ॥ रं० ॥ २ ॥ ननाविण नृप परमादथी
तो ए स्वर्ग मझार हे ॥ इंद्रपुरी श्रवणे सुणी, दीठी नजरे श्री.
र हे.॥ रं० ॥ ३ ॥ ते इंद्रपुरीना नाथजी, देवां कोडे वखाण
॥ तेने कमल सरकती, माणे कोडी गमे सम्पा भाग हे ॥
रं० ॥ ४॥ पंचरंगी रत्ने करी, बत्रीश लाख विमान हे ॥ लघु ने
हन लक्षनां, नवि नवि भातिनां माण हे ॥ रं० ॥ ५ ॥
एक विमान छे, पण चउलाख प्रमाण हे ॥ कोरणी थी
ती कहु, सोहमवासीनुं ठाण हे ॥ रं० ॥ ६ ॥ तेह वि
शोभतां, छे महोटां चव द्वार हे ॥ तेहमें द्वार दक्षिण दिशे
रं पम दरबार हे ॥ रं० ॥ ७ ॥ स्वर्गपुरी इम इणि परे,
महोटा मंडाण हे ॥ तेह सभामां हुं गयो, जिहां बेठो पम
॥ रं० ॥ ८ ॥ सुर असुर नर खेचरा, मेली परखद तत्र हे
अन्याय खीर नीर ज्युं, बेठो करे पम पत्र हे ॥ रं० ॥
मे ते पम भटवापदी, थीर इंदने चंद हे ॥ समा वि
रा. देव दानव दिणंद हे ॥ रं० ॥ १० ॥ कुम
रीझने, सहुने गमे एक पाट हे ॥ मे जेहवी करणी
तां छे पुरे स्वाद हे ॥ रं० ॥ ११ ॥ छीकित घने
. कहे सहु सुरप तान हे ॥ तने पद्मना भाइ चंदन
स्नान समान हे ॥ रं० ॥ १२ ॥ दर्पणी सम भा
णी तान हे ॥ अमरारी मन नटिनी, घंट नचंट
॥ रं० ॥ १३ ॥ एह ने द्वारापत्र भाइ दो, ए प
॥ जनक मरार दो देरटा, परने यन्नो गुण हे ॥

॥ रं० ॥ १४ ॥ दो मंत्री यमरायना, काल अने माहाकाल है ॥ चित्र विचित्र दो दफतरी, पुण्य पाप लिखन विशाल है ॥ रं० ॥ १५ ॥ दुनीयां जे करणी करे, सुकृत दुःकृत देख है ॥ चित्र विचित्र ते मांडिने, दाखवे यमने लेख है ॥ रं० ॥ १६ ॥ ते करणी यम देखीने, घे दुनियाने सीख है ॥ सुकृत ने सुख दाखवे, दुःकृतने दे भीक है ॥ रं० ॥ १७ ॥ ईति उपद्रव जगतने, मर्कीना जे रोग है ॥ काल दुकाल ते जे पडे, ज्वरना मेलवे जोग है ॥ रं० ॥ १८ ॥ पूर्वज व्यंतरी व्यंतरा, वलगे ते सनमुख है ॥ ए सवि करणी यम तणी, दुनियां जे लहे दुःख है ॥ रं० ॥ १९ ॥ रूसे जो यम जगतने, दाखवी नारकी थान है ॥ तूसे तो यम नेहसु, आपे ते सुख शात है ॥ ॥ रं० ॥ [illegible] ॥ जोरो घणो यमराजनो, कहेतां नावे पार है ॥ यमनो विचार विशेष छे, भगवतीमांहे विस्तार है ॥ रं० ॥ ॥ २१ ॥ लौकिकने मतें जे सुणो, तेह में दीठो सत्य है ॥ तेह सभामें हु गयो, यमने करी प्रणिपत्य है ॥ रं० ॥ २२ ॥ तनखिण यमें मुझ ओलख्यो, अवधि ज्ञानें सार है ॥ देव शक्ति करी मुझने, फिरी दीधा अवतार है ॥ रं० ॥ २३ ॥ नौतन काया माहरी, मुझने जीवित दीध है ॥ सारमहु जाणीकरी, सजीव तगामन किध है ॥ रं० ॥ २४ ॥ आगत स्वागत घणि करी, मुझने ते धर्मराज है ॥ मोक्ष समाचार तुम तणा, पूछे मैं यमराज है ॥ रं० ॥ २५ ॥ तनमें तिहां कर जोडीने, यमने करि अरदास है ॥ आव्यो हु एक राजधी, तेह वा तुम उल्लास है ॥ रं० ॥ २६ ॥ विशाला पुरनो धणी, मदनवेग ते राय है ॥ अंगजने परणाववा, ओच्छव महोटो कराय है ॥ रं० ॥ २७ ॥ देश देशाउरि रानवी, मेलशे महोटा राय है ॥ वैशाख सुदि पांचम दिनें, परणशे पुत्र रतन है ॥

थयो तिमिरार ॥ स० ॥ कर जोडी कहे रायने, मंत्री वयण उदार
॥ स० ॥ त० ॥ ॥ ४ ॥ यमनो जे पडिहार छे, ते आवे मुझ,
साथ ॥ स० ॥ तो जइ यमने भेटीयें, भरीयें वंछित चाथ ॥ स० ॥
त० ॥ ५ ॥ तव नृप कहे पडिहारने, मुझ मंत्रीने संग ॥ स० ॥
मंत्री भुवन पद दाखवा, मेलवो यमनो रंग ॥ स० ॥ त० ॥
॥ ६ ॥ करी भगिवन माहरी तिहां, करजो मुझ अरदास ॥ स० ॥
करी ते एहो अस्वारीशुं, आनु तुमने विसास ॥ स० ॥ त० ॥ ७ ॥
करी तो सहु नगरी तणो, सघलो आवे साथ ॥ स० ॥ यम
राजाने भेटवा, आवे विशालानाथ ॥ स० ॥ त० ॥ ८ ॥ इणिपरें
विनती माहरी, यम नृपने करेय ॥ स० ॥ शीघ्रगतें तुम आवजो,
यमनी रमा लेय ॥ स० ॥ त० ॥ ९ ॥ तव सुर कहे ते रायने,
मंत्री करी तुमें गुझ ॥ स० ॥ मुझ स्वामी यमनायने, मेलवुं मंत्री
रूप ॥ स० ॥ त० ॥ १० ॥ एम कही पाडिहार ते, मागी नृपनी
शीख ॥ स० ॥ बेठो अगनी ज्वालमां, सहु जन देखत ईख ॥ स० ॥
त० ॥ ११ ॥ मंत्री पण कालसेन ते, नृपने कीध जुहार ॥ स० ॥
नगरी जन सहु सादने, मणमी करे मनुहार ॥ स० ॥ त० ॥
॥ १२ ॥ बेठो धपनी ज्वालमां, मंत्री पण तेणिवार ॥ स० ॥
सुर सगें कालसेन ते, मंत्री बली थयो छार ॥ स० ॥ त० ॥ १३ ॥
नगरी जन सहु देखतां, मंत्री सुर थयो छार ॥ स० ॥ जोतां निण
एक पलकमें, पहोता यम दरबार ॥ स० ॥ स० ॥ १४ ॥ नगरी-
जन नृप आदि दे, मंत्रीनी जोवे वाट ॥ स० ॥ आणे मंत्री आवशे,
मन धरी करी गहगाट ॥ स० ॥ स० ॥ १५ ॥ इणिपरें दो घडी
घी घडी, मंत्रीनी जोई वाट ॥ स० ॥ [illegible] [illegible] आवी
नहीं, नृप कहे शो थयो घाट ॥ स० ॥ स० ॥ १६ ॥ तव [illegible]
केरे भुवन, [illegible] करो समजु थाव ॥ स० ॥ जे थयो यमने भेटवे,
ते हिय आवे थाव ॥ स० ॥ त० ॥ १७ ॥ जे गयां सुरनां ग

स्कार ॥ २ ॥ इम कहेवां नगरी जनां, वलीयां निज घर लोक ॥ गीरु साचो हरिबलो, पुण्य तणो ए पाक ॥ ३ ॥ काल्येन कृपा करे, शाशे हरिबल्ने शीप ॥ जन हियें रंग वधामणां, घर घर दीप ॥ ४ ॥ सर्व नगर हरिबलनां गुण, भाखे सघली वात ॥ जे जेहवी करणी करे, ते लेहवी वहे ख्यात ॥ ५ ॥ ज्ञानी तो ज्ञानथी, देखे स्वर्ग ने नर्ग ॥ पण कहे लोक मनें करि, नर्ग ने सर्ग ॥ ६ ॥ सागरदेव पसायथी, कीधु काप ॥ हरिबल चरित्र ते देखिने, लाज्यो नरपति नाम ॥ ७ ॥ तव हरिबल कहे रायने, म करो मनमें सोच ॥ तुम मंत्री गुणनिधें, कुमरो कराव्यो लोच ॥ ८ ॥ लंकायें मुझ मोकल्यो, मुखे यम घेर ॥ तुमें घुवण मुझ नारिछ, तब में कीरे ए ॥ ९ ॥ तुम मंत्रीनी संगतें, करता तुमें पण साथ ॥ पण में करता, करुणा आणी नाथ ॥ १० ॥ ए गुण जेणों मानसे, त्रिन सुखी भूप ॥ एम कही हरिबल तिहां, आव्यों निज घर ॥ ११ ॥ वसंतसिरी कुसुमसिरी, दो प्यारी गुणवंत ॥ मुखचंद विलोकतां, दो कुमरी हरखंत ॥ १२ ॥ सुख विलपे संसारमां, टाल्या सघला चरर ॥ करणी करे जिन धर्मनी, हरिबल मच्छी अठीन ॥ १३ ॥ परतख देखी पारखुं, हरिबल केरो धर्म ॥ पुरजन सहु धर्मी थया, टाली मिथ्या भर्म ॥ ॥ १४ ॥ नरपति पण मन लाजियो, जे निज कीधां चरित्र ॥ ते देखी पोसो करे, नरपति मनशुं विचित्र ॥ १५ ॥

॥ ढाल ७ मी ॥ नानो नाहलो रे ॥ ए देशी ॥ मांहलिं मोंगे परजने रे, पेठो ते निज धाम ॥ साजन सांभलो रे ॥ हा हा में ए शुं करयु रे, अणघटतुं ए काम ॥ १ ॥ सा० ॥ गुणवंत ने गुण धाम, दुखी अलगो रे ॥ ए आंकणी ॥ किधा मरली मो हनो रे, जागी इम भव माहि ॥ सा० ॥ ए नारीथी हुं नर सहु

रे. विण साथे [illegible] [illegible] न्याग
करे रे. खांड नाखिया त्यां [illegible] [illegible]
रे. वागने ढोल [illegible] [illegible] गिरी
पोष्यं बयर [illegible] [illegible]
लहीं नम रेण ॥ [illegible]
मुझ हाथ ॥ [illegible]
॥ ५ ॥ मा० ॥ [illegible] थाणा मीठ
मा० ॥ गुह [illegible] [illegible]
॥ ६ ॥ मा० ॥ [illegible]
॥ मा० ॥ [illegible] नाखी
॥ ७ ॥ मा० [illegible]
मा० ॥ ते मुक्ता [illegible] मा
छे मॉ [illegible] मा०
बाग [illegible]
वां [illegible]
वह रे, [illegible]
रे [illegible]
जावे [illegible]
जिनवर [illegible] ॥ मा [illegible]
मानवा आण [illegible] मा [illegible]
गमाय ॥ मा ॥ [illegible]
॥ १० ॥ मा० ॥ [illegible]
मा० ॥ [illegible]
कामदेव [illegible] रहे रे. [illegible]
रितादिक नाव गणे रे. [illegible]
धीती हशे ते जाणशे रे [illegible]

दोशे खेह विकारशुं रे, खोई तन मन रंग ॥ १६ ॥ सा० ॥ श्री गुरुने ए उपनो रे, पडवा नारकी कुंड ॥ सा० ॥ धिग धिग मा हरी बुद्धिने रे, जे थयो व्यसनी भुंड ॥ १७ ॥ सा० ॥ धन हरि बलनी बुद्धिने रे, दीधुं जीवित दान ॥ सा० ॥ अजर प्याले इण जीरव्यो रे, दीठो वडो सावधान ॥ १८ ॥ सा० ॥ जो कोपे मुझ उपरे रे, तो करे मंत्रीनी रीत ॥ सा० ॥ राज लीये मुझ एकलो रे, तो शी रहे परतीत ॥ १९ ॥ सा० ॥ में महारे हाथे करी रे, करणी खोटी कीध ॥ सा० ॥ नीति मारग लोपी करी रे, हरिबलने दुःख दीध ॥ २० ॥ सा० ॥ ते किम सांइ सांसहे रे, जे हुं चाल्यो अनीत ॥ सा० ॥ तो दीखामण भली जदी रे, कांई नहि विसरे चित्त ॥ २१ ॥ सा० ॥ अवगुण उपर गुण करे रे, ते तो हरिबल एक ॥ सा० ॥ मुझने राख्यो जीवतो रे, दयावंत विवेक ॥ २२ ॥ सा० ॥ सुगुण पुरुष में दीठडो रे, हरिबल साहस धीर ॥ सा० ॥ उपगारी शिर सेहरो रे, वीर शिरोमणि वीर ॥ २३ ॥ सा० ॥ धन हरिबलना तातने रे, धन हरिबलनी मात ॥ सा० ॥ क्षत्रिवंशमां दीपतो रे, सुभट शिरोमणि जात ॥ २४ ॥ सा० ॥ धन धन ते गुरुदेवने रे, जेणें बताव्यो धर्म ॥ सा० ॥ हुं बलिहारी तेहनी रे, जे राखी मुझ शर्म ॥ २५ ॥ सा० ॥ इम हरिबलना गुण स्तवे रे, परजामें मदनवेग ॥ सा० ॥ तोल वधार्यो माहरो रे, हरिबलशुं करि नेग ॥ २६ ॥ सा० ॥ तो हुं पुत्री माहरी रे, परणावुं शुभ काज ॥ सा० ॥ कर मूकामण वली दीयुं रे, महीयल महोटुं राज ॥ २७ ॥ सा० ॥ गुण ओशींगण ए थइ रे, हुं हिवे थाउं निःपाप ॥ सा० ॥ पछे हुं संजम आदरुं रे, ज्युं मिटे भवनो संताप ॥ २८ ॥ सा० ॥ एता दिन भूलो भम्यो रे, विण दर्शन मुझ जीव ॥ सा० ॥ हिवे करणी एहवी करुं रे, जिम लहुं सुख सदीव ॥ २९ ॥ सा० ॥ इम आलोचना परजमें

ण ॥ सो० ॥ हांसी चोथा उल्लासनी ए कही, शुभ तको इसी ढाल ॥ श्री० ॥ २८ ॥

॥ दुहा ॥ मदनवेग हरखे करी, कीधो उच्छव सार मोनु कुं मानद्, वरसे ज्यु जलधार ॥ १ ॥ अमरदत्त वनवासियो, नगरी निपादी सार ॥ हरिचन्द्रने राजे ठव्यो, वरत्या जय जयकार ॥ २ ॥ बंदीजन छुटया पछी, आणी मन उछरंग । भासोनन छुरा करपा, दाने देदेकार ॥ ३ ॥ पर महोत्सव मंडि कया, रासी कुल नगे व्यापार ॥ हरिचन्द्र जे राजा थयो साथे सिर्हे दिधी वान ॥ ४ ॥ नगरी जन सहु हरखीया जय थयो हरिचन्द्र राय ॥ देश देशांतरि भेटणा, ले आवे नृप धाय ॥ ५ ॥ तिरणे पद महोत्सव करी, जे नृप मदनवेग ॥ हरिचन्द्रने राज्य दी, सवन वधारयो नेग ॥ ६ ॥ हरिचन्द्र पण न्याय मारग, पाळे राज्य अनरद ॥ आप पनारी चित्त तिणें धनवंत मांन मरंद ॥ ७ ॥ हिवे नृप आपाता कने, समझि मागे शीख ॥ जो स्वामी राजी हुवो, तो हुं लेहुं दीख ॥ ८ ॥ निज मानवने सरखा, लेई मंगळचार ॥ हिव रमणीसुं नेहथी जस्या थयो हर्षि सार ॥ ९ ॥ एम करी नृप गम थयो, चढे ते परिवार ॥ देशा महोत्सव शुभ करे, हरिचन्द्र सह गुणधाम ॥ १० ॥

॥ ढाल ९ मी ॥ अमरदत्तना भेटणा ए मानव आवयो ॥ ए देशी ॥ तेलदनारी वस्ता रे, नृप मन उलस्यो रे ॥ परथ्यान सदासमां रे, नृप हुवे मस्तो रे ॥ आर्मी समता भाव रमा रे, नामी वस पर साथे विहार ॥ पवन सौरभ रहे रे, भंडार आइरे ॥ १ ॥ गाले हवे गाहे रे, धन बहु सारे रे ॥ विवेक विषें पाने रे, कुटुंब करणी आपरे रे ॥ मरदित भिंतर कुंड रवे, नवपन रचना दिव बोध ॥ पंचे आइको आवे र, सुंदर हिर हुक करे रे ॥ २ ॥ साहाभिगर देन रे, मन मारे छोडिय

रे ॥ परमातमने गेहें रे, समकेत मांडिया रे ॥ मूकी परनो सञ्ज शोच, पच मुष्टिए कर्यो तिहां लोच ॥ राजा राणी आदें रे, चारित्रने ग्रहे रे ॥ ३ ॥ नव हरिवल शभ भावें रे, ससराने ऊजवे रे ॥ दीक्षा महोत्सव भावें रे, कर्यो जन संस्तवे रे ॥ वरसे ज्युं भादरवानो जलधार, वरसे त्युं हरिवल सोवन धार ॥ कवि-जन जेता तेता रे, श्लोक भणे घणा रे ॥ ४ ॥ सुरपतिनी परें कीधो रे, महोत्सव दीक्षनो रे ॥ क्षायिक समकित केरो रे, ग्रहो दंड ईशनो रे ॥ दीक्षा उच्छवनु फल एह, हरिवल पाम्यो वे गुणगेह ॥ शिव रमणीनो साचो रे, पालव बांधियो रे ॥ ५ ॥ धन धन मदनऋषिजी रे, बलिहारी ताहरी रे ॥ संजम नारी प्यारी रे, वरी नृप जाहरी रे ॥ धन धन स्वामी तुमरो भेख, धन धन जीत्या राग ने द्वेष ॥ ते गुण लीणो तुमरो रे, हुं किं कर थइ रह्यो रे ॥ ६ ॥ धन्य स्वामी करुणारसें रे, मन संतो षियो रे ॥ सवेग रसें करी आतम रे, निर्मल पोषियो रे ॥ धन धन्य स्वामी तुम दृढ चित्त छांड्यां धण कण राजनी नीत ॥ धन धन्य स्वामी तुमचा रे, मनोबल भावनें रे ॥ ७ ॥ इम गुण गहोटा रे, मदन वेग ऋषिराजना रे ॥ धन्य धन्य मुखथी जपता रे, हरिवल पुरजना रे ॥ इणि परे करता स्तवना अपार, ऋषिजन प्रणमी निज आगार ॥ हरिवल राजा आदि रे, सहु वांदी वल्या रे ॥ ८ ॥ हिवे ऋषि मदनवेगजी रे, गुरुसगें भणे रे ॥ चौद पूर्वना अर्थ रे, विचार ने संयुगे रे ॥ पाले पूरा पंचाचार, चाले सुधा नय व्यवहार ॥ दंपति दोये साचां रे, जिन मतमें वढे रे ॥ ॥ ९ ॥ अध्यातमरंग संदर रे, निरखी तिहां रहे रे ॥ विवेक तणां जे मंदिर रे, मनोटां गह गहे रे ॥ तेहमें कीधो दो ऋणे वाम, करे तिहां बेठां ज्ञान अभ्यास ॥ ज्ञान ने दरिसण चर णनु रे, रहे भीनां थकां रे ॥ १० ॥ ध्यान सुनरखने बेठा रे, दो

भविक जीवने निर्धा रे, संजित सारव्या रे ॥ भाख्युं ए समकित परम निधान, सुगति पथनुं दाता निदान ॥ जिनवरे भाख्युं रे, सूत्र सिद्धांतमां रे ॥ १९ ॥ एहवा गुण गुणें जाणी रे, समकित धारजो रे ॥ विरा विकथा परनी रे, दूर निवारजो रे ॥ ज्युं सहो भवियां समकित शुद्ध, आ जगदीश दे सुमने बुद्ध ॥ तो सरदव शोंडें करीने रे, समकित धारजो रे ॥ २० ॥ भविक जीवने सब हित रे, जीवनुं मूल ते रे ॥ समकितधारी जीवने रे, शिव अनुकूल छे रे ॥ इम कहे लब्धिविजय उजमाल, पोषा उदासनी नवमी ढाल ॥ हलवा कर्मी जीव ते रे, वयण ए मानशे रे ॥ २१ ॥

॥ दुहा ॥ हिवे गुणजो भवियण सुणें, हरिबल केरी वात ॥ पांशाला पूरे नयरनी, विस्मय लाज विख्यात ॥ १ ॥ चारे द्वाराने मंडप, मोटी दाननी शाल ॥ नव सुभक्षित मांगने, देवे दान विशाल ॥ २ ॥ नव भेदें जे पुण्य छे, गुरु तणे अनुसार ॥ जन्म सफल करवा भणी, मांड्यो तपुकार ॥ ३ ॥ साते क्षेत्रें वावरे, केइ लख धननी कोड ॥ चैत्य करावे जिन तणां, मोटि स्वर्गनी होड ॥ ४ ॥ अमारि पडहो सिद्ध दिशें, जिहां सुधी आणा राय ॥ मारि शब्द को उच्चार, ना ते राजनी माय ॥५॥ दिण रूनें कोशीवने, को न उपाडे शस्त्र ॥ कीडी कुंजर आपणां, सम करी लेखवे तत्र ॥ ६ ॥ इणि परें हरिबल राजवी, पाळे राज्य अखंड ॥ दरमाने ईदु समो, अविचल भीम प्रचंड ॥ ७ ॥

॥ ढाल १० मी ॥ मारुजी मागीरा सांगें धण रे, दांपें सब विणां रे लो, मांगें मांजिगर मारुजो ॥ ए देशी ॥ भवियां नगरी विशाला सार, समाला सारनी रे लो, मानुं कैलासपुरी लो ॥ भ० ॥ सोहम सारीनी परें खासी, मोहती रे लो ॥ ठकुराई जांणे सनूरी लो ॥ १ ॥ भ० ॥ पुण्य प्रभावें भावें, भोगवे राजने रे लो, हरिबल भाग्य विशाल मां ॥ भ० ॥ मुगरा नरवा पाळजे,

मेरा माजने रे लो ॥ [illegible] ॥ [illegible]
घोलमें देखे पुन्य विशेषे [illegible]
लो ॥ म० ॥ [illegible] गया [illegible]
[illegible] लो ॥ ३ ॥ म० [illegible]
रा रे लो, नागिणे [illegible]
[illegible] रे लो, [illegible]
[illegible] वास, [illegible] रे लो [illegible]
लो ॥ म० ॥ एवो [illegible]
रे लो, [illegible] लो ॥ ५ ॥ म० [illegible]
[illegible] रे लो, [illegible]
[illegible] रे लो [illegible]
रा लो ॥ ६ ॥ म० ॥ [illegible]
रे लो, [illegible] लो ॥ म० [illegible]
[illegible] रे लो [illegible]
॥ म० ॥ [illegible]
[illegible] लो ॥ म० [illegible]
[illegible] रे लो, [illegible]
[illegible] रे लो, [illegible] ॥ म० ॥
[illegible] रे लो, [illegible]
[illegible] लो ॥ ९ ॥ म० ॥ [illegible]
[illegible] रे लो, [illegible] लो ॥ म० ॥ [illegible]
[illegible] रे लो, [illegible] लो ॥ १० ॥
म० ॥ [illegible] रे लो, [illegible]
[illegible] लो ॥ म० ॥ [illegible]
[illegible] लो ॥ ११ ॥ म० ॥ [illegible]
[illegible] रे लो, [illegible] लो ॥ म० ॥

॥ भ० ॥ वेसी एकांते निरखे हिवे, ध्याने ध्यान रे लो, वसंतसेन भूपाल लो ॥ २२ ॥ भ० ॥ जो जो धर्मी जीवने, कर्म अचिरजे रे लो, कीधो ज्ञान प्रकाश लो ॥ भ० ॥ चोथा उल्लासनी पुण्य, मनोरथनी लब्धियें रे लो, भांखी ढालनी दास लो ॥ भ० ॥ २३ ॥

॥ दुहा ॥ इणिपरें चितमां चिंतवी, वसंतसेन भूपाल ॥ कागल मित्र लेखण करी, मांहि लेख रसाल ॥ १ ॥ स्वस्ति श्री श्रीपुर थका, चरण कमल नमि ताम ॥ लेख लिख्यो रूपश्यामणो, जामा तने उल्लास ॥ २ ॥ नृप तेडावे ततखिणें, मतिसागर मतीश ॥ ते पण ततखिण आवियो, प्रणमी नाम जगीश ॥ ३ ॥ भूप कहे सुण मंत्रवी, आ सोंपू तुझ लेख ॥ जामाता मुझ पत्रिने, देने लेख विशेष ॥ ४ ॥ कहेजे प्रणिपत माहरी, वर्णी करी मनहार ॥ कहेजे सुसरे तेडवा, मूक्यो मुझ निरधार ॥ ५ ॥ मोकल आवे आप इणिपरें, मूर्ने कांधी जोर ॥ मनशुं मंत्री सचवेलो, तेड नगरें चोर ॥ ६ ॥ कंचन पुरनां मानवी, सघले जाणी वात ॥ जामाता निज पुत्रिने, मुक्यो तेडवा साथ ॥ ७ ॥ मंत्री साथे परवरी, सेना पंच हजार ॥ योजन चउसय ओळंगीने, आव्यो विशाला पार ॥ ॥ ८ ॥ वीशालापुर नयरनां, दिठां महोरां महाण ॥ जाणे स्वर्ग पुरी वसी, आवीने इण ठाण ॥ ९ ॥ वाडी महोले मलपती, फल चिहुं दिशि वनराय ॥ आगे वन नंदननी वहेनडी, आय वसी इण ठाय ॥ १० ॥ इणिपरें सेना मंत्रवी, देखत हर्षित होय ॥ पेसारो पुरमें करयो, वेला शुभ घडि जोय ॥ ११ ॥ नगरी ससरी जोवतां, आव्या ते दरबार ॥ हरिबल नृपने भेटिया, उपनो हर्ष अपार ॥ १२ ॥ हरिबल सुरपति सारिखो, बेठो धरावी छत्र ॥ मंत्रीपण प्रणिपत करी, दीधो नृप कर पत्र ॥ १३ ॥

॥ ढाल ११ मी ॥ शेत्रुंजानो वासी साहेब, माहारे दिल वस्यो रे ॥ मोरा साहेबा ॥ आदिजिन कहुं रे जुहार ॥ ए देशी ॥

कागळ देइ हर्ष धरे विचारो रे ॥ मोरा साहिया ॥ ए तो ... मंत्री विशेष ॥ तेडवा तुमने मुक्या अमने देतग रे ॥ मा० ॥ तुमचे सुसरेजीयें लेस ॥ काग० ॥ ए आंकणी ॥ १ ॥ निशि दिन तुमचो राखो मिमचो मल्या तणो रे ॥ मो० ॥ तुम सुम रोजी भूपाल ॥ दक्षिण दीनें पावन कीनें आंगणो रे ॥ मो० ॥ तुमची सासुनो कृपाऊ ॥ का० ॥ ॥ २ ॥ सुसरो जमाई आनंद पाई एकठा रे ॥ मो० ॥ नेमी करो रंग रोळ ॥ नेह सुधारस बरसे पावस गहगटा रे ॥ मो० ॥ उपजे ज्युं रंग चोल ॥ का० ॥ ३ ॥ अमचो स्वामी तुम शिर नामी प्रेम शुं रे ॥ मो० ॥ कह्युं मुख वचनें एम ॥ तेमाटे स्वामी अंतर जामी नेगशुं रे ॥ मो० ॥ पाउ धारो धरी प्रेम ॥ का० ॥ ॥ ४ ॥ सुसरो ने सासु नहीं कांइ फाम थावती रे ॥ मो० ॥ आव्या विना माणावार ॥ पजर तिहां छे जीव इहां छे मातथी रे ॥ मो० ॥ इणिपरें राखे छे प्यार ॥ का० ॥ ५ ॥ ते माटे तुमने कहुं शुं अमने घणुं करी रे ॥ मो० ॥ दंपति थइ एक रंग ॥ वेगा थावो वार म लावो सहचरी रे ॥ मो० ॥ ल्यो सेना तुम संग ॥ का० ॥ ६ ॥ इणि परें सयणा मंत्री वयणां सांभळी रे ॥ मो० ॥ हरख्यो हरिबल ताम ॥ काग वांची मनमां माची मन रळी रे ॥ मो० ॥ सेना सजि अभिराम ॥ का० ॥ ७ ॥ तिहांथी मत्री उठयो मंत्री शीघ्रथी रे ॥ मा० ॥ आव्यो ने कुमरी पास ॥ तातनो मंत्री ओळख्यो यंत्री अग्रथी रे ॥ ॥ मो० ॥ बसंतसिरीयें उल्लास ॥ का० ॥ ८ ॥ मिलवा उठी कुमरी वूठी नयणथी रे ॥ मो० ॥ हर्षनां आंसू जोर ॥ जनकने हीरदें मिलियां भक्ति परें सयणथी रे ॥ मो० ॥ मंत्री कुमरी सठोर ॥ का० ॥ ९ ॥ बेसि एकांतें कुमरी खांतें पुछ सी रे ॥ मो० ॥ कुशळ खेमनी रे वात ॥ मात पितानां

उद्दाम ॥ हरिबल राजा चढत निशानी वाजते रे ॥ मो० ॥ पा
ल्या जनमनी भूम ॥ का० ॥ २० ॥ सुसरानो मंत्री पुण्यप
वित्री नेयता रे ॥ मो० ॥ ले चाल्यो दंपति साथ ॥ शीघ्र प्र
याणें थाओ निशाणें देयता रे ॥ मो० ॥ आव्या ज्यां परणी नार
॥ का० ॥ २१ ॥ ते वन देखी दंपति हरखी दीपता रे ॥ मो० ॥
डेरा ते वनमांहि ॥ किधा उतारा जीमण सारी कीधलां रे ॥
मो० ॥ चउरंगी सेना उच्छाहि ॥ का० ॥ २२ ॥ प्यारि
पयपे पियुने जपे हेतनी रे ॥ मो० ॥ वाणीयें वीनवे भूप ॥ इंद्र
पुरी सम नाम रहे तिम वेननी रे ॥ मो० ॥ नगरी वसावो चूंप ॥
का० ॥ २३ ॥ श्रीजिनमंदिर अतिहीं सुंदर चोंपशुं रे ॥ मो० ॥
करो इहां नीरथ ठाम ॥ जे मुझ परणी ते करी कारणी रूपशुं
रे ॥ मो० ॥ जिम रहे जगमें नाम ॥ का० ॥ २४ ॥ तब
ते मच्छी प्यारी मुलच्छी वयणथी रे ॥ मो० ॥ समरचो त्यां
सागर देव ॥ गुणणी रागी पुण्यविभागी सयणथी रे ॥ मो० ॥
आव्यो सुर ततखेव ॥ का० ॥ २५ ॥ सुर कहे शाने तेडी
माने ते कहो रे ॥ मो० ॥ जे होय मननी हूंस ॥ तव कहे हरि
बल दाखो सुरबल मनें वहो रे ॥ मो० ॥ नगरी वसावो खूब
॥ का० ॥ २६ ॥ तव तिहां नाकी वाकि न राखी पलकमें रे
॥ मो० ॥ वासी त्यां नगरी विस्तार ॥ गढ मढ मंदिर पोलशुं
सुंदर इलकमें रे ॥ मो० ॥ रचना कीध अपार ॥ का० ॥
॥ २७ ॥ श्रीमुनिसुव्रत श्रीजिन उद्धृत सो हतां रे ॥ मो० ॥
बिंब ठवयुं करि चेत ॥ दंपति दोनी मूरति कीनी मोहनी रे ॥
मो० ॥ पूर्वे जे लह्युं देवत ॥ का० ॥ २८ ॥ राज वे थाउक
हिंग ने देउल देखिने रे ॥ मो० ॥ दर्पति थयां उनमाद ॥ बो
ध्या उल्लासनी प्रेम प्रकाशनी पेखिने रे ॥ मो० ॥ कहि गविरखें
दग्यारमी ढाल ॥ का० ॥ २९ ॥ इति ॥

रंग वधामणां ॥ ए आंकणी ॥ एतो पूजा भक्ति करी ५-
एतो मणम्या देवीना पाय ॥ स० ॥ १ ॥ धन धन मातजी
जगतमां, मगटी तुं जन सुख हेत ॥ स० ॥ दीन दुःखीया जीवने
उद्धरी, करी पावन सपद हेत ॥ स० ॥ २ ॥ इम आसनां
वासना देवीनी, करि दर्शन बोले आशीष ॥ स० ॥ माना जीव
जे सुरगिरिनी परे, अम पहुची सघली जगीश ॥ स० ॥ ३ ॥
हिवे हरख्यो कंचनपुर धणी, एतो वसनसेन भूपाल ॥ स० ॥ तेम
वसतसेना रागिणी, पट्टराणी थइ उजमाल ॥ स० ॥ ४ ॥
निज पुत्रीने वर कारणे, शिणगारी नगरी ते सार ॥ स० ॥
एतो देव दाणव विद्याधरा, एतो जोवा मिलिया अपार ॥ स० ॥
॥ ५ ॥ एतो गजरथ घोडा पालखी, शिणगारया ते बहु ठाठ ॥
॥ स० ॥ राज मारगमां विराजता, पथगाश्ना सोवन पाट ॥
स० ॥ ६ ॥ दुर्वानां हे तोरण बांधियां, विचें सुरतरु दल मह
केन ॥ स० ॥ एतो घर घर चहुटे चाचरे, फुलमालापुंज सोहंत
॥ स० ॥ ७ ॥ टोडे टोडे मोतीना झुमणां, लहकी रह्यां तेजनें
तेज ॥ स० ॥ मानुं कुमरी वरने निरखवा, आवी स्वर्गपुरी नेहे
ज ॥ स० ॥ ८ ॥ शिणगारी नगरी इणिपरें, हरखी नृप वसं
तसेन ॥ स० ॥ चतुरंगी सेना सज करी, वर कुमारने तेडवा
तेण ॥ स० ॥ ९ ॥ गयणांगण गूडी उच्छले, गुंझालां गुंजे नि
शाण ॥ स० ॥ साबेलां सबल ते सज करयां, नगरीजन कुमर
सुजाण ॥ स० ॥ १० ॥ इम आडंबरशुं नरपति, सामइयुं सबल
सजेय ॥ स० ॥ चाल्यो कुमरी वरने तेडवा, पुरजनशुं हर्ष धरे
य ॥ स० ॥ ११ ॥ नवयोवन नारी सोहामणी, मिली गावे मधु
रां गीत ॥ स० ॥ रंभा उर्वशीना मद गालती, गावे कोकिल स्व
रनी रीत ॥ स० ॥ १२ ॥ दत्तवादन देखी पुत्रीनें, नृप पुत्र
- हरख भराय ॥ स० ॥ जिम भविकने समकित मिले, तिम

॥ २५ ॥ जो जो भवियां साधुनी संगतें, लह्यो जीवदयानो धर्म ॥ स० ॥ थयो परसन जलनिधि देवता, तिणें वधार्यो मच्छीनो मर्म ॥ म० ॥ २६ ॥ थयो चावो ते चिहुं खूंटमें, भोगवें शुभ ऋद्धि समृद्ध ॥ स० ॥ जाणे सुरपतिनो सभोवडी, थइ बेठो प्रच्छी प्रसिद्ध ॥ स० ॥ २७ ॥ भलें प्रगट्या सद्गुरु जगतमें, उपगारी परम कृपाल ॥ स० ॥ कहि चोथा उल्लासनी बारमी, लब्धें संयोगनी ढाल ॥ स० ॥ २८ ॥

॥ दुहा ॥ एहवा सद्गुरु वयणथी, पाम्यो जिनवर धर्म ॥ थयो परसन जल देवता, वधियो मच्छी भर्म ॥ १ ॥ हरिबल दो पद वी लह्यो, सागरदेव पसाय ॥ ठकुराइ ववीश लाखनी, पायक्क अश्व गुहाय ॥ २ ॥ शुंड दंड विराजता, दिसता जाणे पहाड ॥ गजशालामें गज घटा, साहे सहस अढार ॥ ३ ॥ सुख विलसे संसारनां, शोलसें राणी सच्छ ॥ पटराणी थापी वडी, वसंत सिरी सुकपच्छ ॥ ४ ॥ मूलगी जे परिणेतनी, काली कर्कशा नार ॥ ते पण हरिबलें संग्रही, कीर अपडर अवतार ॥ ५ ॥ अमारि पलावे चिहुं दिसें, जिहां सूची छे आण ॥ तिहां मूर्यो को जी वनां, काढी न शके प्राण ॥ ६ ॥ इणिपरें लीला भोगवे, पूरव पुण्य पसाय ॥ चावो थयो चिहुं खूंटमें, महोटो हरिबल राय ॥ ७ ॥ हिवे ससरो हरखें करी, वसनसेन भूपाल ॥ जामातानें वीनवे, कर जोडी उजमाल ॥ ८ ॥ मो अनुमति दीक्षा तणी, आणी हर्ष अपार ॥ शिव रमणी वरवा भणी, लेशुं संजम भार ॥ ९ ॥ एम कही आज्ञा लही, मारू सुपरो टोय ॥ पंच महाव्रत उच्चर्या, सुविहित सद्गुरु जोय ॥ १० ॥ चढते परिणामें करी, पाले पंचाचार ॥ उग्र तपस्यानां धणी, थयां सूधां अणगार ॥ ११ ॥ क्षपक श्रेणी चढतो थकां, तेरमुं लह्यो गुणठाण ॥ शुक्ल ध्यानना जो गथी, पाम्यां केवल नाण ॥ १२ ॥ चोसठ इंद्रादिक मिली,

बहुत भेद रहेय ॥ पाखिकने मानव [illegible]
इ २२ ॥ केवल कमला मानवा, [illegible]
इंद्रिय दुर्बल करी, परोता [illegible]
वेंजेतनने, यत सर्वतपर सार [illegible]
इंद्रि प्रकार ॥ १८ ॥

॥ डाल २२ मी । [illegible]
गी, मन दोगेदीनो माहरो सोहवा [illegible]
सुहाय हो ॥ ए देशी ॥ [illegible]
वेद ॥ पा० राम अराह हो ॥ [illegible]
वत ॥ सवो गुण भगिनो [illegible]
प्यारो, परमनो मोटो शुभ, अनभव [illegible]
होदिवल परजा पार हो ॥ ए आकर्णा [illegible]
दिये ॥ पु० ॥ पोडश देश [illegible]
गजा ॥ पु० ॥ [illegible]
गुण लिंग जीत दया तणो ॥ पु० ॥ [illegible]
परतत्त्व देखी पारखवं ॥ पु० ॥ [illegible]
सु० ॥ ३ ॥ तो दिव माहमा धर्मनो ॥ प [illegible]
उजमाळ हो ॥ मानव भव सफळो करी ॥ [illegible]
छेत माल हो ॥ सु० ॥ ४ ॥ इम जाणी [illegible]
पु० ॥ जिहां लह्यो गुरु उपदेस हो । [illegible]
मंडुं ॥ पु० ॥ राखुं तिहां नाम विजय है ॥ सु० ॥ ५ ॥
पोडश देश सुहामणा ॥ पु० ॥ कीधा जिन प्रासाद हो ॥
पित्र भराव्यां स्वयमें ॥ पु० ॥ छंडा सर्व प्रमाद हो ॥ सु०
॥ ६ ॥ अमारि पलावे आपणी ॥ पु० ॥ पोडश देश म
झार हो ॥ मार शब्द को नवि उच्चरे पु० ॥ सघली परजा
विचार हो ॥ सु० ॥ ७ ॥ नव भेदे जे पुण्य छे ॥ पु० ॥

॥ १९ ॥ पुर जन सह राजी थयां ॥ पु० ॥ नयणे निरखी
नाम हो ॥ सोइवें मिलों नृप मोनावे ॥ पु० ॥ नृपने व॥
न्यो मनाय हो ॥ मु० ॥ २० ॥ मले आडंबर उच्छवें पु० ।
पहोतो नृप दरबार हो ॥ छत्रीस राजकुली लिन्या पु० ॥
निरखिया बांह पसार हो ॥ मु० ॥ २१ ॥ भल भल्या लाड मे
दर्यो ॥ पु० ॥ नृप पण ते करे भग हो ॥ मनमानो पच्छी
तेहने ॥ पु० ॥ देइ शिरपाउ ते रंग हो ॥ मु० ॥ २२ ॥ इणिपरे
लीला राजनी ॥ पु० ॥ भोगवे मनठाय हो । रहे भोगी रमता
मने ॥ पु० ॥ वीशाला पुरराय हो ॥ मु० ॥ २३ ॥ शोक इलापि
देसा ॥ पु० ॥ मोहे ज्य ऊलास हो ॥ तिम इविन्न शोक जनत
है ॥ पु० ॥ सोहे तेजप्रकाश हो ॥ मु० ॥ २४ ॥ ए गुण जीवड
या नगो ॥ पु० ॥ फलिया मनोरथ सिद्ध हो ॥ ढाल चोथी उ
छापनी ॥ पु० ॥ दास तेजसी कही परसिद्ध हो ॥ मु० ॥ २५ ॥ इति ॥
॥ दुहा ॥ पत्र विषय सुख विलसतो, वीता केता दिन । रत्न
मंजरी पटनारीये, जन्म्यो पुत्र रतन्न ॥ १ ॥ श्रीवत्स नाम सिद्ध
दई, मगदत्त माहाबलवन्त । इविन्न केरो पुत्रडो, मरू गग्गा श्री र
त ॥ २ ॥ कुसुमसिरी जे लेकनी, तिणे पण जन्म्यो पुत्र । नान
विनाने सुख दिये, चलवे घरनो सूत्र ॥ ३ ॥ मवलनाम पण जे
मगटयो ज्युं रवितेज ॥ मातपिता हरखे घणुं, देखी दो सुत हेज
॥ ४ ॥ रामने लखमण जोड ज्युं, सोहे त्युं दो भ्रात ॥ दान माने
भोगव्या, पुहवामां करे ख्यात ॥ ५ ॥ जोड मिली दो भ्रा
तनो, श्रीवत्स मुवत्स नाम ॥ राज काजमें नम्रता, राखे मन अभि
राम ॥ ६ ॥ वांझी राणी ने अछे, पोइणी जे शुभ मन्न ॥ तिणे
पण पुण्यना योगथी, जन्म्यो पुत्र रतन्न ॥ ७ ॥ इणिपरे लीला
भोगव, हरिवल्ल भूप विख्यात ॥ संसारिक जे सुख कह्यां, विलसे
ते सुख सात ॥ ८ ॥ तन धन स्त्री सुत सज्जनो, अक्र रम य

सां० ॥ ६ ॥ को कहो नाम न को कहो धाम ने रे को कहो भात ने को कहो जात रे ॥ इणिकों [illegible] मदार ने वयणथी रे, मगरम वैची लोपू सत्यात रे सा० ॥ ७ ॥ को करो प्रीत को करो वेरने रे, को करो साच ने को करो कूड रे ॥ थावुं छे अंते सहने कालथी रे, आखेर प्राणी धूड [illegible] धूड रे ॥ सा० ॥ ८ ॥ कूडी माया ने कूडी कामिना रे, कूडा छे [illegible] लो करे ॥ कूडी छे दुनियां बाद [illegible] ने पण अंते होवे शोक रे ॥ सां० ॥ ९ ॥ प्राणथी वाहा [illegible] जेहने जाणिये रे, शाखीये तेहने स्युं करि प्रेम रे ॥ ते पण न [illegible] उथी [illegible] रे जाणी ने छांडि महोटे पंथ रे ॥ सा० ॥ १० ॥ कोइक गया ने कोइक जायशे रे, कोइ छे प्राणी जावणहार रे ॥ [illegible] तिरणा [illegible] रे, जाणे ते प्राणी हारे पमार रे ॥ सा० ॥ ११ ॥ [illegible] न गणा ने कुग ने शांकने रे, आखर [illegible] [illegible] साथ मूकत कौवन्नां रे, इतनमां ते भरनो [illegible] ॥ १२ ॥ मणो रे भरोसो काचा कुंभनो रे, [illegible] जननो [illegible] देखत संध्यारागं नथी पडे रे, उलो ने [illegible] निराग [illegible] रे ॥ सां० ॥ १३ ॥ दश रे दृष्टांते मानव भव नणो रे, पामवो [illegible] नथ कहाय रे ॥ तो वळी फिरि फिरि पामवो दोहिलो रे जिम करी कुमारागने न्याय रे ॥ सां० ॥ १४ ॥ दान [illegible] तप भावना रे, भांख्यो छे जिनवरे चउविह [illegible] रे [illegible] तहनो सां को मे राप शुभभावथी रे, दुर्दापे विशेषे निज [illegible] कम रे ॥ सा० ॥ १५ ॥ होवे ते सहेज गुण पुण्य जावना रे, [illegible]गुणुं ते अनाची होय रे ॥ कोइही गुण फल [illegible] दानथी रे, ए फल पुण्यनुं दृष्टि पडे जोय रे ॥ सां० ॥ १६ ॥ त्यागें दीये ने धन विगणुं लहे रे, चोगनुं पामे धन व्यवसाय रे ॥ धन गण पामे [illegible] सेवथी रे, दान कुपात्रनी सम्पा न थाय रे ॥ सां० ॥

शक्ति ॥ अष्ट करम दल दुर्जय कीधां, वेगया सिद्धनी पंक्ति ॥
भ० ॥ १५ ॥ एकादश ने श्रावकनी प्रतिमा, भांगी जे वयणा
में ॥ विधि पूर्वकशुं जिन अर्चीने, ते पण वहि एक ताने ॥ भ०
॥ १६ ॥ गायन अंग पाठ ए नारो, जो जो भरियां रंगे ॥
दश श्रावकें तिम वाह शुभ प्रतिमा, तिम वहि सच्चित्त अभंग ॥
भ० ॥ १७ ॥ षट आवश्यक नवकार आदें, तेहनां वहे उप
धान ॥ शिवरमणी वरवाने हेतें, पहेंगो भाव प्रधान ॥ भ० ॥
॥ १८ ॥ श्रावकने उपधान वद्या विण, नवकार क्रिया न सूझे ॥
साधुने पण योग वह्या विण, वांचन सूत्र न सूझे ॥ भ० ॥ १९ ॥
पंचांगी में जो जो सघलें, ए अक्षर परगट ॥ ते जाणीने हरि
बल पोतें, करे करणी गहगट ॥ भ० ॥ २० ॥ इणिपरें शुद्ध
करणी शुद्ध भेटा, भाव [illegible] पा[illegible] ॥ त्रिकरण शुद्धे भावें करीनें,
आतम भव अजुआले ॥ भ० ॥ २[illegible] ॥ हरिबल ने करे पं
[illegible] [illegible] न कोइ [illegible] [illegible] ने उपर [illegible] सुगमी [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] ॥ भ० ॥ २[illegible] ॥ पांचमे आरे [illegible]
[illegible], न हुआ [illegible] [illegible] [illegible] ने [illegible] देश, [illegible]
पंचविश ने [illegible] ॥ भ० ॥ २३ ॥ ए [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] उगणीस [illegible], [illegible]
[illegible] [illegible] ॥ भ० ॥ २४ ॥ [illegible] [illegible], [illegible]
ने [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कीधा, [illegible]
[illegible] ॥ भ० ॥ २५ ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible]
[illegible] ॥ [illegible] [illegible] [illegible]. [illegible] [illegible] [illegible] भांगे ॥
भ० ॥ २६ ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] जिन पडिमा
[illegible] ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ने [illegible] [illegible] [illegible] ॥
भ० ॥ २७ ॥ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥ भ० ॥

॥ १८ ॥ सोळमो उद्धार शेत्रुंजा उपरें त्रिजगमें [illegible] ॥ [illegible] श्रावक कुळमें, सा करमे जस [illegible] ॥ ए ॥ ॥ १९ ॥ आजने समये एहवा प्राणी, जे [illegible] ॥ मो [illegible] कालनुं कांहनुं, श्री नय [illegible] ॥ ॥ २० ॥ ए दृष्टांत सुणीने भविया, मानजो [illegible] ॥ [illegible] ननना ने गुण भांख्या, ते मन [illegible] ए ॥ ॥ २१ ॥ ए अधिकार सुणी जे सद्दहे, [illegible] वो [illegible] भाख्यो [illegible] ए ॥

॥ दुहा ॥ इम करणी करतां थकां, बोल्या [illegible] ॥ [illegible] मुनिचंद केवली, पाउ [illegible] ॥ १ ॥ [illegible] वाणीयो, [illegible] ॥ [illegible] ॥ २ ॥ [illegible] ॥ ३ ॥ मन्नाने [illegible] ग्राम पमायो [illegible] ॥ [illegible] ॥ [illegible] ॥ ४ ॥ [illegible] जल देत ॥ [illegible] ॥

॥ ढाल १९ मी ॥ देखी [illegible] वाणी, सार्थी समार असार ॥ [illegible] ॥ १ ॥ [illegible] देखी [illegible] ॥ [illegible] ॥ २ ॥ [illegible] ॥ ३ ॥ [illegible] ॥ ४ ॥ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] [illegible] मिल्या [illegible]
[illegible] नाथ [illegible] [illegible] भाव ॥ ५ ॥
[illegible] पण पाछी तेहने
[illegible] करणा [illegible] मिल्या, मुझने
[illegible] [illegible] ॥ ६ ॥
[illegible] राजान । पूर्व भव करणी
[illegible] करणी करे, ते तेह
[illegible] भागवाय ॥ ७ ॥
[illegible] ॥ प्रणमी
[illegible] खड वि
[illegible] तेहमे जी॥
[illegible] जी ॥ जयसिरी
[illegible] ॥ प्रसव्या ते
[illegible] नयण वयण मुर
[illegible] ॥ सुनद उपनंद
[illegible] परें सोय, मन
[illegible] [illegible], परणावी
[illegible] नाकि यामांगना
[illegible] ते कलकी भ्रंग ज्यूं
[illegible] जी ॥ ६ ॥ एक
[illegible] ॥ तब लिरो
[illegible] ॥ श्री जिनवर
[illegible] ॥ देखी ते नवली
[illegible] ॥ ८ ॥ वंदि ते मुनी
[illegible] ॥ उपनंद हूंवे भराग,
[illegible] काची ने काय कुभोग, मन

ग्याग करी
जो जो देव
चक
मनद्
॥
नर है
नव
॥
॥
॥
॥
॥
॥
नादी
॥
॥
॥
व्यापी
जानी
मरी
॥
सा
भागी
आ
मन गए
विद्या

उपजेरहूं है, तासे ते वैर भाव ॥ दो० ॥ [illegible]
है, सो मति होवे महाव ॥ दो० ॥ [illegible]
निज दोरि है, देखी द्विजकी नारि [illegible]
पै,कहुं है, संतोषी म [illegible]
रानी यथा सहु [illegible] है, [illegible]
है दो [illegible] है, [illegible]
॥ १४ ॥ [illegible]
का दी [illegible] है, [illegible]
॥ १५ ॥ [illegible]
॥ दो० ॥ [illegible]
॥ ३० ॥ १६ ॥ [illegible]
[illegible] ॥ दो० ॥ [illegible]
[illegible] ॥ दो० ॥ ३० ॥ [illegible]
[illegible] ॥ दो० ॥ [illegible]
[illegible] ॥ दो० ॥ ३० ॥ [illegible]
है, [illegible] ॥ दो० ॥ [illegible]
दो [illegible] ॥ दो० ॥ ३० ॥ [illegible]
[illegible] है, [illegible] ॥ दो० ॥ [illegible]
[illegible] ॥ दो० ॥ ३० ॥ [illegible]
[illegible] है, [illegible] ॥ दो० ॥ [illegible]
[illegible] ॥ दो० ॥ ३० ॥ [illegible]
[illegible] है, [illegible] ॥ दो० ॥ [illegible]
[illegible] है [illegible] ॥ दो० ॥ ३० ॥
॥ २२ ॥ [illegible] है, [illegible] ॥ दो० ॥
[illegible] है, [illegible] ॥ दो० ॥ ३० ॥
॥ २३ ॥ [illegible]

तिहां, उपनंद मिलवा रूप ॥ माय सह ी मिन्यो वेमाढ़नो की धूंर ॥ १२ ॥ हिवे सहु देश नगर, करवा सार हकां ह ॥ तिण समे आव्या साधुजी, देवा समाकित सार ॥ १३ ॥

॥ ढाल २० मी ॥ मृडा े तु जह बहेन संदमदा रे ॥ ए देशी ॥ तव इरखे सउ उठीने, कर जोडी नामे शीश रे । गुरु पण भाविक देखीने रे, देवे सहुने धर्माशीष रे ॥ १ ॥ भवि सुणजो रे, इहां गुरु पण लाभ कमावे रे ॥ ए आंकणी ॥ मास खमण नुं पारणुं, करी वेहा त्या चित्रशाला रे ॥ माय सहु पण तिहां कणे, गुरु पासें बेठा संभाळी रे ॥ भ० ॥ २ ॥ धर्मकथा यथा स्थित कहि, सहु सुणव्या प्राणी सुजाणी रे ॥ समकित पामता पामीया, गुरुमुखथी सुणी वखाणी रे ॥ भ० ॥ ३ ॥ तव द्विजणी कर जोडीने, पूछे ंडा विशाखानी माता रे ॥ आ दो पुत्री दोना गिणी, तस काढि होशे सुख शाता रे ॥ भ० ॥ ४ ॥ तव कपि दो कुमरी तणी, तस कर्मनी रेखा जोय रे आजथी एक वर्षनुं, गुरु भाखे आउखुं होय रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ त्यारपछी सुख पामशे, जो जिन मारगने वह शे रे ॥ मिथ्या मत जो उदशे, तो मन वंछित लेहेशे रे ॥ भ० ॥ ६ ॥ इम कपि वहे सुण भगवी, तुम मारग शुद्ध बताइ रे ॥ जो ते मारगे चा शो तो दुःखनी दोरी कपावुं रे ॥ भ० ॥ ७ ॥ तव भणी कहे माय जी, तमे मारग शुद्ध भांखो रे ॥ काज सरे जेहथी अम करुणा करीने दाखो रे ॥ भ० ८ ॥ तव गुरु कहे सुणो भावको, तुमे पूजो प्रभु शुभ जाणीरे ॥ प्रभु पूज्या ने पामीया इम लोकमें छे वाणी रे ॥ भ० ॥ ९ ॥ सदगुरुवचन हदे धरी तुम आपथी मनशुं जाणो रे ॥ प्रभु वंदन फल सांभळी तम मनभर लखें आणो रे ॥ ॥ भ० ॥ १० ॥ भवियां रे तुमें जिन वदन भणी जावो रे, तो मीठा मेवा पावो रे ॥ ए आंकणी ॥ सामटें उठी साहधी हां

मनशुं जिनभणी जानुं रे ॥ उलट भाणी भावथी तो, चोथ तणुं
फल पावुं रे ॥ भ० ॥ ११ ॥ उठे चैत्य गमण भणी ए तो, पहोंि
शुद्ध ते वेशो रे ॥ छठ तणुं फल पामी ने लहे, एम केवली दे
उपदेशो रे ॥ भ० ॥ १२ ॥ चोखा सोपारी कर लीधा, तव अ
ठमनुं फल पावे रे ॥ पगलु दे जावाने देहरे, तव दशम तणुं फल
आवे रे ॥ भ० ॥ १३ ॥ द्वादश तप सम फल लहे, ए तो देहरा
मारग आवतां रे ॥ अर्धे पंथे लहे देहरे, ए तो मास खमण फल
आवतां रे ॥ भ० ॥ १४ ॥ देहरु देखे दृष्टिमें, तव मास खमण फल
लावे रे ॥ जब पहोंचे चैत्य ओहडी, तव खटमासी फल लाभे रे ॥
भ० ॥ १५ ॥ जिनवर वारणना करमथी, ए तो वरसी तप
फल होवे रे ॥ वण प्रदक्षिणा देवतां, तम शत वर्ष तप फल पा
वे रे ॥ भ० ॥ १६ ॥ सहस ते वर्ष उपवास जे, फल होवे जिन
पूजे घनो रे ॥ पुण्य अनंतुं ते वरे, जिनस्तवना भावे करे तो रे ॥
भ० ॥ १७ ॥ चैत्यमां हातो काढतां, फल सो उपवासनुं पावे रे ॥
आंगी रचे जा जिनवरने, सहस पोषण लाभ उपावे रे ॥ भ० ॥
॥ १८ ॥ लाख उपवास फल लहे, एह फूलनी माला चढावे रे ॥
वाजित्र गीत प्रभु आगल, होवे लाभ अनंत गुण भावे रे ॥ भ०
॥ १९ ॥ धूपदीपक प्रभु आगले, करतां लहे मंगलमाला रे ॥ भा
वथी करे प्रभु जिन तणा, तम आपे आरति वाला रे ॥ भ० ॥
॥ २० ॥ न्हवण करे जिनजीतणी, तव होवे आतम शुद्ध रे ॥
धूप उखेवे प्रभु आगले, ते मुकुट सम लहे सद्ध रे ॥ भ० ॥
॥ २१ ॥ नाटक करतां पदवी लहे, जिन चक्रि हरिबल देवा रे ॥
गणधर सुर नृप पद लहे, प्रभु सेवाथी लहे मीठा मेवा रे ॥ भ०
॥ २२ ॥ जो त्रण काल पूजा करे, भवसागर पार उतारे रे ॥
टलुवा कर्म सहरे, ते जाय मुक्ति दुवारे रे ॥ भ० ॥ २३ ॥ राव
ण ने मंदोदरी, करी अष्टापद ने पूजो रे ॥ ना पै मान न मुकियो

जिन पदवीनो लहेवानो रे ॥ भ० ॥ २४ ॥ श्रेणिकराये वीरनी करी हरखे जवनी पूजा रे ॥ पद्म नाभ तीर्थंकरु. होशे भावनि चो वीशी राजा रे ॥ भ० ॥ २५ । कुमारपाल पूरव भवे, कोडी पांचनां फूल चढावे रे ॥ देश अढारनो अधिपति. थयो फूल अढारथी फावे रे ॥ भ० ॥ २६ ॥ इणि परे प्रभुनी पूजाथकी, ए तो सघलां संकट भाजे रे ॥ स्वर्ग मुगति सुख पामीये, वली सं सारिक सुख छाजे रे ॥ भ० ॥ २७ ॥ ए अधिकार ते सांभली, सहुनां मन भावे भेदाणां रे ॥ जिन वंदन जिन भक्तिमां, तम आ तम रंग रंगाणा रे ॥ भ० ॥ २८ ॥ गुरुनी शीख सोहामणी, मानी विधि सघली साची रे ॥ चोथा उल्लासनी वीशमी, काहे कन्हें ढाळे राची रे ॥ भ० ॥ २९ ॥

॥ दुहा ॥ कपिनी शीख सोहामणी, सांभळि सघळा विप्र ॥ जिन वदन अर्चा भणी, द्विज द्विजणा थया क्षिप्र ॥ १ ॥ कहे उर नंद सुणो प्रभु, शी विध कीजे सेव ॥ ते विधि कहो अमने प्रभु, जिण विध पूजा देव ॥ २ ॥ तव गुरु देव ते दाखवे, दोष रहित अढार ॥ जिन वदन अर्चा तणो, शिखवे गुरु आचार ॥ ३ ॥ रमणी ऋद्धि तजी करी, जीत्या राग ने द्वेष ॥ देव तेहनुं नाम छे, बीजा देव ते रेख ॥ ४ ॥ देव ते नाम धरावीने, राखे कामिनी संग ॥ ते ससारी सुर कह्या, लुब्धाणा तस अंग । ५ ॥ जे सुर जीवता जे हुवे, ते भले तारे नारि ॥ पण धड मुगति गोल्लनी, ते शी राखे सार ॥ ६ ॥ मुआ गया परलोकमें, तो पण नगयो वि कार ॥ ते शुं तारक तारशे, पडिया मोह मझार ॥ ७ ॥ वाहा लो वयरी एकसम, देखवे ते खरो देव ॥ तस चरणांबुज सेवनां, हरिये शिव तनखेव ॥ ८ ॥

॥ ढाल २१ मी ॥ तुमे पीतांबर पहेर्या जी, मुखने मरकलडे ॥ ए देशी ॥ सांभली गुरुनी वाणी जी ॥ हरिबल सांभलो ॥ गु

॥ इ० ॥ मांच रे मानें ते होवे जी ॥ इ० ॥ भावि जिन जिन
मोरे जी ॥ इ० ॥ १२ ॥ हिवे नटेव पुत्रेव होइ जी ॥ इ० ॥ रोगि
णीना मे वच होइ जी ॥ इ० ॥ नानिना सुनी जाणो जी ॥ इ० ॥
कारणे ते दुट माणी जी ॥ इ० ॥ १३ ॥ जिनन्या नजेथी
हाण्या जी ॥ इ० ॥ कोयादकदे ते गाल्ण जी ॥ इ० ॥ गया ते
कन्उर देने जी ॥ इ० ॥ न जाणे को नामनी जिमे जी ॥ इ० ॥
॥ १४ ॥ तिहां अड एक कापडी भया जी ॥ इ० ॥ तिगे जिम
णी विद्या महोटी जी ॥ इ० ॥ वद रूपिणी विद्या शिखी जी ॥
इ० ॥ आव्या त दो भीखी जी ॥ इ० ॥ १५ ॥ कापडी वेश
ते लेइ जी ॥ इ० ॥ आव्या ने जिम वेइ जी ॥ इ० ॥ उपनदने
घर आवे जी ॥ इ० ॥ कपटे हा भिक्षा मागे जी ॥ इ० ॥
॥ १६ ॥ मधुरो धुने गीत गावे जी ॥ इ० ॥ उपनदना शाक
रीझावे जी ॥ इ० ॥ रूपिणी विद्यानांगे जी ॥ इ० ॥ उन्ने नाइ
तम मोगे जी ॥ इ० ॥ १७ ॥ एक दिन गाने ते पोल्ये जी ॥ इ०
भिक्षुक गावे दो दने जी ॥ इ० ॥ एहवे उपनद आव्यो जी ॥ इ०
करडीये दाव ते पाव्यो जी ॥ इ० ॥ १८ ॥ फरसीये घाव न्या
पाल्यो जी ॥ इ० ॥ उपनद यमघरे चाल्यो जी ॥ इ० ॥ श्रावनना
लन कर्या नाठा जी ॥ इ० ॥ कपटी दो लाधा नाठा जी ॥ इ० ॥
॥ १९ ॥ धाओ रे भाइ धाइ जुओ जी ॥ इ० ॥ उपनद हाण्य गयो
हुओ जी ॥ इ० ॥ जयदेव आदे कुटुंब जी ॥ इ० ॥ आव्या मट
करी बुंब जी ॥ इ० ॥ २० ॥ रोगिणी देन्णी दो भेद जी ॥ इ० ॥
घाल पर्दी तस पेटे जी ॥ इ० ॥ जयदेव कहे जइ देखो जी ॥
इ० ॥ हणनारुं कुण तस पेखो जी ॥ इ० ॥ २१ ॥ धाया जन
चड केडे जी ॥ इ० ॥ न लाधा गया कोइ चेडे जी ॥ इ० ॥
आरतिनगर कुंभारी जी ॥ इ० ॥ न पडे सुर कांइ जारी जी ॥
इ० ॥ २२ ॥ गले सादले रांड जी ॥ इ० ॥ मेइ गइ पासेर

[illegible] पग को,
[illegible] मे देखो
[illegible] आवो ये नर
[illegible] ॥ ३॥
[illegible] ॥ होंजी
[illegible] ॥ ४ ॥
[illegible] काइ रे ॥
[illegible] पाइ रे ॥
[illegible] मन हिम
[illegible] जिन
[illegible] जाणीयें,
[illegible] रगमें
[illegible] स्वभाव
[illegible] स्वभाव
[illegible] होजी
[illegible] होंजी
[illegible] ॥
[illegible] होजी
[illegible] नेरा
[illegible] नइच्या
[illegible]
[illegible] रारता,
[illegible] न्यारो
[illegible] जन
[illegible] इम धर्म
[illegible] ॥ होंजी

मारकै

भवहारि

गुरु

उठपो

नै नि

राम ॥ श्र

प्रीतम

मेग

दी

थद

॥

कौन्यौ

॥

वारै

प्रीतम

॥

केरी

सहज नालैं करो ज्ञान योग [illegible], चारित्रयो [illegible] ॥ सो० ॥ ३ ॥ धार [illegible] व्रत [illegible] माथे [illegible] सज [illegible] सुभट साचा ॥ राग ने द्वेष दोय [illegible] जगतना नेहन [illegible] काचा ॥ सो० ॥ ४ ॥ फौज [illegible] नियम [illegible] मांज [illegible] दौर [illegible], क्षीपनी मोहना सैन [illegible] ॥ [illegible] मच्छी [illegible] राजु, क्षीपवा मोह नृप सैन्य [illegible] ॥ सो० ॥ ५ ॥ ज्ञानने दर्शन चरण [illegible] करी, [illegible] प्रवो [illegible] ॥ [illegible] आतमा जावने, अनुभव [illegible] ॥ सो० ॥ ॥ ६ ॥ पहले मोहने आत्मा [illegible] ॥ [illegible] मोह [illegible] ॥ सो० ॥ ७ ॥ मोह [illegible] सैन्य [illegible] ॥ [illegible] नृप उपरें चढन [illegible] ॥ सो० [illegible] ॥ [illegible] धन घातीया, पातीया मान [illegible] जसकारीया, भावनृप सेनमें [illegible] ॥ सो० ॥ ॥ ९ ॥ साथें उमराव ले अड दस [illegible] त्रिभुवन हरता ॥ फौज नव नोकषायनी [illegible] करता ॥ सो० ॥ १० ॥ राग ने द्वेष [illegible] कारत समाजमांहे ॥ काम [illegible] भिगें मनगज माहें ॥ सो० ॥ ११ ॥ [illegible] नाकि [illegible] करी, शोक कपायना [illegible] अगनें करी, भाव नृप [illegible] ॥ सो० ॥ ॥ १२ ॥ इणिपरें मोह नृप सैन्य [illegible] करी. चालीयो [illegible] पद करवा ॥ आगुहीं साम्हीं फौज दोपे [illegible], मनमें फौज दो मंदि [illegible] ॥ सो० ॥ १३ ॥ मोहनृप [illegible] पोरस चढ्या, आखड्या युद्धमें [illegible] ॥ [illegible] चोंगाडि [illegible]

[illegible] मनःशुध्दधर्मा का रास किंमत [illegible]
[illegible] किंमत [illegible]
[illegible] किंमत [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] आनो
[illegible] किमत १२ आना.
[illegible] कि० [illegible]
[illegible] (मन्दिरांगा आनन्द का पोथा) कि० १२ आ०
[illegible] कि० १० आना.
[illegible] आना
[illegible] कि० [illegible] आना.
[illegible] आना,
[illegible] आना
[illegible] किमत [illegible] आना.
[illegible] किमत ५ आना,
[illegible] रास कि० [illegible] आना.
[illegible] आना
[illegible] आना
[illegible] आना
[illegible] किमत [illegible] आना.
[illegible] कि० [illegible] आना.
[illegible] किमत [illegible] आना.
[illegible] किमत [illegible] आना,
[illegible] किमत [illegible] आना.
[illegible] किमत [illegible] आना.
[illegible] रास किमत [illegible] आना.
[illegible] रास किमत [illegible] आना.
[illegible] किमत [illegible] आना.
[illegible] रास किमत [illegible] आना,

[illegible] छापखाना [illegible]

शेठ केशवलाल छगनलाल तरफथी भेट.

श्रीमद् धर्मसिंहजी

अने

श्रीमद् धर्मदासजी

[सामायिक, आयुष्यकर्म अने क्षायक सम्य-
क्त्वनी पर्यालोचना साथे]

लेखक

मुनिराज श्री हर्षचंद्रजी

(दरियापुरी संप्रदाय)

प्रकाशक

शेठ नागरदास केशवलाल

कलोल (उ. गुजरात)

प्रथम आवृत्ति संवत १९८०

प्रत ५०० इ. स. १९२४

श्री वीरशासन प्रींटींग प्रेसमां केशवलाल दलसुख-
भाइये छाप्युं. ठे. हाजापटेलनी पोळ-अमदावाद.

अमूल्य.